॥ अथ सर्वतोभद्र मण्डलम् ॥

॥ अथ चतुर्लिंगतो भद्र मण्डलम् ॥

मिथिलादेशीय मकरन्दानुसार

वैदेही पञ्चाङ्गम्

जगल्लग्नम्–३।०३

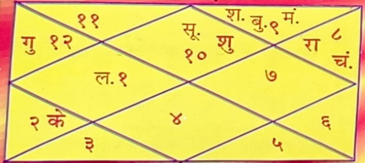

विक्रमसंवत्	२०८३–०८४
लक्ष्मणसंवत्	६१७–६१८
कलिसंवत्सरः	५१२८

राजा– शनिः	मन्त्री– मंगल
वर्षा – १७	धान्य– ११

सन् १४३४ साल

वर्षलग्नम्–११।१७

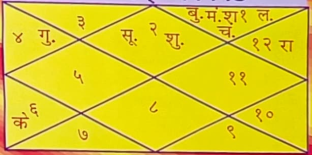

शालिवाहनशकाब्दः	१९४८–४९
भारतीयस्वतन्त्राब्दः	७९–८०
ईसवीय सन्	२०२६–०२७

मूल्यः रु. १०

॥ अथ गौरीतिलक मण्डलम् ॥
(दुर्गा पूजा प्रतिष्ठा समये)

॥ अथ गृहवास्तु चक्रम् ॥

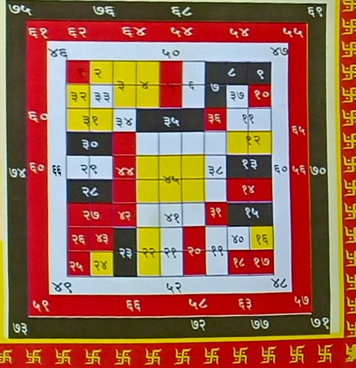

परामर्शकः- पं.श्रीरामचन्द्र झा, सम्पादक- पं.श्री अजय मिश्र (सिद्धान्त, फलित् ज्योतिषाचार्य, बनारस), सहयोगी-पं.तीर्थेश्वर झा, उत्तकर्ष मिश्र, अपराजिता मिश्र

प्रकाशकः- मिथिला पब्लिकेशन, जयदीप भवन, खजाँचीरोड, पटना-०४, मो.७२७७९२७५३६

विक्रमसंवत् २०८३–२०८४

॥ अथ हरिहरात्मक मण्डलचक्रम् ॥

॥ चतुः षष्टिपदं वास्तुमण्डलचक्रम्॥

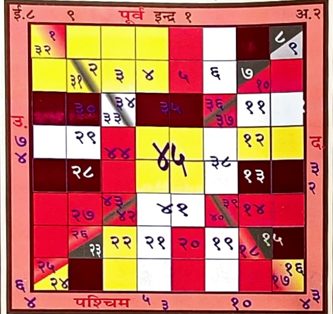

॥ एक लिंगतोभद्रचक्रम् ॥

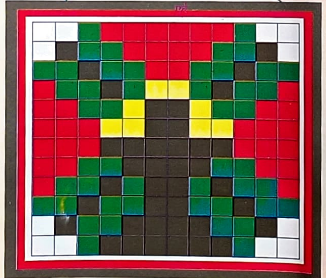

॥ अथ गणपति भद्र मण्डलम् ॥

॥ अथ सूर्यभद्र मण्डलम् ॥

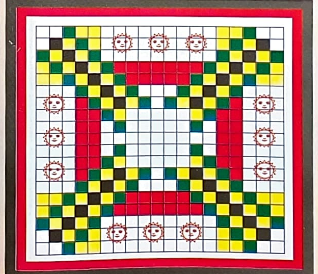

॥ चतुः षष्ठियोगिनीचक्रम्॥

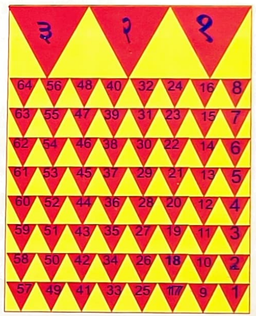

॥ क्षेत्रपालचक्रम्।

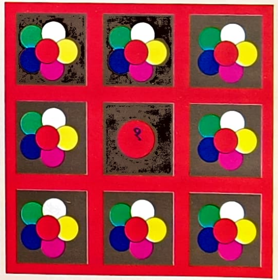

षोडशमातृकाचक्रम्

ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः १७	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसेनायै नमः ९	ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः ४
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः १०	ॐ सावित्र्यै नमः ६	ॐ गौर्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १

अथ वसोर्धारा चक्रम्

पूर्व

॥श्री॥

नवग्रह चक्रम्

पूर्व

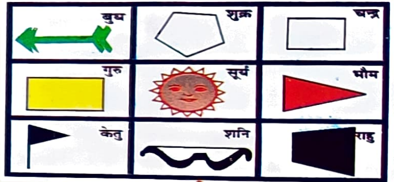

पश्चिम

तोरणद्वारचक्रम्

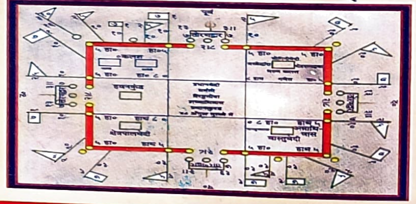

वैदेहीपंचांग सदस्य एवं समर्थक-

सम्पूर्ण विवरण नही होने के कारण कुछ समर्थकों का संकेत नही दिया गया हैं, संपर्क करें-संपादक

पूज्यगुरुदेव स्वर्गीय शक्तिनाथ झा दुल्हा,मधुबनी
डॉ मृत्युञ्जय झा अध्यक्ष संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना
डॉ. दिनेश झा प्राचार्य म.अ.रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय,दरभंगा
डॉ. रामसेवक झा सह-प्रायार्च म.अ.रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय,दरभंगा
प्रो. राधारमण ठाकुर देवघर
श्रीमति उषा मिश्र साहित्याचार्य,नारायणपुर
डॉ. इन्द्रकान्त झा राजेन्द्र नगर पटना
पं.श्री भुवनेश्वर मिश्र हरपुरकला,सीतामढ़ी
पं.श्री बाबू लाल मिश्र हरपुरकला,सीतामढ़ी
पं.श्री गंगाधर झा, भलोहिया,रौतहट,नेपाल
पं.श्री गंगेश मिश्र नैनही,महोत्तरी,नेपाल
पं.श्री ललित मिश्र मत्सरी, नेपाल
डॉ. रामकुमार झा श्रीजगदम्बा सं.म.वि.दरभंगा
डॉ.गोविन्द चौधरी जनकपुर,
प.श्रीपुण्यकान्त झा मुज्फ्फरपुर
पं.श्रीचन्द्रभूषण ठाकुर, बेगूसराय
पं.श्री.संजीव कुमार झा कल्याणपुर, समस्तीपुर
पं.श्री शिव कुमार मिश्र बजलपुरा,तेघड़ा,बेगूसराय
पं.श्री उमाकान्त ठाकुर, रामदीरी (नकटी),
पं.श्री विजय झा (विट्टू) पिढ़ौली,तेयरा,जि.बेगूसराय
पं.श्री उमाकातन्त झा .तीयाय,बेगूसराय
पं.श्री योगेश झा(मन्टुन) गोधना, भाया- बछवाड़ा
पं.श्री राजमोहन झा, वनगॉव,वाजपटी, सीतामढ़ी
आचार्य कैलाश पति झा ज्योतिषाचाय बेगूसराय
पं.श्री शचीन्द्र नाथ मिश्र (रिक्तहस्त) गोसपुर-सुपौल
डॉ. कृष्णानन्द झा, मिर्चाई बाड़ी, जिला-कटिहार
डॉ. सुशील कुमार झा शिवसिंहपुर, दरभंगा

पं.श्रीउदयकान्त मिश्र करिहारा
पं. श्रीवद्रीनारायण चौधरी,
पं. श्रीहितचन्द्र झा, वघाँत,
पं.श्री मोहनानन्द झा,खाड़ा,सहरसा
पं.श्री दयाकान्त झा, समस्तीपुर
पं.श्रीबंशीधर झा हाईस्कूल तेलता
आचार्य नीरज कुमार मिश्र, रीगा
पं.श्रीनीरज कुमार,दरभंगा
पं.श्रीदुर्गानन्द झा वेदाचार्य
डॉ.राघव झा, पटना
पं.दिगम्बर ठाकुर बेगुसराय
डॉ. नवनीत कुमार सहरसा।
डॉ.रिपुसूदन झा मुजफ्फरपुर
डॉ.विनय कुमार झा सिरहुल्ली,
पं.श्रीगोविन्द झा, नरगा,सीतामढ़ी
पं.श्री मदन कुमार चकफतेया सं.वि.
पं.श्री ललित मिश्र मत्सरी,नेपाल
पं.श्री गंगेश मिश्र नैनही नेपाल
पं.श्री दीपेन्द्र झा बलरा सर्लाही
पं.श्री ललित झा सीतामढ़ी
पं.श्री मनबोध झा जनकपुर
पं.श्री नवीन झा जनकपुर
डॉ कौशल किशोर झा वैरगनियाँ
प.श्री कमलेश पाठक बहेड़ा जरीसो

श्री मङ्गलमूर्त्तये नमः,श्रीसरस्वत्यै नमः

कलिसंवत् ५१२७-२८, शकाब्दः१९४८-४९, विक्रमसंवत् २०८३-८४, सन् १४३४ साल, लक्ष्मणसंवत् ९१७-९१८, खृष्टाब्दः२०२६-२७ ई.

रौद्र नामक संवत्सरफलम्-

अल्पतोयास्तथा नरः कीटाश्च शलभाः शुकः। विकृताः पार्थिवाः देवि रौद्रवर्षे वरानने।।

राजा-शनि फल-

सर्वोपद्रवतो नरः क्षतमना नशन्त्यथो जन्तवो राष्ट्रोपद्रव वाच्यता निगदिता विप्रेषु साधुष्वपि पीड्यन्ते च समीरणाद् वहुजनाः प्रासादहर्म्यादयो निःशब्दा वसुधा निहन्ति च जलं नस्युःशनौ शालयः।।

संवाहक(मंगल) शनि फल-

वायुर्वाति महीरुहस्यपतनं भूकम्पसंक्षोभिता पृथ्वी शैलमहतिश्रृंगपतनं लोकस्य नाशः सदा। पीड़ा गोमहिषयाश्व कुंजर पशोर्घोरा महीभीतिदा-शस्यानां च विनाशरुणतरा सम्वाहके भूमिजे।।

पालक-सूर्य फल-

सूर्यो लाघवतां व्रजन्ति जलदा मन्दान्नयुक्ता मही रोगैः पित्तज्वरातिसारसाहितैः शस्यै विनष्टाहठात्।। राजानो राष्ट्रवादाः पुरजनसहिताः यान्तियुद्धैकचित्ता,अर्कज्वालाभितप्ता चलति वसुमती पालके तीक्ष्णरशमै।।

मेघेश-शुक्रः फल-

शुक्रे शस्ययुता पृथ्वी जलदास्तोयवर्षिणः।

तोयेश-शनि फल-

मन्दे मन्दजला मेघा मन्दशस्ययुता मही। तोयाधिपानामेतत्तु फलं वदति भागुरिः।

शस्येश-खाद्यमन्त्री-

गुरु फल- अनेक धनसम्पन्ना नन्दन्तिं नरपालकाः। शस्यवृद्धिकरीवृष्टिर्देवपूज्ये सदा भवेत्।।

लोकेश-गृहमन्त्री-चन्द्र फल-

स्वस्थाः कीर्तियुता लोका धनाम्बरविभूषिताः। हर्षोत्सवक्रियायुक्ताः शीतांशौ च नराधिपे।

संवर्त्तकनाम-पुष्कर फल-

पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा। चित्रिता तु भवेद्वृष्टिः शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता।

आय-व्यय २०८३-२०८४

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	२	११	१४	२	५	५	२
व्यय	१४	८	५	५	१४	११	५	१४	८	२	२	८
फल	कलेश	विजय	विजय	लाभ	अपवाद	विजय	विजय	कलेश	लाभ	सम्मान	सम्मान	लाभ

पञ्चाङ्ग देखने की विधिः-

वैदेही पंचांग का देशान्तर ११३५, अक्षांश २६।३५, पलभा ६ है।

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम दण्डात्मक दिनमान उसके बाद तिथि, सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान तिथि का घण्टा, मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम एवं दण्ड पल एवं घण्टा मिनटात्मक मान उसके बाद योग का नाम, दण्डात्मक एवं मिनटात्मक मान उसके बाद पूर्वार्ध करण का नाम एवं दण्डात्मक मान उसके बाद मेषादि राशि में चन्द्रमा के भुक्तकाल का दण्डात्मक एवं घण्टात्मक मान उसके बाद क्रमशः घण्टा मिनटात्मक सूर्योदय एवं सूर्यास्त तथा मिश्रमान कालिक स्पष्टराश्यादि सूर्य का भोगकाल एवं राष्ट्रिय,नेपाली एवं अंग्रेजी दिनांक तत्पश्चाद् मुहूर्त्त पर्वादि दिये गये हैं । यथा-प्रथम श्रावण कृष्ण पक्ष गुरु वार को प्रतिपदातिथि का दण्डात्मक मान ३८।३६, रा.८।४१ तक, नक्षत्र **श्रवण** का दण्डपल ३२।०२ सं.६।१० तक, योग **आयुष्यमान** दण्डात्मक मान ४६।५४, करण बालव दण्डात्मक मान ६।५४, चन्द्र का भुक्त-**धनु** राशि में अहोरात्र। सूर्योदय ५ बजकर २१ मिनट पर तथा सूर्यास्त ६ बजकर २६ मिनट पर, सूर्य **कर्क** राशि के १२ अंश ४६।४१ कला-विकला पर भोग कर रहा है, ऐसा समझना चहिए। राष्ट्रिय ८, नेपाली श्रावण मास के १४ गते तथा अंग्रेजी दिनांक ३० जुलाई समझना चाहिए। उसी पंक्ति में धर्मशास्त्रादि दिया गया है। इस पञ्चाङ्ग के निचले भाग में मिश्रमानकालिक राश्यादि दैनिक स्पष्ट ग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। तदनन्तर दैनिक लग्न सारणी दी गई है। पंण्डितो का सुलभता के लिए अर्धप्रहरा का घण्टात्मक मान दिया गया है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन सूर्योदयकालिक लग्न का समाप्तिकाल मानक समय के अनुसार दिया गया है। साथ ही उपयोगी विविध विषय भी दिये गये हैं।

वर्षादिविश्वा २०८३-०८४

वर्षा-१७ धान्यम्-११, शीतम्-१३, तृण-५, उष्ण-१५, वायु-१३, वृद्धिः१५, विनाशः१५, विग्रहः११,क्षुधा ३, तृष्णा-१, निद्रा-७, आलस्य७, उद्यमः५, शान्तिः७, क्रोधः-५, दम्भः११, भेदः१, मैत्री१, रसनिष्पत्तिः७, फलनिष्पत्तिः११, उत्साहः ६, शलभाः १३, शूकः१७, मूषकः१५, अतिवृष्टिः१६, अनावृष्टिः७, स्वचक्रम्६, परचक्रम१५, रत्नानि ११, वस्त्राणि ६, घृतम् ६, तैलम् ५, दुकूलम् ५, आचारः७, अनाचारः १३, मरणम् १७, जन्मः १६, देशोपद्रव ५,चौरभीतिः१६, चौरनाशः१७, अग्निभीतिः१३, अग्निनाशः७

• १९४८-४९ शकाब्दीय शुद्धाशुद्धी •

तत्र श्रावणकृष्णप्रतिपद् गुरुवासरात् भाद्रशुक्ल षष्ठी गुरु ४४।५४ यावत् गुरुर्वास्त सिंह संक्रान्ति कारणात् अशुद्धः ततः आश्विन कृष्ण अमावस्या शनिवासरः ४६।५८ यावत् शुद्धः ततः शुक्र क्षैण्यास्त दोषकारणात् अश्विन शुक्ल त्रयोदशी शनिवासरः ४६।५८ यावत् अशुद्धः ततः मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी बुधवासर ३२।०६ यावत् शुद्धः ततः धनुरादित्य दोषात् पौष शुक्लषष्ठी गुरुवारः ५१।२८ यावत् अशुद्धः ततः फाल्गुन शुक्ल षष्ठी रविवासरः ६।१६ यावत् शुद्धः ततः मीन-आदित्य दोषात् खरमास कारणात् चैत्र शुक्ल नवमी गुरुवासरः ३१।२६ यावत् अशुद्धः ततः आषाढ़ शुक्ल नवमी सोमवारः ०।५३ यावत् शुद्धः ततः शुक्रः क्षैण्यास्त आषाढ़ी आयावत् अशुद्धः।

• १९४९-५० शकाब्दीय सङ्क्षिप्तशुद्धादि •

अग्रहायण-माघ-फाल्गुन-चैत्र-वैशाख-ज्येष्ठाषाढमासेषु समयशुद्धिः। तत्र यथाशास्त्रं कार्त्तिकव्रत-तुलसीव्रत-आकाशदीपदानव्रत- एकादशीव्रतोद्यापनानि। अग्रहायण-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठाषाढमासेषु विवाहदिनानि। माघ-फाल्गुन- वैशाख- आषाढमासेषूपनयन-देवादिप्रतिष्ठा- तडागकूपवापीखननादिमुहूर्ताः। चैत्रेऽप्युपनयनम्। अग्रहायण-फाल्गुन- वैशाखेषुशुक्रोदयः पूर्वस्यान्तेन तदानीं पश्चिमदक्षिणदिशोस्तृतीयादि- विषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि वहूनि, तदितर दिशोस्तु शुक्रान्ध(रेवती-अश्विनी-रोहिणी-मृगशिरा)नक्षत्रेष्वेव द्विरागमनदिनानि।

• वर्षफलम् •

इस वर्ष के वर्षेश (राजा) शनि, संवाहक (मन्त्री)मंगल, पालकाधिपति सूर्य, मेघपति शुक्र, जलपति शनि,शस्यपति गुरु, लोकपति बुध, पुष्करनामक मेघ तथा रोहिणीवास सन्धि में है। रौद्रनामक बार्हस्पत्यवर्ष है। वर्षा १७ विश्वा, धान्य ११ विश्वा, प्रवहनामक वायु तथा जलाढकमान २० विश्वा है। शकाब्दानुसार दुर्भिक्ष एवम् अतिवृष्टि तथा विक्रमसंवत्सरानुसार मध्यमसुख एवं कष्ट प्रद है। जगल्लग्न-कर्क, वर्षलग्न-कर्क, राजा-मन्त्री में सममित्रभाव, वर्षलग्नेश सूर्य अष्मस्थ, चन्द्र नीचगत, बुध राहुयुक्त, उच्चाभिलाशी शुक्रयुक्त स्वगृही शनि सप्तमस्थ, कर्मस्थ वृहस्पति, आयस्थ मंगल एवं धनस्थ केतु, जगल्लग्नेश मंगल नीचगत चतुर्थस्थ,जगल्लग्नगत उच्चस्थ सूर्य, धनस्थ वृहस्पति, सप्तमकेन्द्रगत चन्द्रमा, आयस्थ स्वगृही शनि उच्चाभिलाषी शुक्रयुक्त, षष्ठस्थ केतु एवं व्ययस्थ नीचगत बुध राहुयुक्त हैं। अधिकारियों में शुभग्रहों की अधिकता है। इस प्रकार ग्रहयुति दृष्टि स्थिति के आलोक में वैमनस्य-विघ्न-विलम्ब-बाधा की स्थिति के बावजूद अनुकूलता की स्थिति बनी रहेगी। कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण, शिक्षा, ऊर्जा एवं जल से सम्बद्ध क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य होंगे। उद्योग, व्यापार, संचार, क्रीडा एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी। आर्थिक अभ्युन्नति, वैज्ञानिकी एवं तकनीकी क्षेत्रों में विविध प्रकार के नवीनकार्य-नवीनप्रयोग से वैश्विक स्तर पर देश की स्थिति सुदृढ होगी। नीचस्थ बुध, पापग्रहों की दृष्टि-युति-अवस्थिति, यदा-कदा चार-पाँच ग्रहों के योग के कारण समय-समय पर प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प-ज्वालामुखी-हिमपात-तूफान-भूस्खलन-सङ्क्रामक रोग-अग्निकोप, विद्युत्पात् एवम् ओलावृष्टि आदि), राजनैतिक उथल-पुथल, कलह, अनैतिककृत्य, षडयन्त्र, विषम शीत एवं गर्मी, अन्तर्विरोध,शस्त्रास्त्रनिर्माण तथा हडतालादि से जन- धन की क्षति सम्भावित रहेगी। विषमवृष्टि , खण्डवृष्टि , कहीं-कहीं वृष्टि का अभाव एवं बाढ से कृषि प्रभावित होगी।

मासफल

श्रावण- इस मास में सब्जियों तथा चीनी, चावल, गुड़ और तेलहन पदार्थो के भाव महँगी रहेगी । खण्ड वृष्टि का योग। आँधी तूफान से वृक्ष,मकान की क्षति होगी। अनेक जगहों पर गृहकलह की स्थिति उत्पन्न होगी। देश के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में प्राकृतिक एवं आतंकवादी दुर्घटनाएँ घटित होने की प्रबल सम्भवना हैं। किसी राज्य में सत्ता पक्ष को आपसी विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

भाद्र- इस महिने में सर्दी का प्रकोप रहेगा। रोगादि से जनता को कष्ट अधार्मिक मामलों तथा उद्योग से संबंधित कार्य मे तेजी रहेगी। श्रमिक संगठन किसी बात को लेकर सक्रिय होगें। विदेशी व्यापार संबधित समझौते होगें। गोरस का उत्पादन बढ़ेगा। कहीं पर वायु वेग के साथ थोड़ी वर्षा का योग है। श्वेत पदार्थ सस्ते होंगे। किसी राज्य में सत्ता पक्ष को आपसी विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

आश्विनः- इस मास मे अन्न का भाव सम रहेगा। स्वर्णादि आभूषणों के भाव में पूर्ववत् स्थिति देखने को मिलेगा। दलहन तेलहन के मूल्य में सामान्य सस्ती का रुख रहेगा । कहीं-कहीं सामान्य वर्षा भी होगी। दुर्घटना तथा अपहरण की घटनायें घटित होंगी।

कार्तिक- खाद्य पदार्थो के मूल्य में सस्ती देखने को मिलेगी, लोगों की मानसिक उग्रता में वृद्धि होगी। आकस्मिक धूप तथा वर्षा आदि से बीमारियों में वृद्धि होगी। मासान्त में अन्न का भाव सम रहेगा। साग- तरकारी के मूल्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। तेलहन का संग्रह करना लाभदायक सिद्ध होगा। गोरस तथा तरकारी के मूल्य में तेजी बनी रहेगी।

अग्रहायण इस मास में खाद्य पदार्थ सस्ते होंगे। सोने चाँदी के भाव में तेजी आयेगी। कृषि विनाशक तत्त्वोंका उदय होगा । इस माह में भौमान्तरिक्ष उत्पात् अधिक होगा । कहीं-कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव भी होंगे। वृष्टि से अन्न हानि संभव है। आपसी विवाद की वृद्धि होगी।स्टील के भाव तेज रहेगें। खनिज उत्पादन,ईधन आदि के भाव तेज होगें।

पौष- ५ बुध दिन सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त ३० होनो से इस मास में खाद्य पदार्थो में तेजी रहेगी तथा कटु वस्तु, अफीम में तेजी रहेगी, वस्त्र,रुई, सूत तथा चाँदी में उतार-चढाव देखने को मिलेगा। वर्षा का योग बनता है। नमक, गुड़ तथा लाल वस्तु महँगे होंगे। नेत्र रोगों से जनजीवन अशान्त रहेगा। आपसीरागद्वेष वढ़ेगा। प्रजा में रोग, अशान्ति, भय तथा उग्रवादियों द्वारा कहीं-कहीं पर उपद्रव की सम्भावना रहेगी। व्यापार में मन्दी का रुख रहेगा। देश के दक्षिण भाग में प्रबल वृष्टियोग है।

माघः- इस महीने में खाद्य पदार्थ तथा सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं के भाव प्रायःसमभाव रहेंगे। गेंहू जी चना तिल तेल अलसी मोटे अनाज दलहन के भाव में कुछ वृद्धि होगी। बाजार में कारोबार मंदा रहेगा। मासान्त में सुधार आयेगा। सराफा बाजार में सोना के भाव प्रायः तेज रहेगें। चांदी के बाजार में उतार चढ़ाव बना रहेगा। तथा मासान्त में भाव तेज होगा। किसी विशिष्ट जन की क्षति की संभावना रहेगी।

फाल्गुनः- इस महीने में गोरस का उत्पादन बढ़ेगा। सराफा बाजार में सुवर्ण के भाव यथावत महँगें रहेंगे लेकिन चाँदी के भाव में अस्थिरता रहेगी। मासान्त में मंदी का ही रूख रहेगा। यातायात व संचार प्रणाली में व्यवधान आने की संभावना है। शेयर बाजार में अस्थिरता रहेगी,। कला क्षेत्र से संबधित लोगो को कष्ट होगा। कागज तथा अन्य लेखन सामाग्री महंगें होगें। कर वसूली में कड़ाई तथा कोई नये कर का प्रावधान संभव है।

चैत्र- भाद्र मे ५ रवि दिन सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शन मु.३० होने से इस महिने में अन्न रसादिक पदार्थ मंहगें होगें। खाद्यान्न के भाव में कुछ कमी रहेगी। मीठे पदार्थ तेलहन ज्वार बाजरा अरण्ड दाल मिर्च कपास सरसों चावल गुड़ खाड़ आदि के भाव तेज रहेगें। तेलहन आदि कारोबार में मंदी का रूख रहेगा। वस्त्र उद्योग में तेजी का रूख रहेगा। सराफा बाजार में तेजी रहेगी । देश के पूर्व-पश्चिम भाग में वायु जन्य रोग का प्रकोप अधिक देखने को मिलेगा। शासक वर्ग में खींचा-तानी के कारण प्रजा अशान्त रहेगा।

वैशाख- इस मास में सब्जियों तथा चीनी, चावल, गुड़ और तेलहन पदार्थो के भाव में भी सस्ती रहेगीं वृष्टि के कारण कृषि क्षेत्र में लाभ होगा। पीले और लाल पदार्थ महँगे होंगे। मासान्त में उपल वृष्टिका योग सुस्पष्ट है। रस पदार्थ महँगे होंगे। तेज वायु के कारण जान-माल का क्षति हो सकता है।

ज्येष्ठ- सर्राफा बाजार में सामान्य सस्ता का रुख रहेगा। धूप तथा वर्षा आदि से बीमारियों में वृद्धि होगी। तूफान,अग्निकाण्ड तथा उग्रवाद के कारण लोगों को हानि होगी। विदेश व्यापार संबंधित समझौते होंगे। हिंसा आदि की घटना बढ़ेगी। पश्चिमोत्तर सीमान्त राज्यों में आतंकवादी समस्या के कारण आम जीवन अस्त-व्यस्त दीखाई पड़ेगी।

आषाढ़- ५ बृहस्पति दिन सूर्य संक्रान्ति मु.३० चन्द्र दर्शन मु.३० होने से इस महिनें में प्रायः खाद्य पदार्थो में तेजी रहेगी। सरसों, मूँगफली, अफीम, गुड़, शक्कर आदि वस्तु में तेजी रहेगी। रुई तथा सूती वस्त्र सस्ते होंगें। दैवीक विपदाओं खासकर वाहनादि से घटनाओं अधिक होगी । पश्चिमी क्षेत्र में जलाधिकता पूर्वी में कमी। आपसी जनजीवन पारस्परिक आघात-प्रघात से चिन्तनीय रहेगा।

राशिफल २०८३-२०८४

मेष (चू. चे. चो. ला. ली. लू. ले. लो.अ.)- आप के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। व्यापार में लाभ होगा। नौकरी में पदोन्नति की सम्भावना बनेगी। अध्यन में बाधायें आयेंगी। किसी धार्मिक कार्य का अवसर मिलेगा। सन्तान सुख, दाम्पत्य जीवन सुख मय रहेगा। वर्ष के उतरार्ध में शुभ सामाचारों की प्राप्ति होगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा।

वृष (ई. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो.)- आप के लिए यह वर्ष शुभदायक रहेगा। वर्ष के उतरार्ध में कठिनाईयाँ बढेगी। दाम्पत्य जीवन में मधुरत रहेगी। अधिक परिश्रम से लाभ मिलेगा। भूमि-भवन, वाहन के लिये स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। सन्तान पक्ष से सहयोग मिलेगा। मांगलिक कार्यो में धन-व्यय होगा। पारिवारिक कलह से मन खिन्न रहेगा।

• **मिथुन (का.की.कु.घ.ङ.छ.के.को.हा.)-** मिथुन राशिलग्न वालों को मानसिक चिन्ता, पारिवारिक विवाद तथा आर्थिक कठिनाई का सामना करना परेगा। दाम्पत्य जीवन कटुतापूर्ण रहेगा। वर्ष का उतरार्ध उलझनों को बढाने वाला होगा। व्यापार में स्वल्प लाभ होगा। प्रवासी जीवन व्यतीत होगा। सन्तान सुख, नौकरी मे पदोन्नति होगी। गणेश जी की आराधना करें।

• **कर्क (ही. हू. हे. हो. डा. डी. डू. डे. डो.) -** राशि वालों के लिए यह वर्ष शुभदायक रहेगा। व्यापार में लाभ तथा भूमि सम्बन्धि कार्यो में सफलता मिलेगी। नौकरी में उन्नति तथा व्यापार में लाभ होगा। अध्ययन मे सफलता प्राप्त होगा। न्यायालय सम्बन्धित कार्यो में सफलता मिलेगी। रक्त विकार से परेशानी हो सकती है। गणेश जी की उपसना करे।

• **सिंह (मा. मी. मू. मे. मो टा. टी. टू. टे.)-** राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। भाई-बन्धुओं की उन्नति होगी। वात-व्याधि, उदर पीरा से कष्ट होगा। अध्ययन में व्यवधान होगा। बाल-बच्चों को शारीरिक कष्ट होगा। न्यायालय के कार्यो में सफलता मिलेगी। मित्र से लाभ। तिर्थ यात्रा कर सकते हैं। सूर्य भगवान की आराधना करें।

• **कन्या (टो.पा.पी.पू.ष.ण.ठ.पे.पो.)-** आप के लिए यह वर्ष उन्नति कारक रहेगा। नौकरी में पदोन्नति होगी। धार्मिक यात्रा का अवसर मिलेगा। रूके हुऐ कार्यो में सफलता मिलेगी। यशस्वी कार्य करने का अवसर मिलेगा।सन्तान सुख,व्यापार मे लाभ, परिश्रम से भूमि भवन का योग है।

तुला (रा.री.रू.रे.रो.ता. ती.तू.ते)- आप के लिए यह वर्ष का पूर्वाद्ध आर्थिक कष्ट तथा मानसिक चिन्ता कारक रहेगा। परिश्रम का उचित फल नहीं मिलेगा। स्वजनों से मतभेद बढेगा। नेत्र विकार तथा उदर जन्य रोगों से कष्ट होगा। व्यापार में अनुकूलता रहेगी। परिवार में मांगलिक कृत्य होंगे। विद्याप्राप्त्यर्थ स्थान परिवर्तन का योग वन रहा है, माता-पिता का सहयोग प्राप्त होगा।

• **वृश्चिक(तो.ना.नी.नू.ने.नो.या.यी.यू.)-** राशिलग्न वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें रहेंगी। परिवार से सहयोग प्राप्त होगी। व्यापार से लाभ तथा नौकरी में पदोन्नति होगी। व्यापार में सामान्य लाभ होगा।

• **धनु (ये.यो.भा.भी.भु.ध.फ.ढ़.भे)-** आप के लिए यह वर्ष संघर्ष दायक है। शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। पत्नी को पीड़ा,निरर्थक दौड़-भाग बनी रहेगी। कृषि से लाभ, अधिक परिश्रम मे अध्ययन मे सफलता प्राप्त होगी, नेत्र तथा उदर विकार से परेशानी, नौकरी मे पदोन्नति सम्भव है,।

• **मकर(भो.जा.जी.जू.जे.जो.खा.खू.खे.खो.गा.गी)-**मकर राशि वालों की साढ़ेसाती रहेगी। अकारण दौड़-धूप बनी रहेगी। आर्थिक कष्ट, काम मे परेशनी, अध्ययन मे बाधा, मित्रो से मतभेद तथा नौकरी वालों का स्थान परिवर्तन सम्भव है, वायु विकार तथा कटि वेदना से परेशानी होगी।

• **कुम्भ-(गू गे गो सा सी सू से सो दा)-** आप के लिए यह वर्ष सामान्य फल दायक है। यद्यपि शनि की साढ़साती चल रही है तथापि कार्य सफलता, अध्ययन मे रूची तथा धनार्जन को स्रोत बनेगा। उदर तथा जानु विकार से परेशानी हो सकती है। हनुमान जी तथा दुर्गा जी की आराधना करे।

• **मीन-दी दू थ झ ञ दे दो चा ची-** आप के लए यह वर्ष शुभ लाभदायक रहेगा। पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शिक्षा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी। नेत्र तथा कटी विकार से परेशानी हो सकती है। घर में मांगलिक कार्य होंगे, सन्तानों की उन्नति होगी। नये भूमि या भवन खरीदने का अवसर मिलेगा। वृहस्पतिवार का व्रत, भगवान विष्णु की उपासना करे।

संतान गोपाल मंत्र प्रयोग :-

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री सन्तानगोपालमन्त्रस्य नारायणऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पुत्रप्रदः श्रीगोपालो देवता, क्लीं बीजं, श्रीं ह्रीं शक्तिः, जीं कीलकम्, श्रीसन्तानगोपाल प्रसाद सिद्धिपूर्वकं मम(यजमानस्य वा) चिरायुः-पुत्र -प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- ॐ नारायणऋषये नमः **शिरसि**। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः **मुखे**। ॐ पुत्रप्रदश्रीगोपालदेवतायै नमः **हृदि**। ॐ क्लीं बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ श्रीं ह्रीं शक्तये नमः **पादयोः**। ॐ जीं कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**।

करन्यासः- ॐ देवकीसुत गोविन्द **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। ॐ वासुदेव जगत्पते **तर्जनीभ्यां नमः**। ॐ देहि मे तनयं कृष्ण **मध्यमाभ्यां नमः**। ॐ त्वामहं शरणं गतः **अनामिकाभ्यां नमः**। ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**।

अंगन्यासः- ॐ देवकीसुतगोविन्द **हृदयाय नमः**। ॐ वासुदेव जगत्पते **शिरसे स्वाहा**। ॐ देहिमे तनयं कृष्ण **शिखायै वषट्**। ॐ त्वामहं शरणं गतः **कवचाय हुम्**। ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः**अस्त्राय फट्**।

ध्यान- ॐ वैकुण्ठतेजसा दीप्तामर्जुनेन समन्वितम्।
समर्पयन्तं विप्राय अष्टानानीय बालकान्।।
विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्र-मध्यतः।
प्रादददत्तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः।।
(इति ध्यात्वा मानसोपचारै समपूज्य जपं कुर्यात्। लक्षचतुष्टयजपे पुत्रप्राप्तिः।। कर्मठगुरौ पृष्ठ सं.७३-७४)

बीजसहितसंतान गोपाल मंत्र प्रयोग

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ।

।। अथ कर्मकाण्ड विमर्श ।।

पंचोपचारपूजा-

गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च।
पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः।।

षोडशोपचारपूजा-

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा।
मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च।।
गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा।

पंचगव्यम्-

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्।।

पंचामृतम्-

शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम् ।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते। ।

पञ्चरत्नानि-

वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्।।

पञ्चपल्लवाः-

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः।
पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः।।

सप्तमृत्तिका-

गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ध्रद्गोकुलात्।
राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।।

सर्वौषधिः-

मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।
शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः।।
सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।

सप्तधान्यम्-

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च।
श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।।

हवने शाकल्यनिर्णयः-

तिलार्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्धं यवा स्मृता।
यवार्द्धं शर्करां दद्यात् सर्वार्धं च घृतं स्मृतम्।।

प्रदक्षिणा विचारः-

एका चण्ड्या, रवेः सप्त,तिस्रःकार्याविनायके ।
हरेश्चतस्रः, कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा।।
(आह्निकसूत्र)

नवग्रह-समिधा(लकड़ी)

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः।
औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात्।।
अर्क(मदार),पलाश,खदिर(खैर),अपामार्ग (चिडचिडि), पीपल,औदुम्बर(गूलर), शमी, दूर्वा, और कुशा-ये नव ग्रहोंकी समिधाएँ कही गई हैं।

महिष्यादि प्रसव दोषः-

माघेबुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः।।

बिल्वपत्र विचार-

अर्पितान्यपि विल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनःपुनः।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित्।।
(स्कन्दपुराण)बिल्वपत्र न मिलने पर चढ़ाये हुयें बिल्वपत्र को धोकर चढ़ाना चाहिए

दूर्वादि विचारः-

दूर्वाःस्वाभिमुखग्राःस्युर्बिल्वपत्रमधोमुखम्।
दूर्वाको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहियें।

धूप विचारः-

पुजनस्थल के बायें भाग में धुपदानी(अगरबती) स्थापित करना चाहिये।

दीपविचारः-

घी का दीपक दायी ओर और तेल का दीपक बायी ओर स्थापित करना चाहिये।

जपस्थान विशेषः-

शुचिस्थाने स्वगृहे जलाशये देवालये वा शूचिर्भूत्वा
विधिवज्जपं कुर्यात्कारयेद्वा तदुक्तं स्मृतौ।
गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम्।।
गवां गोष्ठे दशगुणं अग्न्यागारे शताधिकम्।।
तीर्थादिषु सहस्रं स्यादनन्तं विष्णुसन्निधौ।।

• प्रतिमाके स्थापनमें दिशाका निर्णय (देवतामूर्तिप्रकाण३।२४-२७)

पूर्वापरास्यं देवानां मुखं, नो दक्षिणोत्तरम्। ब्रह्मा विष्णुः शिवार्केन्द्रा गुहः पूर्वपराङ्मुखः।।
शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वाशाभिमुखाः शुभाः।।
गणेशो भैरवश्चण्डी नकुलीशो ग्रहास्तथा। भूताद्या धनदाश्चैव दक्षिणास्याः शुभाः स्मृताः।।
मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ्मुखम्। हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतारयो विदिङ्मुखः।।

• मन्दिरके लिये प्रतिमाका परिमाण(बृहत्संहिता५७।४७)

सौम्या तु हस्तमात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा। क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि-चतुर्हस्तप्रमाणा वा।।

मन्दिरके लिये एक हाथकी प्रतिमा सौम्यताको प्रदान करनेवाली, दो हाथकी प्रतिमा धनको देनेवाली, तीन हाथकी प्रतिमा कल्याणको देनेवाली और चार हाथकी प्रतिमा सुभिक्षको देनेवाली होती है।

• घरके लिये प्रतिमाका परिमाण (भविष्यपुराण)

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु। गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः।।

अंगुष्ठ पर्वसे लेकर वितस्ति(बित्ता) परिमाणतककी प्रतिमा घरोंमें रखनी चाहिये, इससे अधिक प्रमाणकी प्रतिमा विद्वानोंने अप्रशस्त कही है।

• घरमें प्रतिमा रखनेका विचार-

गृहे लिंगद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा। द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा।।
शक्तित्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च। द्वौ शङ्खौ नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतिमां तथा।।
नार्चयेच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकं तथा। गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वसुन्धरे।।
एतासां पूजनान्नित्यमुद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही। घरमें दो लिंग, दो शालग्राम, दो द्वारिकाचक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खण्डित प्रतिमा और मत्स्य, कूर्म आदि दशो अवतारोंकी एकासाथ प्रतिमाओंका तथा अग्निसे दग्ध(जली) एवं भग्न(खण्डित) मूर्तिका पूजन नहीं करना चाहिये। इस प्रकारकी मूर्तियोके पूजन करनेसे गृहस्थ नित्य ही उद्वेग(संकट) को प्राप्त होता है।

• घर मे शालीग्राम रखनेका विचारः- (पद्मपुराण)

शालग्रामाः समाः पूज्याःसमेषु द्वितीयं न हि। विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि।।
शालग्रामशिला भग्ना पूजनीया सचक्रका। खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्रामशिलाशुभा।।

शालग्राम भगवानका सम चार छः आदि रूपसे पूजन करना चाहिये। समरूपमें भी दो शालग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये। विषम रूप में एक शालग्रामका ही पूजन करना चाहिये(तीन शालग्राम आदिकापूजन नहीं करना चाहीये)

खण्डित मूर्ति का विचार

१ खण्डित मूर्ति यदि काष्ठ की हो तो उसे अग्नि में समर्पित कर दें। २. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो तो उसे आगाध जल में डुबो देना चाहिये। जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें। तत्पश्चात् उसे गाजे बाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबो दें। जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दुसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

• यज्ञमें दशदान का विवरण-

गो-भू-तिल-हिरण्याज्य-वासो-धान्य-गुडानि च। रौप्यं लवणमित्येवं दशदानं प्रकीर्तितम्।।
गौ, भूमि, तिल, सुवर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी और नमक-ये दश वस्तु दानके लिये कही गई है।

• गोदान का महत्त्व-

गोप्रदानं तारयते सप्त पूर्वान् परांस्तथा। यथाकथञ्चिद्दत्त्वा गां धेनुं वाऽधेनुमेव वा।
अरोगामपरिक्लिष्टां दाता स्वर्गे महीयते।।

गोदान से सात पीढ़ीके पूर्वजों तथा सात पीढ़ीके आगे होने वाले वंशजोका निस्तार करती है।

(बृहस्पति) भूमिदान का महत्त्व

षष्टिं वर्षसहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः। उच्छेत्ता चानुमन्ता च तावन्ति नरके वसेत्।।
यत्किञ्चित्कुरुते पापं जन्मप्रभृति मानवः। अपि गोचर्ममात्रेण भुमिदानेन शुद्ध्यति।।

भूमिदान करनेवाला पुरुष साठ हजार वर्षोतक स्वर्गमें निवास करता है और जो दी हुई भूमि हरण करता है या हरण करनेके सलाह देता है, वह उतने ही वर्ष नरकमें रहता है। मनुष्य जन्मसे लेकर जो कुछ भी पाप करता है उसकी निवृत्तिके लिये यदि वह गायके चामके बराबर भी भूमिदान करे, तो वह शुद्ध हो जाता है।

• अग्निको प्रज्वलित करने का विचारः-(देवीभागवत११।२२।५-६)

न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत ।।
पटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम्। पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु ।।

यज्ञाग्निको न तो हाथसे दहकावे, न सूपसे और न पवित्र मृगचर्म आदि से (आदि पदसे वस्त्रका ग्रहण है)। मुखसे ही यज्ञाग्निको धौंके, क्योंकि वह मुखसे उत्पन्न हुआ है। वस्त्र(चर्म आदि)से अग्निको धौंकने पर व्याधि(रोग) होती है, सूपसे धौंकने पर धन-नाश होता है, हाथसे धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुखसे धौकने पर कर्मसिद्धि होती है।

• विधिहीन अग्निमें हवन करने से हानि (वायुपु७५।६२)

अप्रबुद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतिः।।

जो यजमान अग्निके ठीक-ठीक न जलने पर और धूमके रहते हुए अग्निमें हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है।

• पूर्णाहुति खड़े होकर ही करना चाहिये

मूर्धानं दिवमन्त्रेण संस्रुवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्यकदाचन(अग्निपु)
'मूर्धानंदिवः०, (शु.य.७।२४) इस मन्त्रके द्वारा स्रुवसे घृतकी धाराको खड़े होकर पूर्णाहुति करना चाहिये, बैठकर नही

• कर्म-विशेष में अग्निके भिन्न-भिन्न नामः-

प्रत्येक कर्मके लिये अग्निके अलग अलग नाम हैं। अतः जिस कर्मके लिये जिस अग्निका आचार्योंने नाम-निर्देश किया है,उसी अग्निका सविधि आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहियें- गर्भाधानमें- भरत,पुंसवनसंस्कारमें- वर,सीमन्तोन्नयन संस्कारमें-मंगल,जातकर्ममें-स्वभू और नामकर्ममें बल,अन्नप्राशन संस्कारमें-अंगिरा,चूड़ाकरणमें समुद्भव,उपनयनमें जय,गोदान अर्थात् समावर्तनमें रुद्र,विवाहमें संयुग अग्नि कहा गया है।
अग्निहोत्रमें व्यालिक,गृहकर्ममें भव और पितृकर्ममें विश्वदेव,उदरकी अग्निका नाम अनल है, मृत(शव)का भक्षण करनेमें अग्निका नाम कल्मष है। महाहोममें वह्निका,जलमें प्रवाह करनेमें अग्निका नाम जल है। पूर्णिमाके होम में शशांक, प्रलयमें अग्निका नाम संवर्तक है। काठसे उत्पन्न अग्निका नाम घोर है। वाँसोंसे उठी अग्निका नाम परान्त है। समुद्रमें रहनेवाली अग्नि वडवाग्नि है। पाक(अन्नपाक) करनेमें दक्ष,वसोद्धारामें जिसमें हवन किया जाता है उस अग्निका नाम निधीश है। धूपसे निकली अग्निका नाम कामदेव है। धान आदिके तुष(भूसी) की अग्निका नाम कामहा है। रथ्या(चत्वर चौराहो) में स्थित अग्निका नाम कामहा है। क्षुधा उत्पन्न करनेवाली अग्निका अग्निका नाम विभत्सु है, राजाके घरमें उत्पन्न अग्निका नाम विजय है। वृक्षोंसे उत्पन्न अग्निका नाम धूम्र है। दीपकमें स्थित अग्निका नाम कृष्णपथ है। हेमन्त आदिकी अग्निका नाम वाद्य है। मातृमन्दिरसे उत्पन्न अग्निका नाम अजित है। म्लेछ लोगोंमें जो अग्नि रहती है उसका नाम शंकर है। ईंटोंकी भट्टीकी अग्निका नाम संघ है। प्रायश्चित्तमें अथवा व्रत खण्डित होनेपर शुद्धि नामक अग्नि और शुक्रके आधानमें अर्थात् वीर्याधानमें जय नामक अग्नि जानना चाहिये।।(देवीपुराण१२३)

• गुरु-शुक्र के अस्तादि में त्याज्य कर्म-(मु.चि.शुभाशुभ ४६,४७ श्लो)

जब गुरु-शुक्र, वृद्ध अस्त और बाल हों तथा क्षय मास तथा अधिक मास में बावली, बगीचा, तलाब, कुआँ, मकान इनका आरंभ और प्रतिष्ठा व्रत का आरंभ और उद्यापन, वधु प्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अष्टका श्राद्ध, गोदान (ब्रह्मचारी का केशान्त संस्कार), नवान्न, जलशाला प्रथम श्रावणी कर्म वेद व्रत नील वृषोत्सर्ग अतिपन संस्कार (बालकों का जातकर्मादि संस्कार जो समय पर नहीं हुआ है), देवप्रतिष्ठा, गुरु से दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, मुण्डन प्रथम बार तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्नि होत्र, राज्याभिषेक की यात्रा चतुर्मास यज्ञ समावर्तन कर्णवेध और किसी दिव्यान्तरिक्ष वस्तु की परीक्षा नहीं करनी चाहिए।

• रुद्राक्ष के एक-मुख आदिके नाम और उनका फल

एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति। अवध्यत्वं प्रतिस्रोतो बह्निस्तम्भं करोति च।। द्विवक्त्रो हरगौरी स्याद् गोवधाद्यघनाशकृत्।..............(शिवरहस्य के अनुसार)

'एक मुखवाला रुद्राक्ष साक्षात् 'शिव' है, जो ब्रह्महत्याको दूर करता है और समस्त स्रोतोंको अवध्य तथा अग्निको रोकता है। **दो मुखवाला रुद्राक्ष** 'हरगौरी' (शिव- पार्वती) है, जो गोहत्या आदि पापोंको दूर करता है । **तीन मुखवाला रुद्राक्ष** 'अग्निजन्मा' है, जो पाप-समूहोंको दूर करता है। **चार मुखवाला रुद्राक्ष** 'ब्रह्मा' है, जो मनुष्यकी हत्याके पापको नष्ट करता है । **पाँच मुखवाला रुद्राक्ष** 'कालाग्नि' है, जो अगम्य स्त्रीके साथ गमन तथा अभोज्यके भोजन करनेके पापको नष्ट करता है। **छः मुखवाला रुद्राक्ष** 'गुह' है, जो भ्रूण-हत्याके पापको नष्ट करता है।

सात मुखवाला रुद्राक्ष 'अनन्त' है, जो सुवर्णकी चोरीके पापको नष्ट करता है। **आठ मुखवाला रुद्राक्ष** 'विनायक' है, जो समस्त प्रकारके असत्योंका नाश करता है। **नौ मुखवाला रुद्राक्ष** 'भैरव' है, जो शिवसायुज्य (मोक्ष) को देता है। **दश मुखवाला रुद्राक्ष** 'विष्णु' है, जो भूत एवं प्रेतके भयको हरण करता है। **ग्यारह मुखवाला रुद्राक्ष** 'रुद्र' है, जो अनेक प्रकारके यज्ञोंके फलको देता है। **बारह मुखवाला रुद्राक्ष** 'आदित्य' है, जो समस्त प्रकारके रोगोंको दूर करता है। **तेरह मुखवाला रुद्राक्ष** 'काम' है, जो समस्त कर्मोंमें सफलता देता है और **चौदह मुखवाला रुद्राक्ष** 'श्रीकण्ठ' है, जो वंशका उद्धार करता है।

॥ अथ यज्ञ विमर्शः ॥

• अनाधिकारी को यज्ञ करानेसे हानि (मनुस्मृति३।६५)

अयाज्ययाजनैश्चैव नास्तिक्येन च कर्मणाम्। कुलान्याशु विनश्यन्ति यानि हीनानि मन्त्रतः॥

जिनको यज्ञ करानेका अधिकार अथवा योग्यता नहीं है, उसके द्वारा यज्ञ करानेसे, कर्मोंकी नास्तिकताते और वेदमन्त्रोंसे रहित होनेसे कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाते है।

• पतित को यज्ञ कराने से हानि (महाभारत, अनुशा० १११।४९-५१)

पतितं याजयित्वा तु कृमियोनौ प्रजायते। तत्र जीवति वर्षाणि दश पञ्च च भारत॥
कृमिभावाद् विमुक्तस्तु ततो जायति गर्दभः। गर्दभः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि सूकरः॥
कुक्कुटः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि जम्बुकः। श्वा वर्षमेकं भवति ततो जायति मानवः॥

पतित पुरुषको यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण कीड़ा बनकर उत्पन्न होता है और हे भरतवंशी राजन् ! वह पन्द्रह वर्ष तक कीड़ेकी योनिको भोगता है। कीड़ेकी योनिसे छुटकर वह गधा होता है, फिर वह पाँच वर्षमें गधेकी योनिसे छुटकर सूअर होकर उत्पन्न होता है और पाँच वर्ष तक मुर्गेकी, गीदड़की तथा एक वर्ष तक कुत्तेकी योनिको भोग कर फिर वह मनुष्य योनिमें जन्म लेता है।

• शूद्र को यज्ञ कराने से हानि(पाराशरस्मृति १२।३६)

दक्षिणार्थे तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः। ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत्॥

जो ब्राह्मण दक्षिणा के लोभसे शूद्रको यज्ञ कराता है, वह शूद्र हो जाता है।

• यज्ञ में ब्राह्मणों के पूजन से ही कर्म की पूर्णता होती है:-(यज्ञ-मीमांसा२०४-०५ङ)

ब्राह्मणानां नित्यपूजा कार्या वित्तानुसारतः। यावद् विप्रो न पूज्यन्ते न तावत् पूर्णतां व्रजेत्॥
पूजितेषु तु विप्रेषु सर्वं सम्प्रर्णतां व्रजेत्। प्रतिमा तेऽधिकं पुण्यं ब्राह्मणस्य तु पूजने॥

यज्ञ ने प्रतिदिन अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंका पूजन करना चाहिये। क्योंकि जब तक ब्राह्मणोंका पूजन नहीं किया जाता, तब तक यज्ञ पूर्ण नही होता। देवताओंसे भी अधिक यज्ञकें ब्राह्मणोंके पूजन करनेका महत्त्व है, अतः ब्राह्मणोंका पूजन होने पर ही यजमानके समस्त कार्य परिपूर्ण होते हैं।

• स्त्री और नपुंसकके द्वारा हवन करनेवाले यज्ञका निषेधः- (मनु.४।२०६)

अश्लीकमेतत्साधूनां यत्र जुह्वत्यमी हविः। प्रतीपमेतद्देवानां तस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥

जिस यज्ञमें स्त्री और नपुंसक हवन करते हों वह यज्ञ सज्जनोंके लिये लक्ष्मीका विनाशक है और इस प्रकारका यज्ञ देवताओंके लिये भी विरुद्ध है, अतः ऐसे यज्ञका त्याग कर दे।

• यज्ञादि में धर्मपत्नी कीआवश्कताः-

पत्नी धर्मार्थकामानां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते। ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः॥ पत्नी धर्म, अर्थ तथा कामकी सिद्धिका श्रेष्ठ साधन है। कोई भी पत्नी-रहित पुरुष चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्र हो- धार्मिक कर्म करनेके योग्य नहीं हो सकता। **"अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।"**(तैत्तिरीयब्राह्मण२।२।२)जो पुरुष पत्नी से रहित हैं वह यज्ञ के अयोग्य है। **एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः। अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु॥**(भविष्यपुरा.)- जिस प्रकार एक पहियेवाला रथ और एक पाँखवाला पक्षी चलने या उड़ने में असमर्थ होता है उसी प्रकार भार्यारहित पुरुष समस्त कर्मों में अयोग्य हैं।

• पत्नी के अनुपस्थित मेंः-(वाधूलस्मृति)

यस्य भार्या विदूरस्था पतिता वा रजस्वला। अनिष्टा प्रतिकूला वा तस्याः प्रतिनिधी क्रिया॥
अन्यां कुशमयीं पत्नीं कृत्वा तु प्रतिरूपिकाम्। क्वचिच्छरमयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत्।

जिनकी पत्नी दूर हो,पतित हो,रजस्वला हो,अनिष्ट करनेवाली हो अथवा अनुकूल न हो, ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी के प्रतिनिधिरूपमें कुशा की पत्नी का निर्माण कर नित्यकर्म करें।

• कर्म विशेष में पति के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे॥
वामे सिन्दुरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी॥
आशीवदिऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा। शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्॥

समस्त धार्मिक कार्योंमें पत्नीके लिये अपने पतिके दक्षिण भागमें बैठना शुभ कहा गया है। व्रतबन्ध में विवाहमें, चतुर्थी कर्ममें, सहभोजनमें, दानमें, यज्ञमें और श्राद्धमें पत्नी को पति के दक्षिण भाग में बैठना चाहिये।

विवाह के समय सिन्दुरदान में, द्विरागमन में, पति के साथ बैठकर भोजन करते समय और पति के साथ शयन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पति के वाम भाग में ही रहना चाहिये। ब्राह्मणोंके द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करते समय, ब्राह्मणोंके पाद-प्रक्षालनके समय, अभिषेकके समय भी अपने पतिसे वामभागमें बैठना चाहिये।

• स्त्री को पति की आज्ञा के बिना यज्ञादि करने का निषेधः- (मनुस्मृति५।१५५)

नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम् । पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते॥

स्त्रियोंको पतिकी आज्ञाके वगैर स्वतन्त्ररूपेण यज्ञ,व्रत तथा उपवास करनेका अधिकार नहीं है। स्त्री तो केवल पति-सेवारुपी यज्ञके प्रभावसे ही स्वर्गमें आदर प्राप्त करती है।

• यज्ञादि में संकल्प की आवश्यकता- (भविष्यपुराण मे)

संकल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्॥

मनुष्य संकल्पके विना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्यका क्षय हो जाता है। **संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः॥** मनु२।३।

• यज्ञादि में न्यास की आवश्यकता (शारदातिलक टीका ४ पटल)

पूजाजपार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि। अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलान्यमी॥
न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः। न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत्॥

सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होमकर्म अंगन्यासके विना फलप्रद नहीं होते। न्यासके विना किया हुआ जप आसुरी कहाता है, उसका कुछ फल नहीं होता । इसलिये न्यासादि कर्मद्वारा देवस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिये- **देवो भूत्वा देवान् यजेत्। न्यासहीनं तु यत्कर्म गृह्णन्त्यर्द्धं तु राक्षसाः।** न्यासके विना जो कर्म किया जाता है, उसका आधा फल राक्षस ले लेते है।

• यज्ञादि में एक वस्त्र धारण निषेध

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्श्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥(योगियाज्ञवल्क्य:)
एकवस्त्रो न भुञ्जीत श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। न कुर्याद्दिवकार्याणि दानं होमं जपं तथा॥ (गौतम:)

• प्रशस्त आसन

शमी काश्मरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा॥
कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्॥

शमी, गम्भार, शोणवृक्ष, कदंब और खैर, रेमश, कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन श्राद्ध तथा देवार्चनमें प्रशस्त गहे गये है।

• आसन के विभिन्न फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-र्मोक्षश्रीव्याघ्रचर्मणा। वंशाजिने व्याधिनाशः, कम्बले दुःखमोचनम्॥
अभिचारे नीलवर्णे रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्॥
वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः। धरण्यां दुःखसमभूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे॥
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः॥ काले मृगचर्म पर ज्ञानसिद्धि, व्याघ्र चर्म पर मुक्ति, वंशवल्कल पर व्याधिसे मुक्ति, कम्बल पर दुःखनिवृत्ति। अभिचार कर्ममें(मारण, मोहन, उच्चाटन आदिमें) नीला आसन, किसीको वशमें करनेके लिए लाल आसन पर, ग्रहपीड़ा, महामारी आदिकी शान्तिके निमित्त किये जा रहे कर्ममें कम्बलका आसन कहा गया है। चित्र कम्बल समस्त कार्योंके लिये कहा गया है। बांसके आसन पर दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तृणासन पर धन और यशका नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है।

• पूजन के समय प्रौढपाद(जाँघपर पैर रखकर) नहीं बैठना चाहिए

स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्॥

स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेदका स्वाध्याय और पितृतर्पणमें जांघपर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिये। (अत्रिसंहिता३१८)

• दक्षिणा देने की आवश्यकता

यज्ञो दक्षिणया सार्धं पुत्रेण च फलेन च। कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः॥ देवीभागवत्९।४५।५०
कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने॥
कर्ता कर्मणि पूर्णेऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम्। न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानतोऽथवा॥
मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम्। एकरात्रे व्यतीते तु भवेद्रसगुणा च सा॥(ब्रह्मवैवर्त प्र.ख.४२।५४)

दक्षिणासे युक्त यज्ञ पुत्ररूप फलके साथ यजमानों को फल प्रदान करता है। तथा कर्म कराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देनेसे यजमानको तत्काल फलकी प्राप्ति होती है। यज्ञादि कर्मके पूर्ण हो जानेपर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणोंको दक्षिणा न देनेसे प्रतिक्षण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एक रात बीत जाने पर वह छः गुनी हो जाती है।

• तिलक(चन्दन) धारण की आवश्यकता-

स्नानं सन्ध्या पञ्चयज्ञान् पैत्र्यं होमादिकर्म यः। विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत्॥

जा स्नान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ कर्म तथा होम आदि कार्य तिलक और दर्भ(कुश) के बिना करता है, उसका फल निष्फल जाता है।

• यज्ञादि में धौत वस्त्र पहनना चाहियेः-वसिष्ठ

जपहोमोपचारेषु धौतवस्त्रपरो भवेत्। अलंकृतः शुचिर्मौनी श्राद्धादौ विजितेन्द्रियः॥

जप,होम आदि शुभ कृत्योंमें धोती पहन कर ही कर्म करना चाहिये और श्राद्ध आदि कृत्यमें पवित्र वस्त्रको धारण कर तथा जितेन्द्रिय एवं मौनी बनकर श्रद्धापूर्वक कर्म करना चाहिये।

• कुशके पवित्री(अंगुठी) की महत्ताः-

जपहोमहरा ह्येते असुरा दैत्यरूपिणः। पवित्रकृत-हस्तस्य विद्रवन्ति दिशो दश॥
यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम्॥

जप और होमके फलकी हरण करनेवाले दैत्यरूपी असुर हाथमें पवित्र धारण किये हुए ब्राह्मणको देखकर दशों दिशाओंमें भाग जाते हैं। **जैसे इन्द्रका वज्र, विष्णुका चक्र और शिवका त्रिशूल शस्त्र कहा गया है, वैसे ही ब्राह्मणका रक्षक शस्त्र पवित्री कहा गया है।**

• पवित्री में कुश की संख्या विचारः-

चतुर्भिर्दर्भपिञ्जूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम्। एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्णे वर्णे यथाक्रमम्॥
सर्वेषां वा भवेद् द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं नवम्। चतुर्भिः शान्तिके कार्यं पौष्टिके पञ्चभिस्तथा॥
पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि॥

अर्थात् ब्राह्मणके लिये चार कुशोंका पवित्री धारण करने के लिये कहा है। क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रके लिये क्रमसे एक-एक कुश कम कर देना चाहिये। अथवा सभी वर्णके लिये नूतन और ग्रन्थियुत दो कुशोंका पवित्री होना चाहिए। शान्ति कर्ममें चार कुशोंका, पौष्टिक कर्ममें पाँच कुशोंका, पितृकर्म में तीन कुशोंका और नित्यकर्ममें दो कुशोंका पवित्री बनाना चाहिये।**(मार्कण्डेयः)**

• जप करते समय हाथसे माला गिरने या टूट जाने पर प्रायश्चित्त

माला यदि पतेद्धस्तात्तथा चैव विनश्यति। सहस्रं तत्र सञ्जप्यं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः॥
भोजनं ब्राह्मणानां तु सर्वानिष्टस्य नाशनम्। गायत्रीं वा जपेत्साष्टशतं भक्त्या समाहितः॥
ततोऽपरां नवां मालां तज्जातीयां वरानने। गृह्णीयात्तु कृते चैवं न विघ्नैरभिभूयते॥

यदि जप करते समय माला हाथसे गिर जाय या टूट जाय तो एक हजार बार मन्त्रका जप करे और ब्राह्मणभोजन करावे। ब्राह्मणको भोजन कराना सकल अरिष्टोंका विनाशक है। अथवा एकाग्र होकर भक्तिसे १०८ बार गायत्रीका जप करे। तदनन्तर दूसरी वैसी ही नई माला ग्रहण करे। ऐसा करनेसे पुरुषको विघ्न क्लेश नहीं देतें।

• जप गणनार्थ (गणना हेतु) विहित वस्तु-

लाक्षा कुसीदं(रक्तचन्दनम्) सिन्दूरं गोमयं च करीषकम्। एभिर्निर्माय गुटिकां जपसंख्या तु कारयेत्॥ (यामल)
नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः। न चन्दनैर्मृत्तिकया च जपसंख्यां तु कारयेत्॥

लाख, लालचन्दन, कमलगट्टा, सिन्दूर, गोबर के गुटिका बनाकर जपकी गणना करनी चाहिए। अक्षत्से, हाथके पर्वसे, धान्यसे, पुष्पसे, चन्दनसे और मृत्तिकासे जपकी गणना न करे।

• यज्ञादि में यज्ञोपवीत धारण की आवश्यकता-

द्विजको सर्वदा यज्ञोपवीती होकर औरशिखा बाँधकर रहना चाहिये। शिखा और यज्ञो पवीतके बिना वह जो कुछ कर्म करता वह न किये हुएके सदृश ही होता है।

• यज्ञ में जलयात्रा की आवश्यकता-

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्॥
तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमेऽयुतहोमे तथैव च॥
व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठं कर्म समाचरेत्॥

जो शान्तिक वा पौष्टिक यज्ञादि कर्म जलयात्राके बिना करता है, तो उसका वह कर्म निष्फल जाता है। तडाग आदिकी प्रतिष्ठा करनी हो, देवमन्दिर आदिकी स्थापना करनी हो, लक्षहोम,कोटिहोम तथा अयुत हवन करना हो, एकादशी आदि व्रतका उद्यापन करना हो, सुवर्णका दान तुलादान, भूमिदान आदि महादान करना हो एवं मंगलमय महायज्ञ करना हो, तो पहले जलयात्रा करके तदुपरान्त श्रेष्ठ शुभ कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये।**(यज्ञमीमांसा४१३)**

गर्भाधान-मुहूर्त्तः-

अश्वि, रो., मृ, उ.३, ह,स्वा, अनु., श्र., ध., श., चि, पुन., पु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं,बु,वृ,शु वारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। शुभैः केन्द्र त्रिकोणगैः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

सीमन्त-पुंसवन-मुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीयेमासि कार्यम्। सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमेमासे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृ. पुष्य, श्र., मू., पुन., हस्त, रो., रे, उ. ३, (जन्मभंविना) नक्षत्रेषु । १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे,कृष्णे ५ यावत्। सू., मं., वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु.,चं. अपि पूर्वाह्ने, पुभस्यांगे तदंशे शुभम्। पापैः ३।६।११ स्थितैः,शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम्।

जातकर्म-मुहूर्त्तः-

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुः श्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि., अनु रे., उ.३, रो, अश्वि,पुन, पु., स्वा, श्र., ध., श., नक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभ तिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

शिशोर्दुग्धपान मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो.,मृ.पुष्य, श्र.,पुन.,हस्त,रे, उ. ३, चि.,अनु.,ध.,शत.नक्षत्रेषु। शुभतिथिषु शुभदिनेषु, वृष-सिंह- वृश्चिक-कुम्भ लग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम्। भैषज्योक्तनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम्।

सूतिकास्नान मुहूर्त्तः

अश्वि.,रो., मृ. स्वाती अनु., उ.३, रे, नक्षत्रेषु । रवि, मंगल,गुरु दिनेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आश्लेषा पू.३, ज्ये, ध., शत. नक्षत्रेषु मध्यम्।

प्रसूति-नखच्छेदन-मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो., मृ., पुन. पु. उ.३,हस्त,चित्रा, स्वाती,वि. अनु.,ज्ये, श्र. ,ध., शतभिषा नक्षत्रेषु । ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारण-मुहूर्त्तः

भ., आ., श्ले,म., वि., शत. रहित नक्षत्रेषु । शनि मंगल रहित दिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठीधारणं) शुभंम्।

शिशु निष्क्रमण मुहूर्त्तः- जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात्।

शिशु-भूम्युपवेशन मुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पंचमे मासि उत्तरा३, रो. मृ. ,ज्ये अनु. अश्वि. हस्त पुष्य. अभिजित् नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष सिंह वृश्चिक कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं वद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।.......

शिशु के भूमि पर बैठाने का मन्त्र -

रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।।

अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं सुवर्णं रौप्यञ्च स्थाप्यम्। तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

शिशुदर्शन मुहूर्त्तः

तृतीये मासे शुभ-तिथिदिन-नक्षत्रेषु पुष्प-फल-वस्त्र-द्रव्यादिनी शिशुदर्शनं शुभम्।

नामकरण-मुहूर्त्तः

विप्राणां ११, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा., पुन.,श्र.,ध., ह.,अश्वि.,पु.,अभि.,उ.३,रो.,मृ.,रे. , चि., अनु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं., बु. , वृ., शु. दिनेषु पूर्वाह्ने शुभम्। मध्याह्ने मध्यमम्। शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थैः ।८।१२ गृहे शुद्धे चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते । लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

अन्नप्राशन - मुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा.३, मृ., रे., चि., अनु., स्वा., पुन., श्र., ध., शत., ह., अश्वि., पु., अभि नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु चं.,बु., वृ., शु., दिनेषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने, २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशञ्च रहितेषु। शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने, ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

कर्णवेध- मुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लेपक्षे, कृष्णे ५ यावत्,चं. , बु., वृ.,शु. दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र., ध., पुन., ह., अश्वि., पु. , अभि.,मृ.,रे, चि., अनु. नक्षत्रेषु ६।७।८। मासे वा विषमवर्षे चैत्र-पौष-हरिशयन-रिक्ता-समवर्षाणि त्यक्त्वा,२।३।४ ।६।७।९।१२ लग्नेषु शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः३।६।११गतैः, लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

चूडाकरण(मुण्डन-आद्यकेशकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमासादि ६ मासे अग्रहायणे च। ज्येष्ठाग्रहणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना विषमवर्षे अश्वि, मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., ज्ये., अभि., श्र., ध., शत., रे मतान्तरेण रोहिणी, उत्तरा३ नक्षत्रेषु। चं, बु., वृ., शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषुशुक्ल पक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।४।८।९।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने ४।६।८। १२ रहित चन्द्रे शुभम्।

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मी-नवग्रह-कुलदेव-ग्रामदेवान् विधिवत् सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः। अश्वि., आ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., अनु., अभि.,श्र., रे. नक्षत्रेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं., बु., वृ., शु., दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्वांशे चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे गुरौ दशमे बुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभम्।

विद्यारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सति सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि., मृ., आ., पुन., पु., आश्ले., ह., चि., स्वा., मू., पूर्वा. ३, श्र., ध., शत. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः पापैः ३।६।११ गतैः वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुभ समये, उत्तरायणे माघादिषड्मासेषु सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु (सामवेदीनां मंगलवारेऽपि) जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ने च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्न मासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि., रो., मृ., आ., पुष्य, आश्ले., पूर्वा३,उत्तरा३,ह.,चि., स्वाति, अनु., मू., श्र., ध., शत., रे. नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम् । मन्वादियोगादिषु अपराह्ने सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विदूयूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्र त्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेश-चन्द्र-शुक्र-गुरवः षष्ठगाः न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १।५।८ स्थाःपापा न शुभाः । ६।८।१२ गताःशुभाः न शुभ प्रदाः। ३।६।११ गताः पापाः शुभदा पूर्णचन्द्रो वृष-कर्क-लग्न-गतः शुभो नान्यथाः। लग्नेऽर्कः शुभः।

• **गुरुशुद्धि-** जंन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरु शुभः। ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थान गतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडश वर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भ- कालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वम् उपनयनं कार्यम्।

• **प्रदोषनिर्णयः-** यदा तृतीयायां प्रहरात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

• **वर- वरण मुहूर्त्तः-** शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणंशुभम्।

• **वर वरण मन्त्र-** ओम् तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये, स्नातः स्नातेह्यरोगिणि अव्यंगे अपतिते अक्लीवे(अमुक नाम्नीं)कन्यां पिता तुभ्यं प्रदास्यति।

• **कन्या वरण मुहूर्त्तः-** शुभतिथि दिन लग्नेषु कृत्तिका पूर्वात्रय विवाहभेषु च पुष्प फल वस्त्रादिभिः कन्यावरणंशुभम्।

• **विवाह-उपनयनादौ मण्डपादि निर्माण मुहूर्त्तः**

विवाहोपनयनादिशुभकर्मसु चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादिकं सम्बद्धं मण्डपादि कार्यं विधेयम्।

विवाहः मुहूर्त्तः

मार्ग-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु सौरक्रमेण (देवोत्थानात्परं हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३।१५ तिथिषु, सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु, अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठ-कन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्,आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्योर्विवाहः शुभः।

• **विवाहोपरान्त प्रथम नदी-तलावादि मे स्नान-मुहूर्त्तः-**

विवाह दिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं।२।३।५।७।१०। ।१३ तिथिषु, चं.,बु.,गृ.,शु. ,दिनेषु, आर्द्रा,पुन.,पु.,आश्ले.,म.,पूफा.,उफा.,ह.,चि.,स्वा.,नक्षत्रेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, लग्नेषु शुभम्।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्			
ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभः	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पुज्यः	१।२।५।७।९	१।२।५।९	१।३।६।१०
निन्द्यः	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

द्विरागमनमुहूर्त्तः - अश्वि. रो. मृ. उत्तरा ३. पुन. पुष्य, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।६।७। ८।१०।११।१२ ।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू.चं.बु.वृ.शु.वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु,२।३। ६।७।१२. लग्नेपुशुभयुतेक्षितेषु, शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते । पापैः३।६।११ स्थितैःशुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेण मार्गफाल्गुन वैशाखमासेषु, शुक्रवाल्यस्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्टगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारकार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्र विचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे.अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनम् शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न. शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नापि. शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु,. लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

वधू-प्रवेश-मुहूर्त्तः-

विवाहादिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पंचम-सप्तम-नवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे,चैत्र-पौष-भाद्र-क्षयमास-मलमास- भिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। न अत्र शुक्रविचारः कालविचारो वा १।२।३।५।६।७ ।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। चं.,गु.,शु.,श.,वारेषु,मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि.,रो.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु. ,मू.,श्र.,ध.,रे., नक्षत्रेषु।२।३।५।६।७।८।९।११।१२। लग्नेषु। शुभैः।१।२ ।५।७। १०।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

यात्रा मुहूर्त्तः

वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास सौरक्रमेंण चैत्र,भाद्र,पौष, रहित मासेषु ।अ.,मृ.,पुन.,पु.,ह.,ज्ये.,अनु.,श्र.,रे. नक्षत्रेषूत्तमः। रो. पू.३, चि., स्वा., मू.,पूषा.,ध.नक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोग, दग्धतिथि मासान्त-संक्रान्ति-मासादि प्रभृतिदोषरहिते। अमृतसिद्ध- सर्वार्थसिद्धादिशुभ योगेषु। अमाशुक्लप्रतिपच्च विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितदिने २ । ४। ६। ८। ९ तारासु। पञ्चमताराया: प्रथमद्वितीयावृत्तेषु च। १ । २।३। ५। ६। ७। ९। १०। ११ चन्द्रेषु। आवश्यके ४ । १२ चन्द्रेऽपि। द्विरागमनान्तरं पितृगृहगतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिण-सम्मुख-कालौ त्याज्यौ। तदन्तरमावश्यके केवलं सम्मुख-कालस्यत्याज्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवशेन-यात्राकार्या

• **सर्व दिग्गमन नक्षत्राणि-** अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य- श्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

• **दिशा शूल विचार -** सोमे शनिवारे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवारे दक्षिणस्यां, रवि शुक्र वासरे च पश्चिमायां, मंगल बुध वासरे च उत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम्।

दिशा शूल-परिहारः- रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृत-पय-गुड-तिल-दधि-यव-माषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत्।

विदिक्(कोन) शूल विचार- शनौ पूर्वे, चन्द्रऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

कालशूलम्- उषाकाले पूर्वस्यां,मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले(गोधूल्यां)पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्,कालशूलदोषत्वात्।

लग्न-चन्द्रयोर्वासः- मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां,मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्राशुभा।

परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।

• **द्वादशचन्द्रस्य विशेष-** अधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

• **चन्द्र विचारः-** जन्मनामग्रामादिराशितोऽभिष्ट दिनस्य चन्द्रं यावत् गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।९।१०।११ संख्याकश्चन्द्र शुभः प्रदः ८ चन्द्रः मृत्यु प्रदः। ४ कलहदः। १२ हानिकारकः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद् दोषशान्त्यर्थमामतण्डुशंख श्वेतवस्त्रादि दानं कार्यम्।

जन्मराशि-नामराशि वशेन-विचारणीयविषयाः-

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्युते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।

जन्म नक्षत्रे त्याज्याः- जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।

जन्ममासे त्याज्याः- क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णविधश्च।

गृहारम्भ(वास्तु)मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहन, फाल्गुन, श्रावण(सौरक्रमेण). मासेषु। माघ,ज्येष्ठ मासे मध्यम, सम्मुख-काल-वर्जित-समये। २।३।५।७ ।१०।११। १२।१३। १५ तिथिषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अ.,रो.,मृ.,पुन, पु.,उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र. ,ध.,शत.,रे. नक्षत्रेषु। चं, बु, गु, शु, श, वारेषु। दिवा, शुद्धसमये।। शुद्धवास्तु-चक्रे,पृथ्वीशयननक्षत्रेषु २।३।५।६।७।८।९।१२। लग्नेषु। लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १। ४। ५। ७।९।१० स्थितैः,पापैः ।३।६।११। स्थितैः, ।८।१२। ग्रहरहिते शुभः तृण-काष्ठादि- गृहनिर्माणम् अशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालयमठादि- निर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम्।

गृहारम्भे वृषचक्रं अर्कभात्

स्थान	न०	फलानी
शीर्षे	३	अग्निभयम्
अ.पा.	४	शून्यम्
पृ.पा.	४	स्थैर्यम्
पृष्ठे	३	धनम्
द.कु.	४	लाभः
पृ.	३	नाशः
वा.कु.	३	धननाशः
मुखे	३	कष्टम्

गृहप्रवेश मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ, कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन,श्रावण सौरमासेषु माघ, ज्येष्ठ मासे मध्यम,। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ **तिथिषु शुक्ल पक्षे। कृष्णे** ५ यावत्। अ., रो., मृ.,पुन, पु., उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र.,ध.,शत.,रे. **नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श.** वारेषु। दिवारात्रौ। शुद्ध समये। शुद्धे कुम्भचक्रे ।२।५।८।११ लग्नेषूत्तमः । ३।६।९।१२ लग्नेषु मध्यमः । जन्मराशि लग्नाभ्यामुपचय- ३।६।१०।११ राश्यांशेः स्थिरराशौ, लग्नात् १।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः। ३।६।११ स्थानेषु पापाः। ४।८ भवने ग्रहरहिते। सम्मुखकाल रहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्ध-समये तृण-काष्ठादिक-गृह-प्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि। अग्निभय राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभ मुहूर्त्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रं अर्कभात्

स्थान	न०	फलानी
मु.	१	अग्निदाहः
पू.	४	उद्वसनम्
द.	४	लाभः
प.	४	धनम्
उ.	४	कलहः
म.	४	विनाशः
अ.	३	स्थिरताः
क.	३	स्थिरता

• **त्रिविधप्रवेशः-** दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवारात्रौ च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः।

राहु(काल)वासः- सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्याम्। फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठ-आषाढ-श्रावणेषु पश्चिमस्याम्। भाद्र-आश्विन-कार्तिकेषु उत्तरस्यां कालवासः

पृथ्वीशयननक्षत्राणि मुहूर्त्तः- सूर्यनक्षत्रात्। ५।७।९।१२।१९।२६ मिते चन्द्र नक्षत्रे पृथ्वी शेते। एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृति कार्यं ट्युबेल ,वोरिंग, प्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्।

चरणिविचारः- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुताम्। अष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते।

तत्फलम्-पशुहानिःपशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाश पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुपशुः।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई

वामपृष्ठगतायोगिनीशुभ, दक्षिण-सम्मुख अशुभ।

देवालय-गृहारम्भ-जलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातंदिक्	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयाम्	ऐशान्याम्	वायव्यम्
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ.सूर्ये	मि.क.सिं.सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सिं.क.सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु.सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे.सूर्ये

जलाशयवाटिका-देवादि-प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तः-

सौर-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे, सू., चं., बु.,गु.,शु., वारेषु ।१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ ।१५। तिथिषु। मृ.रे.चि.अनु.ह.,अश्वि. पु.,स्वा.,पुन.,श्र.,ध.,श.,रो., उत्तरा-३, नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथि- दिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं, स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ।३।६।११। स्थितैः। शुभैः १२।८। भिन्नस्थानगतैः देवादि प्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये,बुधः श्रवणायां, गणेशादयो देवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीमालिकायाञ्च, शंकरस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

ट्यूवबेल, वोरिंग,टंकी प्रभृति स्थापने शुभ मुहूर्त्तः-

कृ.,आश्ले.,म.,पू.३,भ.,वि.,मू., नक्षत्रेषु। २।४।५।६।७।९।१३।१५तिथिषु शुक्लपक्षे,कृष्णपक्षे ५ यावत् चं.बु.वृ.शु.वारेषु। पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा, २।३।४।६।७।९।१०।११।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे शुभैः१।४।५।७।९।१० स्थितैः। पापैः३।६।११गतैः शुभम्।

वापी-कूप-तडागादिखनन-मुहूर्त्तः-

सौर-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ- आषाढमासेषु शुक्लपक्षे शुद्धसमये,रो.,मृ.,पुष्य.,म., उत्तरा-३,ह., अनु.,ध. ,श.,रे.,नक्षत्रेषु। पृथ्वीशयन नक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ।४।१०।११। १२। लग्नेषु राशिषु च, शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयो- रन्यतरस्थ-लग्ने, पापैःनिर्वलैः,शुभैः सुबलिभिः शुद्धे वापी-कूप-तडागादि-चक्रे शुभम

वापीचक्रंरोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलं
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमः
पादायोः	८	दुःखम्

खलस्थापनमुहूर्त्तः- ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

धान्यस्थापन-मुहूर्त्तः- अश्वि.,रो.,मृ.,पुन.,पुष्य,चि.,ह.,उ.३,स्वा.,अनु.,मू.,श्र. ध. , श.,रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिन लग्नेषु, २।३।५।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम्।

हल प्रवहण मुहूर्त्तः-

अश्वि. रो. मृ. पुन.पुष्य. म. उत्तरा३, ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, ।चं. मं. बु. गु. शु. वारेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्वलैः। शुभैः सुबलिभिः। चन्द्रे जलचर-राशिस्थे तत्रवांशे वा । गुरौ लग्नस्थे शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम्।

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र-	३	८	९	८
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं

बीजवपन-मुहूर्त्तः

अश्वि., रो., मृ., पुष्य,म. चि., ह., उ.३, स्वा., अनु., श्र., मू. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, चं., बु., गु., शु.दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्नेशुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रत्रिकोणे पापैः त्रिषडायैः शुभम्।

बीजवपने फणिचक्र राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र-	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं

कूपचक्रंरोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्
दक्षिण	३	निर्जलम्
नैर्ऋत्य	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतजलम्
वायु	३	जलहानिः
उत्तर	३	मधुरजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्

अथवा सूर्यक्षादिप्येवमेव

तडागचक्रंसूर्यभात्

स्थान	न	फलानि
पूर्व	२	जलशोषः
अग्नि	३	बहुजलम्
दक्षिण	२	जलहानिः
नैर्ऋत्य	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
ईशान	३	नष्टजलम्
मध्य	५	पूर्णजलम्
वाह्य	३	अमृतजलम्

धान्यरोपणमुहूर्त्तः- रो. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. गु. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

धान्यछेदनमुहूर्त्तः- मू.ज्ये.आश्ले.आर्द्रा, पूभा.ह.कृ. ध. श्र.मृ.स्वा.म.उत्तरा३,पूषा,भ.चि.पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.गु.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्। अन्यान्यपि यव- गोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि।

मेधिरोपणमुहूर्त्तः- अ.रो.मृ.पुन.पु.उत्तरा३,ह. चि. स्वा.अनु. श्र.ध.श.रे.नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं शुभम्।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः-वर्षेश सूर्य वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मंगले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बकम्, गुरौ आम्रम्, शुक्रे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

कणमर्दनमुहूर्त्तः- मघा.पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः- अ.रो.पुन.पु.उत्तरा३, स्वा.वि.ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

बीजस्थापनमुहूर्त्तः- रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. गु. शु. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्ण ५ यावत्। २।३।५।७।१०। ११।१२।१३।१५, तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्।

वृक्षादिरोपण-मुहूर्त्तः- अश्वि.,रो.,मृ., पुष्य, उ.३, ह चि., वि., अनु., मू., श., रे., नक्षत्रेषु, चं., वृ., शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्- पञ्चक (ध., श., पू.भा., उ.भा., रे) रहित नक्षेषु। १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

नवान्न भक्षण मुहूर्त्त

अ., रो., मृ., पुन., पु., उ.३, ह., चि., स्वा., अनु., श्र., ध., श. , रे. नक्षत्रेषु शुभम्। मूले नवान्नपारवणं मध्यमम्। सू., च., बु., गु. वारेषु। शुक्ल पक्षे २।३। ५।७।८।१०। १२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं, १३ अंशयावत् आवश्यके २३ अंश यावदपि। ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, लग्नेशुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम्। नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्णपक्ष- अष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघा- भरण्याश्लेषाऽऽर्द्रा- नक्षत्र-सौर-क्रमेणकार्तिक-पौष- चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशी - रिक्तामंगलशनि-शुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपञ्चमी यावत् ग्राह्यः।

पुराणादि श्रवण मुहूर्त्तः

अश्वि., रो., मृ., पुन., पु., ह., चि.,स्वा, अनु., मू., श्र. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे २।३।५।७।८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु। कृष्णपक्षे५ यावत्। सू.,च., बु., गु., शु. दिनेषु । शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलाढ्ये, शुभैः ।१।४।५।७।९।१०। स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः। उत्तरायणे,श्रावण., आश्वि., कार्तिक, अग्र. मासेषु। तीर्थक्षेत्रे,देवालये, सिद्धि क्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तंविनाऽपि शुभम्।

मन्त्रग्रंहण मुहूर्त्त-

अश्वि,रो.,पुन.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,अभि.,श्र.,ध.,श.,रे. ,नक्षत्रेषु ।२।३।५।७।१० ।११।१२।१३।१५तिथिषु। अत्यावयके कृष्णपक्षे ५ यावत्। सू.,चं.,बु.,गु.,शु.,वारेषु। शुद्धसमये प्रातः मध्याह्ने वा ।२।३।५।७।९।१२। लग्नेषु,शुभैः ।१।४।५।७। ९।१०।गतैः,पापैः।३।६।११ स्थितैः,सौरक्रमेण वैशाख, श्रावण,आश्विन,कार्तिक,अग्रहण,माघ, फाल्गुन,मासेषु। संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये,ग्रहणे,सिद्धक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्

व्रतोद्यापन-मुहूर्त्तः-

अश्वि,रो.,पुन.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,श.,रे. ,नक्षत्रेषु । शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। कार्तिक, माघ, फाल्गुन,वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ,मासेषु। शुभलग्नेषु। कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनञ्च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः ।१।४। ५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ।३।६।११। स्थितैः,पंचमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यक

कल्याणार्थशान्तिःमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पु. उ.३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।६।७। ८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु शुद्ध समये आवश्यकेऽशुद्धेऽपि चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षयमास रहिते शुभम्। शुभलग्ने लग्नस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे दशमस्थे सूर्ये अष्टमे लग्ने च पाप रहिते शान्तिःशुभाः। शुभम्।

रक्तमोक्षण(आपरेशन) मुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत.नक्षत्रेषु सू. मं. वृ. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु चन्द्र तारा अनुकूले सति शुभम्।

चिकित्सा मुहूर्त्तः-

अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत.नक्षत्रेषु सू. चं. मं. वृ. शु. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु शुभाः।

भैषज्य भक्षण मुहूर्त्तः

अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु सू. चं. बु. वृ.शु. दिनेषु ३।६।९।१२ लग्नेषु शुभैः । ३।६।९।१२ राशि स्थितैः लग्नात् ७।८।१२ ग्रह रहितेषु औषधिभक्षणं शुभम्। जन्म नक्षत्रे भैषज्यभक्षणं शुभम्।

नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्डी यज्ञ मुहूर्त्तः-

वैशाख,फाल्गुन,माघ,श्रावण अग्रहण, आश्विन, कार्त्तिक मासाः पूजायां तु शुभावहाः। ३।५।१५।७।१३।१०।१२।६ तिथिषु। सू.चं.बु.गु.शु. वारेषु। अश्वि. रो. स्वा. पु. ज्ये. उत्तरा३, पुन. ।

होमाहुतिविचारः- सूर्यभात्त्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले।।

आहुति दोष परिहारः-

विवाहयाग व्रतबन्ध दीक्षा सीमन्तचण्डी गृहवास्तुशान्तौ। आदित्यसौरीकुजराहु केतवो न दोषदा यज्ञविधायिनां खलु।।

दुर्गाहोमे आहुतिचक्र विचारः-

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहीऐंद्री त्वथ चण्डिका च। मेघा च माहेश्वरीनारसिंही क्रमेण सूर्यादिनभं त्रिकं च। श्रीपुत्रदा शोक भयौ धनाप्तिर्ह्यतस्तथा राजपदाप्तिरोगौ। विद्यासुखाप्तिर्नृपतेश्च लाभः फलानि दुर्गा हवने क्रमेण।।

विपणि मुहूर्त्तः-

मृग.रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तरा३, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे १० यावत्१।२।३। ४।५।६।७ ।८।९।१०।१२ लग्नेषु लग्ने चन्द्र शुक्रे पापैः ८।१२रहितैःशुभैः२।१०।११स्थितैःशुभाः।

वस्तूनांविक्रयः मुहूर्त्तः-

भ.,कृ.,.आश्ले.वि.पू.३ नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु चं.बु.वृ.शु. दिनेषु शुभैः। १।२।४।५।७।९।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

वस्तूनांक्रयमुहूर्त्तः-

शुभतिथिदिनलग्नेषु अ.चि.स्वा.श्र.शत.रे.नक्षत्रेषु शुभः।

9L

स्वामिसेवा(नौकरी) मुहूर्त्तः-

अश्वि. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु। सू. बु. गु. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते। सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे। सेव्यसेककयोर्योनिर्मैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः -

अश्वि. मृ. पुष्य,पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। सू.मं. बु. गु. शु. दिनेषु, शुद्धसमये ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम्।

• ऋणप्रदानमुहूर्त्तः(द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्तः) -

स्वा. पुन. मृ. रे. चि. अनु. वि.पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु,१।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे,५।८।९ ग्रहरहिते। चं.गु.शु.शु. वारेषु शुभम्।

ऋणदाने निषिद्धसमयः-

बुधवासरः, भरणी, कृ. आर्द्रा. आश्ले. मघा. पूर्वा३. चि. ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च।

ऋणग्रहणेनिषिद्धसमयः-

रविमंगल दिने। संक्रान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रञ्च। एषु ऋणार्पणं शुभम्। कुंभ लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु शुभतिथिषु। चैत्रभादवपौषमलमासक्षयमासभिन्न समये शुभः।

मोटर-बस-साइकिल-यानादि-चालयन मुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु चं. मं. गु. शु. श. दिनेषु। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेष बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते। लग्नेशदशमेशसप्तमेश-नवमेशैरति १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः। पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम्।

इष्टिकारम्भ मृहूर्त्तः

अ., रो., मृ., पुष्य, उ.३, ह., ज्ये., श्र., रे. नक्षत्रेषु। वृषसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रवि, गुरु, शनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्र,भाद्र, पौष, मलमास, क्षयमास भिन्नसमये शुभः।

मील चालन मुहूर्त्तः

शुभतिथिदिननक्षत्रेषु। १।४।७।१० लग्नेषु। शुभैः१।४।५।७।१० स्थितैः, लग्नेश धनेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम्।

उग्रकर्म मुहूर्त्तः:-

पूर्वा३, भ, मघा, मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा नक्षत्रेषु मं. श. दिनेषु। १।८।१०।११ लग्नेषु। १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम्।

इन्धन स्थापन मुहूर्त्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम्।

पञ्चक(भदवा)विचारः-

धनिष्ठा-शतभिषा पूर्वभाद्रोत्तरभाद्रे रेवतीनक्षत्राणि पंचकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्गमन- गृहाच्छादन- प्रेतदाहतृणकाष्ठादि- संग्रहशय्यावितान निर्माणादिकं च त्यजेत्। **तत्रापवादः**-वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथि-मासान्तादिविचार-

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्ये अष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्य निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकल शुभकार्येषु त्याज्यम्।

नक्षत्र संज्ञा-

चरसंज्ञक नक्षत्र- स्वाती,पुनर्वसु,श्रवण,धनि.,शतभिषा ये नक्षत्र और सोमवार ये चर और चलसंज्ञक हैं,इनमें हाथी,घोड़ा,पर चढ़ना,फूलवारी आदि लगाना और यात्रादि तथा लघुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म करना भी शुभ है।

उग्रसंज्ञ नक्षत्र- पूर्वा३,भ.,म.और मंगलवार ये उग्र और क्रूरसंज्ञक हैं,इनमें घात अग्नि कार्य,विषादिका प्रयोग,शस्त्र वनाना तथा दारुण संज्ञक नक्षों के कार्य शुभ होते है

मिश्रसंज्ञक नक्षत्र- विशाखा,कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधरण संज्ञक हैं,इनमें अग्निकार्य और वृषोत्सर्ग,उग्रसंज्ञक नक्षत्र मे भी कार्य करना शुभ होता है। क्षिप्र और लघुसंज्ञक नक्षत्र- हस्त,अश्विनी,पुष्य,अभिजित् नक्षत्र और गुरुवार,क्षिप्र और लघुसंज्ञक हैं,इनमें दूकान लगाना,रति,शास्त्राध्ययन,आभूषण बनाना या वनवाना,चित्र रचना,६४कला सीखना।

मृदुसंज्ञक नक्षत्र- मुगशिरा,रेवती,चित्रा,अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं इनमें गीत,वस्त्र,खेल,मित्रकार्य,और आभूषण बनाना या धारण करना शुभ है।

चुल्हिकास्थापन मुहूर्त्तः

अ.,भ.,वि.,रो.मृ.,उ.३,कृ.,मू.,पू.षा.,ध.,आर्द्रा., नक्षत्रेषु। सू.मं.श. दिनेपु, शुभतिथि लग्नेषु शुभम्।

चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनभावधि

स्थान	नं०	फलम्	स्थान	नं०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृति

युद्धयात्रयां कुलकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथय	दिनानि	फलानि
कुल	पू३अश्वि,पुष्यम,मृ श्र,कृ,ज्ये,वि,चि	४।८।१२।१४	मं,शु.	स्थायिजयद
अकुल	भर,स्वा.,अश्ले,ध.,रे,ह, रो.,अनु,पुन,उत्तरा.३	१।३।५।७।९। ११।१३।१५	सू,च,वृ,श.	यायिजयद
कुलकुल	आर्द्रा,मू,अभि.,श.	२।६।१०	बुधः	उभयोःसन्धिः

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	जंघयोः	शुभः
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	हस्तद्वये	लाभः
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	हस्तद्वये	लाभः
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	स्कन्धयोः	विजयः
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	नाभौ	धनाप्तिः
नासाग्रे	रोगः	कटिभागे	पशुलाभः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	द.मणिबंधे	हानिस्तापः
वामकर्णे	लाभः	वा.मणिवंधे	कीर्तिनाशः
नेत्रयोः	धनलाभः	हृदये	धनाप्तिः
द.भुजे	पराक्रमः	मुखे	मधुरभोजनम्
वामभुजे	राजभयम्	केशान्ते	कष्टम्
कण्ठे	शत्रुनाशः	गुल्फयोः	धनम्
स्तनयोः	सौभाग्यम्	द.चरणे	भ्रमणम्
उदरे	भूषणाप्तिः	वा.चरणे	बन्धुनिग्रहः
पृष्टदेशे	बुद्धिनाशः	पादांन्ते मध्ये	स्त्रीनाशः
जानुद्वये	शुभः		

वारतिथिविचार यदिपल्ली(छिपकली)

१।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक होता है। तथा सोम, बुध, गुरू, शुक्र वार में। पुष्य,अश्वि.रो.मू.पुन.उ.फा.ह. चि.स्वा. ध.रे.अनु.शत.नक्षत्रों में गिरे तो शुभ फल देता है। उपरोक्त में निर्दिष्ट सभी फल पुरूषो के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वाम अंग में विचार करना चाहिए। पुरूषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ फल होता है। यदि छिपकिली या गिरगिट शरीर की दाहिनी तरफ से चढकर बांयीं तरफ से नीचे आ जाय तो दोष नहीं होता। **दोष की शान्ति-** शान्ति के लिए वस्त्र सहित स्नान कर पंचगव्य(गाय की गोबर,मूत्र, दही,दुध,घी मिलाकर) ग्रहण करना चाहिए। शिव मन्दिर मे दीपजलाना, महामृत्युञ्जय मन्त्र का कम से कम १०८ वार जप, ॐ नमः शिवायै ॐ नमः शिवाय का ११ माला जप कर यथा योग्य भोज्यप्रदार्थ, वस्त्रादि दान करने से दोष की शान्ति हो जाती है।

स्वप्नफल(सपना)विचार-

सवप्न	फल
पत्रपढ़ना=	शुभसंदेश प्राप्ति
कुएँ का पानी=	लाभ,विजय
आकाशदेखना=	ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्रप्राप्ती
रत्न-नगीना=	दुःख,व्यय।
अग्नि उठाना=	अनुचितधनलाभ
आगजलाकरपकड़ना=	कष्ट,अपव्यय।
सुखा अन्न खाना=	अनेक कष्ट
मेघदेखना=	दुःख,कष्ट
बादल देखना=	राज्यलाभ
अँगूठी पहनना=	धनधान्य की वृद्धि
सूखा वागदेखना=	आपत्ति आना
बालदेखना=	धनलाभ
कटेबालदेखना=	सन्तानप्राप्ति
मुर्दादेखना=	धनलाभ
जहाजदेखना=	यात्रा
समुद्रदेखना=	यश एवं धनकी प्राप्ति
शरावपीना=	अपयश हो
बिल्ली,बन्दर काटना=	रोगी होना।
कमलदेखना=	उन्नति हो।
कुत्ता देखना=	उत्तममित्र मिले।
खाईदेखना=	धन एवं प्रसिद्धि मिले
टोपीदेखना=	दुःख दूर हो।
कैंचीदेखना=	घर मे कलह हो।
पूजाकरना=	पदोन्नति,लाभ।
दीपक जलतेदेखना=	आयुवृद्धि हो।
सुगन्धलगाना=	विद्वान एवं पण्डित हो।
चादर देखना=	बदनामी हो।
झरना देखना=	दुःख दुर हो।
चाँदी देखना=	धन की वृद्धि हो।
सिंहासन देखना=	सुखप्राप्त हो।

स्वप्न	फल
जहाज देखना=	परेशानी दूर हो।
अर्थीदेखना=	रोगमुक्त,आय मे वृद्धि।
नदी का पानी पीना=	राज्य से लाभ।
लाल फूल देखना=	पुत्र सुख,भाग्योदय
सफेद फूल देखना=	दुःख हरण।
पत्थर देखना=	मित्र से कष्ट, दुःख
बाजार=	शुभ
सुराही=	कुसंगति।
चश्मा लगाना=	ज्ञाव मे वृद्धि
धनुष खीचना=	लाभ प्रद यात्रा।
रोटी खाना=	वनवृद्धि,पदोन्नति।
रस्सी =	कष्टकर यात्रा।
दाँत टुटना=	दुःख,झण्झट
दरवाजा=	मित्रता बढ़े।
कीचड़ में फँसना=	कष्ट, अपव्यय।
कोयला देखना=	व्यर्थ की झण्झट।
घर बनाना=	प्रसिद्धि प्राप्त हो।
लोहा=	धनलाभ।
घोड़ा=	संकट से छुटकरा।
घास का मैदान=	धन संग्रह।
घोड़ा पर चढ़ना=	पदोन्नति हो।
मोती देखना=	लड़की पैदा हो।
मुर्दे से बात करना=	मनोकामनापुरी हो
बड़ी दीवाल देखना=	सम्मान मिले।
जमीन पर विस्तर लगाना=	आयु वृद्धि
रूई देखना=	स्वस्थ रहना।
भूकम्प देखना=	सन्तान से कष्ट।
खूँटा देखना=	धार्मि कार्य मे रुचि।
दतुवन करना=	सुख शान्ति,

स्वप्न फल कब मिलेगा?-रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में द्वितीय प्रहर का ८ मास में तृतीय प्रहर का ३ मास मे अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। बहुत बड़ा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। **अशुभ स्वप्नदोष शान्ति**-दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने निमित्त मृत्युञ्जय का जप होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन,विष्णु सहस्र नाम,गजेन्द्र मोक्ष,वा चण्डी पाठ,ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

अंगस्फुरणफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	कुक्षौ	प्रीतिः
ललाटे	पदलाभः	उदरे	धनम्
स्कन्धे	भोगः	लिंगे	स्त्रीसमागमः
भ्रूमध्ये	सुखम्	गुदे	वाहनाप्तिः
भ्रूवोः	सुखम्	वृषणौ	पुत्रलाभः
कपाले	शुभम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	हनौ	भयम्
नेत्रकोणयोः	धनम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	ग्रीवाधः	शत्रुभयम्
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	पृष्ठे	पराजयः
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनं
नेत्रापांगे	स्त्रीलाभः	कपोलौ	व्यभिचारः
नासिकयोः	सुखम्	बाहौ	प्रियलाभः
हस्ते	धनलाभः	बाहुमध्ये	धनागमः
वक्षसि	सुखम्	वस्तिदेशे	उन्नतिः
हृदये	इष्टसिद्धिः	उरसी	वस्त्रलाभः
कटिदेशे	प्रमोदः	जानुन्योः	भयम्
नाभौ	स्त्रीनाशः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
कटिपार्श्वे	प्रीतिः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	पादतले	पराक्रमः
भगे	पतिसमागमः	पादयोः	हानिः

स्वप्न नाशक यन्त्र-

गं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ढं	चं
नं	छं	जं	टं

शुभ मुहूर्त्त में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगन्ध की स्याही से लिखकर सविधि पूजन कर गले में धारण करने से दुःस्वप्न दोष दूर होता है

महेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि- मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द्र- मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व२२
मंगल-व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४,अ४
बुध- व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ शू६
गुरू-अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र-शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि-शू४ व४,शू६,अ४,शू२,अ४,शू२,अ४,शू४,व४,अ४,व४,अ६ व४ अ२,शू२

ज्येष्ठ आषाढमासयोः

रवि-शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द्र-व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल-अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध-शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
गुरू-अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शू४ व४
शुक्र- शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि-शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

आश्विन कार्तिक मार्ग पौष मासेषु

रवि- मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द्र- अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल- मा२ व६ अ१० व६ शू२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध- शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
गुरू- अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र- अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ अ६ मा६
शनि- मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ११ शू४ व७ मा२ शू६

माहेन्द्रादि योग फल-

न वार तिथि नक्षत्रं न योगः करणन्तथा । शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।।
माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये मरणं ध्रुवम्।।
ज्योतिषां ग्रह शास्त्राणां सारमुधृत्य यत्नतः। क्रियते मिहिरेणेदं नाराणां हितकाम्यया।।
अयं रव्यदिवारेषु महेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाण कालेन व्यतीतो भवतीति सफलं चक्रे विलोकनीयम्।।

माहेन्द्रादिचक्र के प्रयोग की विधि- चैत्र वैशाख श्रावण भाद्र माघ फाल्गुन मास हो तो रविवार को सूर्योदय के पश्चात् पहला २ घटी माहेन्द्रयोग है, फिर८घटी अमृतयोग आगे १० घटी वक्रयोग आदि होगा। वक्र एवं शून्य योग अशुभ है, जवकि माहेन्द्र एवं अमृतयोग शुभ है। यदि अति आवश्यक हो तो यात्रा मुहूर्त न होने पर भी महेन्द्र एवं अमृत योगों में यात्रा की जा सकती है।

यात्रा में चौघड़िया मुहूर्त्त

उद्वेगश्चामृतो रोगो लाभः मृतिः। सूर्यः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरामृतः।।
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पच्चमगो ह्यषट्। सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनिर्बुधः।।

शीर्घता में कोई मूहूर्त न मिलता हो तथा अचानक यात्र करनी पड़े, तो उस समय चौघड़िया मूहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर, अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे का रात्रि हो, तब एक चौघड़िया १.३०(डेढ़)घण्टा अर्थात् पौने चार घटी का होगा।

जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिनेट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जायें, तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ीयों का समय ज्ञात होते जावेंगे। उस आठों चौघड़ीयो में कौन सा ग्राह्य और कौन सा त्याज्य है, यह **दिन की चौघड़ीया** के चक्र में उस दिन के **वार** के सामने चक्र मे देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो, तो उसदिन के रात्रि मान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनेट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जायेगा। **शुभ,लाभ,अमृत एवं चंचल शुभ होते हैं। काल,रोग एवं उद्वेग अशुभ होते हैं।**

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त-

होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा
वार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
चन्द्र	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल

अर्धप्रहरा बोधक चक्र

दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिवा	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रि	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त्त- सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक हैं। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा-** टेण्डर देन व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चन्द्रमा की होरा-** सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा-**युद्ध यात्रा कर्ज लेने देने, सभा सोसायटी में आना जाना और मुकदमा कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा-** में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन ❖

❖व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थन पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा-** विवाह सम्वन्धी कार्यक्रम, वड़ो से मिलना, कोष संग्रह, नविन काव्या लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा-** यात्रा भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्य वर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा-** भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं। प्रत्येक होरा एक घण्टे का होता है । जिस दिन जो **वार** होता है, उस वार के आरम्भ(अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा उसी वार को होरा होता है इस के वाद एक घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता हैं। इसी प्रकार दूसरे होरे छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता हैं। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले बार के सूर्योदय समय उसी अगले वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए उपयुक्त होरा लिखि है, उस के अनुसार ही उस होरा में(१घण्टे) में वह कार्य करेंगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियो ने होरा को **क्षणवार** कहा है। वार से भी क्षण वारमें प्रधानता मानी गयी है। इसलिए यदि वार और क्षणवार दोनो अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नही हो तो **क्षणवार** अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे- पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो, तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए समय सोम की होरा(क्षणवार) हो, उस समय

नष्ट(खोई-हुई) वस्तु ज्ञान चक्र

संज्ञा	नक्षण	लाभालाभ	दिशा
अन्धाक्ष	रो.,पुष्य,उ.फा.,वि.,पू.षा.,ध.,रे.	शीघ्रलाभ	पूर्व में
मन्दाक्ष	मृ.,श्ले.,ह.,अनु.,उ.षा.,श.,अश्वि.	प्रयत्न से लाभ	दक्षिण में
मध्याक्ष	आर्द्रा,म.,चि.,ज्ये.,अभि.,पू.भा.,भ.	दूर श्रवण मात्र	पश्चिम में
सुलोचन	पुन.,पू.फा.,स्वाति,मू.श्र.उ.भा.,कृ.	अलाभ	उत्तर में

नष्टवस्तुज्ञानम् -

प्रश्नकालीन तिथि वार नक्षत्र और लग्नांक जोड़ में तीन और जोड़कर पॉच से भाग दें।१ शेष वचे तो भूमि पर प्राप्य,२ वचे तो जल में अप्राप्य,३ वचे तो किसी उँचे स्थान पर अप्राप्य,४ वचे तो नष्ट,५ शेष में केवल शोक सन्ताप ही होगा।

सिद्धादियोगचक्र तिथि-नक्षत्र-वशेन

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थ-सिद्धियोगाः	अश्वि.मू.पुष्य. हस्त.	रो.मृ.अनु.श्रवण.पुष्य	अश्विनी	रोहि.मृ. हस्त अनु.	अश्वि.पुन पु.अनु.रे.	अश्वि.पुन. अनु.श्र.रे.	रोहिणी स्वा.श्रणव.
मृत्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	००	०० ००	४।९।१४	०० ००	०० ००	०० ००	४।९।१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

तारा	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	वधः	साधकः	प्रत्यरी	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	७।१६।२५	६।१५।२४	५।१४।२३	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	००	गुडम्	००	तिलाः	००	लवणम्	००	००

भद्रा वासः- कुंभ, मीन, कर्क, सिंह- इन राशियों में चन्द्रमा रहें तो मृत्युलोक में,मेष, वृष,मिथुन और वृश्चिक के चन्द्रमा में स्वर्ग में, कन्या,तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में पाताल में भद्रा रहती है। भद्रा जहाँ रहती है वहाँ ही इसका फल भी होता है।

भद्रावास फलः-

स्वर्गे च लभते सौख्यं, पाताले च धनागमम्।
मर्त्यलोके भवेच्चिन्तां एवं भद्राफलोदितम्।।

स्वर्ग में भद्रा रहे तो शुभ कारक और पाताल में रहें तो धनागमन करने वाला होता है। यदि भद्रा मृत्युलोक में रहें तों सभी कार्यो को विनाश करने वाला होता है।

शिववास एवं फल

तिथिं च द्विगुणीं कृत्य वाणैः संयोजयेत्ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत् ।।
एकेनवासः कैलाशे द्वितीये गौरी सन्निधौ ।
तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये।।
पंचमे भोजने चैव क्रीडायांषण्मिते तथा।
श्मशाने सप्तशेषे च शिववासः इतीरितः।।
फलम्- कैलाशेलभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः।
वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभा सन्तापकारिणी।।
भोजने च भवेत् पीडा क्रीडायां कष्टमेव च।
श्मशाने मरणंज्ञेयं फलमेव विचारयेत्।।

शिववास तिथि

शुक्लपक्ष- २, ५, ६, ९, १२, १३
कृणपक्ष- १, ४, ५, ८, ११, १२, ३०
विधि-(शुक्लादितिथिसं.X२+५)÷७=१।२।३
शेष शुभ, अन्याशुभ।

अग्निवास चक्र

शुक्लपक्ष में				कृष्णपक्ष में				र.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.
३	७	११	१५	०	४	८	१२	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.
०	४	८	१२	१	५	९	१३	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.

अग्निवासः - **सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताः शेषे गुणेऽभ्रे भुविवह्निवासः।**
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च।।

शुक्लादि पक्ष से वह तिथि जिसमें कर्म हो उसकी संख्या ५ या १० जो भी हो उसमें वर्तमान रव्यादि वार की संख्या जोड़कर १ संख्या और जोड़ देनी चाहिये। फिर ४से भाग देने पर यदि ३ या ०(शून्य)शेष रहे तो अग्नि का वास भूमि में होता और वह सुखकारी होता है। यदि १ या २ शेष रहे तो अशुभ अर्थात् सुख का लेश भी नहीं होता।
अर्थात्-(शुक्लादितिथिसं.+सूर्यादिदिनसं.+१)÷४ =३,० शेष शुभ

अग्निवास की विशेषताः- विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चुड़ोपनीतिग्रहणेयुगादैः।
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिंत नीयम्।।
विवाह,यात्रा,व्रत,यज्ञ,नित्यनैमित्तिककार्य, यज्ञोपवीत,ग्रहण, रोग,पीड़ा तथा दुर्गापूजन आदि मे अग्निवास का विचार नहीं करें।

अथ वाजसनेयि सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिरि पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख(पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री,सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी- १. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः। • विनियोग मन्त्र-जल लय- ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर कें सिक्त करी-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सब वस्तु के सिक्त करी।

तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंगुठी) धारण करी- ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिना हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी- ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

चन्दन करी- ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक संकल्प करी - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य उत्पात्तदुरितक्षयपूर्वक- श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

जल लय- अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषि रनुष्टुप्र् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्व मेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततोरात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।। एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तदुत्तर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह कें दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

• प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी - ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती-पङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्याग्निवाय्वादित्य वृहस्पतिवरुणेन्द्र- विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।

शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी-

• प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१.दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाकें बन्दकय वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२.द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा कें दावि दीर्घकालधरि वायुकें धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।

३.तृतीय दहिना पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

• प्रातः[1] कालीन सन्ध्याक समय-जल लय- सूर्य्यश्चमेति ब्रह्मात्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्य्यो देवता प्रातराचमने विनियोगः।

सूर्य्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चदुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।। एहि मन्त्रें प्रातः कालमे आचमन करी।

तदुत्तर वाम हाथ मे जल लए विनियोग वाक्य पढ़ि दहिना हाथक अंगुष्ठ आ अनामिका आंगुर सँ एक-एक मन्त्र पढ़ैत कुल सात मन्त्र सँ सात बेर माथ पर जल प्रक्षेप करी- ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः। १.ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २.ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३.ॐ महे रणाय चक्षसे। ४.ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५.ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६.ॐ उशतीरिव मातरः। ७.ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८.ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९.ॐ आपो जनयथा च नः। तदुत्तर दहिना हाथ में जल लए एक बेर विनियोग वाक्य आ तीन बेर "द्रुपदादिव" इत्यादि मन्त्र पढ़ि ओहि अभिमन्त्रित जल कें देह पर सिक्त करी- द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवताः सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः।

मन्त्रः-ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

तदुत्तर दहिना हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जलक स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल कें अपन वाम भाग मे विना देखने नीचा खसा दी- ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः।। तदुत्तर दहिना हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाड़ भए अगिला मन्त्रे अर्घ्य दी-

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं,भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् । एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

• ॐ उद्वयमिति हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

• उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दःसूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवँव्वहन्ति केतवः दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम्।।

चित्रमिति कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवतां सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ग्वं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

• ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीत-पुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

• गायत्री जप विधि :-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत नीचा देल क्रमशः हृदयादि अंगक स्पर्श करी। १.ॐ हृदयाय नमः। २.ॐ भूः शिरसे स्वाहा ३. ॐ भुवः शिखायै वषट्।
४.ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५.ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्रत्रायाय वौषट्
६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

व्याहृति-मन्त्रस्य प्रजापति-ऋषिर्गायत्री उष्णिग् अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वायव्यादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता।।
आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

अगिला मन्त्रें गायत्रीक विनियोग तदुत्तर आवाहन करी- तेजोऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीच्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य-मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।। आवाहन कऽ निम्नलिखित विनियोग पढ़ी अगिला मन्त्रे प्रणाम करी- परोरजस इति विमल ऋषिरनुष्टुप् छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थापने विनियोगः।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे।
नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदो मा प्रापत्

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव।।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ बेर गायत्री मन्त्र जपी- ॐ भुर्भूवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।।

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री के जप समर्पित करी-

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तदनंतर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी- ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि।
ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्।।

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य कें अर्घ्य दए प्रणाम करी-ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य कें प्रणाम करी-

ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

।। इति सन्ध्या बन्धन विधि।।

नोट- तर्पणाधिकारी व्यक्ति तर्पण कय सूर्य के अर्घ्य देथि।

वाजसनेयि तर्पण विधि-

१.देवतर्पण- नदी वा पोखरि में तीतले वस्त्र पहिरि नाभि तक पानि मे ठाढ़ भय वा स्थल पर तर्पण करवाक हो तँ सुक्खल वस्त्र धारण कय आसन पर पूव मुँह बैसि दहिना हाथ में तेकुशा लय वाम हाथ मे उपयमन अर्थात् जुट्टी सन गुह्ल कुश (विरणी) लय दहिन हाथ मे यव ओ जल लय देव तीर्थ सँ नीचाँ मे राखल कुश पर जल खसवैत तर्पण करी-

ॐ तर्पणीया देवा आगच्छन्तु। ॐ ब्रह्मास्तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्।

ॐ देवाः यक्षास्तथा नागाः गन्धर्वाऽप्सरसोऽसुराः।
क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जम्भकाः खगाः।।
विद्याधराः जलाधाराः तथैवाकाशगामिनः।
निराधाराश्च ये जीवाः पापे ऽधर्मेरताश्चये।।
तेषामाप्यायनायै तद् दीयते सलिलं मया।।

तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ(कनिष्ठा आंगुलिक मूल भाग) सँ सनकादि ऋषि सभक तर्पण एक-एक बेर जल दए करी-ॐ सनकादय आगच्छन्तु एहि मन्त्र सँ आवाहन करी।

ॐ सनकश्च सनन्दश्च तृतीयश्च सनातनः।
कपिलश्च आसुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा।।
सर्वे ते तृप्तिमायान्तु मद् दत्तेनाऽम्बुना सदा।।

ऋषि तर्पण-

पुनः पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय देव तीर्थ(अंगुली क अग्रभाग) सँ मरीचि आदि दस ऋषिक तर्पण एक-एक बेर जल दैत करी- ॐ मरीच्यादय आगच्छन्तु। आवहन करी। ॐ मरीचिः तृप्यताम्। ॐ अत्रिः तृप्यताम्। ॐ अङ्गिराः तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यः तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुः तृप्यताम्। ॐ प्रचेताः तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठः तृप्यताम्। ॐ भृगुः तृप्यताम्। ॐ नारदः तृप्यताम्।

दिव्य-पितृ तर्पण-

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ(अंगुष्ठ आ तर्जनीक मध्यक मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा बिना तिलो के तीन-तीन बेर जल दैत अग्निष्वात आदिक तर्पण करी।

ॐ अग्निष्वात्तादय आगच्छन्तु। आवाहन करी।

ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ सौम्याः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ हविष्मन्तः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ उष्मपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ सुकालिनः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ बर्हिषदः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ आज्यपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

यम तर्पण

ऊपर मे वर्णित विधि के अनुसार १४ यमक तर्पण करी।

ॐ यमादय आगच्छन्तु। आवहन करी।

ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः। ॐ औदुम्बराय नमः। ॐ दध्नाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। तकर बाद ॐ चतुर्दशैते यमाः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः। ई वाक्य पढ़ी।

पितृ-तर्पण-

(उपयुक्ते विधि सँ पितृ-तर्पण करी। पुरुष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे "सतिलम्" नहि पढ़ी।) अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) पिता अमुक (पिताक नाम)शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) पितामहः अमुक (बाबा क नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।३बेर।। अन्त मे-"ॐ तृप्यध्वम्-३" ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) मातामहः अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नाना क गोत्र) प्रमातामहः अमुक(परनानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ।। अन्त मे ॐ तृप्यध्वम्- ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी।।

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ बेर।। ॐ अद्य अमुक (अपन गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक (अपन गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुकी (पर दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुकी (नानी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(नानाक गोत्र)गोत्रा प्रमातामही अमुकी (पर नानी नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(नानाक गोत्र)गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी (वृद्ध परनानी कनाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य सम्बन्धी लोकनि कें गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कें जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।

ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।।

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पितर कें दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कें तीन बेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

एषो अर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।१।।

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।

अनुकम्पय मामू भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।२।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।३।। अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कें प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः

छन्दोगक तर्पण विधि-

दहिना हाथ मे तेकुशा लए सव्य(वामस्कन्धस्थापित यज्ञोपवीती) भए वाम हाथ के दहिना हाथक नीचा भाग मे स्पर्श कयने भूमि पर रही तऽ पूव, उत्तर अथवा ईशानकोणाभिमुख बैसि दहिना जांघ के खसेने पवित्र भूमि पर राखल तेकुशा पर अथवा एक टा सराय मे राखल जल मे(ओहि जल मे बिना तेकुशा राखने), यदि जल मे ठाढ़ रही तऽ पूर्वाभिमुख भए देवतीर्थ (अंगुलिसभक अग्रभाग) सँ पहिने देवतर्पण करी। यथा परिस्थिति तेकुशा पर अथवा जल मे तीन बेर जल दैत पढ़ी-

ॐ देवास्तृप्यन्ताम् । तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ(कनिष्ठा आंगुलिक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ ऋषि तर्पण तीन बेर जल देत करी -

ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। पुनः पूर्वाभिमुख भए प्रजापत्य तीर्थ(कनिष्ठा अंगुलीक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ प्रजापति तर्पण एक बेर जल देत करी-

ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम्।

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ(अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्य मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा बिना तिलो पुरुष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे "सतिलम्" नहि पढ़ी।)

अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्। पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(गोत्र) पिता अमुक (पिताक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) पितामहः अमुक(बाबा क नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।३बेर।। अन्त मे-"ॐ तृप्यध्वम्-३" ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) मातामहः अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नाना क गोत्र) प्रमातामहः अमुक(परनानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा३ बेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ।। अन्त मे ॐ तृप्यध्वम्- ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी।।

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुकी गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ बेर।। ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुकी (पर दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुकी (नानी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(नानाक गोत्र)गोत्रा प्रमातामही अमुकी (पर नानी नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(गोत्र)गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी(वृद्ध परनानी कनाम)देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा - १। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य समबन्धी लोकनि कें गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कें जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।

ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।।

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पित्र कें दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कें तीन बेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।१।।

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।

अनुकम्पय मामू भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।२।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।३।।

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कें प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

इति छन्दोगानां तर्पण समाप्तिः

छन्दोग सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिर पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख(पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री अथवा सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि अथवा हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी

१. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय- ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर के सिक्त करी-ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु के सिक्त करी। तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिना हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखा स्पर्श करी-चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

चन्दन करी-ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा। तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक

• सकल्प करी - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य... उपात्तदुरितक्षयपूर्वक- श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

आचमन- अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यचाभीद्धत्तपसोध्यजायत। तत्तोरा यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।

एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तकर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह के दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

तदुत्तर • प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी-ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताः उपनयने प्राणायामे विनियोगः।

शिरसः प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्राणायाम करी-

•प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।।

१.दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाकेँ दाबि वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२.द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा केँ दाबि वायुकेँ धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।

३.तृतीय दहिना पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

प्राणायामक बाद तीन बेर आचमन कए वाम हाथ मे जल राखि तेकुशा लए चारि बेर मार्जन करी अर्थात् ओहि जल सँ माथ के सिक्त करी-

• पहिल बेर- ॐ ई पढ़ी। •दोसर बेर- भूर्भुवःस्वः ई पढ़ी।
• तेसर बेर- ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ई पढ़ी।
• चारिम बेर - ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

१. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६.ॐ उशतीरिव मातरः। ७.ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८.ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९.ॐ आपो जनयथा च नः ई पढ़ी।

तदुत्तर दहिना हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जल के स्पर्श करैत श्वास धारण करने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल के अपन वाम भाग मे बिना देखने नीचा खसा दी- ॐ

अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्- विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः।। तदुत्तर दहिना हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाढ़ भए अगिला मन्त्रें अर्घ्य दी- ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् । एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

• प्रातः कालीन सन्ध्याक समय मे सूर्योपस्थापन :-

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्
ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

ॐ उद्वयं तमसः परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

(नोट तर्पणाधिकरी व्यक्ति तर्पण कयलाक बाद गायत्री मन्त्रक जप करथि)

• गायत्री जप विधि :-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगू लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत नीचा देल क्रमश हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

१. ॐ हृदयाय नमः २.ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ३. ॐ भुवः शिखायै वषट् । ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् । ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

• व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री उष्णिग्-अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।

• गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता।। आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

कलजोड़ि अगिला मन्त्रें गायत्रीक आवाहन करी-

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि। गायत्रीच्छन्दसां मातजपे मे सन्निधीभव।। गायन्तं त्रायसे वस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता।।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ अथवा १००० बेर गायत्री मन्त्र जपी- ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री के जप समर्पित करी-

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी-

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्।।

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य के अर्घ्य दए प्रणाम करी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।। एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य के प्रणाम करी-ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

।। इति सन्ध्या वन्दन विधि।।

नित्य पार्थिव पूजन विधिः-

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें। (सधवा विष्णु की जगह गौरी पूजा करें। गौरि इहा., गौर्यै नमः)

१.पञ्चदेवता पूजा–तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी–ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत। जल लेकर- एतानि पाद्य-अर्घ्य- आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अक्षत्-इदमक्षतम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः । पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध -नैवेद्यानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल-इदमाचमनीयम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।

२ विष्णु पूजा[1] : जौ तिल लेकर आवाहन करें- ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्रीविष्णोः इहागच्छ इह तिष्ठ। जल-एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। यवतिल- एते यवतिलाः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। पुष्प लय- इदं पुष्पम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। तुलसी पत्र- इदं तुलसी पत्रम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप- ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध नैवेद्यानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल- इदमाचमनीयं भगवते श्रीविष्णवे नमः। दुनू हाथ में फूल ले-एष पुष्पाञ्जलिः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन-विसर्जन नहीं करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें।)

३ कीर्त्तिमुख पूजा[1] : तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी- ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ। जल लेकर- एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुखाय नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः । पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः । जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प- धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध -नैवेद्यानि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। जल- इदमाचमनीयम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।।

४.पार्थिव पूजन - ॐ हराय नमः इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर ॐ महेश्वराय नमः इस मन्त्र से महादेव बनाकर शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव। इस मन्त्र से अक्षत् लगाकर पात्र में शिव को सामने रख ध्यान करें-

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं ।
विश्वाद्यं विश्ववीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

पश्चात् ॐ पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर। जल लेकर एतानि पाद्य-अर्घ्य- आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्धपुष्प- धूपदीपताम्बूल-यथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः। जल- इदमाचमनीयम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः।। इसके बाद पुष्पाक्षत चन्दन-जल से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर तथा अन्त में महादेव के उपर अष्टमूर्ति की पूजा करें- १.ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः पूर्व मे। २. ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ईशानकोण में। ३ ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः उत्तर दिशा में। ४ ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः वायव्यकोण में। ५ ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः पश्चिम में। ६ ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः नैऋत्यकोण में। ७ ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः दक्षिण मे। ८ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः अग्निकोण में। ९ ॐ महादेवाय नमः पार्थिव लिंग पर। अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से ॐ ब्रह्मणे नमः इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा भूमि पर करें। उसके यथा योग्य पाठ-जप स्तुत्यादि कर, पूजाक्रम से जल लेकर विसर्जन करें। ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ साम्बसदाशिव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। तदुत्तर ॐ विष्वक्सेनाय नमः मन्त्र से भगवान पर से तथा ॐ चण्डेश्वराय नमः इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

अथ कलश-स्थापन

व्रती अर्थात् पूजन कर्ता नित्यकर्म(सन्ध्या-वन्दन आदि) कय पूजास्थान आवि शुद्धासन पर वैसि, तीन बेरि आचमन करथि १. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोलि ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। पुनः दहिन हाथ में जल लयॐ अवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी।

तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी- ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।

आसन पवित्र करथि-ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। तकर बाद चन्दन करीॐ चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

कलश-स्थापन

सोन चाँनी वा माटिक छिद्र रहित चिक्कन कलश पखारि क८,२१ आंगुर वा ८ आंगुर चाकर ६ आंगुर ऊँच पीढ़ी (वेदी)बनाय पहिने अक्षत् पुष्प, चन्दन, जल लय ॐ आधारशक्तये नमः एहि मन्त्र सँ वेदी क पूजन कय तदुत्तर मध्यमा आ अनामिका आंगुर सँ भूमि स्पर्श-ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ꣳ ह पृथिवीं माहि गुं सीः।।

• आगुक मन्त्र सँ गोवरसँ वेदी कें नीपथि- ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।

•आगुक मन्त्रें गंगाजल सँ सिक्त करथि- ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते वर्हिषा वर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यायते प्रणीतो अग्निरग्निना।

• आगुक मन्त्र सँ यव वा धान देथि। धान्यप्रक्षेपणः-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।। ॐ यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः। देवानां तृप्तिकृदस्मात् तस्मात्त्वं वरदो भव।।

तखन अगिला मन्त्र सँ सुन्दर अलंकृत सुदृढ कशल पीढ़ी(वेदी) पर मध्य मे राखथि- कलश स्थापन-ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

• कलश में दही-अक्षत् मिलाक लगाबथि- ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत् प्रणऽआयू ꣳ षि तारिषत्।।

• तत्पूर्ण कलश मे वरुण के आवाहन करथि-कलशमें जल- ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।

• कलश में गंगा जल देथि- ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम(यजमानस्य) दुरितक्षयकारकाः।।

• सप्तमृत्तिकाः-ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।।

• सर्वौषधीः-ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु वभ्रूनामह शतं धामानि सप्त च।।

• पञ्चरत्न- ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।

• सुपाड़ी और जायफल:- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । वृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः ।।

• द्रव्य(पैसा)- ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

• दूभी(दूर्वा)देथि:- ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

• पञ्चपल्लव वा आम्रपल्लव दें- ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वंसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्। ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषां ग्ुं सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।।

• पूर्णपात्र राखथि:-ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्नेव विक्रीणावहा ईषमूर्ज ꣳ शतक्रतो ।।

• नारियल :-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णं निषाणा मुम्न इषाण सर्वलोकम्न इषाण ।।

• वस्त्रक स्पर्श करथि- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् सउश्रेयान् भवति।
जायमानः। तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।

• दुनु हाथ सँ कलश स्पर्शक स्थिर करथि-ॐ स्थिरो भव वीडवङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन्। पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः।

• पुष्प अर्पण करथि-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणमुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।

• चन्दन-ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

• पुन यवादि(सप्तधान्य)जयन्तीनिमित वपन करथि-ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे प्रणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

• अल्ता अर्पण करथि- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन

सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।
• सिन्दुर - ॐ सिन्धोरवि प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा आरुषोन वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।
कलश क स्पर्श क- ॐ मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो-त्वरिष्टं यज्ञ ष्ठसमिमं दधातु विश्वे देवा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ।।
प्राण-प्रतिष्ठा क शान्तिकलश क पूजन करथि- ॐ शान्तिकलश इहागच्छ इह तिष्ठ आवाहन क ॐ शान्तिकलशाय नमः
सँ पञ्चोपचार पूजन क पुष्प सँ पुष्पाञ्जलि देथि-
ॐ शान्तिकुम्भ महाभाग सर्वकामफलप्रद।
पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते।।
कलश पर गणपति क आवाहन आ पूजन करथि- अक्षत् पुष्प लऽ- गणानान्त्वा गणपति ष्ठ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ष्ठ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ष्ठ हवामहे व्वसो मम ऽआहम जानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ सर्वविघ्नहरो देव एकदन्त गजानन। पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते।। ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवन् गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ सँ आवाहन क ॐ गं गणपतये नमः सँ पंचोपचार पूजन क पुष्पाञ्जली देथि- ॐ एकदन्तं महाकायं लंबोदरगजाननम्। विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।। एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गंगणपतये नमः।

।। इति कलश स्थापनम्।।

आश्विनदुर्गा पूजनक संकल्प- ॐ अद्य आश्विने मासि शुक्ले पक्षे प्रतिपत्तिथौ एतद्(गामक नाम) ग्रामवासिनां नानानां गोत्राणां सकलजनानाम् एतत्पूजोप- कारकाणामन्यग्राम वासिनां च उपस्थि-शरीराविरोधेन(व्यक्तिगत पूजन मे-अमुक(गोत्र) गोत्रस्य अमुक (नाम) शर्म्मणः ममसदारापत्यमित्रस्य सकलवाहनस्य च उपस्थित-शरीराविरोधेन) नवग्रहोपग्रह जनितसकलारिष्ट झटिति- प्रशमन-पूर्वक- दीर्घायुष्ट्व बलपुष्टि-नैरुज्य- प्राप्तिपूर्वक- धनधान्याकण्टक-राज्यभोग्य- सन्तति-सुखान्वितनिखिल- मनोऽभिलषित-फल प्राप्तिपूर्वक- साङ्गसायुध सवाहन सपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिक-शरत्कालीन श्रीदुर्गापूजाङ्गभूत कलशस्थापनमहं करिष्ये।

हवन-विधि

बनायल हवन कुण्ड या हवन वेदी क कुश सँ बहारि ओहि कुश कें ईशान कोन मे फेकि गोबर जल सँ नीपि स्रुवक जड़ि सँ पहिने दक्षिण भाग प्रादेश मात्र पूर्वाग्र रेखा कय पुनः ताहि सँ उत्तर द्वितीय रेखा ताहि सँ उत्तर तृतीय रेखा कऽ तीनू रेखाक मध्य सँ दहिना हाथ क अनामिका अंगुष्ठा सँ माटि फेकि जल सँ सिक्त कऽ कासाक पात्र मे आगि लऽ अपना सम्मुख चूणहि रेखा पर अग्नि स्थापित करथि।

ब्रह्मास्थापन -अग्निक दक्षिण भाग कुश पर अक्षत- चन्दन-पुष्पादि लय- **ॐ अस्मिन्कर्मणि त्वम्मे ब्रह्मा भव।**

• **प्रणीता** पात्र आगाँ राखि जल सँ भरि कुश सँ झाँपि ब्रह्मादिश देखैत आगिक उत्तर कुश पर प्रणीता पात्र राखि देथि। •तखन ६४ कुश सँ अग्नि कें परिस्तरण करी तदुत्तर सोलह कुश हाथ में लऽ अग्निकोन सँ ईशान कोन धरि कुश राखि पुनः ब्रह्मा सँ अग्नि पर्यन्त, नैऋत्य कोन सँ वायव्य कोन धरि, अग्नि सँ प्रणिता पर्यन्त कुश राखथि। • **तखन पैता** वनेवाक कुश दोसर कुश सँ लगाय तोड़ि प्रादेश मात्रक दू गोट पैता वनाय पैता सहित दहिना हाथें प्रणीताक जल तीनि वेरि प्रोक्षणीपात्र में दऽ दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ उतराग्र पैता धऽ प्रोक्षणीक जल तीनि वेरि अपना ऊपर छीटथि। • **तखन प्रोक्षणीपात्र** वाम हाथ मे लऽ दहू पैता दहिन हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ धऽ पुनः तीनि वेरि प्रोक्षणीक जल अपना ऊपर छीटथि। • **तखन प्रणीताक** जल सँ प्रोक्षणी कें सिक्त कऽ प्रोक्षणीक जल सँ संघटित सभ वस्तु कें सिक्त करथि। • **तखन अग्नि प्रणीताक** वीच प्रोक्षणी पात्र राखि देथि। • **घृतक पात्र** मे घी दऽ आगि पर चढ़ाय जरैत खढ़ घीक ऊपर प्रदक्षिणक क्रमे घुमाय आगि मे छोड़ि देथि। तखन स्रुव कें तपावथि • **कुश सँ स्रुव** के जडि सँ जडि वीच सँ वीच अन्त सँ अन्त भाग के झाड़ि स्रुव के पुनः तीन वेरि तपाय दहिन भाग स्रुव कें राखि देथि। • **घी कें तीन** वेरि आगि पर सँ उतारि दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ पैता लऽ प्रोक्षणी जेकाँ घी कें तीन वेरि अपना ऊपर छीटि पुनः दुहू पैता दहिना हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ लऽ वाम हाथें घीक पात्र धयने पैता सँ तीनि वेरि अपना उपर छीटि पैता प्रोक्षणी मे दऽ • **घी कें देखि** किछु अधलाह वस्तु होतँ वाहर कऽ विरनी कुश वाम हाथ मे लऽ तीनि गोट आमक काठी मे घी लगाय ऊठि मन सँ प्रजापतिक ध्यान कऽ चुपहि आगि मे छोड़ि देथि। तखन वैसि पैता सहित प्रोक्षणीक जल सँ प्रदक्षिण क्रमें आगि कें सिक्त कऽ प्रणीता पात्र मे पैता राखि •घी सँ बारह आहुति हवन करथि-

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये।।(एहि मन्त्र क मन मेँ ही उच्चारण करी)
ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय । ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये ।।
ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय । ॐ भूः स्वाहा इदं भूः ।
ॐ भुवः स्वाहा इदं भुवः। ॐ स्वः स्वाहा इदं स्वः। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं भूर्भुवः स्वः।
ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ष्ठसि प्रमुमुग्ध्य स्मत् स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम् । (प्रत्येक वेर स्रुवक अवशेष....जल मे त्यागिदी)
ॐ सत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणष्ठ रराणो वीहिमृडीक ष्ठसुहवोन ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् ।
ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्ति पाश्चसत्य मित्त्व मया असि। अया नो यज्ञं वहास्या नो धेहि भेषज ष्ठस्वाहा इदमग्नये।
ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः।
ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ष्ठश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा,इदं वरुणाय।

•नवग्रह समिधा सँ हवन- • सूर्य-अर्क(आकन) लकडी लऽ-ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्, स्वाहा, इदं सूर्याय।
• चन्द्र-पलाशक लकड़ी लऽ- ॐ इमं देवा असपत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाष्ठराजा स्वाहा, इदं चन्द्राय।
• मंगल-खैरक लकड़ी लऽ-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या. अयम् अपाष्ठ रेताष्ठ सि जिन्वति स्वाहा, इदं कुजाय।
• बुध-चिरचिर लकड़ी लऽ-ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सष्ठ सृजेथामयञ्च । असमिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा इदं वुधाय।
• बृहस्पति-पीपरक लकड़ी लऽ-ॐ वृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋ त प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रग्वं स्वाहा, इदं वृहस्पतये
• शुक्र-गुलरकके लकड़ी लऽ-ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानष्ठ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा, इदं शुक्रायं।
• शनि-समि लऽ- ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा, इदं शनैश्चराय।
• राहु- दूवि लऽ- ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा इदं राहवे।
• केतु-कुश लऽ-ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा इदं केतवे
• शाकल्य सँ प्रधान देवता क हवन प्रारम्भ करी तदुपरान्त आवाहित पूजितादि देवता क हवनोपरान्त तर्पण ,मार्जन कऽ • तदुत्तर परिस्तरण वला कुश सभ समेटि घी लगाए आगुक मन्त्र सँ हवन मे देथि- ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञष्ठ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।
ब्रह्मा क दक्षिणा • ब्रह्मदक्षिणा- कुश,तिल,यव,द्रव्य लऽ- ॐ अद्य अमुके मासे अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्न (यजमानक गोत्र) अमुकशर्मा(यजमानक नाम), कृतैतत् अमुक(जप,पाठ) होमकर्म प्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतम् अमुक- गोत्राय (ब्राह्मण क गोत्र,नाम) अमुकशर्मणेब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुभ्यमहं सम्प्रददे। इ कहि ब्रह्मा कें देथि।
• प्रणीता सँ दुहू पैता दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ उत्तराग्र धऽ- ॐ सुमित्रियानऽ आप ओषधयः सन्तु। एहि मन्त्र सँ दुहू पैता सँ प्रणीताक जल अपना ऊपर छीटि शेष जल- ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः। कहि ईशान कोन में पलटि देथि।
•पूर्णाहुति- स्रुव मे पान, नारियल दहिन हाथें लऽ ऊठि आगु क मन्त्र सँ पूर्णाहुति करी- ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतऽ आजातमग्निम्। कविष्ठ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।
• तदुत्तर घी सँ अखण्ड धार सँ वसोधारा करी- ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्त्वा कामधुक्षः स्वाहा। वसुभ्यः । अग्नि में अखण्ड घीक धार देथि, आ स्रुवक अवशेष प्रोक्षणीक पात्र मे त्यागी।
•स्रुवक पृष्ठ भाग सँ भस्म लऽ यायुष करथि- ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे। ललाट मे लगाबथि।

सर्व कर्म उपयोगी शान्तिकलश अभिषेक मन्त्र-

कलश हाथ में उठवैत- ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्ते महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशूर्भवासवाः। आमक पल्लव सँ कलशक जल में घुमवैत आगुक मन्त्र पढ़ि-

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये।।
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः।

।। इति व्यास रचित अभिषेकम्।।

रोग भगाने का यन्त्र-

१४	३१	२	२८
२०	३०	१५	१४
२०	१५	१६	१६
४४	६	१६	१६

इस यन्त्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त्त में लिखकर काले धागे में बांधकर रोगी के गले में धारण कराने से रोग जल्द ठीक हो जाता है।

गर्भ सम्बन्धि प्रश्नः -

नवद्वयं गर्भिणीनामयुक्तं तिथिप्रयुक्तं रससंयुतञ्च।
एकेन उनं नवभागधेयं समे कुमारी विषमे कुमारः।।

स्त्री के नाम राशि को ७ से गुणाकर तत्कालिक तिथि का योगकर उसे ९ का भाग दे। भाग देने पर समराशि,२,४,६,८ शेष रहे तो कन्याजन्म, विषम राशि १,३,५,७ शेष रहे तो पुत्र जन्म और शून्य रहने पर गर्भस्थ जातक की मृत्यु होगी ऐसा कहना चाहिये।

अपर विधिः-तिथिवारं च नक्षत्रं गर्भिणी नामसंयुतम् । सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत्।। समे च कन्या विषमे पुत्रो निःशेषभागं मरणाय नूनम्।

पुत्र पुत्री जन्म विचार :-

प्रश्नवर्णीमात्रौतिथिवारर्क्षं च संयुतम्। सप्तभर्विशेषेण समेस्त्री विषमे पुमान्।। सन्तानचिन्ता प्रश्नः- प्रश्न के दिन की संख्या को ३ से गुणा करके उसमें प्रश्नकाल की तिथि को भी जोड़ देवे और उसमें २ से भाग दे यदि १शेष बचे तो सन्तान की सम्भावना होगी, किन्तु २ या ० शून्य बचे तो संतान की सम्भावना नहीं करनी चाहिये।

गर्भ स्थिर रहने का यन्त्र-

ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	१
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	७

जिस रविवार को मूल नक्षत्र पड़े,उसी दिन यह यन्त्र बनाकर गर्भवती स्त्री को धारण कराने से गर्भ खण्डन (गर्भपात) नहीं होता हैं और गर्भ स्थिर रहता है। यन्त्र,भोजपत्र पर अष्ट गन्ध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखें।

गर्भवती स्त्री की पीड़ा(प्रसव पीड़ा) दूर करने का यन्त्र-

६२	६९	२	७
७	३	६२	६५
६८	६३	८	२
६४	५	६४	६७

कांसे की थाली में इस यन्त्र को लिखें और उसमे जल भरकर पिलाने से गर्भवती स्त्री की पीड़ा या प्रसव पीड़ा दूर होती हैं।

कार्यं भविष्यतिनवा :-

दिशा प्रहर संयुक्तम् तारकावारमिश्रिततम्।
अष्टाभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्।।
पंचैके त्वरिता सिद्धिः षटतुर्ये च दिनत्रयम्।
त्रिसप्तके विलम्वं च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ।।

वरप्राप्ति हेतु उपाय :-

प्रथमविधि- स्वयं कन्या स्नान करके दीपक व धूप जलाकर गन्धाक्षत पुण्प से श्री माँ पार्वती की अर्चना कर **वं पं क्लीं** का १०८ वार जप करें तदन्तर अधोलिखित मन्त्र का प्रतिदिन प्रातः व सायं पॉच पॉच माला जप करें। यह प्रयोग ४५ दिन का है। रजस्वला समय में पॉच दिनों तक वन्द रखें। मन्त्र:- ॐ क्लीं कात्यायनी महामाये महायोगिन्य धीश्वरी क्लीं ॐ दं पं नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरूते नमः पं दं । अन्त में ७ कन्याओं एवं २ वटुक को खीर व वेसन के वने पदार्थों का भोजन करावें।

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
९	७	५	ऐं	क्लीं	पं
४	११	६	दं	लं	पं

द्वितीय विधि- इस मन्त्र को कन्या प्रारम्भ कर मृगशिरा नक्षत्र में केला के पत्ते पर प्रतिदिन नौ वार लिखें। यह प्रयोग ७२ दिन का है। ५ दिनरजस्वला काल के समय में वन्द रखें। अन्तमें ९ कन्या तथा ५ वटुक को दूध से वने पदार्थों का भोजन करावें एवं वस्त्र,श्रीफल,द्रव्यादि दक्षिणा दें।लिखे मन्त्र को **ॐ क्लीं पं दं लं** मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी पार्वती के चरणों में अर्पित करें।

अथ विवाह प्रश्नः -

कर्क तौली वपाश्चन्द्रयुक्ताः शुभनिरीक्षिताः ।
पृच्छाकाले तदा नृणां कन्या लाभो भवेद् ध्रुवम् ।।
योपिद् ग्रहस्थिताःशेषाः पश्यन्ति स्त्रीनवांशकम् ।
लग्ने च स्यात्तदा लाभः स्त्रियां पुंसोऽपि तादृशः ।।

वशीकरणमन्त्र -

ॐ नमो महायक्षिणी मम पतिं वश्यं आनय कुरू कुरू स्वाहा इस मन्त्र को गुरू पुष्य योग में या शुभ मुहूर्त्त में ११ माला जप ११ दिन तक करें। तदनन्तर कपूर, चन्दन और तुलसीदल को गो दुध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।

तिल- विचार :-

मस्तकपर-	धनवान
दाहिने आँखपर-	स्त्री से प्रेम
वायी आँखपर-	स्त्री से कलह
दोनो भौहों के वीच-	अधिक यात्रा
टुड्ढी मे-	स्त्री से कटुता
दाहिने गाल पर-	धनवान
वाये गाल पर-	खर्चअधिक
ओष्ठ पर-	कामसक्ति
गर्दनपर-	आराम-मयजीवन।
कानपर-	अल्पायु
नाकपर-	अधिकयात्रा
नाक के अग्रभागपर-	काम मे सरलता
ओष्ट के नीचे-	निरधनता
नाक के अग्रभाग पर-	कार्यसिद्धि
ओष्ट के नीचे की भाग पर-	निरधनता
नाक के वाई तरफ-	धूर्त
दाहिने भुजा पर-	सम्मान व यशप्राप्ति
वायी भुजा पर-	झगड़ालू
दाहिनी छाती पर-	स्त्री से प्रेम ।
वांयीछातीपर-	स्त्री से कलह।
दोनो छाती के वीच-	सुखमयजीवन।
कमर मे-	कष्टमय जीवन।
पेटपर-	उत्तमभोजनप्रिय
पीठपर-	यात्रामय जीवन
दाहिने हाथ के पृष्ठपर-	धनवान ।
वायी हाथ के पृष्टपर-	अल्पव्ययी।
दाहिने हथेलीपर-	शक्तिशाली
वायी हथेलीपर-	अधिक खर्चालु
पेट के मध्य में-	डरपोक
दाहिने पैर पर-	वुद्धिमान
वाये पैरपर-	अधिकव्ययी।

ग्रहों का विशेष विवरण तथा यन्त्र

ग्रह-सूर्य (Sun)

रत्न- माणिक्य(Ruby)
उपरत्न- लालड़ी, लालतामड़ा. लालहकीक
धातु- स्वर्ण, ताम्वा
अंगुली- तर्जनी,अनामिका
रत्ती में- ३. ५
दिन- रवि. सोम. गुरु.
दानवस्तु- गेहूँ,गुड़,कमल-पुण्प,लालचन्दन,लालवस्त्र,सोना. ताँवा,दक्षिणा

सूर्य-यन्त्रम्		
६	१	८
७	५	३
२	९	४

दान समय-रविवार सूर्योदय समय।
जपसंख्या- ७०००। कलियुग में-२८०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-
सूर्य के अरिष्ट निवारण एवं कुष्ठरोग, क्षदयरोग, सिर दर्द,रक्तचांप,नेत्रदोष, रक्तविकार आदि रोगों में लाभ

चन्द्रमा(Moon)

रत्न- मोती(Pearl)
उपरत्न- शंखमूगा, दुधिया, हकीक, सीप
लग्न से शुभ- १, ४, ८, १२
धातु- चॉदी
अंगुली- अनामिका
रत्ती- २, ४,६,११
दिन- सोम
दानवस्तु- घृत, चावल, श्वेतवस्त्र,श्वेतचन्दन,श्वेतपुष्प, चॉदी, शंख, दक्षिण

चन्द्रयन्त्रम्		
७	२	९
८	६	४
३	१०	५

जपसंख्या- ११००० कलियुग में४४,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-चन्द्रमा जन्यअरिष्ट, मानसिकरोग, मुर्च्छा, मिर्गी, उन्माद,दमा, श्वांस, कैंसर आदि।

मंगल(Mars)

रत्न- मूँगा(Coral)
उपरत्न- गारनेट, लाहकी लालगोमेद
धातु- स्वर्ण,ताम्वा
अंगुली- अनामिका,तर्जनी
रत्ती- ६,८,१०,१२

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

दानवस्तु- मूँगा, भूमि, मसूरदाल, लालवृप, गुड़,लालचन्दनवस्त्रपु प, सुवर्ण
जपसंख्या- १०००० कलियुग में४०,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-
रक्तविकार, भूतप्रेतवाधा, हृदयरोग, वायु, कफ विकार, पित्तादि विकार,उदर विकार आदि।

बुध(Mercury)

रत्न- पन्ना(Emerald)
उपरत्न- फिरोजा,हरा हकीक,मरगज,ओनेक्स
धातु- स्वर्ण या कांसा
अंगुली- कनिष्टा
रत्ती-३,५,७। दिन-वुधवार
दानवस्तु-कांस्यपात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त घृत मूँग सुवर्ण,सर्वपुष्प,कपूर

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

जप संख्या ८००० **कलियुग में**-३२,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-त्वचा विकार,पथरी,वहुमूत्र,दमा, गुर्दा रोग,पाण्डुरोग या मानसिक रोग में लाभ।

वृहस्पति(Jupiter)

रत्न- पुखराज(Sapphire)
उपरत्न-पीला मोती,सुनैलापीला, जिरकान
धातु- स्वर्ण
अंगुली- तर्जनी
रत्ती- ५,७
दिन- गुरुवार

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

दानवस्तु- चने की दाल,पीतवस्त्रपुष्प, हरदी, पुस्तक, मधु, लवणादि
जप संख्या १६००० कलियुग में-६४,०००
ग्रहजन्य बाधा-मधुमेह,लीवर,पीलिया,प्रेत वाधा।

शुक्र(Venus)

रत्न- हीरा(Diamond)
उपरत्न- सफेदहकीक,स्फटिक,ओपल,
धातु- प्लेटीनम
अंगुली- मध्यमा/कनिष्ठा
रत्ती- ३,५
दिन- शुक्र
दानवस्तु- तण्डुल, श्वेतचन्दनवस्त्र, घृत, दधि, श्वेतगौ

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

जप-संख्या ११०००, कलि में ४४०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-वीर्य विकार, दौर्वल्य,नपुंसकता,वायु प्रकोप, प्रमेह, श्वेदप्रदर,हृदय रोग,मानसिक कमजोरी आदि।

शनि(Saturn)

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

रत्न- नीलम(Sapphire)
उपरत्न-नीलाजिरकान,कटैल,नीला पाइनल
धातु- पंचधातु धातुया स्टील।
अंगुली-मध्यमा। **रत्ती**-५,७, ९,१२। **दिन**-शनिवार।
दानवस्तु-माष, तैल, तिल, कालवस्त्रगौपुष्प कुरथी,लोहा,कस्तूरी, सुवर्णादि
जप संख्या २३००० **ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-**दमा,क्षय,ग्रन्थीय, अजीर्ण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।

राहु(Rahu)

१३	८	८
१४	१२	१०
९	१६	११

रत्न- गोमेद(Zircon)
उपरत्न- गोमेद रंग का हकीक
धातु-अष्टधातु या चॉदी **अंगुली**-मध्यमा
रत्ती-७,९। दिन-शनि, **दानवस्तु**-माषात्र,कस्तूरी,हेमनाग, नीलवछूरी, तिलतैल,लोहासूप,कम्वल। **जप संख्या** १८०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-लकवा, त्वचा रोग, मस्तिष्क दुर्वलता, वातजन्य रोग आदि।

केतु(Ketu)

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
९	७	५	ऐं	क्लीं	पं
४	११	६	दं	लं	पं

रत्न- लहसुनिया Cats Eye
धातु- पंचधातुया चॉदी,
अंगुली- मध्यमा, रत्ती-७,९ **दिन**-शनि-बुध ,
दानवस्तु-माषात्र,कम्वल,कस्तूरी, तिल,लोहा,बकरा,शस्त्र,सप्तधानादि
जप संख्या-७०००। **ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-**
वायु विकार, प्रमेह,हृदयरोग, श्वेदप्रदर,मानसिक दुर्वलता, ऑत की वीमारी आदि।

व्यापार वृद्धि यन्त्र -

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही एवं अनार की कलम से दीपावली को रात्रि में लिखकर सविधि पूजन कर-ॐ **श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः** मन्त्र का ११०० सौ जप करें। तदनन्तर यन्त्र को दुकान में रखकर प्रतिदिन पूजन करें।

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

कामना पूरक यन्त्रम् -

इस मन्त्र को लाल चन्दन से विल्व पत्र पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास के सोमवार को शिव लिंग पर चढ़ाने से इच्छा शक्ति एवं मनो कामना पूर्ति होती है।

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

सौभाग्य वृद्धि यन्त्र-

इस यन्त्र को गुरु पुष्य योग में अष्ट गन्ध की स्याही एवं अनार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर तथा सविधि त्रिगुणात्मिका दुर्गा की पूजन कर स्त्री धारण करें तो सौभाग्य की वृद्धि होती है।

५	६	३	६
४	४	७	७
६	६	३	५
५	४	७	४

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाने का यन्त्र-

६२	६९	२	७
७	३	६२	६५
६८	६३	८	२
६४	५	६४	६७

इस यन्त्र को जमीन पर उंगली से लिखें, तो गया आदमी शीघ्र घर लौट आता है। वापसी तक प्रतिदिन यन्त्र लिखा करें।

महामृत्युञ्जय मन्त्र जपविधिः-

श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रय तिलजलान्यादाय **संकल्पः**-ॐ अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य श्री अमुक शर्मणः उपस्थित शरीरा-विरोधेन अखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वक-दीर्घायुष्ट्व-बलपुष्टिनैरुज्य-प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनशाखीय 'ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ' इति महामृत्युंजय मन्त्रस्य एतत्सहस्र-संख्यकजपमहं करिष्ये।

विनियोगः-ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल-वशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रा देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-वामदेव-कहोल-वशिष्ठऋषिभ्यो नमः **शिरसि**। पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः **मुखे**। सदाशिवमहामृत्युञ्जय- रुद्रदेवताभ्यो नमः **हृदि**। हौं बीजाय नमः **नाभौ**। जूं शक्तये नमः **पादयोः**। सः कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**।

हृदयादिन्यासः-ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा **हृदयाय नमः**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय **शिरसि स्वाहा**, ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरशि जटिने स्वाहा **शिखायै वषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव वन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हाँ हीं हीं **कवचाय हुम्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्राय **नेत्रत्राय वौषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालनाय मां रक्ष रक्ष अघोराय **अस्त्राय फट्**। इति षडङ्गन्यासः

ध्यान-चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।

इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिः दशांशक्रमेण होम तर्पणमार्जनं ब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।

लघुमृत्युंजयमन्त्रः- ॐ जूं सः।

यजुर्वेदीय न्यास सहित शान्ति मन्त्र-

सूर्य मन्त्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्त्र-मृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

विनियोगः-ॐ आकृष्णेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖**देहाङ्गन्यास-** आकृष्णेन **शिरसि**। रजसा **ललाटे**। वर्तमानो **मुखे**। निवेशयन् **हृदये**। अमृतं **नाभौ**। मर्त्यं च **कट्याम्**। हिरण्ययेन सविता **ऊर्वोः**। रथेना **जान्वोः**। देवो याति **जंघयोः**। भुवनानि पश्यन् **पादयोः**।

❖**करन्यासः-** आकृष्णेन रजसा **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। वर्तमानो निवेशयन् **तर्जनीभ्यां नमः**। अमृतं मर्त्यं च **मध्यमाभ्यां नमः**। हिरण्ययेन **अनामिकाभ्यां नमः**। सविता रथेना **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। देवो याति भुवनानि पश्यन् **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**।

❖**हृदयादिन्यासः**-आकृष्णेन रजसा **हृदयाय नमः**। वर्तमानो निवेशयन् **शिरसे स्वाहा**। अमृतं मर्त्यं च **शिखायै वषट्**। हिरण्ययेन **कवचाय हुँ**। सविता रथेना **नेत्रत्रयाय वौषट्**। देवो याति भुवनानि पश्यन् **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

❖**चन्द्र का वैदिक मन्त्र-** ॐ इमन्देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा।

❖**विनियोगः**- इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖**देहाङ्गन्यास-** इमं देवा **शिरसि**। असपत्न ग्वं **ललाटे**। सुवध्वं **नासिकायाम्**। महते क्षत्राय **मुखे**। महते ज्येष्ठ्याय **हृदये**। महते जानराज्याय **उदरे**। इन्द्रस्येन्द्रियाय **नाभौ**। इममुष्य **कट्याम्**। पुत्रममुष्यै **मेढ्रे**। पुत्रमस्यै **ऊर्वोः**। विशऽएष वो **जान्वोः**। मीराजा **जंघयोः**। सोमोऽस्माकं **गुल्फयोः**। ब्राह्मणानां ग्वं राजा **पादयोः**।

❖**करन्यास-** इमं देवा असपत्न ग्वं सुवध्वं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय **तर्जनीभ्यां नमः**। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय **मध्यमाभ्यां नमः**। इममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै **अनामिकाभ्यां नमः**। विशऽएष वो मीराजा **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां ग्वं राजा **करतलकरपृष्ठा भ्यां नमः**। हृदयादिन्यासः-इमं देवा असपत्न ग्वं सुवध्वं **हृदयाय नमः**। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय **शिरसे स्वाहा**। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय **शिखायैवौषट्**। इममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै **कवचाय हुम्**। विशऽएष वो मीराजा **नेत्रत्रयायवौषट्**। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां ग्वं राजा **अस्त्राय फट्**। ❖ध्यान-श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

❖मंगल वैदिक मन्त्र-

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या, अयमपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति।

❖**विनियोगः**- ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖**देहांगन्यासः**- ॐ अग्निः **शिरसि**। मूर्द्धा **ललाटे**, दिवः **मुखे**, ककुत् **हृदये**, पतिः **उदरे**। पृथिव्या **नाभौ**, अयं **कट्याम्**, अपामं **जान्वो**, रेतांसि **गुल्फयोः**, जिन्वति **पादयोः**। ❖**करन्यासः**-ॐ अग्निः मूर्द्धा **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, दिवः ककुत् **तर्जनीभ्यां नमः**,पतिः **मध्यमाभ्यां नमः**। पृथिव्या अयम् **अनामिकाभ्यां नमः**, अपाꣳ रेताꣳसि **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, जिन्वति **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**- ॐ अग्निः मूर्द्धा **हृदयाय नमः**, दिवः ककुत् **शिरसे स्वाहा**, पतिः **शिखायै वषट्**। पृथिव्या अयं **कवचाय हुम्**। अपाꣳ रेताꣳसि **नेत्रत्रयाय वौषट्**, जिन्वति **अस्त्राय फट्**।

ध्यान- रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदाममस्याद्वरदः प्रसन्नः।।

❖बुध का वैदिक मन्त्र-

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने: प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

❖**विनियोगः**- ॐ उद्बुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापति ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। **देहांगन्यासः**-ॐ उद्बुध्यस्वेति **शिरसि**, अग्ने: प्रति **ललाटे**, जागृहि त्वं **मुखे**, इष्टापूर्ते **हृदये**, सꣳ सृजेथामयञ्च **नाभौ**, अस्मिन्त्सधस्थे **कट्याम्**, अध्युत्तरस्मिन् **ऊर्वोः**, विश्वेदेवा **जान्वोः**, यजमानश्च **गुल्फयोः**, सीदत **पादयोः**।

❖**करन्यासः**-ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने: प्रतिजागृहि त्वम् **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, इष्टापूर्ते **तर्जनीभ्यां नमः**, सꣳ सृजेथामयञ्च **मध्यमाभ्यां नमः**, अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् **अनामिकाभ्यां नमः**, विश्वेदेवा यजमानश्च **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, सीदत **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**।

❖**हृदयादिन्यासः**-ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने: प्रतिजागृहि त्वम् **हृदयाय नमः**, इष्टापूर्ते **शिरसे स्वाहा**, सꣳ सृजेथामयञ्च **शिखायै वषट्**, अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् **कवचाय हुम्**, विश्वेदेवा यजमानश्च **नेत्रत्रयाय वौषट्**, सीदत **अस्त्राय फट्**।

ध्यान-पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी। चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च।।

❖गुरु(बृहस्पति) वैदिक मन्त्र-

ॐ बृहस्पते अतियदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।।

❖**विनियोगः**- बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖**देहांगन्यासः**-ॐ बृहस्पते **शिरसि**,अतियदर्य्यो **ललाटे**,अर्हाद्युमत् **मुखे**, विभाति क्रतुमत् **हृदये**,जनेषु **नाभौ**, यद्दीदयत् **कट्याम्**, शवसऋतप्रजात **ऊर्वोः**,तदस्मासु द्रविणं **जान्वोः**,धेहि **गुल्फयोः**,चित्रं **पादयोः**। ❖करन्यासः-ॐ बृहस्पते अतियदर्य्यो **अंगुष्ठाभ्यां नमः**,अर्हाद्युमत् **तर्जनीभ्यां नमः**, विभाति क्रतुमत् **मध्यमाभ्यां नमः**, जनेषु **अनामिकाभ्यां नमः**, यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, द्रविणं धेहि चित्रम् **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ बृहस्पते अतियदर्य्यो **हृदयाय नमः**, अर्हाद्युमत् **शिरसे स्वाहा**, विभाति क्रतुमत् **शिखायै वषट्**, जनेषु **कवचाय हुम्**, यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु **नेत्रत्रयाय वौषट्**, द्रविणं धेहि चित्रम् **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।

❖शुक्र का वैदिक मन्त्र-

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्ये-न्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

❖**विनियोगः**-अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजापतिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖**देहांगन्यासः**-ॐ अन्नात् परिस्रुतः **शिरसि**, रसं ब्रह्मणा **ललाटे**, व्यपिबत्क्षत्रं **मुखे**, पयःसोमं **हृदये**, प्रजापतिः **नाभौ**, ऋतेन सत्यं **कट्याम्**, इन्द्रियं विपानꣳ **गुदे**, शुक्रमन्धस **ऊर्वो**, इन्द्रस्ये-न्द्रियं **जानुनोः**, इदं पयः **गुल्फयोः**, अमृतं मधु **पादयोः**। ❖**करन्यासः**-ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्र **तर्जनीभ्यां नमः**, पयःसोमं प्रजापतिः **मध्यमाभ्यां नमः**, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं **अनामिकाभ्यां नमः**, विपानꣳ शुक्रमन्धस **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖**हृदयादिन्यासः**-ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं **हृदयाय नमः**, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं **शिरसे स्वाहा**, पयःसोमं प्रजापतिः **शिखायै वषट्**, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं **कवचाय हुम्**, विपानꣳ शुक्रमन्धस **नेत्रत्रयाय वौषट्**, इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु **अस्त्राय फट्**।

❖ध्यानम्- श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।

❖शनि का वैदिक मन्त्र-

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः।

❖विनियोगः- शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः- शन्नो **शिरसि**, देवीः **ललाटे**, अभिष्टय **मुखे**, आपो **कण्ठे**, भवन्तु **हृदये**, पीतये **नाभौ**, शं **कट्याम्**। योः **ऊर्वो**, अभि **जान्वोः**, स्रवन्तु **गुल्फयोः**, नः **पादयोः**।

❖करन्यासः- शन्नो देवीः **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, रभिष्टये **तर्जनीभ्यां नमः**, आपो भवन्तु **मध्यमाभ्यां नमः**, पीतये **अनामिकाभ्यां नमः**,शंय्योरभि **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, स्रवन्तु नः **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖हृदयादिन्यासः- शन्नो देवीः **हृदयाय नमः**, रभिष्टये **शिरसे स्वाहा**, आपो भवन्तु **शिखायै वषट्**, पीतये **कवचाय हुम्**, शंय्योरभि **नेत्रत्रयाय वौषट्**, स्रवन्तु नः **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्:- नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

राहु का वैदिक मन्त्र-

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता।।

❖विनियोगः- कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवताः, राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः- कया **शिरसि**, न **ललाटे**, चित्र **मुखे**, आ **कण्ठे**, भुव **हृदये**, दूती **नाभौ**, सदा **कट्याम्**। वृधः **मेढ्रे** , सखा **ऊर्व्वोः**। कया **जान्वोः**, शचिष्ठया **गुल्फयोः**, वृता **पादयोः**।

❖करन्यासः- कया नः **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, चित्र आ **तर्जनीभ्यां नमः**, भुवदूती **मध्यमाभ्यां नमः**, सदावृधः सखा **अनामिकाभ्यां नमः**। कया **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, शचिष्ठया वृता **करतल करपृष्ठाभ्यां**।

❖हृदयादिन्यासः- कया नः **हृदयाय नमः**,चित्र आ **शिरसे स्वाहा**, भुवदूती **शिखायै वषट्**, सदावृधः सखा **कवचाय हुम्** । कया **नेत्रत्रयाय वौषट्**, शचिष्ठया वृता **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली।
चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्।।

केतु का न्यास सहित वैदिक मन्त्र–

ॐ केतुङ् कृण्वंन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

❖विनियोगः–केतुं कृण्वत्रिति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः,गायत्रीच्छन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः– केतुं **शिरसि**, कृण्वन् **ललाटे**, अकेतवे **मुखे**, पेशो **हृदये**, मर्या नाभौ, अपेशसे कट्याम्। सं ऊर्व्वोः। उषद्भिः जान्वोः, अजायथाः पादयोः। ❖करन्यासः–केतुं कृण्वन् अंगुष्ठाभ्यां नमः,अकेतवे तर्जनीभ्यां नमः, पेशो मर्या मध्यमाभ्यां नमः, अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः, समुषद्भिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, अजायथाः करतल करपृष्ठाभ्यां।

❖हृदयादिन्यासः– केतुं कृण्वन् हृदयाय नमः, अकेतवे शिरसे स्वाहा, पेशो मर्या शिखायै वषट्, अपेशसे कवचाय हुम्, समुषद्भिः नेत्रत्रयाय वौषट्, अजायथाः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्– धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च। किरीट-केयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः।

सूर्यादि ग्रहो का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र–

सूर्य का तान्त्रिक मन्त्र– ॐ हाँ हीं सः

विनियोगः–ॐ अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता हां बीजम्, हीं शक्तिः, सः कीलकम् श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। **ऋष्यादिन्यासः**–ॐ अज ऋषये नमः **शिरसि**। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः **मुखे**। ॐ सूर्यदेवताये नमः हृदि। ॐ हाँ बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ हीं शक्तये नमः **पादयोः**। ॐ सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। अंगन्यासः– ॐ आं हीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं हीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऊँ हीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ औं हीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अः हीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

18 हृदयादिन्यासः–ॐ आं हीं हृदयाय नमः। ॐ ईं हीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऊँ हीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं हीं कवचाय हुम्। ॐ औं हीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अः हीं अस्त्राय फट्।

ध्यान– ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं, भानुं समस्त जगतामधिपं भजामि।

पद्मद्वयाभय-वरान्- धतं कराब्जैर्माणिक्य-मौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्।।

❖चन्द्र का तान्त्रिक मन्त्र– ॐ सों सोमाय नमः।

विनियोगः–ॐ अस्य श्रीसोममन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सोमो देवता, सों बीजम्, नमः शक्तिः, सोमप्रीतये जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः– ॐ भृगुऋषये नमः **शिरसि**, ॐ पंक्तिः छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ सोमदेवताये नमः **हृदि**, ॐ सों बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ नमः शक्तये नमः **पादयोः**,।। ❖करन्यासः–ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः,ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सौं कनिष्ठकाभ्यां नमः,ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। ❖हृदयादिन्यासः–ॐ सां हृदयाय नमः, ॐ सीं शिरसे स्वहा, ॐ सूं शिखायै वषट्, ॐ सैं कवचाय हुम्, ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सः अस्त्राय फट्। ध्यान्- ॐ कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दु-बिम्बाननं, मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः। हस्ताभ्यां कुमुदं वरञ्च दधतं नीलालकोद्भासितं, स्वीयांकस्थमृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।।

मंगल का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र– ॐ अं अंगारकाय नमः।

विनियोगः– ॐ अस्य श्रीभौममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, अंगारको देवता, अं बीजं, आपः शक्तिः, अंगारकप्रीतये जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः–ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**, ॐ गायत्री छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ अंगारक देवतायै नमः **हृदये**, ॐ अं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖करन्यासः–ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ ईं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, ❖हृदयादिन्यासः–ॐ आं हृदयाय नमः, ॐ ईं शिरसे स्वाहा, ॐ ऊं शिखायै वषट्, ॐ ऐं कवचाय हुम्, ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ अः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्– नमाम्यंगारकं देवं रक्ताम्बरविभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताढ्यं साभयेतरपाणिकम्।

बुध का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र– ॐ बुं बुधाय नमः।

❖विनियोगः–ॐ अस्य श्रीबुधमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, बुधो देवता,बुं बीजं,आपः शक्तिः, बुध प्रीतये जपे विनियोगः।❖देहांगन्यासः–ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**। ॐ बुधदेवतायै नमः **हृदये**। ॐ बुं बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖करन्यासः–ॐ बुं अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ बुं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ बुं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ बुं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ बुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ बुं करतलकर- पृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः–ॐ बुं हृदयाय नमः। ॐ बुं शिरसे स्वाहा, ॐ बुं शिखायै वषट्, ॐ बुं कवचाय हुम्, ॐ बुं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ बुं अस्त्राय फट्।

ध्यानः– ॐ वन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बरसुभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताढ्यं साभयेतरपाणिकम्।।

गुरु(बृहस्पति) का तान्त्रिक मन्त्र– ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

विनियोगः– ॐ अस्यश्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता, बृं बीजम्, नमः शक्तिः, श्रीबृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ऋष्यादिन्यासः–ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः **मुखे**,ॐ बृहस्पतिर्देवताये नमः **हृदये**, ॐ बृं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ नमः शक्तये नमः **पादयोः**,❖करन्यासः–ॐ ग्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ ग्रीं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ ग्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ग्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ग्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ग्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः–ॐ ग्रां हृदयाय नमः, ॐ ग्रीं शिरसे स्वाहा,ॐ ग्रूं शिखायै वषट्,ॐ ग्रैं कवचाय हुम्, ॐ ग्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ग्रः अस्त्राय फट्। ❖ध्यानम्–तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसंघस्तुतपादपंकजम्। मेधानिधिं मत्स्यगतं द्विबाहुं गुरुं भजे मानस पंकजेऽहम्।।

शुक्र का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र– ॐ शुं शुक्राय नमः।

❖विनियोगः–ॐ अस्य श्रीशुक्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, शुक्रो देवता, शुं बीजं स्वाहम्, स्वाहा शक्तिः, श्रीशुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖ऋष्यादिन्यास–ॐ ब्रह्मऋषये नमःशिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ शुक्रदेवतायै नमः **हृदये**, ॐ शुं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ स्वाहा शक्तये नमः **पादयोः**, ❖करन्यासः–ॐ शुं अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ शुं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ शुं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शुं अनामिकाभ्यां नमः,ॐ शुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ शुं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यास–ॐ शुं हृदयाय नमः,ॐ शुं,शिरसे स्वाहा, ॐ शुं शिखायै वषट्, ॐ शुं, कवचाय हुम्, ॐ शुं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शुं अस्त्राय फट्।

•ध्यानम्– ॐ सन्तप्त- काञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुह- केशयुग्मम्। क्रौञ्चासनं असुरसेवितपादपद्मं शुक्रं भजे द्विनयनं हृदि पंकजेऽहम्।।

शनि का मन्त्र– ॐ शं शनैश्चराय नमः।

❖विनियोगः–ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः– ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**, ॐ गायत्रीछन्दसे नमः **मुखे**, ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः **हृदये**, ॐ शं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖करन्यासः–ॐ शं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ शं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ शं मध्यमाभ्यां नमः,ॐ शं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ शं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ शं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

❖हृदयादिन्यासः– ॐ शं हृदयाय नमः, ॐ शं शिरसे स्वाहा, ॐ शं शिखायै वषट्, ॐ शं कवचाय हुम्, ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शं अस्त्राय फट्। ध्यानम्– ॐ नीलांजनाभं मिहिरस्य पत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजंगपाणिम्। सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानस पंकजेऽहम्।।

राहु का तान्त्रिक मन्त्र– ॐ रां राहवे नमः।

विनियोगः–ॐ अस्य श्रीराहु मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, राहुर्देवता, रां बीजम्, वेशः शक्तिः, श्रीराहुप्रीतये जपे विनियोगः। देहांगन्यासः–ॐ ब्रह्मऋषये नमःशिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**, ओं राहुदेवताये नमः **हृदये**, ओं रां बीजाय नमः **गुह्ये**, ओं वेशः शक्तये नमः **पादयोः**,। करन्यासः–ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ रां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ रां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ रां करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। हृदयादिन्यासः– ॐ रां हृदयाय नमः, ॐ रां शिरसे स्वाहा, ॐ रां शिखायै वषट्, ॐ रां कवचाय हुम्, ॐ रां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ रां अस्त्राय फट्।

ध्यान– वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम्। विकृतास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम् ।।

केतु का तान्त्रिक मन्त्र– ॐ कें केतवे नमः

❖विनियोगः– ॐ अस्य श्रीकेतुमन्त्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, केतुर्देवता, कें बीजं, वेशः शक्तिः, श्रीकेतुप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ऋष्यादिन्यासः–ॐ ब्रह्मऋषये नमः **शिरसि**,ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ केतुर्देवताये नमः **हृदये**, ॐ कें बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ वेशः शक्तये नमः **पादयोः**

❖करन्यासः–ॐ कें अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ कें तर्जनीभ्यां नमः, ॐ कें मध्यमाभ्यां नमः,ॐ कें अनामिकाभ्यां नमः, ॐ कें कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ कें करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः– ॐ कें हृदयाय नमः, ॐ कें शिरसे स्वाहा, ॐ कें शिखायै वषट्, ॐ कें कवचाय हुम्, ॐ कें नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ कें अस्त्राय फट्। ध्यानम्– ॐ वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्रविभूषणम्। वामोरुन्यस्ततद्धस्तं साभयेतरपाणिकम्।

ग्रहों का सामवेदीयशान्ति मन्त्र–

सूर्य–ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वायसूर्यम्।

चन्द्र–ॐ सन्ते पयांसि समवन्तुवाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।

आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व।।

कुजस्य–ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपागुं रेतागुंसि जिन्वति

बुधः– ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राध्नो अमर्त्य आदाशुषे।

जातवेदो वहात्वमद्या देवो उपर्व्बुधः।।

गुरोः–ॐ बृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपवाधमानः।

प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्।।

शुक्रस्य–शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया।

अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।

शनेः– ॐ शन्नो देवीरभिष्टय शन्नो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः।

राहोः– ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता।

केतोः– ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः।

ग्रहों का बीज मन्त्र–

सूर्य–ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

चन्द्र–ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

मंगल–ॐ हुँ श्रीं भौमाय नमः।

बुध–ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।

गुरु–ॐ ह्रीं क्लीं हुँ बृहस्पतये नमः।

शुक्र–ॐ ह्र श्रीं शुक्राय नमः।

शनि–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

राहु– ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।

केतु– ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।

योगिनीशान्तिमन्त्रः–

मङ्गला–ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा। **पिङ्ला**–ॐ ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा।

धान्या–ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा। **भ्रामरी**–ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा।

भद्रिका– ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। **उल्का**–ॐ उल्के मन रोगं नाशय जृंभय स्वाहा।

सिद्धा–ॐ ह्रौं सिद्धे मे सर्व मानसं साधय स्वाहा। **संकटा**–ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

शत्रुनाशक बगलामुखी प्रयोगः मन्त्र–

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

विनियोगः– ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषि त्रिष्टुप् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता. ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे च शत्रुणां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः। करन्यासः– ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐश्रीबगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टाना मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। षडङ्गन्यासः– ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ श्रीबगलामुखी शिरसे स्वाहा, सर्वदुष्टाना शिखायै वषट्, वाचं मुख पदं स्तंभय कवचाय हुम्, जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानः– सौवर्णासन संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रतीं भषणै र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिंतयेत्।।

बगलामुखी शाबर मन्त्र– शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते है- ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकाली राजमुखबंधनं ग्राम मुखबंधनं ग्राम पुरुमुखबंधनं कालमुख बंधनं चौरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबंधनं सर्वदुष्टग्रहबंधनं सर्वजनबंधनं वशीकुरु हुं फट् स्वाहा।

विष्णु द्वादश अक्षर मन्त्रजप प्रयोग

मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्रीछन्दः, श्रीविष्णुः परमात्मा देवता, मम सर्वपापविनाश-पूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖करन्यासः- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, नमो तर्जनीभ्यां नमः, ॐ भगवते मध्यमाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः, ॐ नमो भगवते कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

❖हृदयादिन्यासः- ॐ हृदयाय नमः, नमो शिरसे स्वाहा, ॐ भगवते शिखायै वषट्, ॐ वासुदेवाय कवचाय हुम्, ॐ नमो भगवते नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

❖ध्यानम्- ॐ विष्णु शरदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथाङ्गदहारकुण्डलं-महामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदार- कौस्तुभधरं वन्दे मनीन्द्रैः स्तुतम्।।

शिवपञ्चाक्षर मन्त्र जप विधिः-

ॐ नमः शिवायः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवायेति कीलकं, चतुर्विध पुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः- ॐ वामदेवऋषये नमः **शिरसि**, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ श्रीसाम्बसदाशिवदेवतायै नमः **हृदये**, ॐ बीजाय नमः **गुह्ये**, क्षों नमः शक्तये नमः **पादयोः**। ॐ शिवाय कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**,

❖कराद्विन्यासः- ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः- ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ नं शिरसे स्वाहा, ॐ मं शिखायै वषट्, ॐ शिं कवचाय हुम्, ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ यं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं,चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।। ॐ नमः शिवाय।

न्यास सहित नवार्ण मन्त्र जपः- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्योः देवताः, ऐं बीजम् ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः- ब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः **शिरसि**, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः **मुखे**, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि, ऐं बीजाय नमः **गुह्ये**, ह्रीं शक्तये नमः **पादयोः**, क्लीं कीलकाय नमः **नाभौ**, **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** इस मूल मन्त्र से हाथोंकी शुद्धि करके करन्यास करें। ❖**करन्यासः**- ॐ ऐं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ ह्रीं **तर्जनीभ्यां नमः**,ॐ क्लीं **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ चामुण्डायै **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ विच्चे **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**।

❖हृदयादिन्यासः-ॐ ऐं **हृदयाय नमः**, ॐ ह्रीं **शिरसे स्वाहा**, ॐ क्लीं **शिखायै वषट्**, ॐ चामुण्डायै **कवचाय हुम्**, ॐ विच्चे **नेत्रत्रयाय वौषट्**,ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **अस्त्राय फट्**। ❖**अक्षरन्यासः**-ॐ ऐं नमः **शिखायाम्**, ॐ ह्रीं नमः **दक्षिणनेत्रे**, ॐ क्लीं नमः **वामनेत्रे**, ॐ चां नमः **दक्षिणकर्णे** ॐ मुं नमः **वामकर्णे**, ॐ डां नमः **दक्षिणनासापुटे** ॐ यैं नमः **वामनासापुटे**, ॐ विं नमः **मुखे**, ॐ च्चें नमः **गुह्ये**।

❖**दिङ्न्यासः**- ॐ ऐं **प्राच्यै नमः**। ॐ ऐं **आग्नेय्यै नमः**, ॐ ह्रीं **दक्षिणायै नमः**। ॐ ह्रीं **नैर्ऋत्यै नमः**। ॐ क्लीं **प्रतीच्यै नमः**। ॐ क्लीं **वायव्यै नमः**। ॐ चामुण्डायै **उदीच्यै नमः**। ॐ चामुण्डायै **ऐशान्यै नमः**। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **ऊर्ध्वायै नमः**। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **भूम्यै नमः**।

ध्यानम्- खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः, शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।। अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां, सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

मालापूजन- **ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः** इस मन्त्र से मालाकी पूजा करके प्रार्थना करे-**ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।। ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।। ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।** इसके बाद **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** इस मन्त्र का जप करे। **गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।** इस श्लोक से भगवति को जप अर्पण करदें।

नवार्णमन्त्र के विविध कामना मन्त्रभेद(षट्कर्म प्रयोग)-मन्त्रों के स्वरूपः-

१. **वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अमुक(नाम) नामानं वषट् कुरुकुरु स्वाहा।** वशीकरण के लिए।

२. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्त(व्यक्ति नाम) फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा।** उच्चाटन के लिए।

३. **क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं(नाम) क्लीं क्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लीं क्लीं स्वाहा।** सम्मोहन के लिए।

४. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खे खे मारयमारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाहा।** मारण के लिए।

५. ॐ ठं ठं **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभयस्तंभय ह्रीं जिह्वांकीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा।** स्तम्भन के लिए।

६. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं यं यं शीघ्रमाकर्षय आकर्षय स्वाहा।** आकर्षण के लिए।

७. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं अमुकामुकेन सह विद्वेषणं कुरुकुरु स्वाहा** । विद्वेषण के लिए।

नवार्ण महामन्त्र स्वरूप-

यह महानवार्ण मन्त्र अचूक फल दायक है इसका न्यासादि पूर्ववत् ही होगा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहंत्रि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपाल-खट्वांग-शूलखड्ग-खेटकधारिणि छिन्नमस्तक धारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देव मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हूँ फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

संपुटित पाठ मे होम आहुति विचार-

संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत हैं **संपुटे हवनं नास्ति** के अनुसार ७०० होम आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। कर्मठगुरु- **सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्पे होमन्तु विपुलं चरेत्।।** अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु बहुधा करते हैं, दुर्गाकल्पतरु एवं अनुष्ठान प्रकाश मे आहुति संख्या २१०० स्पष्ट लिखी गई हैं। यथा- **होमकाले बीजसंयोगे दुर्गा मन्त्रेण पृथक् हुनेत्। कामना बीज संयोगो दुर्गा मन्त्रेण हुनेत्।। दुर्गास्तवन मन्त्राणां संख्यां सप्तशतं भवेत्। कामना मन्त्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश।। मध्ये मन्त्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत्। पाठे मन्त्रं पुटं वाच्यं होम मन्त्राः पृथक् पृथक्।। होमसंख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः। पाठे बीजं पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत्।** दुर्गापाठ मन्त्र को अगर किसी **ऐं, ह्रीं, श्रीं,** या किसी बीज मन्त्र से संपुटित किया जाता है तो सम्पुटित कामना मन्त्र के अलग होम की आवश्यकता नहीं हैं। बीज मंत्र एकाक्षरी हो या५-७ बीजाक्षर होवे तो भी एक ही आहुति होगी। अतः ७०० आहुति देवे। **अस्त संपुट**- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में कामना मंत्र या बीजाक्षर विलोम होगा। व्याहृति व बीजाक्षरों का संपुट मंत्र के आदि व अंत में लोम विलोम ही लगता है अतः विलोमाक्षर का पृथक् होम नहीं करने पर केवल७०० आहुति देवे। मरणादि मंत्रों में लोम कामना मंत्र फिर दुर्गा मंत्र फिर विलोमाक्षर कामना मन्त्र की आहुति देने पर २१०० आहुति देवे। **निष्कर्ष**- प्राय उदय संपुट पाठ ही करते हैं अर्थात् दुर्गा मन्त्र के आदि-अंत में कामना मंत्र लोम ही लगाते हैं अतः २१०० आहुति देवे।

संपुटित पाठ प्रकार एवं विधि-

पाठ मंत्र से आगे पीछे कामना मंत्र लगाने से संपुटीकरण कहते हैं। संपुट पाठ ३ प्रकार के होते हैं। १.उदय संपुट, २.अस्त संपुट, ३.अर्द्धसंपुट

१.उदय संपुट- उदय सपुट में कामना मंत्र सप्तशतीपाठ मंत्र के आदि व अंत में लगाया जाता हैं।

२.अस्तसंपुट-अस्तसंपुट बीजमंत्र या कामना मंत्र पाठ के आदि में पढे फिर दुर्गापाठ मंत्र पढे अंत में कामना मंत्र विलोम रूप से उच्चारण करे यथा- ह्रीं जू सः ऐं **मार्कण्डेय उवाच** सः जू ह्रीं। ३.**अर्द्धसंपुट**- कामनामंत्र दुर्गापाठ मंत्र के आदि या अन्त में केवल एक बार पढें। इसका फल न्यून हैं परन्तु विपरीत प्रभाव नहीं होता हैं। **प्राय सर्वत्र उदय संपुट का ही प्रचलन है।**

४. तंत्र मार्ग के अनुसार व्याहृति व बीजाक्षर का संपुट प्रारंभ में लोम तथा कामना मंत्र इष्ट के बाद विलोम क्रम से होता है तथा इनकी आहुति भी एक ही होती है। ५.मित्रपाद प्रयोग- मंत्र के चरन भेद मध्य में बीजमंत्र या अन्य मन्त्र के संयोजन से मंत्र उपासना या दुर्गा उपासना की जा सकती है।

कामनानुसार दुर्गा पाठ के द्वादश क्रमभेद-

दुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र है, इनको अलग अलग क्रम से करने पर अलग-अलग कामना फल विशेष रूप से मिलता है। जो निम्न प्रकार हैं-(तन्त्रप्रभा एवं निर्णय सिन्धु) १.महाविद्या क्रम- प्रथम, मध्यम उत्तर चरित्र- **सर्वकामना हेतु**। २.महातन्त्री- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- **शत्रुनाश,लक्ष्मीप्राप्ति हेतु**। ३.चण्डी- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- **शत्रुनाश**। ४.महाचण्डी- उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र- **शत्रुनाश,लक्ष्मीप्राप्ति हेतु**। ५.सप्तशती- मध्यम,प्रथम,उत्तर चरित्र- **लक्ष्मी व ज्ञान प्राप्ति एवं उत्कीलन**। ६.मृतसंजीवनी- मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र- **आरोग्यलाभ**। ७.रूप दीपिका- **प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र**-विजय व आरोग्य। (**रूपं देहि जयं देहि से संपुटित**)। ८.निकुंभला- मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र- रक्षा हेतु, विजय हेतु(**शूलेन पाहि नो देवि से संपुटित**)। ९.योगिनी- बालोपद्रव शमन। (प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बधित योगनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को **वं शं षं** सम्पुटित)। १०.विलोम(संहार क्रम)- ७०१ वें श्लोक से प्रथम श्लोक तक विलोम क्रम से। ११.अक्षरात्मक विलोम पाठ- १३ वें अध्याय से प्रथम अध्याय तक काशी के पुराने विद्वानों के पास मिल सकती है१०० वर्ष पहले छपी हुई है। इसी तरह प्रत्येक चरित्र के पहले भैरव नामावलि पाठ का विधान भी मिलता। गढ़वाल क्षेत्र व अन्य सम्प्रदायों में हर अध्याय पहले भैरव नामावलि का पाठ करने का क्रम भी मिलता है। कई विद्वान कहते है कि सप्तशती के बाहर के मंत्र का संपुट नहीं लग सकता, परन्तु योगिनी क्रम से यह साफ जाहिर है कि अन्य मंत्रों के संपुट लग सकते हैं। दुर्गा सप्तशती के सभी दशमहाविद्याओं के मंत्र, गायत्री मन्त्र, भागवत के मन्त्रों का, वैदिक मंत्रों का व अन्य कई मंत्रों का संपुट लगाया जा सकता है। दुर्गार्चनसृतिः, अनुष्ठान प्रकाश में दुर्गा के बाहर के मन्त्रों के संपुट के विषय में लिखा है। स्वयं रावण भी निकुंभला का उपासक था वह भी सप्तशतीक्रम से पाठन **शूलेन पाहिनो..**। का संपुट लगाता था।

दुर्गापाठ मे निषिध आहुति विचार-

चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते। रक्षा कवचागैमन्त्रै तत्र न कारयेत्।। अर्थात्- १.कवच मंत्र एवं अस्त्र शस्त्र मंत्रों का हवन नहीं होता हैं। वैसे अगर कवच सिद्ध करना हो तो गुग्गुल व घृत से होम करे। क्यो कि घृत से अग्नि का आवाहन होता है। २.सौभाग्य द्रव्य सिन्दुरादि का भी होम नही होता है मरण कर्म में सिन्दुरादि से हवन अवश्य होता हैं उसमें तो अग्नि का १६वां मृतक संस्कार कुण्डानि का होता है पश्चात् विधि होम प्रारम्भ होता है। ३. चतुर्थ अध्याय के **शूलेन पाहिनो देवि** इत्यादि चार मन्त्रो का हवन नही होता, इसी तरह **खड्गिनी शूलिनी** मन्त्र का भी उच्चारण कर हवन नहीं करना चाहिए उक्त मन्त्र के स्थान पर **नवार्ण मन्त्र** अथवा **श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा** से हवन करें अथवा मन्त्र को मानसिक उच्चारण कर हवन करें।४. पांचवे अध्याय में **दूत उवाच** दो बार आया है इस मन्त्र से आहुति देने से फल का भाग दूत को जाता हैं अतः कर्मफल में न्यूनता आती हैं। अतः मनसा पढकर **ऐं सरस्वत्यै नमः** से आहुति प्रदान करें।

दुर्गासप्तशती के प्रति अध्याय के अन्त मे महा आहुति विधान-

प्रति अध्याय के अन्त में आहुति समय स्रुव पर आहुति द्रव्य रखकर मंत्र से आहुति देवे। पश्चात् घी की आहुति इन मन्त्रो से देवे। घृताहुति के मन्त्र तो एक ही है, महाहुति क्रम अलग अलग हैं। घृत आहुति मंत्र- ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

प्रथम-अध्याय- एक पान पर कपित्थफल,मधु, कमलगट्टा,गुगल, शाकल्य, गंधाक्षत्, पुष्प, लौंग, इलायची सब एक साथ लेवे। सुपारी रखे घी से भिगाये एवं स्रुव में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र से आहुति देवे-मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।। अथवा ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

द्वितीय-अध्याय :- हवनीयद्रव्य- पान, कमलगट्टा, गुगल, नारिकेलखण्ड, पुष्प, लौंग, इलायची, शाकल्य, सुपारी- नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्त्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

तृतीय-अध्यायः- पान, बिजोरा, चंदन, नीमगिलोय, दधि, माष, मधु, भैंसागुग्गल, कमलगट्टा, लौंग२, इलायची२, सुपारी, शाकल्य, पुष्प, फल लेकर महाहुति देवे- नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सशक्त्यै सायुधायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

चतुर्थ-अध्याय-द्रव्य-पान, शाकल्य, पायस, कमलगट्टा, बिल्वफल, लौंग, इलायची, गुग्गल, फल, पुष्प, मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सशक्त्यै सायुधायै श्री लक्ष्मीबीज अधिष्ठात्र्यै। त्रिवर्णात्मिकायै श्री महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पञ्चम-अध्याय- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, गुगल, कमलगट्टा, कपूर, श्वेतचन्दन, पुष्प, फल, बिल्वफल,विजौरा। मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा.सश. सायु. शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

षष्ठ-अध्यायः- द्रव्य- पान, शाकल्य, कमलगट्टा, गुग्गल, भोजपत्र, कुष्माण्डखण्ड, नारंगी, नारिकेलखण्ड, फल, पुष्प मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै .....अथवा जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा.सश. सायु. शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

सप्तम-अध्यायः-द्रव्य-पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, चिरौंजी, लाजवन्ती, पुष्प, कमलगट्टा, जयफल, कुष्माण्ड- फलखण्ड, कर्पूर- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ......जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. श्रीकर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै श्री धूम्राक्षी काली चामुण्डा देवता महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

अष्टम-अध्यायः-द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, फल, गुग्गल, कुष्माण्डखण्ड, लालचन्दन, मधु, पुष्प- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

नवम-अध्याय- द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, बिजौरा नींबू,फल, कुष्माण्डखण्ड, इक्षुखण्ड, बिल्वफल,मनफल- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. श्री वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै भगवति महाकाल्यै तारादेव्यै नमः महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **दशम-अध्याय-** द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, बिजौरा, कस्तूरी, गुग्गल,फल, कुष्माण्डखण्ड, पुष्प, मेनसिल, बिल्वफल,- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. सिंहवाहनायै शूलपाशधारिण्यै अंबिका भैरवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

एकादश-अध्याय-द्रव्य-पान, पुष्प, फल, शाकल्य, लौंग, इलायची, कर्पूर, शर्करा, कमलगट्टा, सुपारी, मिश्री, पायसात्र, गुग्गल, इक्षुखण्ड, दाड़िमफल मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...जयन्ती मंगला ...सांगा. सप. सवा. सश.सायु. सर्वनारायण्यै शक्त्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

द्वादशदश-अध्याय- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारि, अगर,कस्तूरी, कमलगट्टा, पत्र, पुष्प, फल, जायफल, विल्वफल, मिश्री, पायसात्र मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै..जयन्ती मंगला..सांगा. सप.सवा.सश.सायु.श्री बालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

त्रयोदश-अध्याय- द्रव्य-पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, बिल्वफल, गूग्गल, कमलगट्टा, फल, समीपत्र, कदलीफल, श्वेतार्कपुष्प, कसर, कर्पूर, श्वेतपुष्प, नारिकेलखण्ड, पुष्प, मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै ... जयन्ती मंगला ..सांगा. सप. सवा. सश.सायु. श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

।। शत्रुनाशक बगला माला मन्त्र।।

ॐ नमो भगवति ॐ नमो वीरप्रतापविजयभगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं गतिं स्तम्भय स्तम्भय ब्रह्मीं मुद्रय मुद्रय बुद्धिं विनाशय विनाशय, अपराबुद्धिं कुरु कुरु, आत्म विरोधिनां शत्रूणां शिरो ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरु पद अणुरेणु दन्तोष्ठ जिह्वा तालु गुह्य गुद कटि जानु सर्वाङ्गेषु केशादिपादपर्यन्तं पादादिकेशपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, खें खीं मारय मारय, परमन्त्र परतन्त्राणि छेदय छेदय, आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, सर्वग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय दुःखं हर हर, दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्वमन्त्र-स्वरूपिणि, सर्वतन्त्र स्वरूपिणि, सर्वशिल्प-प्रयोग-स्वरूपिणि, सर्वतत्व-स्वरूपिणि, दुष्टग्रह भूतग्रह आकाशग्रह पाषाणग्रह सर्वचाण्डालग्रह यक्षकिन्नर -किम्पुरुषग्रह भूतप्रेत-पिशाचानां शाकिनी डाकिनी-ग्रहाणां पूर्वदिशां बन्धय बन्धय वार्तालि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशां बन्धय बन्धय, किरात- वार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिमदिशां बन्धय बन्धय, स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशां बन्धय बन्धय, कालि मां रक्ष रक्ष ऊर्ध्वदिशां बन्धय बन्धय, उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पातालदिशां बन्धय बन्धय, बगलापरमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकलरोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रून् पलायनाय पञ्चयोजनमध्ये राजजन-स्त्रीवशतां कुरु कुरु शत्रून् दह दह, पच पच स्तम्भय, स्तम्भय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय, उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

।। इति बगलामालामन्त्रः।।

श्रीसूक्त

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषिः, अग्निर्देवता: आदौत्रयस्य अनुष्टुप् छंदः शेषांसा प्रसार पंक्तिः, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप् पुनः प्रसार पंक्तिश्छंदः, हिरण्य वर्णा बीजं, तां आवह इति शक्तिः कीर्तिमृद्धिं ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्ध्यर्थं पाठे जपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।। २।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।। ३।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। ४।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ।। ८।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ।।९।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः १०।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।११।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।१२।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।।१३।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।।१४।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व।।१७।।
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।।१८।।
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे।।१९।।
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे।।२०।।
धनमग्नि र्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना।।२१।।
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।।२२।।
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्।।२३।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।२४।।
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युत—वल्लभाम्।।२५।।
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।२६।।
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः। ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः।।२७।।
ऋणरोगादि— दारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।२८।।
श्रीर्वर्चस्वमायुष्य— मारोग्य—माविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।२९।।

।। ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम्।।

चमत्कारी लक्ष्मी महामन्त्र प्रयोग विधि-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

विनियोगः-अस्य श्रीमहालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्माऋषि गायत्री छन्दः, महालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः।(एक अर्घाजल छोड़ दें)।

ऋष्यादिन्यास-ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः मुखे, ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदये, ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये,ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः।

करन्यास-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रींश्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं कनिष्ठिाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमःश्रीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः,

करन्यासः ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम्।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्।

ध्यान-सिन्दूरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्यवारां निधिं, कोटी-रांगद-हार- कुण्डल-कटी- सूत्रादिभिर्भूषिताम्।। हस्ताब्जैर्वसुपात्राब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परा,मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शारङ्गिणः।।

दीपावली या किसी शुभ मुहूर्त मे (धन— धान्यादि वृध्यर्थं श्रीमहालक्ष्म्याः पूजनं तथा जपं करिष्ये या कारिष्ये)लक्ष्मी जी का विधिवत् पूजनादि कर जप करना चाहिए यदि केवल दीपावली दिन ही करना चाहते हैं तो ११००० जप कर अन्तमे दशांश हवन,तर्पण,मार्जनोपरान्त पूर्णाहूति दें उत्तरपूजन आरती कर यथा ज्ञान सन्तुष्ट करने से लक्ष्मी जी साक्षात् निवास करतें हैं। **जपमाला—स्फटिक/कमलगट्टा। जप संख्या—११०० प्रतिदिन। पुरश्चरण—१,२५,०००।** हवन द्रव्य—घी,शहद एवं शक्कर से युक्त बेलफल।

॥ पुरुषसूक्त॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भुमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भुतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ ८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते। १०
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत। ११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भुमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२अकल्पयन्। १३।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ १६॥

॥ इति पुरुष सूक्तम्॥

॥ रुद्रसूक्त॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥
या ते रुद्र शिवा तनुरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ँ सीः पुरुषं जगत्।
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना असत् ॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैन ँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा ँ हेड ईमहे ॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन् नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टोमृडयाति नः ॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥
अवतत्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्षशतेषुधे ।
निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥
मा नो महान्तमुत मा नो
अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत
मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥
मा नस्तोके तनये मान आयुषि
मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो
वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।१६॥

॥ इति रुद्रसूक्त॥

सङ्कटा—स्तुतिः

प्रयोजन—महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली की कृपा तथा दर्शन कराने वाला अमोघ व परम तेजस्वी स्तोत्र। इसी स्तोत्र द्वारा महाकवि कालिदास ने मां भद्रकाली की उपासना कर साक्षात् दर्शन किये थे तथा वेद उपनिषदों का ज्ञान आशीर्वाद स्वरूप पाकर ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी हुए थे।

अयि गिरि—नन्दिनि नन्दित—मेदिनि विश्व—विनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर—विन्ध्य—शिरोऽधि—निवासिनि विष्णु—विलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठ—कुटुम्बिनि भूरि—कुटुम्बिनि भूतिकृते ।
जय जय हे महिषासुर—मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।१॥
सुर—वरवर्षिणि दुर्धर—धर्षिणि दुर्मुख—मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवन—पोषिणि शंकरतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुज—निरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुर—मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।२॥
अयि जगदम्ब कदम्बवन—प्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरि—शिरोमणि—तुङ्ग—हिमालय—शृङ्ग—निजालय—मध्यगते।
मधु—मधुरे मधु कैटभ—गञ्जिनि महिष—विदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३॥
अयि निजहुंकृति—मात्रनिराकृत—धूम्रविलोचन — धूम्रशते
समरविशोषित—रोषित—शोणित—बीजसमुद्भव—बीजलते।
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।४॥
अयि शतखण्ड—विखण्डित—रुण्ड— वितुण्डित—शुण्ड—गजाधिपते
निजभुजदण्ड- निपातितचण्ड विपाटित—मुण्ड—भटाधिपते।
रिपुगजगण्ड—विदारण—चण्डपराक्रम—शौण्ड—मृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।५॥
धनुरनुषङ्ग—रणक्षणसङ्ग—परिस्फुरदङ्ग—नटत्कटके
कनक—पिशङ्ग—पृषत्कनिषङ्ग—रसद्भटशृङ्ग—हताबटुके
हत—चतुरङ्ग—बल—क्षितिरङ्ग—घटद्—बहुरङ्ग—रटद् —बटुके
जय जय हे महिषासुर—मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।६॥
अयि रणदुर्मद—शत्रुवधाद्धुर—दुर्धर— निर्भर— शक्तिभृते
चतुर-विचार-धुरीण -महाशय - दूतकृत-प्रमथाधिपते
दुरित—दुरीह—दुराशय— दुर्मति—दानवदूत—दुरन्तगते
जय जय हे महिषासुर—मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।७॥
अयि शरणागत—वैरिवधूजन— वीरवराभय—दायिकरे
त्रिभुवनमस्तक—शूलविरोधि—शिरोधिकृतामल — शूलकरे
दुमिदुमितामर—दुन्दुभिनाद—मुहुर्मुखरीकृत—दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।८॥
सुरललना—ततथेयित—थेयित—थामिनयोत्तर—नृत्यरते
कृतकुकुथा—कुकुथोदि—डदादिक—तालकुतूहल— गानरते।
धुधुकुट—धूधुट—धिन्धि—मितध्वनि—घोरमृदङ्ग —निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।९॥
जय जय जाप्यजये जयशब्द—परस्तुति—तत्पर- विश्वनुते
झणझण-झिंमझिम-झिंकृत-नूपुर- शिञ्जित-मोहित-भूतपते।
नटितनटार्ध- नटीनटनायक-नाटन-नाटित-नाट्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१०॥
अयि सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनः सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनी-रजनी-रजनी- रजनी- रजनीकर - वक्त्रभृते।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराभिदृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।११॥
महित-महाहव-मल्ल-मतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते
विरचितवल्लि-कपालिक पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते
श्रुतकृत फुल्ल- समुल्ल सिताऽरुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१२॥
अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन- मन्मथराजसुते
अविरल- गण्ड- गलन्- मदमेदुर- मत्त- मतङ्गजराजगते
त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधिरूप- पयोनिधि - राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१३॥
कमल- दलामल- कोमलकान्ति-कलाकलितामल - भालतले
सकल- विलास- कलानिलय- क्रमकेलिचलत्- कलहंसकुले
अलिकुल-सङ्कुल-कुन्तल-मण्डल-मौलिमिलद्—बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१४॥
करमुरलीरव— वर्जित— कूजित —लज्जित—कोकिल—मञ्जुमते

मिलित—मिलिन्द—मनोहरगुञ्जित—रञ्जित—शैल— निकुञ्जगते
निजगण—भूतमहा—शबरीगण —रङ्गणसम्भृत —केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१५॥
कटितटपीत — दुकूलविचित्र —मयूख—तिरस्कृत —चण्डरुचे
जितकनकाचल — मौलिमदोर्जित—गर्जित—कुञ्जर—कुम्भकुचे।
प्रणत—सुरासुर—मौलिमणि—स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १६॥
विजित— सहस्त्रकरैक — सहस्त्रकरैक — सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक — सङ्गरतारक — सङ्गरतारक — सूनुसुते
सुरथसमाधि — समानसमाधि— समानसमाधि—सुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १७॥
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १८॥
कनकलसत् — कलशीक जलै रनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवं
भजति स किं न शची—कुच —कुम्भ—तटीपरिरम्भ—सुखानुभवम्
तव चरणं शरणं करवाणि नुवाणि पथं मम देहि शिवं
जय जय हे महिषासुर—मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १९॥
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्न नुकूलयते
किमु पुरुहूत—पुरीन्दुमुखी— सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ २०॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे ।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ २१॥
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना, नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥ २२॥

॥ इति श्रीसङ्कटा—स्तुतिः सम्पूर्णा॥

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
प्रपप्तः प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥३॥
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥४॥
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबद्धः सदाहम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥५॥
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥६॥
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥८॥

रुद्राष्टक

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥१॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्॥२॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कण्ठेभुजंगा॥३॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥६॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं
भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥८॥
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥९॥
इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीकाल भैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ १॥
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ २॥
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ३॥
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ४॥
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ५॥
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ६॥
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ७॥
भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥ ८॥
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं
विचित्रपुण्यवर्धनम्। शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम्॥
॥ श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचित कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥१॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥२॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥३॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥४॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥५॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं धुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥६॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥७॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥८॥
॥ इति श्रीमद्वाल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्॥

वास्तु विचार

ग्रामवास.विचार- मस्तकक्त पञ्चलाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः। कुक्षौ पञ्च धनं धान्यं षटपादे स्त्री दरिद्रता।। पृष्ठे चैक पादहानिर्नाभौ चत्वा रिसंपदः। गुहये चैक भयं पीडा हस्ते चैक तु क्रन्दनम्।। वामे चैक करे भेदो ग्राम चक्रं नरां कृतिः। गणयेज्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रतः सदा।।

-ग्राम के नक्षत्र से वास पुरूष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तरं अधोलिखित चक्र में

ग्रा.न.से. पु.ज.न.	५	३	५	५	६	१	४	१	१	१
अवयव	मस्तक	मुख	पेट	पेट	पैर	पीठ	नाभि	गुर्दा	दाया हाथ	वाया हाथ
फल	लाभ	धन हानि	धन धान्य	धन धान्य	स्त्री अभाव	पैर में पीड़ा	धन सम्पति	भय पीड़ा	युद्ध	मत भेद

भूमिपरीक्षण :- गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि शोधन की बहुत सी विधियां दी गयी है। किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियां अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित हैं।

मध्येगृहे हस्तमितं खनित्वा सम्पूरयेत्पांशुभिराश्रुतस्य ।
सम्पूरयित्वा धिकतामुपेतःपांशुर्यदा तद्गृहमुत्तमं स्यात।।
समे समं न्यूनतरे सदोषं न कारयेत्तत्र गृहं दाचित् ।

जिस भूमि पर मकान बनाना हो तो उसके वीचों बीच एक हाथ लम्बा,एक हाथ चौड़ा,एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना फिर उसी निकली हुई मिटी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी बच जाय तो उत्तम, बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निषिद्ध होता है इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये।

तदा निशादौ तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूरयेत्।
प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पौ व्रणे क्षयः।।

पूर्व विधि से गढ्ढा खोदकर पानी से सायं काल में पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो
शुभ, केवल कीचड़ बचा रहे तो सम और मिटी फट जाय तो भूमि हानिकारकं होती है। वास्तुरत्नाकर के अनुसार जिस भूमि पर ओषधियॉं, बृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो ऐसी भूमि निवास के लिये प्रशस्त मानी गयी है।

गजपृष्ठादि भूमि विचार :- गजपृष्ठ जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम,नैर्ऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ऊँची हो उसको गज पृष्ठ कहा गया है। उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन-धान्य, संतान,आयु की वृद्धि होती है।

कूर्मपृष्ठ : जहां की भूमि मध्य में उँच हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो,वह कूर्मपृष्ट भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह, धन-धान्य, संतान,आयु, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठः ईशानकोण,पूर्व और अग्निकोण में भूमि उच्च हो और पश्चिम में नीच हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।

नागपृष्ठ :- जहॉं दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि उच्च हो, बीच में नीच हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। यहॉं वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।

चारों वर्णों के आधार पर भूमि विवेचनः-

मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतगन्धा च या मंही। अन्तरप्रवणा ज्ञेया ब्राह्मणानां च सा शुभा।। रक्तगान्धा कषाया च शरवीरेण संयुता। रक्ताप्राक्प्रावणज्ञेया क्षत्रियाणंा च सा मही।। दक्षिण प्रवणा भूमिर्याऽम्ला दूर्वाभिरन्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्णा प्रशस्यते ।। पश्चिमप्रवणा कृष्णा विकुण्ठा काश संयुता। मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा।।

स्पष्टार्थ चक्र

ब्रह्ममण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
उतरप्लव	पूर्वप्लव	दक्षिणप्लव	पश्चिमप्लव	प्लव
मधुर	कषाय	अम्ल	कटु	रस
घृतगन्ध	रक्तगन्ध	अन्नगन्ध	मद्यगन्ध	गन्ध
दर्भयुक्त	शपतयुत	बूवयुक्त	कशयुक्त	
श्वेतवण	रक्तवर्ण	पीतवर्ण	कृष्णवर्ण	वर्ण

सूर्य-चन्द्र वेध विचारः- चन्द्र वेधी मकान एवं जलाशय सूर्य वेधी शुभ होता है। हृद या वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधी दानों से शुभ होता है। पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधी मकान में धन- धान्य एवं संतति की क्षति होती है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनो प्रशस्त माना गया है। देवालय आदि के लिये सूर्यवेध और चन्द्रवेध का विचार नहीं होता (वास्तुरत्नाकरे)

पिण्ड ज्ञान- मकान की लम्बाई X चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है।

भवन के आय आदि का विचारः- गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से ६।९।६।८।३।८।८।४।८ इन अंको से अलग अलग दो २ का गुणा करके गुणनफल मे क्रमश-८।७।९।१२।८ ।२७।१५।२७।१२०।इन अंको से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रम से आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि,योग और आयु होती है। कम आयु वाला मकान शुभ नहीं होता है।

१.आयः- ध्वज ,धूम्र ,सिंह ,श्वान ,वृष ,खर ,गज ,उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते हैं इसमें विषम आय १, ३,५,७ हो तो शुभ एंव सम हो २,४,६,८ तो अशुभ होता है।

वार तथा अंश- सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश मेषादिनवांश सर्वदा अग्नि भय करने वाले होते है। तथा शेष ग्रहो का वारादि अभीष्ट सिद्धि दायक होता है।

द्रव्य या धनः- यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है। ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।

नक्षत्र- गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है।

तिथि :- शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती है, उनमें ये ४,९,१४,१९,२४,२७,२९,३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं।

योग :- अतिगण्ड, शूल,गण्ड, व्याघात , वज्र, व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है। **आयु :-** दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। आयु विहीने गेहे तु दुर्भगत्वं प्रजायते।

राशि :- वासकर्ता का नाम राशि से २,९,५,१०,११ स्थानो में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १,३,४,७,८ और१२ स्थानो में हो तो अशुभ होता है।

भवन के लाभ आदि का विचार :- अपनी २ वर्ग संख्या को द्विगुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणि होता है। अतः वासकर्ता की काकणी से गॉंव,मुहल्ला या शाहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।

स्पष्टार्थ-चक्र

क्र.	वर्ग	नामाक्षर	वर्गेश	वर्ग संख्या	वर्ग की दिशा या कोण
१.	अवर्ग	अ,इ,उ,ए,ऐ,ओ,औ	गरूण	१	पूर्व दिशा
२.	कवर्ग	क,ख,ग,घ,ड.	मार्जार	२	अग्नेय कोण
३.	चवर्ग	च,छ,ज,झ,ञा	सिंह	३	दक्षिण
४.	टवर्ग	ट,ठ,ड,ढ,ण	श्वान	४	नैर्ऋत्य कोण
५.	तवर्ग	त,थ,द,ध,न	सर्प	५	पश्चिम
६.	पवर्ग	प,फ,ब,भ,म	मूषक	६	वायव्य कोण
७.	यवर्ग	य,र,ल,व	मृग	७	उत्तर
८.	शवर्ग	श,ष,स,ह	मेष	८	ईशान कोण

मण्डलानयनः- पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १.दाता २.भूपति ३.क्लीव ४.चोर ५.पण्डित ६.भोगी ७.धनाढ्य ८.दरिद्र ९.कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते हैं। इनका फल नामके सदृश होता है।

मण्डलेशानयनः- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घाविस्तारसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्तं मण्डलाधिप उच्यते।। इन्द्रो विष्णुर्यमो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः।। इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्यमो दुःखं निरन्तरम् वायश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्।। धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्। सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः।।

स्पष्ट चक्र								
१ इन्द्र सुखद	२ विष्णु यश	३ यम दुःख	४ वायु उच्चाटन	५ धन कुबेर	६ महादेव कलह	७ विधाता सुखशान्ति	८ गणेश सर्वसिद्धि	शेष देव फल

ऑंगन विचारः- ऑंगन की लम्बाई चौड़ाई को आठ से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रंम से १. तस्कर २.भोगी ३.पण्डित ४.दाक्षा ५.नृपति ६.नपुंसक ७.कुबेर ८.दरिद्र ९.भयदाता ये नव प्रकार के ऑंगन होते हैं। इनका फल नाम के समान होता है। बीच में ऑंगन ऊँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है। इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।

राहु दिशा विचार- देवालय,जलाशय और मकान के नींव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।

देवालये गेहे विधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।
मीनार्कः सिंहार्कः मृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत्।।

नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ठ भाग से खोदना शुभ होता है।

कक्ष विवेचनं मुहूर्त चिन्तामणौ :-

स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतःस्युः।
तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषध सर्वधाम्।।

स्नान कक्ष :- वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नान घर वाथरूम भवन के पूर्व में होना चाहिये। स्नान घर में गिजर वाल सुखाने की मशीन आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये। कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये। शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये। किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष में शौचालय रखना हो तो नैर्ऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य तथा नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये। नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में,हाथ साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये। यदि कपड़े धोने की मशीन स्नान घर में रखनी है तो केवल दक्षिण पूर्व कोने में रखनी चाहिये।

भोजनालय :- इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन का अग्नेय कोण में होता है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान अग्नेय कोण या पूर्व के मध्य में रखना चाहिये। भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा अग्नेय कोण में, खाद्यान्य भण्डार पूर्व दिशा में वरतन आदि दक्षिण यापश्चिम दिशा में रखना चाहिये। भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में वनवाना चाहिये। अगर भोजनालय में हीं भोजन करना है तो पश्चिम दिशा में उत्तम स्थान माना जाता है। भण्डार रूम स्टोर रूम वायव्य मे उत्तम होता है।

शयन कक्ष :- गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम में होना चाहिये। सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिर करके सोना चाहिये। **प्राक्शिरःशयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।**
पश्चिमे प्रवला चिन्ता हानि मृत्युर्त्तयोत्तरे।।

पूजाघर :- ईशान कोण में देवताओं का वास होता है। इसलिये ईशान में पूजा घर शुभ होता है। पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये। पूजा घर में शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर ताल परदा डाल कर रखें। हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये। पूजा की दीवार एवं फर्श सफेद या हल्के पीला रंग का होना चाहिये। नैऋत्य कोण में अस्त्रशस्त्र कक्ष, अग्नि कोण में विजली, जनरेटर अर्थात् उँर्जा से सम्बन्धित कक्ष, उत्तर दिशा मे कोषाघर, वायव्य में पशु गृह, अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य मे घृत दधिमथन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में अतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैर्ऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष, वायव्य उत्तर में रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष, एवं नैऋत्य कोण में प्रसूति कक्ष बनवाना चाहिये।

द्वार विवेचन :- मकान की लम्बाई जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई बराबर-बराबर नव ९ भाग करके पाँच भाग दाहिने और तीन भाग वायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये।

शिलान्यासः- पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अंदरपूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिये, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये।

गृहारम्भे वास्तु पुरूष स्थिति ज्ञानम् - गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमें गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग देना,यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में एव ० शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरूष का निवासी होता है। स्वर्ग एवं पताल में वास्तु पुरूष का निवास होने पर लाभ एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का- ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा वि णु,सूर्य,शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

वास्तुदोष निवारण के उपायः- १.घर में वास्तुदोष होने पर उचित यहीं है कि उसे यथा संभव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करके ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभंग दोष लगता है, ऐसी स्थिति में उसे बेंच कर दुसरा मकान बनाकर रहना उचित होता है। ऐसा संभव न हो सके तो वास्तुदोष के निवाराणार्थ वर्ष में कम से कम एक बार नौरात्रि में दुर्गासप्तशती का पाठ, श्रीरामचरितमानस का पाठ अखण्ड कीर्तन या भागवत यज्ञ आदि अवश्य करें। २.अमावश्या तिथि को गाय के उपले एवं समी की लकड़ी तिल,चावल,जौ,शक्कर,गुग्गुल ,जटामाशी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा ११०० आहूति करने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। यह वर्ष में एक बार करना चाहिये। घर में तुलसी का पौधा लगाने से गृह में सुखशान्ति रहती है।

श्रावणकृष्णपक्ष

शक १९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,उत्तरगोलः, वर्षा-ऋतुः, पश्चिमे कालः, अशुद्धः,पश्चिमास्तः गुरुः।
दिनांक ३० जुलाई तः १२ अगस्त यावत् सन् २०२६ ई।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
१	गुरु	३८।१६	रा.८। ४१	श्रवण	३२।०२	सं.६।१०	आयुष्मान	४६।५४	बालव ६।५४	मकर	अहोरात्र	३।१२।४६।४१	३३।१६	५।२१	६।३६	८	१४	३०	श्रावणेवर्जयेच्छाक, मैथिल नववर्षारम्भः, शिववासः, दक्षिणां विनायात्रा श्रवणे सं.६।१० यावत् ततः पूर्वयात्रा। पञ्चक(भदवा)आरम्भः सं.६।१० उपरि।
२	शुक्र	४०।०६	रा.६।२३	धनिष्ठा	३५।३३	रा.७।३४	सौभाग्य	४८।४२	तैतिल ६।१२	मकर ३।४७	प्रा.६।५२	३।१३।४६।४८	३३।१३	५।२१	६।३६	९	१५	३१	अशून्यशयन२ व्रतं, मृत्युयोगः रा.६।२३ या., अग्निवासः।
३	शनि	४०।२६	रा.६।३४	शतभिषा	३७।४५	रा.८।२८	शोभन	४६।२४	वणिज् १०।१७	कुम्भ	अहोरात्र	३।१४।४३।५५	३३।१०	५।२२	६।३८	१०	१६	१	अगस्त ८। भद्रा १०।१७ तः ४०।२६ यावत्, कन्यायां शुक्रः ६।१८।
४	रवि	३६।३५	रा.६।१३	पूर्वाभाद्रपद	३८।४१	रा.८।५१	अतिगण्ड	४३।०८	बव १०।०२	कुम्भ२३।२७	दि.२।४६	३।१५।४१।०३	३३।०७	५।२३	६।३७	११	१७	२	गणाधिपः ४ व्रतं, शिववासः, कर्के बुधः २३।५२। ❖अमृतयोगः रा.८।२३ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः, दग्धतिथि रा.८।२३ उपरि।
५	सोम	३७।३०	रा.८।२३	उत्तराभाद्रपद	३८।२६	रा.८।४५	सुकर्मा	३८।५१	कौलव ८।३२	मीन	अहोरात्र	३।१६।३८।११	३३।०४	५।२३	६।३७	१२	१८	३	मौना५, नागपंचमी५, मनसादेवीपूजनं, मधुश्रावणीपूजारम्भः। आश्लेषायां रविः ४८।११ रा.१२।५१, पुं.स्त्री चं.चं.योगे अश्ववाहनं वह्नी नाड़ी तदीशोभौमः मन्दवायुः वृष्टियोगः, सोमवारीव्रत,❖
६	मंगल	३४।२०	रा.७।०८	रेवती	३७।०४	रा.८।१३	धृति	३३।४४	गर ५।५५	मीन ३७।०४	रा.८।१३	३।१७।३५।१६	३३।०१	५।२४	६।३६	१३	१९	४	पञ्चक(भदवा)समाप्तिः रा.८।१३ उपरि, मिथुने कुजः ५६।०३, भद्रा ३४।२० उपरि, मृत्युयोगः रा.७।०८ यावत् ततः अमृतयोगः, उत्तरां विनायात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगः अश्विन्यां रा.८।१३ उपरि, दग्धतिथि रा.७।०८ या।
७	बुध	३०।१५	स.५।३०	अश्विनी	३४।५५	रा.७।२२	शूल	२७।५१	भद्रा २।१७	मेष	अहोरात्र	३।१८।३२।२७	३२।५८	५।२४	६।३६	१४	२०	५	शीतला ७,श्रीशीतलासप्तमी, कालाष्टमी व्रतं, इन्द्रसावर्णि मन्वादि, उत्तरां विनायात्रा अश्विन्यां, भद्रा २।१७ यावत्, सिद्धियोगः सं.५।३० यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः सं.५।३० उपरि, अग्निवासः
८	गुरु	२५।१६	दि.३।३२	भरणी	३१।५२	स.६।१०	गण्ड	२१।१६	कौलव २५।१६	मेष ४५।५८	रा.११।४८	३।१६।२६।३६	३२।५५	५।२५	६।३५	१५	२१	६	अमृतयोगः दि.३।३२ यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः दि.३।३२ यावत्
९	शुक्र	१६।४७	दि.१।२१	कृत्तिका	२८।१७	दि.४।४५	वृद्धि	१४।१४	गर १६।४७	वृष	अहोरात्र	३।२०।२७।००	३२।५२	५।२६	६।३४	१६	२२	७	पूर्व-दक्षिणयात्रा रोहिण्यां दि.४।४५ उपरि। भद्रा ४६।४६ उपरि, अमृतयोगः दि.१।२१ यावत्, अग्निवासः
१०	शनि	१३।५१	दि.१०।५८	रोहिणी	२४।१६	दि.३।०८	ध्रुव	०६।४६	भद्रा १३।५१	वृष ५२।१०	रा.२।१८	३।२१।२४।२४	३२।५०	५।२६	६।३४	१७	२३	८	व्याघातयोगमानं ५२।२४, दक्षिणयात्रा दि.३।०८ या. ततः पूर्वा विनायात्रा। भद्रा १३।५१ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.३।०८ यावत्, शिववासः दि.१०।५८ उपरि।
११	रवि	०७।४१	दि.८।३१	मृगशिरा	२०।०५	दि.१।३०	हर्षण	५१।३१	बालव ७।४१	मिथुन	अहोरात्र	३।२२।२१।४८	३२।४७	५।२७	६।३३	१८	२४	९	कामदा११ व्रतं सर्वेषाम्। पश्चिमां विनायात्रा द्वादश्यां मृगशिरसे च दि.८।३१ तः दि.१।३० यावत्। मृत्युयोगः दि.८।३१ यावत्, शिववासः, अग्निवासः दि.८।३१ यावत्
१२	सोम	०१।३०	प्रा.६।०३	आर्द्रा	१५।५६	दि.११।५०	वज्र	४३।५८	तैतिल १।३०	मिथुन५७।५८	रा.४।३८	३।२३।१६।१२	३२।४४	५।२७	६।३३	१९	२५	१०	दूर्वादलेन पारणं, सोमवारीव्रत, त्रयोदशीतिथिमानं ५४।५०, प्रदोष १३ व्रतं, प्रदोषेशिवार्चनं, दक्षिण-पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ दि.११।५० उपरि। भद्रा ५५।२८ उपरि, शिववासः प्रा.६।०३यावत्, अग्निवासः प्रा.६।३ उपरि
१४	मंगल	४६।५१	रा.१।२४	पुनर्वसु	११।५६	दि.१०।१६	सिद्धि	३६।४१	भद्रा २२।३६	कर्क	अहोरात्र	३।२४।१६।३६	३२।४१	५।२८	६।३२	२०	२६	११	प्रदोष१४ व्रतं, भद्रा २२।३६ यावत्, अग्निवासः
३०	बुध	४४।५०	रा.११।२४	पुष्य	८।२६	दि.८।५२	व्यतीपात	२६।४८	चतुरघ्न १७।२०	कर्क	अहोरात्र	३।२५।१४।००	३२।३८	५।२८	६।३२	२१	२७	१२	अमावस्या स्नानदान-श्राद्धादौ। हरियाली ३०, शिववासः, अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि	मिश्रमान
१	गुरु	१।२६।२६।१४	२।२६।२१।४६	३।१३।१४।४६	४।२८।४०।०६	११।१८।३२।१६	४।०६।०१।२८	४६।३७
२	शुक्र	१।२७।०६।४१	२।२७।४५।०२	३।१३।२८।१३	४।२६।४०।०२	११।१८।३०।५६	४।०८।५८।१७	४६।३६
३	शनि	१।२७।५०।०८	२।२६।०८।१५	३।१३।४१।४१	५।००।३६।५८	११।१८।२६।३६	४।०८।५५।०७	४६।३५
४	रवि	१।२८।३०।३५	३।००।३१।२८	३।१३।५५।०६	५।०१।३६।५५	११।१८।२८।१६	४।०८।५१।५७	४६।३३
५	सोम	१।२६।११।०२	३।०१।५४।४१	३।१४।०८।३७	५।०२।३६।५१	११।१८।२६।५६	४।०८।४८।४६	४६।३१
६	मंगल	१।२६।५१।३०	३।०३।१७।५४	३।१४।२२।०५	५।०३।३६।४७	११।१८।२५।३६	४।०८।४५।३५	४६।२६
७	बुध	२।००।३१।५८	३।०४।४१।०८	३।१४।३५।३३	५।०४।३६।४४	११।१८।२४।१६	४।०८।४२।२४	४६।२८
८	गुरु	२।०१।१२।२६	३।०६।०४।२२	३।१४।४६।०१	५।०५।३६।४०	११।१८।२२।५५	४।०८।३६।१३	४६।२७
९	शुक्र	२।०१।५२।१६	३।०७।४०।४६	३।१५।०२।३४	५।०६।३७।०६	११।१८।२०।५१	४।०८।३६।०३	४६।२६
१०	शनि	२।०२।३२।०६	३।०६।१७।१०	३।१५।१६।०७	५।०७।३४।३६	११।१८।१८।४७	४।०८।३२।५२	४६।२५
११	रवि	२।०३।११।५६	३।१०।५३।३४	३।१५।२६।४०	५।०८।३२।०६	११।१८।१६।४३	४।०८।२६।४१	४६।२३
१२	सोम	२।०३।५१।४७	३।१२।२६।५८	३।१५।४३।१३	५।०६।२६।३६	११।१८।१४।३६	४।०८।२६।३०	४६।२१
१४	मंगल	२।०४।३१।३८	३।१४।०६।२२	३।१५।५६।४६	५।१०।२७।०६	११।१८।१२।३५	४।०८।२३।१६	४६।१६
३०	बुध	२।०५।११।२६	३।१५।४२।४६	३।१६।१०।१६	५।११।२४।३६	११।१८।१०।३०	४।०८।२०।०८	४६।१७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	गुरु	००।१७	२।१३	४।२६	६।४४	९।००	११।१५	१३।३२	१५।४६	१७।५४	१९।४०	२१।११	२२।४०
२	शुक्र	००।१३	२।०९	४।२२	६।४०	८।५६	११।११	१३।२८	१५।४५	१७।५०	१९।३६	२१।०७	२२।३६
३	शनि	००।०९	२।०५	४।१८	६।३६	८।५२	११।०७	१३।२४	१५।४१	१७।४६	१९।३२	२१।०३	२२।३२
४	रवि	००।०५	२।०१	४।१४	६।३२	८।४८	११।०३	१३।२०	१५।३७	१७।४२	१९।२८	२०।५९	२२।२८
५	सोम	००।०१	१।५७	४।१०	६।२८	८।४४	१०।५९	१३।१६	१५।३३	१७।३८	१९।२४	२०।५५	२२।२४
६	मंगल	२३।५७	१।५३	४।०६	६।२४	८।४०	१०।५५	१३।१२	१५।२९	१७।३४	१९।२०	२०।५१	२२।२०
७	बुध	२३।५३	१।४९	४।०२	६।२०	८।३६	१०।५१	१३।०८	१५।२५	१७।३०	१९।१६	२०।४७	२२।१६
८	गुरु	२३।५०	१।४६	३।५९	६।१७	८।३३	१०।४८	१३।०५	१५।२२	१७।२७	१९।१३	२०।४४	२२।१३
९	शुक्र	२३।४६	१।४२	३।५५	६।१३	८।२९	१०।४४	१३।०१	१५।१८	१७।२३	१९।०९	२०।४०	२२।०९
१०	शनि	२३।४२	१।३८	३।५१	६।०९	८।२५	१०।४०	१२।५७	१५।१४	१७।१९	१९।०५	२०।३६	२२।०५
११	रवि	२३।३८	१।३४	३।४७	६।०५	८।२१	१०।३६	१२।५३	१५।१०	१७।१५	१९।०१	२०।३२	२२।०१
१२	सोम	२३।३४	१।३०	३।४३	६।०१	८।१७	१०।३२	१२।४९	१५।०६	१७।११	१८।५७	२०।२८	२१।५७
१४	मंगल	२३।३०	१।२६	३।३९	५।५७	८।१३	१०।२८	१२।४५	१५।०२	१७।०७	१८।५३	२०।२४	२१।५३
३०	बुध	२३।२६	१।२२	३।३५	५।५३	८।०९	१०।२४	१२।४१	१४।५८	१७।०३	१८।४९	२०।२०	२१।४९

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिनक अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रातिक अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	गुरु	दि.३:१८-६:३६।	रा.१२:००-१:१६। रा.४:०३-५:२४।
२	शुक्र	दि.८:४२-१२:००।	रा.६:१८-१०:३६।
३	शनि	दि.५:२५-७:०४। दि.१:४०-३:१६ दि.४:१७-६:३५।	रा.६:३५-७:५७। सा.१:२२-२:४३। रा.४:०४-५:।
४	रवि	दि.१०:३३-१:३८।	रा.१०:३८-११:५८। रा.१:१६-२:४०।
५	सोम	दि.७:०५-८:४४। दि.३:१७-४:५४।	रा.१०:३८-११:५८। रा.२:४०-४:०१।
६	मंगल	दि.७:०६-८:४५। दि.१:३६-३:१८।	रा.७:५५-६:१७।
७	बुध	दि.८:४४-१०:२२। दि.१२:००-१:३८।	रा.१२:००-१:२२। रा.२:४४-४:०६।
८	गुरु	दि.३:१६-६:३२।	रा.१२:०-१:२२। रा.४:०६-५:२८।
९	शुक्र	दि.८:४५-१२:०१।	रा.६:१७-१०:४०।
१०	शनि	सा.५:२६-७:०७। दि.१:३६-३:१७। सा.४:१७-६:३१	रा.६:३१-७:५४। रा.१:२४-२:४६। रा.४:०८-५:३०।
११	रवि	दि.१०:२-१:३६।	रा.१०:३६-१२:०२ रा.१:२४-२:४६।
१२	सोम	दि.७:०८-८:४६। दि.३:१६-४:५३।	रा.१०:३६-१२:०२। रा.१:२४-२:४६।
१४	मंगल	दि.७:०६-८:४७। दि.१:३८-३:१५।।	रा.७:५२-६:१५।
३०	बुध	दि..८:४६-१०:२३। दि.१२:००-१:३७।	रा.१२:००-१:२३।। रा.२:४६-४:०६।

मूलविचारः-रेवती/अश्विनी ति.५ सोम रा.८।४५ तः ति.७ बुध रा.७।२२ यावत्।।
आश्लेषा/मघा ति.३० बुध दि.८।५२ तः........।

विविधविषयाः– सोमव्रतं– सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्कता, नन्दिपुराणे– कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद् व्रतं निष्फलं भवेत्। श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्याः उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। अस्यामम्लतिक्त (निम्बपत्रबीजपूर) रससेवनं पुष्टिकरम्। सायंकाले च मूषकमृत्तिकादुग्धलाजान् सर्प्पमन्त्रेणाभिमन्त्र्य गृहेषु विकिरेत्। सर्प मन्त्र– दू सर्प्पा चौसर्प्पा झाड़े सारे कारे विषा आस्तीक आस्तीक आस्तीक। आस्तीकेति वचः श्रुत्वा यः सर्प्पो न निवर्त्तते। शतधा भिद्यते मूर्द्धा शिंशवृक्षफलं यथा।।

पञ्चम्यां नाग पूजनं–श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्यो गोमयेन विषोल्वणः। पूजयेद्विधिवद्वीर दधि दूर्वांकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणैः । ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। तेषां सर्पतो वीर भयं भवति न कुत्रचित्। पञ्चम्यां-शकुनम्– श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा शुभिक्षम्। नभसि शुक्ल दलेऽचलेसंज्ञके रवितिथावुदयो । रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः।

ग्रहस्थितिः-मार्गी पूश्चिमोदितः मंगल,शुक्रः, मार्गी पूर्वोदित गुरुः वक्री पूर्वोदितः शनिः, मार्गी पश्चिमोदितः बुधः ति.८ तः वक्री

१ गुरु वल्ली
८।४०।१३।०७
अयनांशाः २२।५४।३२

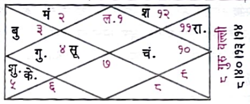

८ गुरु वल्ली
८।४०।१३।१४
अयनांशाः २२।५४।३३

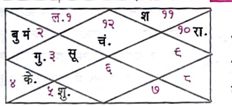

रुद्राभिषेक में विशेष द्रव्य विचार– ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया।। घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम्। तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः।। प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्। केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः।। शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्। श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शंकरस्य च।। सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह। मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात्।। पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा। जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै।। पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा। महालिंगाभिषेकेण सुप्रीतः शंकरो मुदा।। कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम्।।

श्रावणशुक्लपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,उत्तरगोलः, वर्षा-ऋतुः, पश्चिमे काल ति. ५ तः उत्तरे कालः, अशुद्धः ति.५ तः खरमासारम्भः।
दिनांक १३ अगस्त तः २८ अगस्त यावत् सन् २०२६ ई। ति.३ पूर्वोदितः गुरु

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	गुरु	४०।२७	रा.६।४०	आश्लेषा	५।३६	दि.७।४३	वरीयान्	२३।३२	किंगस्तुघ्न१२।३८	कर्क ५।३६	दि.७।४३	३।२६।११।२४	३२।३५	५।२६	६।३१
२	शुक्र	३७।०२	रा.८।१६	मघा	३।३५	प्रा.६।५६	परिघ	१७।५७	बालव ८।४४	सिंह	अहोरात्र	३।२७।०८।५६	३२।३२	५।३०	६।३०
३	शनि	३४।३९	रा.७।२२	पूर्वाफाल्गुनी	२।२६	प्रा.६।२८	शिव	१३।१०	तैतिल ५।५०	सिंह१७।२६	दि.१२।२८	३।२८।०६।२८	३२।२८	५।३०	६।३०
४	रवि	३३।२९	सं.६।५५	उत्तराफाल्गुनी	२।२६	प्रा.६। २९	सिद्ध	०९।१८	वणिज् ४।०४	कन्या	अहोरात्र	३।२९।०४।००	३२।२४	५।३१	६।२९
५	सोम	३३।३७	सं.६।५८	हस्त	३।३६	प्रा.६। ५८	साध्य	०६।२५	बव ३।३२	कन्या३४।५०	रा.७।२८	४।००।०१।३३	३२।३१	५।३२	६।२८
६	मंगल	३५।०३	सं.७।३३	चित्रा	६।०५	दि.७।५८	शुभ	०४।३३	कौलव ४।१९	तुला	अहोरात्र	४।००।५९।०६	३२।१८	५।३२	६।२८
७	बुध	३७।३५	रा.८।३५	स्वाती	९।४८	दि.९।२८	शुक्ल	०३।४३	गर ६।१९	तुला५८।४८	रा.४।५४	४।०१।५६।३९	३२।१५	५।३३	६।२७
८	गुरु	४१।१८	रा.१०।५	विशाखा	१४।३६	दि.११।२४	ब्रह्म	०३।४०	भद्रा ९।२६	वृश्चिक	अहोरात्र	४।०२।५४।१२	३२।१२	५।३४	६।२६
९	शुक्र	४५।४८	रा.११।५३	अनुराधा	२०।:६	दि.१।४०	ऐन्द्र	०४।२४	बालव १३।३३	वृश्चिक	अहोरात्र	४।०३।५१।५६	३२।०९	५।३४	६।२६
१०	शनि	५०।४७	रा.१।५३	ज्येष्ठा	२६।३४	दि.४।१२	वैधृति	०५।३९	तैतिल १८।१७	वृश्चिक२६।३४	दि.४।१२	४।०४।४९।४०	३२।०६	५।३५	६।२५
११	रवि	५५।५०	रा.३।५६	मूल	३३।०६	सं.६।५०	विष्कुम्भ	०७।१२	वर्णिज २३।१८	धनु	अहोरात्र	४।०५।४७।२४	३२।०२	५।३६	६।२४
१२	सोम	६०।००	अहोरात्र	पूर्वाषाढा	३९।२५	रा.९।२२	प्रीति	०८।४२	बव २८।१२	धनु ५५।५१	रा.३।५६	४।०६।४५।०८	३१।५८	५।३६	६।२४
१२	मंगल	००।३३	प्रा.५।५१	उत्तराषाढा	४५।०९	रा.११।४०	आयुष्मान	०९।५१	बालव ००।३४	मकर	अहोरात्र	४।०७।४२।५२	३१।५४	५।३७	६।२३
१३	बुध	०४।३५	दि.७।२८	श्रवण	४९।५९	रा.१।३८	सौभाग्य	१०।२७	तैतिल ४।३५	मकर	अहोरात्र	४।०८।४०।३७	३१।५१	५।३८	६।२२
१४	गुरु	०७।३२	दि.८।३८	धनिष्ठा	५३।४४	रा.३।०८	शोभन	१०।१२	वर्णिज् ७।३२	मकर२१।५०	दि.२।२२	४।०९।३८।२२	३१।४८	५।३८	६।२२
१५	शुक्र	०९।२९	दि.९।२६	शतभिषा	५६।१५	रा.४।०९	अतिगण्ड	०९।०७	बव ९।२७	कुम्भ	अहोरात्र	४।१०।३६।१८	३१।४५	५।३९	६।२१

दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
२२	२८	१३	दोलोत्सवारम्भः(झूलन)। गण्डान्त ९।३६ यावत्, अग्निवासः
२३	२९	१४	चन्द्रदर्शनं, धर्मसम्राट स्वामीकरपात्रि जयन्ती। पूर्व-उत्तरयात्रा रा.८।१६ उपरि। मृत्युयोग रा.८।१६यावत्, शिववासः।
२४	३०	१५	मधुश्रावणीव्रत समाप्तिः। स्वर्णगौरी व्रतं, श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वोदितः गुरुः २४।४१, उत्तरयात्रा तृतीयायां, अग्निवासः।
२५	३१	१६	मासान्तः। पूर्वास्तः बुधः १८।१७, भद्रा ४।०४ तः भद्रा ३३।२९ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.६।२९ उपरि।
२६	१	१७	नागपञ्चमी नागपूजनं। वासुकीनामा नागराजः रक्तवर्णो द्वारमुभयतो गोमयनिर्मिता नागाः सिन्दूरदुग्धलाजादिभिः पूज्याः। ऋग्वेदिनांमुपाकर्म(श्रावणी)। सोमवारीव्रत,मघायां सिंहे च रविः ४४।३० रा.११।२०, मु.३०समासमताकरं
२७	२	१८	मासादिः, मृत्युयोगः सं.७।३३ यावत्, शिववासः
२८	३	१९	शीतलापूजा, तुलसीदासजयन्ती, भद्रा ३७।३५ उपरि, दक्षिण-पश्चिमयात्रा स्वात्यां, सिद्धियोगः रा.८।३५ यावत् ततः अमृतयोगः, अग्निवासः
२९	४	२०	भद्रा ९।२६ यावत्, पश्चिम-उत्तरयात्रा अनुराधायां, अमृतयोगः रा.१०।०५ यावत
३०	५	२१	दग्धतिथि रा.११।५३ उपरि, सिंहे बुधः ५।३६, अमृतयोगः रा.११।५३ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।४० यावत्, शिववासः, अग्निवासः
३१	६	२२	दग्धतिथि रा.१।५३ यावत्, मृत्युयोगः रा.१।५३ यावत्
१	७	२३	भाद्रीरविव्रतारम्भः, पुत्रदा एकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। भद्रा २३।१८ तः ५५।५० यावत्, मृत्युयोगः रा.३।५६ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.६।५० यावत्
२	८	२४	सोमवारीव्रत, दूर्वादलेनपारणं। श्रीधर१२। मृत्युयोगः अहोरात्र, अग्निवासः, शिववासः
३	९	२५	प्रदोष १३ व्रतं, पूर्व-दक्षिणयात्रा, अमृतयोगः प्रा.५।५१ यावत् ततः सिद्धियोगः, अग्निवासः प्रा.५।५१ यावत्, शिववासः
४	१०	२६	प्रदोष १४ व्रतं, पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.१।३८ उपरि। मृत्युयोगः दि.७।२८ यावत्, अग्निवासः दि.७।२८ उपरि, शिववासः दि.७।२८ यावत्
५	११	२७	व्रतायपूर्णिमा, भद्रा ७।३२ तः ३८।२९ यावत्, मृत्युयोगः दि.८।३८ यावत् ततः सिद्धियोगः, अग्निवासः दि.८।३८ यावत्
६	१२	२८	श्रावणी१५ पूर्णिमा, स्नानदानादि, उपाकर्म, सूर्योदयात् रक्षाबन्धनम्। संस्कृतदिवसः, दोलोत्सवान्त,हयग्रीवावतारः, अग्निवासः-शिववासः दि.९।२६ उपरि

विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो दिवा १२।०० उपरि पुण्याहः,ने.भाद्रपदमासारम्भः,अशुद्धारम्भः।, स्त्री स्त्री मु.व.योगो घातक वाहन वहनी नाडी नदीशो भौमः मेघाच्छादित वृष्टियोगः। पुष्टगुरुः २४।४१, अमृतयोगः सं.६।५८ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः

१ गुरु वल्ली ८।४०।१३।२१
अयनांशाः २२।५४।३४

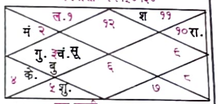

८ गुरु वल्ली ८।४०।१३।२८
अयनांशाः २२।५४।३५

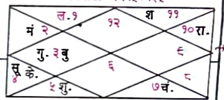

१४ गुरु वल्ली ८।४०।१३।३५
अयनांशाः २२।५४।३६

पूर्वाभाद्रपद — मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि	मिश्रमान
१	गुरु	२।०५।५१।२०	३।१७।१९।११	३।१६।२३।५३	५।१२।२२।०९	११।१८।०८।२५	४।०८।१६।५७	४६।१६
२	शुक्र	२।०६।३०।४१	९।१६।०२।५२	३।१६।३७।१६	५।१३।१५।३८	११।१८।०५।४६	४।०८।१३।४६	४६।१५
३	शनि	२।०७।१०।०३	९।२०।४६।३४	३।१६।५०।४०	५।१४।०९।०८	११।१८।०३।०७	४।०८।१०।३६	४६।१४
४	रवि	२।०७।४९।२५	३।२२।३०।१६	३।१७।०४।०४	५।१५।०२।३८	११।१८।००।२७	४।०८।०७।२६	४६।१२
५	सोम	२।०८।२८।४७	३।२४।१३।५८	३।१७।१७।२८	५।१५।५६।०८	११।१७।५७।४७	४।०८।०४।१५	४६।१०
६	मंगल	२।०९।०८।०९	३।२५।५७।४०	३।१७।३०।५२	५।१६।४९।३८	११।१७।५५।०७	४।०८।०१।०४	४६।०८
७	बुध	२।०९।४७।३१	३।२७।४१।२२	३।१७।४४।१६	५।१७।४३।०८	११।१७।५२।२७	४।०७।५७।५३	४६।०६
८	गुरु	२।१०।२६।५२	३।२९।२५।०४	३।१७।५७।४०	५।१८।३६।३८	११।१७।४९।४७	४।०७।५४।४२	४६।०५
९	शुक्र	२।११।०५।३९	४।०१।१२।३२	३।१८।१०।५७	५।१९।२५।३६	११।१७।४६।२१	४।०७।५१।३१	४६।०४
१०	शनि	२।११।४४।२६	४।०३।००।००	३।१८।२४।१४	५।२०।१४।३४	११।१७।४२।५५	४।०७।४८।२०	४६।०३
११	रवि	२।१२।२३।१३	४।०४।४७।२८	३।१८।३७।३१	५।२१।०३।३२	११।१७।३९।२९	४।०७।४५।१०	४६।०१
१२	सोम	२।१३।०२।०१	४।०६।३४।५६	३।१८।५०।४८	५।२१।५२।३०	११।१७।३६।०३	४।०७।४२।००	४५।५९
१२	मंगल	२।१३।४०।४९	४।०८।२२।२४	३।१९।०४।०६	५।२२।४१।२९	११।१७।३२।३६	४।०७।३८।४९	४५।५७
१३	बुध	२।१४।१९।३७	४।१०।०९।५२	३।१९।१७।२४	५।२३।३०।३८	११।१७।२९।०९	४।०७।३५।३८	४५।५५
१४	गुरु	२।१४।५८।२५	४।११।५७।२०	३।१९।३०।४२	५।२४।१९।२७	११।१७।२५।४२	४।०७।३२।२७	४५।५३
१५	शुक्र	२।१५।३६।३८	४।१३।४६।०८	३।१९।४३।५०	५।२५।०३।०५	११।१७।२१।४६	४।०७।२९।१७	४५।५२

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.२ शुक्र प्रा.६।५६ यावत्। ज्येष्ठा/मूल ति.९ शुक्र दि.१।४० तः ति.११ रवि सं.६।५० यावत्।

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	गुरु	२३।२२	१।१८	३।३१	५।४६	८।०५	१०।२०	१२।३७	१४।५४	१६।५९	१८।४५	२०।१६	२१।४५
२	शुक्र	२३।१९	१।१५	३।२८	५।४६	८।०२	१०।१७	१२।३४	१४।५१	१६।५६	१८।४	२०।१३	२१।४२
३	शनि	२३।१५	१।११	३।२४	५।४२	७।५८	१०।१३	१२।३०	१४।४७	१६।५२	१८।३८	२०।०९	२१।३८
४	रवि	२३।११	१।०७	३।२०	५।३८	७।५४	१०।०९	१२।२६	१४।४३	१६।४८	१८।३४	२०।०५	२१।३४
५	सोम	२३।०७	१।०३	३।१६	५।३४	७।५०	१०।०५	१२।२२	१४।३९	१६।४४	१८।३०	२०।०१	२१।३०
६	मंगल	२३।०४	१।००	३।१३	५।३१	७।४७	१०।०२	१२।१९	१४।३६	१६।४१	१८।२७	१९।५८	२१।२७
७	बुध	२३।००	००।५६	३।०९	५।२७	७।४३	९।५८	१२।१५	१४।३२	१६।३७	१८।२३	१९।५४	२१।२३
८	गुरु	२२।५६	००।५२	३।०५	५।२३	७।३९	९।५४	१२।११	१४।२८	१६।३३	१८।१९	१९।५०	२१।१९
९	शुक्र	२२।५३	००।४९	३।०२	५।२०	७।३६	९।५१	१२।०८	१४।२५	१६।३०	१८।१६	१९।४७	२१।१६
१०	शनि	२२।४९	००।४५	२।५८	५।१६	७।३२	९।४७	१२।०४	१४।२१	१६।२६	१८।१२	१९।४३	२१।१२
११	रवि	२२।४६	००।४२	२।५५	५।१३	७।२९	९।४४	१२।०१	१४।१८	१६।२३	१८।०९	१९।४०	२१।०९
१२	सोम	२२।४२	००।३८	२।५१	५।०९	७।२५	९।४०	११।५७	१४।१४	१६।१९	१८।०५	१९।३६	२१।०५
१२	मंगल	२२।३८	००।३४	२।४७	५।०५	७।२१	९।३६	११।५३	१४।१०	१६।१५	१८।०१	१९।३२	२१।०१
१३	बुध	२२।३५	००।३१	२।४४	५।०२	७।१८	९।३३	११।५०	१४।०७	१६।१२	१७।५८	१९।२९	२०।५८
१४	गुरु	२२।३१	००।२७	२।४०	४।५८	७।१४	९।२९	११।४६	१४।०३	१६।०८	१७।५४	१९।२५	२०।५४
१५	शुक्र	२२।२८	००।२४	२।३७	४।५५	७।११	९।२६	११।४३	१४।००	१६।०५	१७।५१	१९।२२	२०।५१

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिनक अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रातक अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	गुरु	दि.३:१४-५:२८।	रा.१२:००-१:२३ रा.४:०६-५:३२
२	शुक्र	दि.८:४७-१२:०१।	रा.९:१४-१०:३८।
३	शनि	सा.५:३४-७:११ दि.१:३८-३:१४ दि.४:५०-३:२६	रा६:२६-७:५० रा१:२५-२:४८ रा४:११-५:३४
४	रवि	दि.१०:२५-१:३८।	रा.१०:३८-१२:०२। रा.१:२५-२:४८।
५	सोम	दि.७:११-८:४७ दि.३:१२-४:४६।।	रा.१०:३४-११:५८। रा.२:४६-४:१०।
६	मंगल	दि.७:१२-८:४८। दि.१:३६-३:१२।	रा.७:४८-९:१२।
७	बुध	दि.८:४८-१०:२४। दि.१२:००-१:३६।	रा.१२:००-१:२४। रा.२:४८-४:१२।
८	गुरु	दि.३:१३-६:२३।	रा.१२:०२-१:२६। रा.४:१४-५:३८।
९	शुक्र	दि.८:५०-१२:०२।	रा.९:१२-१०:३७।
१०	शनि	दि.५:३९-७:१५ दि.१:३६-३:११। दि.४:४६:६:२१	रा६:२१-७:४६ रा१:२६-२:५१। रा४:१५-५:३६
११	रवि	दि.१०:२६-१:३६।	रा.१०:३६-१२:०१। रा.१:२६-२:५१।
१२	सोम	दि.७:१५-८:५०। दि.३:१०-४:४५।	रा.१०:३५-१२:००। रा.२:५०-४:१५।
१२	मंगल	दि.७:१६-८:५१। दि.१:३६-३:११।	रा.७:४५-९:११।
१३	बुध	दि.८:५२-१०:२७। दि.१२:०२-१:३६।	रा.१२:०२-१:२७ रा.२:५२-४:१७।
१४	गुरु	दि.३:१०-६:१८।	रा.१२:०२-१:२७। रा.४:१७-५:४२।
१५	शुक्र	दि.८:५३-१२:०१।	रा.९:१२-१०:३५।

वातावरणम्- पक्षादितः षष्ठीतिथि यावत् मेघचारखण्डवृष्टयः ततः द्वादशीं यावत् तापाग्निभयमेघच्छायावृष्टयः ततः पक्षन्तं यावत् वृष्टियोगः।

रक्षाबन्धनमन्त्रः- येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।।

रक्षाबन्धनम्-श्रावणपूर्णिमायां भद्राशून्यायां रक्षार्थं रक्षिकाबन्धनम्। भद्रायां तन्निषेधमाह स्मृतिः- भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनी।। इयं तु पूर्वविद्धा ग्राह्या-श्रावणी दौर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी। पूर्वविद्धास्तु कर्त्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।। श्रावणी,दुर्गापूजा की नवमी,दुर्वा और होलिका ये पूर्वविद्धा ही करनी चाहिए । इसी तरह शिवरात्रि एवं गोपूजा भी पूर्वविद्धा ही करना चाहिए। आद्या मधुश्रावणिका कज्जली हरितालिका। चतुर्थीमिश्रिता स्त्रीभिर्दिवानक्ते विधीयते।। पहली मधुश्रावणी,कजली, हरितालिका या तीज व्रत, स्त्रीयों को चतुर्थीमिश्रित दिनरात में करने का विधान है। रम्भा नामक व्रत को छोड़कर तृतीया में इत्यादि वचनों से चतुर्थीयुतैव करना चाहिए। गणेशचतुर्थीनिर्णय- श्रावणशुक्लचतुर्थीगणेशचतुर्थी। सा च पूर्वविद्धा ग्राह्य। तृतीयासंयुता या तु सा चतुर्थी फलप्रदा। कर्तव्या व्रतिभिः सा तु गणनाथसुतोषिणी।। नागपञ्चमी-श्रावणशुक्लपञ्चमी नागपूजादौ षष्ठीयुता अन्य पञ्चम्यस्तु चतुर्थीयुताः कार्याः। पञ्चमी नागपूजादौ कार्या षष्ठीसमन्विता। तस्यान्तु तुषिता नागा इतरासु चतुर्थिका। स्मृति-श्रावणे पञ्चमी शुक्ला तन्त्रोक्ता नागपञ्चमी। तां परित्यज्य पञ्चम्यश्चतुर्थीसहिताः स्मृताः। प्रदक्षिणविधिः - एका चण्ड्या रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्।।

ग्रहस्थितिः-मार्गीपूर्वोदितो मंगल, वक्रीपश्चिमस्तः बुधः ति.४ तः पूर्वोदितः ति.८ तः मार्गी, मार्गी पूर्वोदितः गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्रीपूर्वोदितः शनिः।

भाद्रकृष्णपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,उत्तरगोलः, वर्षा-ऋतुः, उत्तरे कालः, अशुद्धः, खरमासारम्भः
दिनांक २९ अगस्त तः ११ सितम्बर यावत् सन् २०२६ ई। पूर्वोदितः गुरु

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	शनि	६।५८	दि ६।३६	पूर्वाभाद्रपद	५७।२७	रा ४।३६	सुकर्मा	६।५९	कौलव	६।५८	कुम्भ ४२।०६	रा.१०।३१	४।११।३४।१४	३१।४२	५।४०	६।२०
२	रवि	६।१२	दि ६।२१	उत्तराभाद्रपद	५७।२९	रा ४।४०	धृति	०३।५१	गर	६।१२	मीन	अहोरात्र	४।१२।३२।११	३१।३८	५।४०	६।२०
३	सोम	०७।१३	दि ८।३४	रेवती	५६।२०	रा ४।१३	गण्ड	५४।४३	भद्रा	७।१३	मीन ५६।२०	रा.४।१३	४।१३।३०।०८	३१।३४	५।४१	६।१९
४	मंगल	०४।१०	दि ७।२२	अश्विनी	५४।२०	रा ३।२६	वृद्धि	४८।५६	बालव	४।१०	मेष	अहोरात्र	४।१४।२८।०५	३१।३०	५।४२	६।१८
५	बुध	००।१०	दि ५।४७	भरणी	५१।२९	रा २।१९	ध्रुव	४२।२८	तैतिल	००।१०	मेष	अहोरात्र	४।१५।२६।०२	३१।२६	५।४३	६।१७
७	गुरु	४९।५३	रा १।४१	कृत्तिका	४७।५८	रा १२।५५	व्याघात	३५।२६	भद्रा	२२।३६	मेष ५।३६	दि.७।५८	४।१६।२३।५९	३१।२२	५।४४	६।१६
८	शुक्र	४४।०३	रा ११।२०	रोहिणी	४४।०२	रा ११।२१	हर्षण	२८।०३	बालव	१६।५६	वृष	अहोरात्र	४।४७।२२।१०	३१।१८	५।४४	६।१६
९	शनि	३७।५४	रा ८।५५	मृगशिरा	३९।५२	रा ९।४१	वज्र	२०।२६	तैतिल	१०।५७	वृष ११।५७	दि.१०।४१	४।१८।२०।२१	३१।१४	५।४५	६।१५
१०	रवि	३१।४५	सं ६।२८	आर्द्रा	३५।३९	रा ८।०२	सिद्धि	१२।४०	वणिज्	४।४९	मिथुन	अहोरात्र	४।१९।१८।३२	३१।१०	५।४६	६।१४
११	सोम	२५।४७	सं ४।०६	पुनर्वसु	३१।३७	सं ६।२६	व्यतीपात	५।०३	बालव	२५।४४	मिथुन१७।३७	दि.१२।५०	४।२०।१६।४३	३१।०६	५।४७	६।१३
१२	मंगल	२०।०९	दि १।५२	पुष्य	२८।००	सं ५।००	परिघ	५०।३६	तैतिल	२०।०९	कर्क	अहोरात्र	४।२१।१४।५४	३१।०२	५।४८	६।१२
१३	बुध	१५।०४	दि ११।५०	आश्लेषा	२४।५५	दि ३।४६	शिव	४४।०८	वणिज्	१५।०४	कर्क २४।५५	दि.३।४६	४।२२।१३।०६	३०।५८	५।४८	६।१२
१४	गुरु	१०।४७	दि १०।०८	मघा	२२।४२	दि २।५४	सिद्ध	३८।२४	शकुनी	१०।४७	सिंह	अहोरात्र	४।२३।११।१८	३०।५४	५।४९	६।११
३०	शुक्र	०७।२२	दि ८।४६	पूर्वाफाल्गुनी	२१।१८	दि २।२१	साध्य	३३।१९	नाग	७।२१	सिंह	अहोरात्र	४।२४।०९।४३	३०।५०	५।५०	६।१०

दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
७	१३	२९	दधिभाद्रपदे त्यजेत्। अशून्यशयन २ व्रतं, अमृतयोगः दि.६।३६ यावत्, शिववासः-अग्निवासः दि.६।३६ यावत्,
८	१४	३०	शूलयोग ५५।५२, कज्जलीनिमित्तकं रात्रौ जागरणं(रतजग्गा), भाद्रीरविव्रतं भद्रा ३८।१२ उपरि, सिद्धियोगः दि.६।२१ उपरि। ❖जलानाड़ि तदिशोबुधः अतिवृष्टियोगः। भद्रा ७।१३ यावत्
९	१५	३१	कजली(कजरी)३ व्रत, गोपूजा३, विशालाक्षीपूजनं३। श्रीविनायक ४ व्रतं, शिववासः दि.८।३४ उपरि, पञ्चक(मदवा)समाप्तिः रा.४।१३ उपरि, पूर्वाफाल्गुन्यां रविः ३५।१९ रा.११।०७पु.स्त्री.चं.सू.योगो खरवाहनं ❖
१०	१६	१सि	सितम्बर ६। बहुलापूजा, उत्तरां विनायात्रा पंचम्यां अश्विन्यां च दि.७।२२ तः रा.३।२६ या, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।२६ या, शिववासः, अग्निवासः
११	१७	२	रक्षापञ्चमी५, षष्ठीतिथिमानं ५४।०७, भद्रा ५५।२० उपरि, अमृतयोगः प्रा.५।४४ उपरि, शिववास प्रा.५।४४ यावत्
१२	१८	३	शीतला ७, भद्रा २२।३६ यावत्, पूर्वयात्रा रोहिण्यां रा.१२।५५ उपरि, अग्निवासः
१३	१९	४	निशिथव्यापिनि अष्टम्यां श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतं सर्वेषां, जन्मोत्सव,मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं, श्रीकृष्णपूजनं, गोकुलाष्टमी। तुलायां शुक्रः ४५।४१, पूर्व-दक्षिणयात्रा अष्ठम्यां, शिववासः,
१४	२०	५	दग्धतिथि रा.८।५५ उ, कृष्णाष्टमीव्रतस्य पारणा, सिद्धियोगः रा.८।५५ यावत्, अग्निवासः
१५	२१	६	भाद्रीरविव्रतं, भद्रा ४।४९ तः ३१।४५ यावत्, कन्यायां बुधः ४५।३१, दग्धतिथि सं.६।२८ या, अमृतयोगः सं.६।२८ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवास
१६	२२	७	जयाएकादशी ११ व्रत सर्वेषाम्, वरीयान्योग ५२।३६, दक्षिण-पश्चिमयात्रा एकादशयां, सिद्धियोगः सं.४।०६ यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः,
१७	२३	८	कुष्माण्डेनपारणा,भौम प्रदोश१३ व्रतं। अगस्त्योदयः, उत्तरां विनायात्रा पुष्ये, अमृतयोगः दि.१।५२ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः दि.१।५२, अग्निवासः
१८	२४	९	प्रदोष१४, भद्रा १५।०४ तः ४२।५५ यावत्, गण्डान्त १३।५६ उपरि २६।४३ यावत्, मृत्युयोगः दि.११।५० यावत्
१९	२५	१०	अघोरचतुर्दशी, दुर्मर१४, श्रीभैरवपूजनं,द्वापरयुगादि, मृत्युयोगः दि.१०।०८ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः दि.१०।०८ उपरि, अग्निवासः दि.१०।०८ यावत्
२०	२६	११	भाद्रीअमावस्या३०, स्नानदानश्राद्धादौ पुण्यतमा, कुशीअमावस्या, कुशोत्पाटन ॐ हुं फट् इति मन्त्रेण कुशग्रहणं। सिद्धियोगः दि.८।४६ उपरि, शिववासः दि.८।४६ यावत्, अग्निवासः दि.८।४६ उपरि

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि	मिश्रमानं
१	शनि	२।१६।१४।५१	४।१५।३४।५६	३।१९।५६।५८	५।२५।४६।४३	११।१७।१७।५०	४।०७।२६।०७	४५।५१
२	रवि	२।१६।५३।०४	४।१७।२३।४५	३।२०।१०।०६	५।२६।३०।२२	११।१७।१३।५७	४।०७।२२।५६	४५।४९
३	सोम	२।१७।३१।१७	४।१९।१२।३४	३।२०।२३।१४	५।२७।१४।०१	११।१७।०९।५८	४।०७।१९।४५	४५।४७
४	मंगल	२।१८।०९।३०	४।२१।०१।२३	३।२०।३६।२२	२।२७।५७।४०	११।१७।०६।०२	४।०७।१६।३४	४५।४५
५	बुध	२।१८।४७।४४	४।२२।५०।१२	३।२०।४९।३१	५।२८।४१।१९	११।१७।०२।०६	४।०७।१३।२३	४५।४३
७	गुरु	२।१९।२५।५८	४।२४।३९।०१	३।२१।०२।४०	५।२९।२४।५८	११।१६।५८।१०	४।०७।१०।१३	४५।४१
८	शुक्र	२।२०।०३।२६	४।२६।२५।४२	३।२१।१५।२५	५।२९।५६।०९	११।१६।५३।२५	४।०७।०७।०२	४५।३९
९	शनि	२।२०।४०।५४	४।२८।१२।२३	३।२१।२८।१०	६।००।२७।३०	११।१६।४९।२०	४।०७।०३।५१	४५।३७
१०	रवि	२।२१।१८।२२	४।२९।५९।०४	३।२१।४०।५५	६।००।५८।३१	११।१६।४४।५५	४।०७।००।४०	४५।३५
११	सोम	२।२१।५५।५०	५।०१।४५।४५	३।२१।५३।४०	६।०१।२९।४२	११।१६।४०।२९	४।०६।५७।२९	४५।३३
१२	मंगल	२।२२।३३।१८	५।०३।३२।२६	३।२२।०६।२५	६।०२।००।५३	११।१६।३६।०३	४।०६।५४।१८	४५।३१
१३	बुध	२।२३।१०।४७	५।०५।१९।०७	३।२२।१९।१०	६।०२।३२।०५	११।१६।३१।३७	४।०६।५१।०७	४५।२९
१४	गुरु	२।२३।४८।१६	५।०७।०५।४९	३।२२।३१।५५	६।०३।०३।१७	११।१६।२७।११	४।०६।४७।५६	४५।२७
३०	शुक्र	२।२४।२५।०६	५।०८।४८।४५	३।२२।४४।१३	६।३१।३१।२८	११।१६।२२।२८	४।०६।४४।४५	४५।२५

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	शनि	२२।२४	००।२०	२।३३	४।५१	७।०७	९।२२	११।३९	१३।५६	१६।०१	१७।४७	१९।१८	२०।४७
२	रवि	२२।२१	००।१७	२।३०	४।४८	७।०४	९।१९	११।३६	१३।५३	१५।५८	१७।४४	१९।१५	२०।४४
३	सोम	२२।१७	००।१३	२।२६	४।४४	७।००	९।१५	११।३२	१३।४९	१५।५४	१७।४०	१९।११	२०।४०
४	मंगल	२२।१३	००।०९	२।२२	४।४०	६।५६	९।११	११।२८	१३।४५	१५।५०	१७।३६	१९।०७	२०।३६
५	बुध	२२।०९	००।०५	२।१८	४।३६	६।५२	९।०७	११।२४	१३।४१	१५।४६	१७।३२	१९।०३	२०।३२
७	गुरु	२२।०६	००।०२	२।१५	४।३३	६।४९	९।०४	११।२१	१३।३८	१५।४३	१७।२९	१९।००	२०।२९
८	शुक्र	२२।०२	२३।५८	२।११	४।२९	६।४५	९।००	११।१७	१३।३४	१५।३९	१७।२५	१८।५६	२०।२५
९	शनि	२१।५८	२३।५४	२।०७	४।२५	६।४१	८।५६	११।१३	१३।३०	१५।३५	१७।२१	१८।५२	२०।२१
१०	रवि	२१।५५	२३।५१	२।०४	४।२२	६।३८	८।५३	११।१०	१३।२७	१५।३२	१७।१८	१८।४९	२०।१८
११	सोम	२१।५१	२३।४७	२।००	४।१८	६।३४	८।४९	११।०६	१३।२३	१५।२८	१७।१४	१८।४५	२०।१४
१२	मंगल	२१।४७	२३।४३	१।५६	४।१४	६।३०	८।४५	११।०२	१३।१९	१५।२४	१७।१०	१८।४१	२०।१०
१३	बुध	२१।४४	२३।४०	१।५३	४।११	६।२७	८।४२	१०।५९	१३।१६	१५।२१	१७।०७	१८।३८	२०।०७
१४	गुरु	२१।४०	२३।३६	१।४९	४।०७	६।२३	८।३८	१०।५५	१३।१२	१५।१७	१७।०३	१८।३४	२०।०३
३०	शुक्र	२१।३६	२३।३२	१।४५	४।०३	६।१९	८।३४	१०।५१	१३।०८	१५।१३	१६।५९	१८।३०	१९।५९

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शनि	प्रा.५:४४-७:१८।१:३४-३:०८ दि.४:४२-६:१६	रा.६:१६-७:४२।रा.१:२६-२:५८।४:१८-५:४५।
२	रवि	दि.१०:२७-१:३५।	रा.१०:३३-११:५९। रा.१:२५-२:५१।
३	सोम	दि.७:१९-८:५३। दि.३:०९-४:४३।	रा.१०:३३-११:५९। रा.२:५१-४:१७।
४	मंगल	दि.७:१९-८:५२।१:३४-३:०७।	रा.७:४१-९:०८।
५	बुध	दि.८:५५-१०:२८। दि.१२:०१-१:३४।	रा.१२:०१-१:२८।रा.२:५५-४:२१।
७	गुरु	दि.३:०६-६:१२।	रा.१२।००-१:२७।रा.४:२१-५:४८।
८	शुक्र	दि.८:५४-१२:००।	रा.९:०६-१०:३३।
९	शनि	दि.५:४९-७:३२।१:३४-३:०७। ४:३९-६:११	रा.६:११-७:३९।रा.१:२८-२:५५।४:२२-५:५०
१०	रवि	दि.१०:२९-१:३४।	रा.१०:३१-११:५८। रा.१:२५-२:५३।
११	सोम	दि.७:२३-८:५५। दि. ३:०३-४:३८।	रा.१०:३३-१२:०१। रा.२:४८-४:२३।
१२	मंगल	दि.७:२४-८:५६। दि. १:३२-३:०४।	रा.७:३६-९:०४।
१३	बुध	दि.७:२४-८:५६। दि.१:३२-३:०४।	रा.१२:००-१:२८। रा.२:५६-४:२४।
१४	गुरु	दि.८:५६-१०:२८। दि.१२:००-१:३२।	रा.१२:०१-१:२९।रा.४:२५-५:५४।
३०	शुक्र	दि.८:५८-१२:०२।	रा.९:०४-१०:३३

मूलविचारः-रेवती/ अश्विनी - ति.२ रवि रा.४।४० तः ति.४ मंगल रा.३।२६ यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.१२ मंगल सं.५।०० तः ति.१४ गुरु दि.२।५४ यावत्।

कुशोत्पाटन-मन्त्रः- कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।।
कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितःपुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।
वर्ज्यकुशाः- चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।।

विविधविषयाः-भाद्रकृष्णचतुर्थ्यां बहुलापूजा। सा च तृतीयायुता ग्राह्या, परयुक्ताया दोषश्रवणात्। भादों कृष्ण चौथ को बहुला पूजा होती है, यह तृतीया युक्तग्राह्य है। परयुक्त दोषावह कहा गया है।
भाद्रकृष्णाष्टम्यां कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्-तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतं उदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम् व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां
श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि मात्स्ये- कुष्माण्डं महिषीक्षीरं विल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः
श्राद्धे प्रशस्तानि-उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः
महिष्यादिप्रसवदोषः-माघे बुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति।
भादो मे गायप्रसव दोषकारक होता है- भानौ सिंहगते चैव यस्य गौसम्प्रसूयते।
मरणान्तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशयः।।

७ गुरु वल्ली ८।४०।१३।४२ अयनांशाः२२।५४।३७

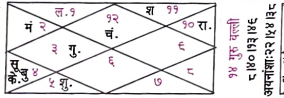

१४ गुरु वल्ली ८।४०।१३।४६ अयनांशाः२२।५४।३८

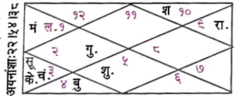

मांसाभक्षणफलं महाभारते- मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर।। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता,

नन्दिपुराणे-कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्।। श्रेष्ठव्रतानि-ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः।।

भाद्रशुक्लपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,उत्तरगोलः, वर्षा/शरद्-ऋतुः, उत्तरे कालः, अशुद्धः-खरमासः ता.१७ तः शुद्धारम्भः।
दिनांक १२ सितम्बरतः २६ सितम्बर यावत् सन् २०२६ ई। पूर्वोदितः गुरु

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः योगाः	समा.कालः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	शनि	०४|५९	दि ७|५१	उत्तराफाल्गुनी	२०|५८	दि २|१४	शुभ	२९|१०	बव	४|५९	कन्या	अहोरात्र	४|२५|०८|०९	३०|४६	५|५१	६|०९
२	रवि	०३|५०	दि ७|२४	हस्त	२१|५१	दि २|३६	शुक्ल	२६|०१	कौलव	३|५०	कन्या ५२|५५	रा.३|०२	४|२६|०६|३५	३०|४२	५|५२	६|०८
३	सोम	३|५७	दि ७|२७	चित्रा	२३|५९	दि ३|२८	ब्रह्म	२३|४७	गर	३|५७	तुला	अहोरात्र	४|२७|०५|०१	३०|३८	५|५२	६|०८
४	मंगल	०५|२५	दि ८|०३	स्वाती	२७|२५	दि ४|५१	ऐन्द्र	२२|३५	भद्रा	५|२५	तुला	अहोरात्र	४|२८|०३|२७	३०|३४	५|५३	६|०७
५	बुध	०७|५८	दि ९|०५	विशाखा	३१|५६	सं ६|४०	वैधृति	२२|१३	बालव	७|५८	तुला १५|४८	दि.१२|१३	४|२९|०१|५३	३०|३०	५|५४	६|०६
६	गुरु	११|४३	दि १०|३६	अनुराधा	३७|२६	रा ८|५३	विष्कुम्भ	२२|४४	तैतिल	११|४३	वृश्चिक	अहोरात्र	५|००|००|१९	३०|२६	५|५५	६|०५
७	शुक्र	१६|१५	दि १२|२५	ज्येष्ठा	४३|३५	रा ११|२१	प्रीति	२३|४७	वर्णिज्	१६|१५	वृश्चिक ४३|३५	रा.११|२१	५|००|५९|००	३०|२३	५|५५	६|०५
८	शनि	२१|१९	दि २|२८	मूल	५०|०५	रा १|५८	आयुष्यमान	२५|१२	बव	२१|१९	धनु	अहोरात्र	५|०१|५७|४१	३०|२०	५|५६	६|०४
९	रवि	२६|२७	दि ४|३२	पूर्वाषाढा	५६|२८	रा ४|३२	सौभाग्य	२६|४१	कौलव	२६|२७	धनु	अहोरात्र	५|०२|५७|२२	३०|१६	५|५७	६०|३
१०	सोम	३१|१९	सं ६|२८	उत्तराषाढा	६०|००	समस्त	शोभन	२७|५३	गर	३१|१९	धनु १२|५६	दि.११|०८	५|०३|५५|०३	३०|१२	५|५८	६|०२
११	मंगल	३५|२२	रा ८|०७	उत्तराषाढा	०२|२०	प्रा ६|५४	अतिगण्ड	२८|३४	वर्णिज्	३|१९	मकर	अहोरात्र	५|०४|५३|४५	३०|०८	५|५८	६|०२
१२	बुध	३८|२७	रा ९|२२	श्रवण	०७|२५	दि ८|५७	सुकर्मा	२८|३१	बव	६|५४	मकर ३९|२३	रा.९|४४	५|०५|५२|२७	३०|०४	५|५९	६|०१
१३	गुरु	४०|३०	रा १०|१२	धनिष्ठा	११|२२	दि १०|३३	धृति	२७|३४	कौलव	९|२८	कुम्भ	अहोरात्र	५|०६|५१|०९	३०|००	६|००	६|००
१४	शुक्र	४१|०९	रा १०| २९	शतभिषा	१४|१२	दि ११|४२	शूल	२५|३७	गर	१०|४४	कुम्भ	अहोरात्र	५|०७|५०|०९	२९|५६	६|०१	५|५९
१५	शनि	४०|२९	रा १०|१४	पूर्वाभाद्रपद	१५|४६	दि १२|२०	गण्ड	२२|४०	भद्रा	१०|४९	कुम्भ ००|२२	प्रा.६|११	५|०८|४९|०३	२९|५२	६|०२	५|५८

दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
२१	२७	१२	रुद्रव्रतम्। चन्द्रदर्शनं मु.४५ समर्घताकरम्, दक्षिणयात्रा, अमृतयोगः दि.७|५१ यावत्, शिवावासः दि.७|५१ उपरि। ← भद्रा ३४|४१ उपरि, दक्षिण-पश्चिमयात्रा तृतीयायां, अग्निवासः दि.७|२७ उपरि।
२२	२८	१३	भाद्रीरविव्रत समाप्तिः,पूर्व-दक्षिणयात्रा, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२|३६ यावत्, सिद्धियोगः दि.७|२४ उपरि, शिववासः –अग्निवासः दि.७|२४ यावत्।
२३	२९	१४	चतुर्थीचन्द्रपूजनं(चौरचन), श्रीगणेश४ व्रतं, हरितालिका३(तीज) व्रतं, वाराहावतार३,मन्वादि। उत्तरफल्गुन्यां रविः १९|३९ दि.१|४३ स्त्री स्त्री सू सू योगो मण्डूकवाहनं वह्नी नाड़ी तदीशो भौमः मेघाच्छादितवायुवृष्टियोगः।←
२४	३०	१५	श्रीगणेशपूजारम्भ, भद्रा ५|२५ यावत्, दक्षिण-पश्चिमयात्रा पंचम्यां स्वात्यां च दि.८|०३ तः दि.४|५१ या, अग्निवासः दि.८|०३ यावत् ततः शिववासः
२५	३१	१६	मासान्तः, ऋषिपञ्चमी, सप्तर्षिपूजनं, पश्चिम यात्रा अनुराधायां,शिववासः, अग्निवासः–अमृतयोगः दि.९|०५ उपरि। ❖पश्चिम-उत्तरयात्रा, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८|५३ यावत्, शिववासः–अग्निवासः दि.१०|३६यावत्
२६	१	१७	श्रीलोलार्क६ व्रतं, सूर्यपूजनम्। कन्यायां रविः ४४|५२ रा.११|५२ मु.१५ महर्घताकरम्, षडशीतिसंक्रान्तिःपुण्यकालो दि.१२|०० उपरि दिने पुण्याहः, शुद्धारम्भः, विश्वकर्मापूजा, शरदृतुः ने.आश्विनमासारम्भः,❖
२७	२	१८	मासादिः, दग्धतिथि दि.१२|२५ उ, अपराजिता७। सन्तान७, महालक्ष्मीव्रतारम्भ। गण्डान्त ३७|३७ उपरि ५२|३७ यावत्, भद्रा १६|१५ तः ४८|४७ यावत्, मृत्युयोगः दि.१२|२५ यावत्।
२८	३	१९	दग्धतिथि दि.२|२८ या, दूर्वा ८ व्रतं, राधाष्टमी। सिद्धियोगः दि.२|२८ उपरि, शिववासः दि.२|२८ उपरि, अग्निवासः दि.२|२८ यावत्
२९	४	२०	महानन्दानवमी ९ व्रतं, पूर्व-उत्तरयात्रा दशम्यां दि.४|३२ उ, कर्के कुजः ५४|१६, अमृतयोगः दि.४|३२ उपरि, शिववासः दि.४|३२ यावत्, अग्निवासः
३०	५	२१	अमृतयोगः सं.६|२८ यावत् — मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल - ति.६ गुरु रा.८|५३ तः रा.८ शनि रा.१|५८ यावत्।
३१	६	२२	कर्माधर्मा११ व्रतं सर्वेषां। हरेःपार्श्वपरिवर्त्तनं, भद्रा ३|१९ तः ३५|२२ यावत्, उत्तरां विनायात्रा द्वादशयां, अग्निवासः
१	७	२३	कुष्माण्डेनपारणा, श्रीवामन१२, वामनावतार, इन्द्रपूजारम्भ, भद्रारम्भ दि.८|५७ उपरि, हरिवासरयोगः, उत्तरां विनायात्रा श्रवणे दि.८|५७ततः पूर्वयात्रा रा.९|२२या ततः पश्चिमयात्रा सिद्धियोगः, शिववासः,
२	८	२४	प्रदोष१३ व्रतं, तुलायांबुधः २०|१६, पूर्वयात्रा धनिष्ठायां, अमृतयोगः रा.१०|१२ यावत्, शिववासः,
३	९	२५	प्रदोष१४ व्रत। अनन्त १४ व्रतं, अनन्तपूजनं, तद्डोरकधारणञ्च,श्रीगणेशविसर्जनं, वक्रीशुक्रः५९|२२, भद्रा ४१|०९ उपरि, अमृतयोगः रा.१०|२९ यावत्
४	१०	२६	भाद्रीपूर्णिमा१५,स्नानदानादि। अगस्त्यार्घदानं, श्रीशिवपूजनं, भद्रा १०|४९ यावत्, अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन		भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि	मिश्रमान
१	शनि	२|२५|०१|५७	५|१०|३१|४१	३|२२|५६|३१	६|०३|५९|४०	११|१६|१७|४५	४|०६|४१|३६	४५|२३
२	रवि	२|२५|३८|४८	५|१२|१४|३७	३|२३|०८|४६	६|०४|२७|५२	११|१६|१३|०२	४|०६|३८|२५	४५|२१
३	सोम	२|२६|१५|३६	५|१३|५७|३३	३|२३|२१|०७	६|०४|५६|०४	११|१६|०८|१८	४|०६|३५|१४	४५|१९
४	मंगल	२|२६|५२|३०	५|१५|४०|२९	३|२३|३३|२५	६|०५|२४|१६	११|१६|०३|३४	४|०६|३२|०४	४५|१७
५	बुध	२|२७|२९|२१	५|१७|२३|२५	३|२३|४५|४३	६|०५|५२|२८	११|१५|५८|५०	४|०६|२८|५३	४५|१५
६	गुरु	२|२८|०६|१२	५|१९|०६|२१	३|२३|५८|०१	६|०६|२०|४०	११|१५|५४|०६	४|०६|२५|४२	४५|१३
७	शुक्र	२|२८|४२|१७	५|२०|४१|०१	३|२४|०९|५६	६|०६|३२|०५	११|१५|४९|०५	४|०६|२२|३१	४५|११
८	शनि	२|२९|१८|२३	५|२२|१५|४१	३|२४|२१|५१	६|०६|४३|३०	११|१५|४४|०४	४|०६|१९|२०	४५|१०
९	रवि	२|२९|५४|२९	५|२३|५०|२१	३|२४|३३|४६	६|०६|५४|५६	११|१५|३९|०३	४|०६|१६|१०	४५|०८
१०	सोम	३|००|३०|३५	५|२५|२५|०१	३|२४|४५|४१	६|०७|०६|२२	११|१५|३४|०२	४|०६|१२|५९	४५|०६
११	मंगल	३|०१|०६|४१	५|२६|५९|४२	३|२४|५७|३६	६|०७|१७|४८	११|१५|२९|०१	४|०६|०९|४८	४५|०४
१२	बुध	३|०१|४२|४७	५|२८|३४|२३	३|२५|०९|३१	६|०७|२९|१४	११|१५|२४|००	४|०६|०६|३७	४५|०२
१३	गुरु	३|०२|१८|५३	६|००|०९|०४	३|२५|२१|२७	६|०७|४०|४०	११|१५|१८|५९	४|०६|०३|२६	४५|००
१४	शुक्र	३|०२|५४|०२	६|०१|३०|५५	३|२५|३२|५४	६|०७|३४|२८व	११|१५|१३|५८	४|०६|००|१६	४४|५८
१५	शनि	३|०३|२९|११	६|०२|५२|४६	३|२५|४४|२२	६|०७|२८|१६	११|१५|०८|५७	४|०५|५७|०५	४४|५६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन		मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	शनि	२१|३३	२३|२९	१|४२	४|००	६|१६	८|३१	१०|४८	१३|०५	१५|१०	१६|५६	१८|२७	१९|५६
२	रवि	२१|२९	२३|२५	१|३८	३|५६	६|१२	८|२७	१०|४४	१३|०१	१५|०६	१६|५२	१८|२३	१९|५२
३	सोम	२१|२६	२३|२२	१|३५	३|५३	६|०९	८|२४	१०|४१	१२|५८	१५|०३	१६|४९	१८|२०	१९|४९
४	मंगल	२१|२२	२३|१८	१|३१	३|४९	६|०५	८|२०	१०|३७	१२|५४	१४|५९	१६|४५	१८|१६	१९|४५
५	बुध	२१|१८	२३|१४	१|२७	३|४५	६|०१	८|१६	१०|३३	१२|५०	१४|५५	१६|४१	१८|१२	१९|४१
६	गुरु	२१|१४	२३|१०	१|२३	३|४१	५|५७	८|१२	१०|२९	१२|४६	१४|५१	१६|३७	१८|०८	१९|३७
७	शुक्र	२१|११	२३|०७	१|२०	३|३८	५|५४	८|०९	१०|२६	१२|४३	१४|४८	१६|३४	१८|०५	१९|३४
८	शनि	२१|०७	२३|०३	१|१६	३|३४	५|५०	८|०५	१०|२२	१२|३९	१४|४४	१६|३०	१८|०१	१९|३०
९	रवि	२१|०३	२२|५९	१|१२	३|३०	५|४६	८|०१	१०|१८	१२|३५	१४|४०	१६|२६	१७|५७	१९|२६
१०	सोम	२१|००	२२|५६	१|०९	३|२७	५|४३	७|५८	१०|१५	१२|३२	१४|३७	१६|२३	१७|५४	१९|२३
११	मंगल	२०|५६	२२|५२	१|०५	३|२३	५|३९	७|५४	१०|११	१२|२८	१४|३३	१६|१९	१७|५०	१९|१९
१२	बुध	२०|५२	२२|४८	१|०१	३|१९	५|३५	७|५०	१०|०७	१२|२४	१४|२९	१६|१५	१७|४६	१९|१५
१३	गुरु	२०|४९	२२|४५	००|५८	३|१६	५|३२	७|४७	१०|०४	१२|२१	१४|२६	१६|१२	१७|४३	१९|१२
१४	शुक्र	२०|४५	२२|४१	००|५४	३|१२	५|२८	७|४३	१०|००	१२|१७	१४|२२	१६|०८	१७|३९	१९|०८
१५	शनि	२०|४१	२२|३७	००|५०	३|०८	५|२४	७|३९	९|५६	१२|१३	१४|१८	१६|०४	१७|३५	१९|०४

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शनि	प्रा५:५५-७:२७ दि१:३१-३:२०। दि४:३३-६:०५	रा६:५-७:३४। रा१:३०-२:५६ रा४:२७-५:५६
२	रवि	दि.१०:२९-१:३१।	रा.१०:३१-१२:००। रा.१:२९-२:५८।
३	सोम	दि.७:२७-८:५८। दि.३:२-४:३३।	रा.१०:३१-१२:००। रा.२:५८-४:२७।
४	मंगल	दि.७:२८-८:५९। दि.१:३२-३:०३।	रा.७:३२-९:०१।
५	बुध	दि.९:००-१०:३१। दि.१२:०२-१:३२।	रा.११:५८-१:२८। रा.२:५८-४:२८।
६	गुरु	दि.३:०१-६:०१	रा.१२:०१-१:३१। रा.४:३०-६:००।
७	शुक्र	दि.९:००-१२:००।	रा.९:००-१०:३०।
८	शनि	दि ६:०-७:३०। दि१:३०-३:० दि४:३०-६:०।	सा.६:०-७:२० रा१:३०-३:० रा.४:३०-६:०।
९	रवि	दि.१०:३१-१:३१।	रा.१०:३१-१२:०१। रा.१:३१-३:०१।
१०	सोम	दि.७:३२-९:०२ दि.३:००-४:२९।	रा.१०-३१-१२:०२। रा.३:०२-४:३२।
११	मंगल	दि.७:३२-९:०२। दि.१:३१-३:००।	रा.७:२९-९:३०।
१२	बुध	दि.९:०३-१०:३३। दि.१२:०२-१:३१।	रा.१२:०१-१:३२। रा.३-०२-४:३२।
१३	गुरु	दि.२:५८-५:५६।	रा.१२:००-१:३१। रा.४:३३-६:०५।
१४	शुक्र	दि.९:०३-१२:०१।	रा.८:५७-१०:२८।
१५	शनि	प्र.६:६-७:३५। दि.१०:३३-१२:०२ सं.४:२६-५:५४।	स.५:५४-७:२६ रा.१:३३-३:०४ रा.४:३५-६:०६

भाद्रचतुर्थी-चन्द्र अर्घ्य दान मन्त्र- शंख मे फल-पुष्प-दुध लय चन्द्रार्घ्य दी-ॐ अत्रि नेत्र समुद्भूतं क्षीरोदार्णवसम्भव।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितप्रभो।। इदं दुग्धार्घ्यं नमो रोहिणीसहितभाद्रशुक्लचतुर्थीचन्द्राय नमः।

चतुर्थी-चन्द्र दर्शन मन्त्रः- दही आ डाली सभके एका-एकी हाथमे लऽ निम्न मंत्र पढथि।
नमः सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यन्मतकः।

तदुत्तर आगुक मन्त्र सँ प्रणाम करी- नमः शुभ्रांशवे तुभ्यं द्विजराजाय ते नमः। रोहिणीपतये तुभ्यं लक्ष्मी भ्रात्रे नमोऽस्तु ते।।
दिव्यशंख- तुषाराभं क्षीरो-दार्णव- सम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुट-भूषणम्।।

चतुर्थी चन्द्र के प्रार्थना मन्त्र- मृगांक-रोहिणीनाथ शम्भोः शिरसि भूषण। व्रतं सम्पूर्णतां यातु सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।।
रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवन् देहिमे। धर्मान् देहि, धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहिमे।।

श्रीहरि-पार्श्व-परिवर्तन-मन्त्रः- प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽह्नि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते।।
वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वं संपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव।।
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।।
देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे।।

अनन्त-धारणमन्त्र- अनन्तसंसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धरवासुदेव। अनन्तरुपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपायनमोनमस्ते।।

अगस्त्य-अर्घ्यदान-मन्त्रः- ऋषि तर्पण के बाद शंम मे जल अक्षत श्वेतपुष्प(काशपुष्प) फल द्रव्य आदि लय जनउ सव्य ही क दक्षिण दिशा मे मुह कय आगुक मन्त्र सँ अर्घ्य दी- कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानिविविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

अगस्त्य-प्रार्थनामन्त्रः-
आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रःशोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।

६ गुरु वल्ली ८|४०|१३|५६ अयनांशाः २२|५४|३६

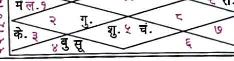

१३ गुरु वल्ली ८|४०|१४|०३ अयनांशाः २२|५४|४०

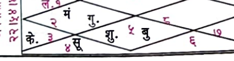

धर्मशास्त्र-हरितालिका- चतुर्थीसहिता यातु सातृतीया फलप्रदा। अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। तिथितत्त्वचिन्तामणि- कृतिसागराद्यवाधुनिक- निबन्धे साचतुर्थीयुताग्राह्या। हरितालिका व्रतस्यैव नामान्तरं लोके तीज इति। कलाकाष्ठा मुहूर्त्तोऽपि द्वितीया यदि दृश्यते। सा तृतीया न कर्त्तव्या कर्त्तव्या गणसंयुता।। **चतुर्थीचन्द्र-** प्रदोषव्यापिनीयं ग्राह्य उभयदिने प्रदोषव्याप्तौ पंचमी युक्ता "युगाग्निकृतुभूतानि" इत्यादि निगमात्। अर्थात् चतुर्थी प्रदोष व्यापिनी ग्राह्य हैं यदि दोनो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो पंचमी युक्त ही ग्राह्य हैं। चतुर्थीतः त्रयोदशी यावत् गणेशं सम्पूज्य चतुर्दश्यां पूजनोत्तरं विसर्जनम्। **भाद्रशुक्लषष्ठी-** सूर्यषष्ठी सा च सर्वमते स्कन्दव्रतातिरिक्ता परयुता ग्राह्या युग्मात्। नागविद्धा न कर्तव्या षष्ठी चैव कदाचन।। इति स्कन्दे। **राधाव्रतं-** राधाव्रतं सप्तमीयोगेन कार्यम्।। **दूर्वाष्टमी-** भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाख्या सा च पूर्व युता ग्राह्या। अस्यां राधाजयन्त्युत्सवः महालक्ष्मीव्रतारम्भश्च। तथा च द्वादशीत इन्द्रपूजारम्भः।

आश्विनकृष्णपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,उत्तरगोलः, शरद्-ऋतुः, उत्तरे कालः, शुद्ध।
दिनांक २७ सितम्बरतः १० अक्टूबर यावत् सन् २०२६ ई।

वैदेहीपञ्चाङ्ग
अजय मिश्र

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि द. प.	समा.कालः घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	रवि	३८।३८	रा ८।२६	उत्तराभाद्रपद	१६।०६	दि १२।२८	वृद्धि	१८।४४	बालव ९।३३	मीन	अहोरात्र	५।०९।४८।००	२९।४८	६।०२	५।५८
२	सोम	३५।४१	रा ८।१९	रेवती	१५।१७	दि १२।१०	ध्रुव	१३।५४	तैतिल ७।०९	मीन १५।१७	दि.१२।१०	५।१०।४६।५७	२९।४४	६।०३	५।५७
३	मंगल	३१।४७	रा ६।४७	अश्विनी	१४।२८	दि ११।५१	व्याघात	०८।१४	वणिज् ३।४४	मेष	अहोरात्र	५।११।४५।५४	२९।४०	६।०४	५।५६
४	बुध	२७।०२	सं ४।५४	भरणी	१०।४७	दि १०।२४	हर्षण	०१।५४	बालव २७।०२	मेष २४।५७	दि.४।०४	५।१२।४४।५१	२९।३६	६।०५	५।५५
५	गुरु	२१।३९	दि ३।१०	कृत्तिका	०७।२७	दि ८।०५	सिद्धि	४७।३६	तैतिल २२।५९	वृष	अहोरात्र	५।१३।४३।४९	२९।३२	६।०६	५।५४
६	शुक्र	१५।५०	दि १२।२६	रोहिणी	०३।३७	दि ७।३३	व्यतीपात	४०।०३	वणिज् १५।५०	वृष ३३।१७	रा.७।२५	५।१४।४३।०१	२९।२८	६।०६	५।५४
७	शनि	०९।४८	दि १०।०२	आर्द्रा	५५।१९	रा ४।१३	वरीयान्	३२।०८	बव ९।४८	मिथुन	अहोरात्र	५।१५।४२।१४	२९।२४	६।०७	५।५३
८	रवि	०३।४४	दि ७।३७	पुनर्वसु	५१।१०	रा २।३६	परिघ	२४।२६	कौलव ३।४४	मिथुन ३७।११	रा.६।०१	५।१६।४१।२७	२९।२०	६।०८	५।५२
१०	सोम	५२।१५	रा ३।०७	पुष्य	४७।२६	रा १।०७	शिव	१६।५३	वणिज् २५।०१	कर्क	अहोरात्र	५।१७।४०।४०	२९।१६	६।०९	५।५१
११	मंगल	४७।१३	रा १।०३	आश्लेषा	४४।१२	रा ११।५१	सिद्ध	१०।३२	बव १९।४४	कर्क ४४।१२	रा.११।५१	५।१८।३९।५३	२९।१२	६।१०	५।५०
१२	बुध	४५।००	रा १२।१०	मघा	४१।४६	रा १०।५२	साध्य	०२।५७	कौलव १६।०६	सिंह	अहोरात्र	५।१९।३९।०६	२९।०८	६।१०	५।५०
१३	गुरु	३९।३८	रा १०।०२	पूर्वाफाल्गुनी	४०।०७	रा १०।१४	शुक्ल	५१।३७	गर १२।१९	सिंह ५४।५८	रा.४।१०	५।२०।३८।१९	२९।०४	६।११	५।४९
१४	शुक्र	३७।०२	रा ९।०१	उत्तराफाल्गुनी	३९।३१	रा १०।००	ब्रह्म	४७।०३	भद्रा ८।२०	कन्या	अहोरात्र	५।२१।३७।४६	२९।००	६।१२	५।४८
३०	शनि	३६।१५	रा ८।४३	हस्त	४०।०८	रा १०।१६	ऐन्द्र	४३।२८	चतुरघ्न ६।३८	कन्या	अहोरात्र	५।२२।३७।१३	२८।५६	६।१३	५।४७

दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
५	११	२७	आश्विनेदुग्धं त्यजेत्, महालयारम्भः। पितृपक्षीयतर्पणपार्वणारम्भः। एकोदिष्ट१। हस्ते रविः ५७।०८ रा.४।५३, पु.स्त्री चं.सू योगो मुषक वाहनं वह्नी नाड़ी तदीशो भौमः मेघाच्छादित वायुवृष्टियोगः ←
६	१२	२८	अशून्यशयन २ व्रतं। एकोदिष्ट२, इन्द्रविसर्जन, गण्डान्त ३।१७ उपरि १८।१७ यावत्, पूर्वां विनायात्रा तृतीयायां रा.८।१९ उ, मृत्युयोगः रा.८।१९ यावत्। पञ्चक(मदवा) समाप्तिः दि.१२।१० उपरि।
७	१३	२९	श्रीगणेश ४ व्रतं, एकोदिष्ट३, भद्रा ३।४४ तः ३१।४७ यावत्, उत्तरां विनायात्रा अश्विन्यां, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।५१ यावत्, सिद्धियोगः रा.६।४७ यावत्
८	१४	३०	ललितादेवीयात्रा, एकोदिष्ट ४। शिववासः, अग्निवासः। वज्र योग ५३।०४← उत्तरयात्रा द्वितीयायां, मृत्युयोगः रा.८।२६ यावत्, शिववासः,
९	१५	१	अक्टूबर१०। एकोदिष्ट ५, पूर्वयात्रा रोहिण्यां दि.८।०५ उ, सिद्धियोगः दि.३।१० यावत्, शिववासः दि.३।१० यावत् ततः अग्निवासः
१०	१६	२	मृगशिरा नक्षत्रमानं ५५।४३ एकोदिष्ट ६-७। रात्र्यन्ते ओठगन, भद्रा १५।५० तः ४२।४६ यावत्, पूर्व-दक्षिणयात्रा रोहिण्यां दि.७।३७ या ततः पश्चिमां विनायात्रा षष्ठ्यां दि.१२।२६ या, सिद्धियोगः दि.१२।२६ या.❖
११	१७	३	दग्धतिथि दि.१०।०२ उ, महालक्ष्मीव्रतं, जीमूतवाहन व्रतं(जितिया)। जीमूतवाहनपूजा, एकोदिष्ट ८। शिववासः - अग्निवासः दि.१०।०२ उपरि। ❖ अग्निवासः दि.१२।२६ यावत्
१२	१८	४	दग्धतिथि दि.७।३७ या, नवमीतिथिमानं ५४।०४, महालक्ष्मी, जीमूतवाहन व्रतस्यपारणा दि.७।३७ उपरि, मातृकानवमी, अन्वष्टका,एकोदिष्ट ९। रविपुष्ययोगः रा.२।३६ उपरि, सिद्धियोगः-शिववासः दि.७।३७ यावत्
१३	१९	५	एकोदिष्ट १०। भद्रा २५।०१ तः ५२।१५ यावत्, पूर्वां विनायात्रा पुष्ये सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१।०७ यावत्, अग्निवासः
१४	२०	६	इन्दिराएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां। एकोदिष्ट ११। गण्डान्त ३३।१२ उपरि ४८।१२ यावत्, मृत्युयोगः रा.१।०३ यावत्, शिववासः
१५	२१	७	गुड़ेनपारणा, एकोदिष्ट १२। मघाश्राद्धं, सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः। शुभयोगमानं५३।५८
१६	२२	८	एकोदिष्टं१३, हस्तार्के खञ्जनद दर्शनं, प्रदोष १३ व्रतं। भद्रा ३६।३८ उपरि, पूर्व-उत्तरयात्रा त्रयोदशयां, अमृतयोगः
१७	२३	९	प्रदोष १४ व्रतं, एकोदिष्ट १४। भद्रा ८।२० यावत्, अमृतयोगः रा.६।०१ यावत्, अग्निवासः
१८	२४	१०	आश्विनअमावस्या, स्नान-दान श्राद्धादौ। महालयासमाप्ति, पितृपक्षीयपार्वणान्त। एकोदिष्ट ३०। शिववासः, क्षीणः शुक्रः।

खञ्जन दर्शनमन्त्रः-नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद।
पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।।
फलम् -तद्दर्शनमाकाशदपूर्व- पश्चिमोत्तर- वायव्यादिक्षु शुभमन्यादिक्ष्व शुभम्।
पुनश्च- अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु।
भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	वक्रीशुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि
१	रवि	३।०४।०४।२०	६।०४।१४।३७	३।२५।५५।५०	६।०७।२२।०४	११।१५।०३।५५	४।०५।५३।५५
२	सोम	३।०४।३९।२९	६।०५।३६।२८	३।२६।०७।१८	६।०७।१५।५२	११।१४।५८।५३	४।०५।५०।४४
३	मंगल	३।०५।१४।३८	६।०६।५८।१९	३।२६।१८।४६	६।०७।०६।३९	११।१४।५३।५१	४।०५।४७।३३
४	बुध	३।०५।४९।४८	६।०८।२०।११	३।२६।३०।१४	६।०७।०३।२६	११।१४।४८।४९	४।०५।४४।२२
५	गुरु	३।०६।२४।५८	६।०९।४२।०२	३।२६।४१।४२	६।०६।५७।१३	११।१४।४३।४७	४।०५।४१।१२
६	शुक्र	३।०६।५९।२५	६।१०।४३।२१	३।२६।५२।२७	६।०६।३५।३९	११।१४।३८।५४	४।०५।३८।०१
७	शनि	३।०७।३३।५२	६।११।४४।३९	३।२७।०३।१२	६।०६।१३।५८	११।१४।३४।०१	४।०५।३४।५०
८	रवि	३।०८।०८।१९	६।१२।४४।५८	३।२७।१३।५७	६।०५।५२।२०	११।१४।२९।०८	४।०५।३१।४०
१०	सोम	३।०८।४२।४६	६।१३।४७।१७	३।२७।२४।४२	६।०५।३०।४२	११।१४।२४।१५	४।०५।२८।२९
११	मंगल	३।०९।१७।१३	६।१४।४८।३६	३।२७।३५।२७	६।०५।०९।०४	११।१४।१९।२१	४।०५।२५।१८
१२	बुध	३।०९।५१।४०	६।१५।४९।५५	३।२७।४६।१३	६।०४।४७।२९	११।१४।१४।२७	४।०५।२२।०७
१३	गुरु	३।१०।२६।०८	६।१६।५१।१४	३।२७।५७।००	६।०४।२५।४८	११।१४।०९।३३	४।०५।१८।५७
१४	शुक्र	३।१०।५९।३९	६।१७।२१।०९	३।२८।०७।०४	६।०३।५०।०२	११।१४।०४।३८	४।०५।१५।४६
३०	शनि	३।११।३३।१०	६।१७।५०।४८	३।२८।१७।०८	६।०३।१४।१९	११।१३।५९।४३	४।०५।१२।३५

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४४।५४	२०।३८	२२।३४	००।४७	३।०५	५।२१	७।३६	६।५३	१२।१०	१४।१५	१६।०१	१७।३२	१९।०१
४४।५२	२०।३४	२२।३०	००।४३	३।०१	५।१७	७।३२	६।४९	१२।०६	१४।११	१५।५७	१७।२८	१८।५७
४४।५०	२०।३०	२२।२६	००।३९	२।५७	५।१३	७।२८	६।४५	१२।०२	१४।०७	१५।५३	१७।२४	१८।५३
४४।४८	२०।२७	२२।२३	००।३६	२।५४	५।१०	७।२५	६।४२	११।५९	१४।०४	१५।५०	१७।२१	१८।५०
४४।४६	२०।२३	२२।१९	००।३२	२।५०	५।०६	७।२१	६।३८	११।५५	१४।००	१५।४६	१७।१७	१८।४६
४४।४४	२०।१९	२२।१५	००।२८	२।४६	५।०२	७।१७	६।३४	११।५१	१३।५६	१५।४२	१७।१३	१८।४२
४४।४२	२०।१६	२२।१२	००।२५	२।४३	४।५९	७।१४	६।३१	११।४८	१३।५३	१५।३९	१७।१०	१८।३९
४४।४०	२०।१२	२२।०८	००।२१	२।३९	४।५५	७।१०	६।२७	११।४४	१३।४९	१५।३५	१७।०६	१८।३५
४४।३८	२०।०८	२२।०४	००।१७	२।३५	४।५१	७।०६	६।२३	११।४०	१३।४५	१५।३१	१७।०२	१८।३१
४४।३६	२०।०५	२२।०१	००।१४	२।३२	४।४८	७।०३	६।२०	११।३७	१३।४२	१५।२८	१६।५९	१८।२८
४४।३४	२०।०१	२१।५७	००।१०	२।२८	४।४४	६।५६	६।१६	११।३३	१३।३८	१५।२४	१६।५५	१८।२४
४४।३२	१९।५७	२१।५३	००।०६	२।२४	४।४०	६।५५	६।१२	११।२९	१३।३४	१५।२०	१६।५१	१८।२०
४४।३०	१९।५४	२१।५०	००।०३	२।२१	४।३७	६।५२	६।०६	११।२६	१३।३१	१५।१७	१६।४८	१८।१७
४४।२८	१९।५०	२१।४६	२३।५९	२।१७	४।३३	६।४८	६।०५	११।२२	१३।२७	१५।१३	१६।४४	१८।१३

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	रवि	दि.१०:३३-१:३०।	रा.१०:३०-१२:०२ रा.१:३३-३:०४।
२	सोम	प्रा.७:३६-९:०५ दि.२:५७-४:२५।	रा.१०:२९-१२:०१ रा.३:०५-४:३६।
३	मंगल	प्रा.७:३६-९:०४ दि.१५:२८-२:५६।	रा.७:२४-८:५६।
४	बुध	दि.९:०५-१०:३३ दि.१२:०१-१:२९।	रा.१२:०१-१:३३ रा.३:०५-४:३७।
५	गुरु	सं.२:५५-५:५०।	रा.१२:०२-१:३४ रा.४:३८-६:१०।
६	शुक्र	दि.९:०५-१२:०१।	रा.८:५६-१०:२९।
७	शनि	प्र.६:११-७:३९ दि.१:२८-२:५५ सं.४:२२-५:४९।	स.५:४९-७:२२ रा.१:३४-३:०७ रा.४:३९-६:१२
८	रवि	दि.१०:३३-१:२७।	रा.१०:२८-१२:०१ रा.३:०७-४:४०।
१०	सोम	प्रा.७:४०-९:०७ दि.२:२५-४:२१।	रा.१०:२७-१२:०० रा.१:३३-३:०६।
११	मंगल	प्रा.७:४१-९:०८ दि.१:२८-२:५४।	रा.७:२०-८:५४।
१२	बुध	दि.९:०८-१०:३५ दि.१२:०२-१:२८।	रा.१२:०२-१:३५ रा.३:०८-४:४१।
१३	गुरु	सं.२:५३-५:४५।	रा.१२:०१-१:३५ रा.४:४३-६:१७।
१४	शुक्र	दि.९:०८-१२:००।	रा.८:५२-१०:२६।
३०	शनि	प्र.६:१७-७:४३ दि.१:२७-२:५३ सं.४:१८-५:४३।	स.५:४३-७:२८ रा.१:३५-३:०६ रा.४:४३-६:१८।

मूलविचारः-रेवती/ अश्विनी - ति.१ रवि दि.१२।२८ तः ति.३ मंगल दि.११।५१ यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.१० सोम रा.१।०७ तः ति.१२ बुध रा.१०।५२ यावत्।

धर्मशास्त्रम्-आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पंचमीनारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थः कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नापि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव।
हेमाद्रौ- आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे सूर्ये यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नापि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्। श्राद्धकालः-पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्।
श्राद्धसमय-कुतुपकाल- द्वौ यामौ घटिकान्यूनौ द्वौ यामौ घटिकाधिकौ। स कालः कुतुपो ज्ञेयः पितृणां दत्तमक्षयम्।।
श्राद्धेनिषिद्धवस्तुनि(मत्स्य-पुराणे)- कूष्माण्डं, महिषीक्षीरं, बिल्वपत्रम्नगाद्विजाः। श्राद्धकालेसमुत्पन्ने-पितरो यान्त्यनाश्रिताः।
श्राद्धेप्रशस्तानि-उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः।
जीमूतवाहनव्रतं-इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका।। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यःस नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया।।
ग्रहयोगेनवृष्टिविचारः-बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयः तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।।

५ गुरु वल्ली
८।४०।१४।१०
अयनांशाः २२।५४।४१

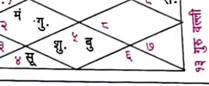

१३ गुरु वल्ली
८।४०।१४।१७
अयनांशाः २२।५४।४२

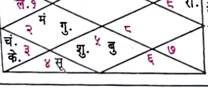

मिथिलादेशीय सदाजार पद्धति-

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।। मनुक एहि वचनक अनुसार धर्म अर्थात् कर्त्तव्य कर्म कें बुझबाक वास्ते वेद, स्मृति=धर्मशास्त्र, सदाचार आ आत्मतुष्टि एहि चारि साधन कें प्रत्यक्ष साधन कहल गेल छैक। अहू चारू मे सदाचारक स्थान सर्वोपरि मानल गेल छैक, कियैक तऽ वेद, स्मृति आ आत्मतुष्टि मे वहुतो स्थल मे विविधताक् स्थिति मे सदाचारक निर्णायक भूमिका होइत अछि। जेना कि श्रीमद्भगवद्गीता मे कहल गेल छैक- **यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरो जनः: स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।** महाभारत मे कहल गेल अछि- **श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैको मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्। धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः।।** सदाचार ककरा कही ? विष्णुपुराणक वचनानुसार- **साधवः क्षीणदोषाः स्युः सच्छब्दः साधुवाचकः। तेषामाचरणं यत्स्यात् सदाचारः स उच्यते।।** अर्थ-दोषरहित पुरुष कें साधु कहल जाइत छैक। सदाचार शब्द मे **"सत्"** शब्दक अर्थ अछि- साधु। तैं **"सताम् आचारः"** इति सदाचारः एहि व्युत्पत्तिक अनुसार साधु पुरुषक जे आचरण अर्थात् व्यवहार ओ**"सदाचार"** कहबैत अछि। परिस्थिक अनुसार भिन्न- भिन्न स्थानक सदाचारो मे विविधता देखल जाइत अछि। एहेन स्थिति मे कोन जगहक सदाचार कें प्रमाण मानैत अपनावी ? एहि जिज्ञासाक समाधान मे आचार-मर्मज्ञ आचार्य देवलक कथन छैन्ह जे जाहि देश मे जे व्यवहार परम्परा सँ आबि रहल अछि आ ओ व्यवहार यदि वेद आ स्मृतिक अविरोधी हो तऽ तत्तद् देशवासी कें ओकरे अनुपालन करक चाही-

आश्विनकृष्णपक्ष २८

आश्विनशुक्लपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,उत्तरगोलः, शरद्-ऋतुः, उत्तरे कालः, शुद्ध।
दिनांक ११ अक्टूबर तः २६ अक्टूबर यावत् सन् २०२६ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.	विशेष
१	रवि	३६।२५	रा. ८।४८	चित्रा	४१।५९	रा ११।२	वैधृति	४०।५३	किंगस्तुघ्न६।२०	कन्या ११।३०	दि.१०।३६	५।२३।३६।४०	२८।५२	६।१४	५।४६	१९	२५	११	शारदीयनवरात्रारम्भ, कलशस्थापनं, नवरात्रव्रतारम्भ, गजरुढया भगवत्याः आगमनं फलं जलप्रद। शैलपुत्रीदर्शनं,केशसंस्कार द्रव्याणिप्रदद्यात्प्रतिपद्दिने। चित्रायां रवि २७।३५ सं.५।१६, स्त्री स्त्री सू सू योगो जम्बूक वाहनं ❖
२	सोम	३७।५७	रा. ९।२५	स्वाती	४५।०६	रा १२।१६	विष्कुम्भ	३९।२०	बालव ७।११	तुला	अहोरात्र	५।२४।३६।०७	२८।४८	६।१४	५।४६	२०	२६	१२	श्रीरेमन्तपूजा। ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनं। पट्टदोरं द्वितीयायां केशसंयम हेतवे। चन्द्रदर्शनं। दक्षिण-पश्चिमयात्रा तृतीयायां स्वात्यां च रा.६।२५ तः रा.१२।१६ या, शिववासः
३	मंगल	४०।३५	रा. १०।२९	विशाखा	४९।२०	रा १।५९	प्रीति	३८।३९	तैतिल ९।१६	तुला ३३।१६	रा.७।३३	५।२५।३५।३४	२८।४४	६।१५	५।४५	२१	२७	१३	दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा। चित्रघण्टा देवी दर्शनं। पश्चिमास्तः शुक्रः ४६।५७, सिद्धियोगःरा.१०।२६ यावत्, अग्निवासः।
४	बुध	४४।२५	रा. १२।०२	अनुराधा	५४।३९	रा ४।०८	आयुष्यमान	३८।५२	वर्णिज १२।३०	वृश्चिक	अहोरात्र	५।२६।३५।०२	२८।४०	६।१६	५।४४	२२	२८	१४	श्रीगणेशपूजनं। श्रीगणेश४ व्रतं, कुष्माण्डादेवी दर्शनं, मधुपर्कं चतुर्थ्यांतु तिलकं नेत्रमण्डनम्। भद्रा १२।३० तः ४४।२५ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।०८ यावत्
५	गुरु	४६।०२	रा. १।५४	ज्येष्ठा	६०।००	समस्त	सौभाग्य	३९।४३	बव १६।४३	वृश्चिक	अहोरात्र	५।२७।३४।३०	२८।३६	६।१७	५।४३	२३	२९	१५	स्कन्दमातादर्शनं, पंचम्यामङ्गरागं च शक्त्यालंकरणानि च। पश्चिम-उत्तरयात्रा, शिववासः, अग्निवासः
६	शुक्र	५४।११	रा. १।५४	ज्येष्ठा	००।४०	प्रा ६।३३	शोभन	४०।५९	कौलव २१।३६	वृश्चिक००।४०	प्रा.६।३३	५।२८।३४।१५	२८।३३	६।१७	५।४३	२४	३०	१६	विल्वाभिमन्त्रणं, गजपूजा, कात्यायनीदेवीदर्शनम्। पूर्व-उत्तरयात्रा,शिववासः। ❖वातनाड़ी तदीशो रवि मेघाच्छादित वायुवृष्टियोगः, पूर्व-दक्षिणयात्रा रा.८।४८ उ, अग्निवासः।
७	शनि	५९।२८	रा.शे ६।५	मूल	०७।०६	दि ९।१०	अतिगण्ड	४२।२५	गर २६।४८	धनु	अहोरात्र	५।२९।३४।००	२८।३०	६।१८	५।४२	२५	३१	१७	मासान्त, नवपत्रिकाप्रवेश, मूले सरस्वत्यां पूजनं, भद्रा ५९।२६ उपरि, अग्निवासः। ♍कार्त्तिकस्नानारम्भ, सिमरियाकल्पवासारम्भः, याम्यगोलारम्भः, ने.कार्तिकमासारम्भः, भद्रा ३
८	रवि	६०।००	अहोरात्र	पूर्वाषाढा	१३।३६	दि ११।४५	सुकर्मा	४३।३९	भद्रा ३१।५३	धनु ३०।०७	सं.६।२१	६।००।३३।४५	२८।२६	६।१९	५।४१	२६	१	१८	महाष्टमी ८ व्रतं, महारात्रिर्निशापूजा, रात्रिजागरण, सरस्वती आवाहन, भगवतीदर्शन। अन्नपूर्णापरिक्रमारम्भ, तुलायां रविः १०।१३ दि.१०।२४ मु.३० समासमताकरं धान्यविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालः दि.१०।२४ उ।♍
८	सोम	०४।२०	दि. ८।०४	उत्तराषाढा	१९।४०	दि २।१२	धृति	४४।२६	बव ४।२०	मकर	अहोरात्र	६।०१।३३।३१	२८।२२	६।२०	५।४०	२७	२	१९	मासादि, शिववासः दि.८।०४ उपरि। ♎गृहारम्भः-गृहप्रवेशः त्रयोदशयां दि.११।५८ या, शिववासः दि.११।५८ यावत्
९	मंगल	८।३१	दि. ९।४४	श्रवण	२४।५९	दि ४।२०	शूल	४४।३३	कौलव ८।३१	मकर ५७।०६	रा.शे५।१०	६।०२।३३।१७	२८।१८	६।२०	५।४०	२८	३	२०	महानवमी व्रतं, दीक्षाग्रहणं, महागौरीदेवीदर्शनं, त्रिशूलनीपूजा, प्रभूततरबलिदानं,दीक्षाग्रहणं, हवनादिः। भदवारम्भः दि.४।२० उपरि। उत्तरां विनायात्रा, शिववासः दि.९।४४ यावत्
१०	बुध	११।४०	दि. ११।०१	धनिष्ठा	२९।१३	सं ६।०२	गण्ड	४३।४६	गर ११।४०	कुम्भ	अहोरात्र	६।०३।३३।०३	२८।१४	६।२१	५।३९	२९	४	२१	विजयादशमी१०,नवरात्रव्रतपारण, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, अपराजितापूजा,समीपूजा, गजवाहनया गमनफलं शुभवृष्टि प्रद, मघायां सिंहे च गुरुः, पूर्वोदितः शुक्र ३।२४ ,☒
११	गुरु	१३।४७	दि. ११।५३	शतभिषा	३२।२२	रा ७।१८	वृद्धि	४२।०६	भद्रा १३।४७	कुम्भ	अहोरात्र	६।०४।३२।४९	२८।१०	६।२२	५।३८	३०	५	२२	दग्धतिथि दि.११।५३ उ, पाशांकुश११ व्रतं सर्वेषां। भद्रा १३।४७ यावत्, शिववासः दि.११।५३ उपरि। ☒ भद्रा ४२।४३ उपरि, अग्निवासः
१२	शुक्र	१४।३१	दि. १२।११	पूर्वाभाद्रपद	३४।१४	रा ८।०५	ध्रुव	३९।२४	बालव १४।३१	कुम्भ १८।४६	दि.१।५३	६।०५।३२।४८	२८।०६	६।२३	५।३७	१	६	२३	दग्धतिथि दि.१२।११ या, गुडेन पारणा, श्रीपद्मनाभ १२। प्रदोष१३ व्रतं। मृत्युयोगः दि.१२।११ यावत्, शिववासः
१३	शनि	१३।५६	दि. ११।५८	उत्तराभाद्रपद	३४।५०	रा ८।२०	व्याघात	३५।४२	तैतिल १३।५६	मीन	अहोरात्र	६।०६।३२।४७	२८।०२	६।२४	५।३६	२	७	२४	प्रदोष १४ व्रतं, स्वात्यां रविः ५१।१३ रा.२।५३ पु.स्त्री चं सू योगो मेषवाहनं वह्नीनाड़ी तदीशो भौमः मेघाच्छादित अतिवायुवृष्टियोगः। ♎
१४	रवि	१२।१०	दि. ११।१६	रेवती	३४।१५	रा ८।०६	हर्षण	३१।०३	वर्णिज १२।१०	मीन ३४।१५	रा.८।०६	६।०७।३२।४६	२७।५८	६।२४	५।३६	३	८	२५	व्रतादौ पूर्णिमा, कौमदीमहोत्सव(कोजागरा),महालक्ष्मीपूजा, भदवा समाप्तिः रा.८।०६ उपरि। भद्रा १२।१० तः ४०।४४ यावत्, अमृतयोगः दि.११।१६ उपरि, अग्निवासः
१५	सोम	०९।१८	दि. १०।८	अश्विनी	३२।३८	रा ७।२८	वज्र	२५।३४	बव ९।१८	मेष	अहोरात्र	६।०८।३२।४५	२७।५४	६।२५	५।३५	४	९	२६	शदत्पूर्णिमा१५,स्नानदान, दीक्षाग्रहण,आदिकविवाल्मीकिजयन्ती, गृहारम्भः पूर्णिमायां, पूर्वां विनायात्रा, अमृतयोगः दि.१०।०८ यावत्, अग्निवासः - शिववासः दि.१०।०८ उपरि

५ गुरु वल्ली ८।४०।१४।२४ अयनांशाः २२।५४।४३

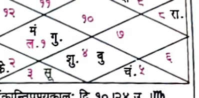

११ गुरु वल्ली ८।४०।१४।३१ अयनांशाः २२।५४।४४

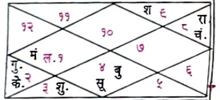

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	वक्रीशुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि	मिश्रमान
१	रवि	३।१२।०६।४१	६।१८।२०।३६	३।२८।२७।१२	६।०२।३८।२९	११।१३।५४।४८	४।०५।०६।२४	४४।२६
२	सोम	३।१२।४०।१२	६।१८।५०।२४	३।२८।३७।१७	६।०२।०२।४२	११।१३।४९।५२	४।०५।०६।१३	४४।२४
३	मंगल	३।१३।१३।४३	६।१९।२०।१२	३।२८।४७।२२	६।०१।२६।५५	११।१३।४४।५६	४।०५।०३।०२	४४।२२
४	बुध	३।१३।४७।१५	६।१९।५०।००	३।२८।५७।२७	६।००।५१।०८	११।१३।४०।००	४।०४।५९।५१	४४।२०
५	गुरु	३।१४।२०।४६	६।२०।१९।४८	३।२९।०७।३२	६।००।१५।३१	११।१३।३५।०४	४।०४।५६।४०	४४।१८
६	शुक्र	३।१४।५३।०९	६।२०।०७।२५व	३।२९।१६।४९	५।२९।३७।१४	११।१३।३०।२४	४।०४।५३।२९	४४।१६
७	शनि	३।१५।२५।३२	६।१९।५५।०२	३।२९।२६।०६	५।२८।५९।०७	११।१३।२५।४४	४।०४।५०।१९	४४।१५
८	रवि	३।१५।५७।५५	६।१९।४२।३९	३।२९।३५।२३	५।२८।२१।००	११।१३।२१।०४	४।०४।४७।०८	४४।१३
८	सोम	३।१६।३०।१८	६।१९।३०।१५	३।२९।४४।४०	५।२७।४२।५३	११।१३।१६।२४	४।०४।४३।५८	४४।११
९	मंगल	३।१७।०२।४२	६।१९।१७।५१	३।२९।५३।५७	५।२७।०४।४६	११।१३।११।४४	४।०४।४०।४७	४४।०९
१०	बुध	३।१७।३५।०६	६।१९।०५।२७	४।००।०३।१५	५।२६।२६।३९	११।१३।०७।०३	४।०४।३७।३६	४४।०७
११	गुरु	३।१८।०७।३०	६।१८।५३।०३	४।००।१२।३३	५।२५।४८।३१	११।१३।०२।२२	४।०४।३४।२५	४४।०५
१२	शुक्र	३।१८।३८।४५	६।१८।०७।४१	४।००।२१।०२	५।२५।१९।४०	११।१२।५८।१०	४।०४।३१।१४	४४।०३
१३	शनि	३।१९।१०।००	६।१७।२२।१९	४।००।२९।३१	४।२४।५०।४९	११।१२।५३।५८	४।०४।२८।०४	४४।०१
१४	रवि	३।१९।४१।१६	६।१६।३६।५७	४।००।३८।००	५।२४।२१।५८	११।१२।४९।४६	४।०४।२४।५४	४३।५९
१५	सोम	३।२०।१२।३२	६।१५।५१।३५	४।००।४६।२९	५।२३।५३।०७	११।१२।४५।३३	४।०४।२१।४३	४३।५७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	रवि	१९।४६	२१।४२	२३।५५	२।१३	४।२९	६।४४	९।०१	११।१८	१३।२३	१५।०९	१६।४०	१८।०९
२	सोम	१९।४३	२१।३९	२३।५२	२।१०	४।२६	६।४१	८।५८	११।१५	१३।२०	१५।०६	१६।३७	१८।०६
३	मंगल	१९।३९	२१।३५	२३।४८	२।०६	४।२२	६।३७	८।५४	११।११	१३।१६	१५।०२	१६।३३	१८।०२
४	बुध	१९।३५	२१।३१	२३।४४	२।०२	४।१८	६।३३	८।५०	११।०७	१३।१२	१४।५८	१६।२९	१७।५८
५	गुरु	१९।३२	२१।२८	२३।४१	१।५९	४।१५	६।३०	८।४७	११।०४	१३।०९	१४।५५	१६।२६	१७।५५
६	शुक्र	१९।२८	२१।२४	२३।३७	१।५५	४।११	६।२६	८।४३	११।००	१३।०५	१४।५१	१६।२२	१७।५१
७	शनि	१९।२४	२१।२०	२३।३३	१।५१	४।०७	६।२२	८।३९	१०।५६	१३।०१	१४।४७	१६।१८	१७।४७
८	रवि	१९।२१	२१।१७	२३।३०	१।४८	४।०४	६।१९	८।३६	१०।५३	१२।५८	१४।४४	१६।१५	१७।४४
८	सोम	१९।१७	२१।१३	२३।२६	१।४४	४।००	६।१५	८।३२	१०।४९	१२।५४	१४।४०	१६।११	१७।४०
९	मंगल	१९।१३	२१।०९	२३।२२	१।४०	३।५६	६।११	८।२८	१०।४५	१२।५०	१४।३६	१६।०७	१७।३६
१०	बुध	१९।०९	२१।०५	२३।१८	१।३६	३।५२	६।०७	८।२४	१०।४१	१२।४६	१४।३२	१६।०३	१७।३२
११	गुरु	१९।०५	२१।०१	२३।१४	१।३२	३।४८	६।०३	८।२०	१०।३७	१२।४२	१४।२८	१५।५९	१७।२८
१२	शुक्र	१९।०१	२०।५७	२३।१०	१।२८	३।४४	५।५९	८।१६	१०।३३	१२।३८	१४।२४	१५।५५	१७।२४
१३	शनि	१८।५७	२०।५३	२३।०६	१।२४	३।४०	५।५५	८।१२	१०।२९	१२।३४	१४।२०	१५।५१	१७।२०
१४	रवि	१८।५३	२०।४९	२३।०२	१।२०	३।३६	५।५१	८।०८	१०।२५	१२।३०	१४।१६	१५।४७	१७।१६
१५	सोम	१८।५०	२०।४६	२२।५९	१।१७	३।३३	५।४८	८।०५	१०।२२	१२।२७	१४।१३	१५।४४	१७।१३

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल- ति.४ बुध रा.४।०८ तः ति.७ शनि दि.९।१० यावत्।। रेवती/ अश्विनी - ति.१३ शनि रा.८।२० ति.१५ सोम रा.७।२८ यावत्

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	रवि	दि.१०:३६-१:२७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.१:३६-३:१०।
२	सोम	प्र.७:४४-९:१० दि.२:५२-४:१७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.३:१०-४:४४।
३	मंगल	प्र.७:४५-९:११ दि.१:२६-२:५१।	स.७:१६-८:५१।
४	बुध	दि.९:१०-१०:३५ दि.१२:००-१:२५।	रा.१२:००-१:३५ रा.३:१०-४:४५।
५	गुरु	दि.२:५१-५:३९।	रा.१२:०१-१:३६ रा.४:४६-६:२२।
६	शुक्र	दि.९:१२-१२:०२।	रा.८:५०-१०:२६।
७	शनि	प्र.६:२२-७:४७ दि.१:२६-२:५० स.४:१४-५:३८।	स.५:३८-७:१४ रा.१:३७-३:१२ रा.४:४७-६:२३
८	रवि	दि.१०:२७-१:२५।	रा.१०:२५-१२:०१ रा.१:३७-३:१२।
८	सोम	प्र.७:४८-९:१२ दि.२:४८-४:१२।	रा.१०:२४-१२:०० रा.३:१२-४:४८।
९	मंगल	प्र.७:४९-९:१३ दि.१:२५-२:४९।	रा.७:१२-८:४९।
१०	बुध	दि.९:१४-१०:३८ दि.१२:०२-१:२५।	रा.१२:०२-१:३८ रा.३:१४-४:५०।
११	गुरु	दि.२:४८-५:३४।	रा.१२:०२-१:३८ रा.४:५०-६:२७।
१२	शुक्र	दि.९:१५-१२:०१।	रा.८:४७-१०:२४।
१३	शनि	प्र.६:२७-७:५१ दि.१:२४-२:४७ स.४:१०-५:३३।	स.५:३३-७:१० रा.१:३८-३:०३ रा.४:५१-६:२८।
१४	रवि	दि.१०:३७-१:२३।	रा.१०:२३-१२:०० रा.१:३७-३:१४।
१५	सोम	प्र.७:५१-९:१४ दि.२:४६-४:०९।	रा.१०:२३-१२:०० रा.३:१४-४:५१।

अपराजिता धारण मन्त्र-ॐ जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते। धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये।। करिष्यमाणा या यात्रा यथाकालं सुखं मया। तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते।।

❖कलशस्थापन का संकल्पः- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भागवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मवर्तैकदेशे पुण्य बिहारप्रदेशे मिथिलांञ्चले....अमुक मण्डले(जिला)...अमुकग्रामे(गाम), स्वगृहे(यदिअपनाघर में हो),अमुक देवालये(यदिमन्दिर में हो)प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने रौद्र नामसंवत्सरे, दक्षिणायने, उत्तरगोले, महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे आश्विने मासे, शुक्ले पक्षे, प्रतिपदायां तिथौ, रवि वासरान्वितायां, चित्रा नक्षत्रे वैधृति योगे, किंगस्तुघ्न करणे, कन्या राशिस्थिते श्रीसूर्ये, कन्या राशिस्थिते श्रीचन्द्रे,यथा-यथा राशिस्थितेषु भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनिषु सत्सु शुभे योगे शुभे करणे एवं गुण-गण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः*अमुकगोत्रोत्पन्नः (यजमानक गोत्र), अमुकशर्मा (यजमानक नाम)अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्री बान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत-राजकृत-सर्वविधपीडा- निवृत्ति-पूर्वकं- नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिः धनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति- सर्वाभीष्ट फलावाप्ति-धर्मार्थ- काम-मोक्ष- चतुर्विध -पुरुषार्थप्राप्त्यर्थं साङ्गसायुध सवाहनसपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन श्रीदुर्गापूजा अङ्गभूतकलशस्थापनम् तथा पूजनं अहं करिष्ये।

* यदि सामाजिकसम्मिलितपूजा हो तो- अमुकग्रामवासीनाम(गामक नाम) नानानां गोत्राणां सकल जनानामेतत्पूजोपकारकाणामन्यग्रामवासिनां च उपस्थितशरीराविरोधेन श्रीनवदुर्गानुग्रहतो...।

दुर्गा-आगमन-शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौशुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्तिता। फल- गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्। दुर्गा-गमनफल-शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुध यानकरी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा,सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा।

अपराजिता पूजन निर्णय-आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेत्ततः। एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम्।

शमी की पूजाकर यात्रा करनी चाहिए। मन्त्र-शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टका। धारिण्यर्जुनवाणानां रामस्य प्रियवादिनी।।

कोजागरा-कौमुदी निशीथे वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै वित्तं प्रदास्यामि अक्षैः क्रीडां करोति यः।।

कार्त्तिककृष्णपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,दक्षिणगोलः, शरद्-ऋतुः, उत्तरे कालः:, शुद्ध।

दिनांक २७ अक्टूबर तः ९ नवम्बर यावत् सन् २०२६ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	मंगल	०५।२८	दि.८।३७	भरणी	३०।११	सं.६।३०	सिद्धि	१९।२३	कौलव	५।२८	मेष	४४।२३	रा.१२।११	६।०९।३२।४५	२७।५०	६।२६	५।३४	५	१०	२७
२	बुध	००।४७	प्रा.६।४५	कृत्तिका	२६।५९	सं.५।१४	व्यतीपात	१२।३२	गर	००।४७	वृष		अहोरात्र	६।१०।३२।४५	२७।४७	६।२७	५।३३	६	११	२८
४	गुरु	४९।४५	रा.२।२१	रोहिणी	२३।१४	दि.३।४४	वरीयान्	०५।१२	बव	२२।३६	वृष	५०।११	रा.२।३१	६।११।३२।४५	२७।४४	६।२७	५।३३	७	१२	२९
५	शुक्र	४३।४९	रा.११।५९	मृगशिरा	१९।०८	दि.२।०७	शिव	४९।४५	कौलव	१६।४७	मिथुन		अहोरात्र	६।१२।३२।५९	२७।४१	६।२८	५।३२	८	१३	३०
६	शनि	३७।४८	रा.९।३५	आर्द्रा	१४।५६	दि.१२।२६	सिद्ध	४१।५५	गर	१०।४८	मिथुन	५६।५०	रा.शे५।१२	६।१३।३३।१३	२७।३८	६।२८	५।३२	९	१४	३१
७	रवि	३१।५७	सं.७।१५	पुनर्वसु	१०।४८	दि.१०।४८	साध्य	३४।१४	भद्रा	४।५२	कर्क		अहोरात्र	६।१४।३३।२७	२७।३४	६।२९	५।३१	१०	१५	१
८	सोम	२६।३०	सं.०५।०६	पुष्य	०६।५६	दि.९।१६	शुभ	२६।५०	कौलव	२६।३०	कर्क	३।३५	प्रा.७।५६	६।१५।३३।४१	२७।३१	६।३०	५।३०	११	१६	२
९	मंगल	२१।३३	दि.३।०७	आश्लेषा	०३।३५	प्रा.७।५६	शुक्ल	१९।५४	गर	२१।३३	सिंह		अहोरात्र	६।१६।३३।५५	२७।२८	६।३०	५।३०	१२	१७	३
१०	बुध	१७।२५	दि.१।२९	मघा	००।५३	प्रा.६।५२	ब्रह्म	१३।४१	भद्रा	१७।२५	सिंह		अहोरात्र	६।१७।३४।१०	२७।२५	६।३१	५।२९	१३	१८	४
११	गुरु	१४।०७	दि.१२।१०	उत्तराफाल्गुनी	५८।११	प्रा.५।४८	ऐन्द्र	०७।४९	बालव	१४।०७	सिंह	१३।३२	दि.११।५६	६।१८।३४।२५	२७।२२	६।३२	५।२८	१४	१९	५
१२	शुक्र	११।५४	दि.११।१७	हस्त	५८।२९	प्रा.५।५५	वैधृति	०२।५७	तैतिल	११।५४	कन्या		अहोरात्र	६।१९।३४।५०	२७।१९	६।३२	५।२८	१५	२०	६
१३	शनि	१०।५४	दि.१०।५४	चित्रा	६०।००	अहोरात्र	प्रीति	५६।०४	वर्णिज्	१०।५४	कन्या	६।४५	रा.६।२७	६।२०।३५।१६	२७।१६	६।३३	५।२७	१६	२१	७
१४	रवि	११।११	दि.११।०२	चित्रा	००।०२	प्रा.६।३४	आयुष्यमान	५४।०७	शकुनी	११।११	तुला		अहोरात्र	६।२१।३५।४२	२७।१२	६।३४	५।२६	१७	२२	८
३०	सोम	१२।५०	दि.११।४२	स्वाती	०२।५०	प्रा.७।४२	सौभाग्य	५३।०८	नाग	१२।५०	तुला	५०।४७	रा.२।५२	६।२२।३६।०८	२७।०९	६।३४	५।२६	१८	२३	९

२७ कार्त्तिकेद्विदलं त्यजेत्। कार्त्तिकेयमुनास्नानं महापुण्यप्रदं, **अशून्यशयन २ व्रतं**, मृत्युयोगः प्रा.८।३७ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः - अग्निवासः दि.८।३७ यावत्,

२८ **तृतीयातिथिमानं ५४।४१।** भद्रा २७।४४ तः ५५।२८ यावत्, सिद्धियोगः प्रा.६।४५ ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः अहोरात्र

२९ परिघयोग ५२।२२, करकचतुर्थी(करवाचौठ),श्रीकृष्णपिंगाक्ष ४ व्रतं, दक्षिणां विनायात्रा पञ्चम्यां, मृत्युयोगः रा.२।२१ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः

३० गृहारम्भः मृगशिरसे दि.२।०७ यावत्, पश्चिमां विनायात्रा दि.२।०७ यावत्। सिद्धियोगः रा.११।५९ उपरि, शिववासः, अग्निवासः

३१ **कोकिलाषष्ठी ६, अशोकचन्दन ६।** दक्षिणपश्चिम यात्रा पुनर्वसौ दि.१२।२६ उपरि। भद्रा ३७।४८ उपरि, अमृतयोगः रा.९।३५ यावत्

१ **नवम्बर११।** उत्तरयात्रा दि.१०।४८ यावत् ततः पश्चिमां विना यात्रा। भद्रा ४।५२ यावत्, सिद्धियोगः सं.७।१५ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।४८ उपरि, अग्निवासः

२ श्रीराधाजयन्ती ८, श्रीराधाष्टमी ८, पूर्वाविनायात्रा पुष्ये दि.९।१६ यावत्। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.९।१६ यावत्, शिववासः सं.५।०६ यावत्

३ भद्रा ४९।२९ उपरि, **गण्डान्त ७।३५ यावत्,** राज्यप्रदयोगः दि.३।०७ यावत्, अग्निवासः दि.३।०७ यावत

४ **पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमानं ५८।०९,** पूर्वयात्रा प्रा ६।५२ उपरि। भद्रा १७।२५ यावत्, अमृतयोगः दि.१।२९ उपरि, अग्निवासः दि.१।२९ उपरि

५ रम्भाएकादशी११ व्रतं सर्वेषाम्। **पूर्वोदित बुधः ३६।३१,** दग्धतिथि द्वादशी दि.१२।१० उपरि। शिववासः, अग्निवासः। ❖ मृत्युयोगः दि.११।१७ यावत्, शिववासः दि.११।१७ यावत्, अग्निवासः दि.११।१७ उपरि।

६ **विष्कुम्भयोगमानं ५६।०३,** विल्वदलेनतुलसीदलेन वा पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं,** गोवत्सद्वादशी१२। श्रीवनदन्तारिजयन्ती(धनतेरस)। दग्धतिथि द्वादशी दि.११।१७ यावत्। पूर्वदक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां दि.११।१७ उपरि।❖

७ **प्रदोष१४ व्रतं,** यमदीपदानं, हनुमज्जन्मोत्सवः, हनुमद्ध्वजदानं, **विशाखायां रविः ८।३७ दि.१०।०७।** मार्गीशुक्रः २५।५६। दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां। भद्रा१०।५४ तः ४१।०२ यावत्, अग्निवासः दि.१०।५४ या. ततःसिद्धियोग।

८ दीपावली, सुखरात्रिः, प्रदोषे यावद्रात्रौ लक्ष्मी-कूबेरपूजा, उल्काभ्रमण,रात्रीशेषे द्ररिद्रनिःसारणं,दीक्षाग्रहण, कालीपूजा, निशीथे कालीताराभुवनेश्वरीप्रादुर्भावः। अमृतयोगः दि.११।०८ उपरि, अग्निवास

९ कार्तिकी३०,स्नानदानादिः, सोमवत्तीअमावस्या। अन्नकूट, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं,गोवर्धनपूजा, वृषभेऔषधिदानं, गोपूजा नैव। गोक्रीडा, सिद्धियोगः दि.११।४२ उपरि, शिववासः दि.११।४२ यावत् तत अग्निवासः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	वक्री बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	वक्रीशुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि	मिश्रमान
१	मंगल	३।२०।४३।४८	६।१५।०६।१३	४।००।५४।५९	५।२३।२४।१६	११।१२।४१।२०	४।०४।१८।३२	४३।५५
२	बुध	३।२१।१५।०४	६।१४।२०।५१	४।०१।०३।२९	५।२२।५५।२४	११।१२।३७।०७	४।०४।१५।२१	४३।५३
४	गुरु	३।२१।४६।२०	६।१३।३५।२८	४।०१।११।५९	५।२२।२६।३२	११।१२।३२।५४	४।०४।१२।१०	४३।५१
५	शुक्र	३।२२।१६।१७	६।१२।५७।२०	४।०१।१९।१७	५।२२।१४।१०	११।१२।२८।५८	४।०४।०९।००	४३।५०
६	शनि	३।२२।४६।१४	६।१२।१९।१२	४।०१।२६।३५	५।२२।०१।४८	११।१२।२५।०१	४।०४।०५।४९	४३।४९
७	रवि	३।२३।१६।१२	६।११।४१।०४	४।०१।३३।५४	५।२१।४९।२६	११।१२।२१।०४	४।०४।०२।३९	४३।४७
८	सोम	३।२३।४६।१०	६।११।०२।५६	४।०१।४१।१३	५।२१।३७।०३	११।१२।१७।०७	४।०३।५९।२८	४३।४५
९	मंगल	३।२४।१६।०८	६।१०।२४।४८	४।०१।४८।३२	५।२१।२४।४०	११।१२।१३।१०	४।०३।५६।१७	४३।४३
१०	बुध	३।२४।४६।०६	६।०९।४६।४०	४।०१।५५।५१	५।२१।१२।१७	११।१२।०९।१३	४।०३।५३।०७	४३।४१
११	गुरु	३।२५।१६।०४	६।०९।०८।३१	४।०२।०३।१०	५।२०।५९।५४मा	११।१२।०५।१६	४।०३।४९।५६	४३।४०
१२	शुक्र	३।२५।४४।२९	६।०९।०९।५८मा	४।०२।०९।३३	५।२१।०५।१५	११।१२।०२।०८	४।०३।४६।४५	४३।३९
१३	शनि	३।२६।१२।५४	६।०९।११।२५	४।०२।१५।५७	५।२१।१०।३६	११।११।५९।००	४।०३।४३।३४	४३।३८
१४	रवि	३।२६।४१।१९	६।०९।१२।५२	४।०२।२२।२१	५।२१।१५।५७	११।११।५५।५२	४।०३।४०।२३	४३।३६
३०	सोम	३।२७।०९।४५	६।०९।१४।१९	४।०२।२८।४५	५।२१।२१।१८	११।११।५२।४४	४।०३।३७।१२	४३।३४

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	मंगल	१८।४६	२०।४२	२२।५५	१।१३	३।२९	५।४४	८।०१	१०।१८	१२।२३	१४।०९	१५।४०	१७।०९
२	बुध	१८।४२	२०।३८	२२।५१	१।०९	३।२५	५।४०	७।५७	१०।१४	१२।१९	१४।०५	१५।३६	१७।०५
४	गुरु	१८।३८	२०।३४	२२।४७	१।०५	३।२१	५।३६	७।५३	१०।१०	१२।१५	१४।०१	१५।३२	१७।०१
५	शुक्र	१८।३४	२०।३०	२२।४३	१।०१	३।१७	५।३२	७।४९	१०।०६	१२।११	१३।५७	१५।२८	१६।५७
६	शनि	१८।३०	२०।२६	२२।३९	००।५७	३।१३	५।२८	७।४५	१०।०२	१२।०७	१३।५३	१५।२४	१६।५३
७	रवि	१८।२६	२०।२२	२२।३५	००।५३	३।०९	५।२४	७।४१	९।५८	१२।०३	१३।४९	१५।२०	१६।४९
८	सोम	१८।२२	२०।१८	२२।३१	००।४९	३।०५	५।२०	७।३७	९।५४	११।५९	१३।४५	१५।१६	१६।४५
९	मंगल	१८।१८	२०।१४	२२।२७	००।४५	३।०१	५।१६	७।३३	९।५०	११।५५	१३।४१	१५।१२	१६।४१
१०	बुध	१८।१४	२०।१०	२२।२३	००।४१	२।५७	५।१२	७।२९	९।४६	११।५१	१३।३७	१५।०८	१६।३७
११	गुरु	१८।११	२०।०७	२२।२०	००।३८	२।५४	५।०९	७।२६	९।४३	११।४८	१३।३४	१५।०५	१६।३४
१२	शुक्र	१८।०७	२०।०३	२२।१६	००।३४	२।५०	५।०५	७।२२	९।३९	११।४४	१३।३०	१५।०१	१६।३०
१३	शनि	१८।०३	१९।५९	२२।१२	००।३०	२।४६	५।०१	७।१८	९।३५	११।४०	१३।२६	१४।५७	१६।२६
१४	रवि	१७।५९	१९।५५	२२।०८	००।२६	२।४२	४।५७	७।१४	९।३१	११।३६	१३।२२	१४।५३	१६।२२
३०	सोम	१७।५५	१९।५१	२२।०४	००।२२	२।३८	४।५३	७।१०	९।२७	११।३२	१३।१८	१४।४९	१६।१८

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मंगल	प्र.७:५२-९:१५ दि.१:२४-२:४७।	रा.७:०९-८:४७।
२	बुध	दि.९:१६-१०:३९ दि.१२:०२-१:२४।	रा.१२:०२-१:३९ रा.३:१६-४:५३।
४	गुरु	दि.२:४६-५:३०।	रा.१२:०२-१:३९ रा.४:५३-६:३१।
५	शुक्र	दि.९:१७-१२:०१।	रा.८:४५-१०:२३।
६	शनि	प्र.६:३२-७:५४ दि.१:२२-२:४४ सं.४:०६-५:२८।	सं.५:२८-७:०६ रा.१:३८-३:१६ रा.४:५४-६:३३।
७	रवि	दि.१०:३८-१:२२।	रा.१०:२२-१२:०० रा.१:३८-३:१६।
८	सोम	प्र.७:५५-९:१७ दि.२:४५-४:०६।	रा.१०:२३-१२:०१ रा.३:१७-४:५५।
९	मंगल	प्र.७:५६-९:१८ दि.१:२३-२:४४।	रा.७:०५-८:४४।
१०	बुध	दि.९:१८-१०:४० दि.१२:०२-१:२३।	रा.१२:०२-१:४० रा.३:१८-४:५६।
११	गुरु	दि.२:४३-५:२५।	रा.१२:०१-१:४० रा.४:५७-६:३६।
१२	शुक्र	दि.९:१८-१२:००।	रा.८:४२-१०:२१।
१३	शनि	प्र.६:३६-७:५७ दि.१:२१-२:४२ सं.४:०३-५:२४।	सं.५:२४-७:०३ रा.१:३९-३:१८ रा.३:२०-६:३०।
१४	रवि	दि.१०:४०-१:२२।	रा.१०:२२-१२:०१ रा.१:४०-३:१९।
३०	सोम	प्र.७:५९-९:२० दि.२:४२-४:०२।	रा.१०:२२-१२:०२ रा.३:२०-४:५९।

४ गुरु वल्ली ८।४०।१४।३८ अयनांशाः २२।५४।४५

११ गुरु वल्ली ८।४०।१४।४५ अयनांशाः २२।५४।४६

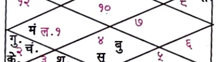

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.८ सोम दि.९।१६ तः ति.१० बुध प्रा.६।५२ यावत्।

उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।। ई कहि दक्षिण दिशि उक केँ फेकि देथि। नीचा केवल फेकल ऊक केँ तीनि बेरि नांघि ओहि में सँ अधजरल सनकाठी गोसाओन क लग राखथि ओही सँ सूप वजेवाक व्यवहार अछि।

- **कार्त्तिकविशेष**-कार्त्तिके वर्जयेत्तैलं कार्त्तिके वर्जयेन्मधुः। कार्त्तिके वर्जयेन्मासं कार्त्तिके शुक्तसन्धितम्। धातृ छाया में ब्राह्मणभोजन फल-धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुङ्क्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्।। •आकाशदीपदानफलम्- तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसंपदः।।
- कार्तिकस्नानः- **कार्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तःसर्वपापैः प्रमुच्यते।।**
- स्नानमन्त्रः- कात्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह।।
- अमायां लक्ष्मीपूजा-देशकालौ संकृत्य मम गृहेऽचललक्ष्मी निवासाय लक्ष्मी पूजनम् अहं करिष्ये। विहितोपचारैः संपूज्यान्ते • प्रार्थना -नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।
- लक्ष्मी-अर्घ्यमंत्र- व्रतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिसम्मतम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दनुजेन्द्रनिषूदन।।
  नित्यनैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशिने। गृहाणार्घ्यंमया दत्तं राधया सहितो हरेः।।
- दीपदानमन्त्रः- दामोदराद्य नभसि तुलायां लीलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।।
- उल्काभ्रमणमन्त्रः-**जरवा योग्य खढ़ सनकाठी सँ बनाओल उक में एक दिशि आगि लगाऽ घर क बाहर दक्षिण मुँह ठाढ़भऽउल्का भ्रमण करथि। मन्त्र-** शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।। **तखन दक्षिण दिशि आकाश में ऊक देख वैत आगाँ मन्त्र पढ़थि-** अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमाङ्गतिम्।।

विसर्जनक मन्त्र-ॐ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये।

कार्त्तिकशुक्लपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,दक्षिणगोलः, शरद्/हेमन्त-ऋतुः, उत्तर/पूर्व कालः, शुद्ध।
दिनांक १० नवम्बर तः २४ नवम्बर यावत् सन् २०२६ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि द. प.	समा.कालः घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	मंगल	१५।४४	दि १२।५२	विशाखा	०६।४७	दि ९।१७	शोभन	५३।०२	बव १५।४४	वृश्चिक	अहोरात्र	६।२३।३६।३४	२७।०६	६।३५	५।२५
२	बुध	१९।३२	दि २।२३	अनुराधा	११।५२	दि ११।१९	अतिगण्ड	५३।४१	कौलव १९।३२	वृश्चिक	अहोरात्र	६।२४।३७।००	२७।०३	६।३५	५।२५
३	गुरु	२४।१६	दि ४।१८	ज्येष्ठा	१७।४५	दि १।४२	सुकर्मा	५४।४६	गर २४।१६	वृश्चिक १७।४५	दि.१।४२	६।२५।३७।२६	२७।००	६।३६	५।२४
४	शुक्र	२९।३१	सं ६।२५	मूल	२४।०९	सं ४।१६	धृति	५६।०८	भद्रा २९।३१	धनु	अहोरात्र	६।२६।३८।०५	२६।५७	६।३७	५।२३
५	शनि	३४।५१	रा ८।३३	पूर्वाषाढा	३०।४०	सं ६।५३	शूल	५७।२६	बव २।११	धनु ५७।२७	राशे५।३६	६।२७।३८।४४	२६।५४	६।३७	५।२३
६	रवि	३९।४८	रा १०।३३	उत्तराषाढा	३६।५०	रा ९।२२	गण्ड	५८।२०	कौलव ७।१९	मकर	अहोरात्र	६।२८।३९।२४	२६।५०	६।३८	५।२२
७	सोम	४४।०४	रा १२।१६	श्रवण	४२।२०	रा ११।३५	वृद्धि	५८।३९	गर ११।५६	मकर	अहोरात्र	६।२९।४०।०४	२६।४६	६।३९	५।२१
८	मंगल	४७।०५	रा १।३०	धनिष्ठा	४६।५२	रा १।२४	ध्रुव	५८।०५	भद्रा १५।३४	मकर १४।३६	दि.१२।३०	७।००।४०।४४	२६।४२	६।४०	५।२०
९	बुध	४९।२४	रा २।२५	शतभिषा	५०।४८	रा २।५९	व्याघात	५६।४३	बावल १८।१४	कुम्भ	अहोरात्र	७।०१।४१।२४	२६।३९	६।४०	५।२०
१०	गुरु	५०।०७	रा २।४३	पूर्वाभाद्रपद	५२।२८	रा ३।४०	हर्षण	५४।१७	तैतिल १९।४५	कुम्भ ३७।०३	रा.९।३०	७।०२।४२।०४	२६।३६	६।४१	५।१९
११	शुक्र	४९।३४	रा २।३०	उत्तराभाद्रपद	५३।२२	प्रा ०४।०१	वज्र	५०।५२	वर्णिज् १९।५०	मीन	अहोरात्र	७।०३।४२।५५	२६।३३	६।४१	५।१९
१२	शनि	४७।४९	रा १।४९	रेवती	५३।०४	रा ३।५५	सिद्धि	४६।२६	बव १८।४१	मीन ५३।०४	रा.३।५५	७।०४।४३।४६	२६।३०	६।४२	५।१८
१३	रवि	४४।५९	रा १२।४१	अश्विनी	५१।३९	रा ३।२१	व्यतीपात	४१।११	कौलव १६।२४	मेष	अहोरात्र	७।०५।४४।३७	२६।२८	६।४२	५।१८
१४	सोम	४१।१२	रा ११।११	भरणी	४९।२७	रा २।२९	वरीयान्	३५।०९	गर १३।०५	मेष	अहोरात्र	७।०६।४५।२८	२६।२६	६।४३	५।१७
१५	मंगल	३६।३४	रा ९।२०	कृत्तिका	४६।२३	रा १।१६	परिघ	२९।२७	भद्रा ८।५३	मेष ३।४१	दि.८।११	७।०७।४६।१९	२६।२४	६।४३	५।१७

दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
१९	२४	१०	महाकविकालिदासजयन्त्युत्सवः। चन्द्रदर्शनं, सौम्यश्रृंगं सुभिक्षकरम्। पश्चिमयात्रा अनुराधायां दि.९।१७ उपरि। मृत्युयोगः दि.१२।५२ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः,
२०	२५	११	भातृद्वितीया(भईयादूज), चित्रगुप्तपूजा, यमुनास्नानं, पश्चिमयात्रा द्वितीयायां दि.२।२३ यावत्। सिद्धियोगः दि.२।२३ यावत् ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।१९ यावत्, शिववासः दि.२।२३ यावत्, अग्निवासः
२१	२६	१२	कटुमहुली३। श्रीगणेश४ व्रतं, भद्रा ५६।५३ उपरि, अमृतयोगः दि.४।१८ यावत् ततः मृत्युयोगः। ❖ने.अग्रहायणमासरम्भः। भद्रा १५।३४ यावत्, सिद्धियोगः रा.१।३० यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, अग्निवासः
२२	२७	१३	प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य नहाय-खाय। पूर्व-उत्तरयात्रा पञ्चम्याम्। भद्रा २९।३१ यावत्, अमृतयोगः सं.६।२५ यावत्, शिववासः सं.६।२५ उपरि, अग्निवासः
२३	२८	१४	प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य(खरना), ज्ञानपंचमी। गृहप्रवेशः पञ्चम्यां उत्तराषाढ़ायां च सं.६।५३ तः रा.८।३३ यावत्। मृत्युयोगः रा.८।३३ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः
२४	२९	१५	प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदानं, डाला-छठ, स्कन्दषष्ठी६ व्रतं। पश्चिमां दिना यात्रा श्रवणे रा.९।२२ उपरि। मृत्युयोगः रा.१०।३३ यावत्, शिववासः, अग्निवासः
२५	३०	१६	प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, समापूजारम्भ, जगद्धातृपूजारम्भ, मासान्तः। पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.११।३५ उपरि। भद्रा ४४।०४ उपरि, मृत्युयोगः रा.१२।१६ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.११।३५ यावत्
२६	१	१७	गोपाष्टमी, गोशालामेलारम्भः सन्हौली खगड़िया। वृश्चिके रविः ३।०३ दि.७।५३ मु.३० समासमताकरं, विष्णुपदिसंक्रातिः पुण्यकालोः दि.१२।०० यावत्, सिमरियाधाम्नि कल्पवाससमाप्तिः, पूर्वेकालः,❖
२७	२	१८	मासादिः, अक्षयनवमी, सत्ययुगादि, गंगास्नानादि, धातृमूलेभोजनं दीक्षाग्रहणं, दग्धतिथि दशमी रा.२।२५ उपरि। शिववासः
२८	३	१९	जगद्धातृविसर्जनं, कृष्णविजयोत्सव(ब्रज)। दग्धतिथि दशमी रा.२।४५ यावत्। गृहप्रवेशः उत्तराभाद्रपदायां रा.३।४० उपरि। सिद्धियोगः रा.२।४३ यावत्, अग्निवासः
२९	४	२०	देवोत्थानएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां, । भीष्मपञ्चकारम्भ। व्रतोद्यापनं, चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः अनुराधायां रविः २०।४२ दि.२।५८। गृहारम्भः,गृहप्रवेशः। भद्रा १६।५० तः ४६।३४ यावत्, सिद्धियोगः रा.२।३० यावत्।
३०	५	२१	विल्वदलेनतुलसीदलेन वा पारणं,दामोदर१२, तामसमन्वादिः। चातुर्मास्यव्रतपारणं, तुलसीविवाहः, पञ्चक(भदवा)समाप्तिः रा.३।५५ उपरि। गृहारम्भः, गृहप्रवेशः, उत्तरयात्रा। शिववासः, अग्निवासः
१	६	२२	प्रदोष१३ व्रतं, विद्यापतिस्मृतिदिवसः। षाण्मासिक रविव्रतारम्भः अत्र उशरी(कतरा) चन्दनेन सूर्यपूजनं, विवाहः-द्विरागमनं त्रयोदश्यां । पश्चिमां दिनायात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।२१ यावत्,शिववासः,अग्निवासः
२	७	२३	प्रदोष१४ व्रतं। श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं, श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी१४ व्रतं। भद्रा ४१।१२ उपरि, अमृतयोगः रा.११।११ उपरि
३	८	२४	सामाविसर्जनं, कार्त्तिकेयावतार, कार्त्तिकेयपूजनं, कार्तिकपूर्णिमा१५ स्नानदान-व्रतादौ, औतममन्वादिः, सर्वदेव-देव्युत्थापनं, भीष्मपञ्चक समाप्तिः। सोनपुरमेलारम्भः, काश्यां देवदीपावली। भद्रा ८।५३ यावत्, अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	मंगल	३।२७।३८।११	६।०९।१५।४६	४।०२।३५।०६	५।२१।२६।३६	११।११।४९।३६	४।०३।३४।०१	४३।३२
२	बुध	३।२८।०६।३७	६।०९।१७।१३	४।०२।४१।३३	५।२१।३२।००	११।११।४६।२७	४।०३।३०।५०	४३।३०
३	गुरु	३।२८।३५।०३	६।०९।१८।४०	४।०२।४७।५७	५।२१।३७।२१	११।११।४३।१८	४।०३।२७।३९	४३।२९
४	शुक्र	३।२९।०२।०२	६।१०।००।१७	४।०२।५२।५९	५।२१।५८।०१	११।११।४०।४०	४।०३।२४।२९	४३।२८
५	शनि	३।२९।२९।०१	६।१०।४१।५५	४।०२।५८।०१	५।२२।१८।४१	११।११।३८।०२	४।०३।२१।१८	४३।२७
६	रवि	३।२९।५६।००	६।११।२३।३३	४।०३।०३।०३	५।२२।३९।२१	११।११।३५।२१	४।०३।१८।०८	४३।२५
७	सोम	४।००।२२।५९	६।१२।०५।११	४।०३।०८।०५	५।२३।००।०१	११।११।३२।४६	४।०३।१४।५७	४३।२३
८	मंगल	४।००।४९।५९	६।१२।४६।४९	४।०३।१३।०७	५।२३।२०।४१	११।११।३०।०७	४।०३।११।४६	४३।२१
९	बुध	४।०१।१६।५९	६।१३।२८।२७	४।०३।१८।०९	५।२३।४१।२१	११।११।२७।२८	४।०३।०८।३५	४३।१९
१०	गुरु	४।०१।४३।५९	६।१४।१०।०५	४।०३।२३।१२	५।२४।०२।०२	११।११।२४।४९	४।०३।०५।२४	४३।१७
११	शुक्र	४।०२।०८।३१	६।१५।१६।४२	४।०३।२७।१०	५।२४।३४।२९	११।११।२२।५८	४।०३।०२।१४	४३।१६
१२	शनि	४।०२।३३।०३	६।१६।२३।१९	४।०३।३१।०८	५।२५।०६।५७	११।११।२१।०७	४।०२।५९।०४	४३।१५
१३	रवि	४।०२।५७।३५	६।१७।२९।५६	४।०३।३५।०६	५।२५।३९।२५	११।११।१९।१६	४।०२।५५।५३	४३।१४
१४	सोम	४।०३।२२।०७	६।१८।३६।३३	४।०३।३९।०४	५।२६।११।५३	११।११।१७।२५	४।०२।५२।४२	४३।१३
१५	मंगल	४।०३।४६।४०	६।१९।४३।१०	४।०३।४३।०२	५।२६।४४।२१	११।११।१५।३४	४।०२।४९।३१	४३।१२

ग्रहस्थितिः-मार्गी पूर्वोदितो मंगलः ति ८ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः बुधः ति १३ तः वक्री, मार्गी पूर्वोदितः गुरुः,
मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोः वातातपमेघच्छायादयस्तन्मध्यभागे वायुचाराच्छिन्नवृष्टयः

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	मंगल	१७।५१	१९।४७	२२।००	००।१८	२।३४	४।४९	७।०६	९।२३	११।२८	१३।१४	१४।४५	१६।१४
२	बुध	१७।४७	१९।४३	२१।५६	००।१४	२।३०	४।४५	७।०२	९।१९	११।२४	१३।१०	१४।४१	१६।१०
३	गुरु	१७।४३	१९।३९	२१।५२	००।१०	२।२६	४।४१	६।५८	९।१५	११।२०	१३।०६	१४।३७	१६।०६
४	शुक्र	१७।३९	१९।३५	२१।४८	००।०६	२।२२	४।३७	६।५४	९।११	११।१६	१३।०२	१४।३३	१६।०२
५	शनि	१७।३५	१९।३१	२१।४४	००।०२	२।१८	४।३३	६।५०	९।०७	११।१२	१२।५८	१४।२९	१५।५८
६	रवि	१७।३१	१९।२७	२१।४०	२३।५८	२।१४	४।२९	६।४६	९।०३	११।०८	१२।५४	१४।२५	१५।५४
७	सोम	१७।२७	१९।२३	२१।३६	२३।५४	२।१०	४।२५	६।४२	८।५९	११।०४	१२।५०	१४।२१	१५।५०
८	मंगल	१७।२२	१९।१८	२१।३१	२३।४९	२।०५	४।२०	६।३७	८।५४	१०।५९	१२।४५	१४।१६	१५।४५
९	बुध	१७।१८	१९।१४	२१।२७	२३।४५	२।०१	४।१६	६।३३	८।५०	१०।५५	१२।४१	१४।१२	१५।४१
१०	गुरु	१७।१४	१९।१०	२१।२३	२३।४१	१।५७	४।१२	६।२९	८।४६	१०।५१	१२।३७	१४।०८	१५।३७
११	शुक्र	१७।१०	१९।०६	२१।१९	२३।३७	१।५३	४।०८	६।२५	८।४२	१०।४७	१२।३३	१४।०४	१५।३३
१२	शनि	१७।०५	१९।०१	२१।१४	२३।३२	१।४८	४।०३	६।२०	८।३७	१०।४२	१२।२८	१३।५९	१५।२८
१३	रवि	१७।०१	१८।५७	२१।१०	२३।२८	१।४४	३।५९	६।१६	८।३३	१०।३८	१२।२४	१३।५५	१५।२४
१४	सोम	१६।५७	१८।५३	२१।०६	२३।२४	१।४०	३।५५	६।१२	८।२९	१०।३४	१२।२०	१३।५१	१५।२०
१५	मंगल	१६।५२	१८।४८	२१।०१	२३।१९	१।३५	३।५०	६।०७	८।२४	१०।२९	१२।१५	१३।४६	१५।१५

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मंगल	प्रा.७:५६-९:२० दि.१:२२-२:४२।	रा.७:०२-८:४२।
२	बुध	दि.९:२१-१०:४१ दि.१२:०१-१:२१।	रा.१२:०१-१:४१ रा.३:२१-५:००।
३	गुरु	दि.२:४०-५:२०।	रा.१२:००-१:४० रा.५:००-६:४१।
४	शुक्र	दि.९:२०-१२:००।	रा.८:४०-१०:२०।
५	शनि	प्र.६:४१-८:०१ दि.१:२१-२:४१ सं.४:००-५:१९।	सं.५:१९-७:०० रा.१:४१-३:२१ रा.५:०१-६:४२।
६	रवि	दि.१०:४१-१:२१।	रा.१०:२१-१२:०१ रा.१:४१-३:२१।
७	सोम	दि.८:०२-९:२२ दि.२:४०-३:५९।	रा.१०:२१-१२:०२ रा.३:२२-५:०२।
८	मंगल	दि.८:०२-९:२२ दि.१:२१-२:४०।	रा.६:५९-८:४०।
९	बुध	दि.९:२३-१०:४२ दि.१२:०१-१:२०।	रा.१२:०१-१:४२ रा.३:२३-५:०३।
१०	गुरु	दि.२:३९-५:१७।	रा.१२:०१-१:४२ रा.५:०३-६:४४।
११	शुक्र	दि.९:२२-१२:००।	रा.८:३८-१०:१९।
१२	शनि	प्र.६:४४-८:०३ दि.१:१९-२:३८ सं.३:५७-५:१६।	सं.५:१६-६:५७ रा.१:४१-३:२२ रा.५:०३-६:४४।
१३	रवि	दि.१०:४१-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०० रा.१:४१-३:२२।
१४	सोम	दि.८:०३-९:२२ दि.२:३८-३:५७।	रा.१०:१९-१२:०० रा.३:२२-५:०३।
१५	मंगल	दि.८:०४-९:२३ दि.१:२०-२:३९।	रा.६:५७-८:३९।

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल ति.२ बुध दि.११।१९ तः ति.४ शुक्र सं.४।१६ या
रेवती/ अश्विनी -ति.११ शुक्र प्रा.४।१ तः ति.१३ रवि रा.३।२१ यावत्।

विविधविषयाः-कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत्।

गोवर्द्धन-पूजन मन्त्रः-गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णवाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव।।

गोपूजनमन्त्रः-लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु।। अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः-भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभं। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।।

ज्येष्ठभ्रातरि सति-भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।।

एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्रः- ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्।।

३ गुरु वल्ली ८।४०।१४।५२
अयनांशाः २२।५४।४७

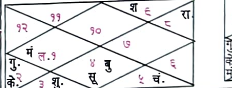

१० गुरु वल्ली ८।४०।१४।५६
अयनांशाः २२।५४।४८

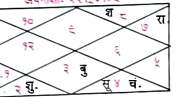

अग्रहायणकृष्णपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,दक्षिणगोलः, हेमन्त-ऋतुः, पूर्वे कालः, शुद्ध।
दिनांक २५ नवम्बर सः ८ दिसम्बर यावत् सन् २०२६ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	नै.	अं.	
१	बुध	३१।१८	सं.७।१५	रोहिणी	४२।४६	रा.१।५०	शिव	२१।१३	बालव ३।५६	वृष	अहोरात्र	७।०८।४७।१०	२६।२२	६।४४	५।१६	४	६	२५	धान्याव्रतारम्भः, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां रा.१।५० उपरि ततः उत्तरां विनायात्रा। अमृतयोगः सं.७।१५ यावत् ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः अहोरात्र।
२	गुरु	२५।३८	सं.४।५६	मृगशिरा	३८।४४	रा.१०।१३	सिद्ध	१३।०७	गर २५।३८	वृष १०।४२	दि.११।०१	७।०६।४८।०२	२६।३०	६।४४	५।१६	५	१०	२६	नवान्नपार्वणं, मुण्डनं, कर्णवेधः, गृहारम्भः, विवाहः-द्विरागमनं-वधूप्रवेशः मृगशिरायां रा.१०।१३ यावत्, दक्षिणां विनायात्रा रा.१०।१३ यावत्। भद्रा ५२।४१ उ., अमृतयोगः सं.४।५६ उ.
३	शुक्र	१९।४४	दि.२।३७	आर्द्रा	३४।४२	रा.८।३६	साध्य	०५।४९	भद्रा १९।४४	मिथुन	अहोरात्र	७।१०।४९।०३	२६।१९	६।४४	५।१६	६	११	२७	गजानन ४ व्रत, शुभयो गमानं ५२।०४, भद्रा १९।४४ यावत्, अमृतयोगः दि.२।३७ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।३६ उपरि।
४	शनि	१३।४८	दि.१२।१५	पुनर्वसु	३०।०२	सं.६।४४	शुक्ल	५०।०६	बालव १३।४८	मिथुन १६।१२	दि.१।१३	७।११।५०।०४	२६।१८	६।४४	५।१६	७	१२	२८	गृहारम्भः पञ्चम्यां दि.१२।१५ उपरि सूर्यास्तंयावत्। सिद्धियोगः - राज्यप्रदयोगः दि.१२।१५ यावत् ततः मृत्युयोगः।
५	रवि	०८।०२	दि.९।५७	पुष्य	२६।२५	सं.५।१९	ब्रह्म	४२।३२	तैतिल ८।०२	कर्क	अहोरात्र	७।१२।५१।०५	२६।१६	६।४५	५।१५	८	१३	२९	वीड़पंचमी, विषहरापूजन, मनसादेवीशयनं, नवान्नपार्वणं, द्विरागमनं पंञ्चम्यां दि.९।५७ यावत्। पश्चिमां विनायात्रा दि.९।५७ यावत्। अमृतयोगः दि.९।५७ यावत् ततः मृतयुयोगः।
६	सोम	०२।३९	प्रा.७।४८	आश्लेषा	२२।५५	दि.३।५५	ऐन्द्र	३५।२०	वर्णिज् २।३९	कर्क २२।५५	दि.३।५५	७।१३।५२।०६	२६।१४	६।४५	५।१५	९	१४	३०	सप्तमीतिथिमानं ५५।०६, विवाहः मघायां दि.३।५५ उपरि, भद्रा २।३९ तः २८।५४ यावत्, सिद्धियोगः प्रा.७।४८ यावत् ततः मृत्युयोगः
८	मंगल	५३।४५	रा.शे.४।१६	मघा	२०।०२	दि.२।४६	वैधृति	२८।४२	बालव २५।४६	सिंह	अहोरात्र	७।१४।५३।०७	२६।१२	६।४६	५।१४	१०	१५	१	दिसम्बर१२, कालभैरवाष्टमी ८, पूर्वयात्रा पूर्वाफाल्गुन्याम्। सिद्धियोगः प्रा.४।१६ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः
९	बुध	५०।३५	रा.३।००	पूर्वाफाल्गुनी	१८।०१	दि.१।५८	विष्कुम्भ	२२।४५	तैतिल २२।१०	सिंह ३२।४३	रा.७।५१	७।१५।५४।०९	२६।११	६।४६	५।१४	११	१६	२	दग्धतिथि दशमी रा.३।०० उपरि, वृश्चिके बुधः २४।००।
१०	गुरु	४८।३१	रा.२।१०	उत्तराफाल्गुनी	१६।५२	दि.१।३०	प्रीति	१७।३६	वर्णिज् १६।३३	कन्या	अहोरात्र	७।१६।५५।११	२६।१०	६।४६	५।१४	१२	१७	३	ज्येष्ठायां रविः२८।५ सं.६।०२। दग्धतिथि दशमी रा.२।१० यावत्। भद्रा १६।३५ तः ४१।३१ यावत्, सिद्धियोगः प्रा.४।१० उपरि
११	शुक्र	४७।४१	रा.१।५०	हस्त	१६।५३	दि.१।३१	आयुष्यमान	१३।१९	बव १८।०४	कन्या ४७।२७	रा.१।४५	७।१७।५६।२०	२६।०९	६।४६	५।१४	१३	१८	४	उत्पन्ना११ व्रतं सर्वेषां, विवाहः दिवारात्रौ, पूर्वदक्षिणयात्रा एकादश्यां रा.१।४६ यावत्। सिद्धियोगः रा.१।४६ यावत् ततः मृत्युयोगः।
१२	शनि	४८।०५	रा.२। ००	चित्रा	१८।०४	दि.१।५९	सौभाग्य	१०।००	कौलव १७।५१	तुला	अहोरात्र	७।१८।५७।३०	२६।०८	६।४६	५।१४	१४	१९	५	गोमूत्रेणपारणं, कार्त्तिकव्रताकाशदीपदानतुलसीव्रतोद्यापनानि। दक्षिणयात्रा
१३	रवि	४९।५३	रा.२।४४	स्वाती	२०।३२	दि.२।५९	शोभन	०७।४२	गर १८।५९	तुला	अहोरात्र	७।१९।५८।४०	२६।०६	६।४७	५।१३	१५	२०	६	प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः स्वात्यां दि.२।५९ यावत्। दक्षिणयात्रा दि.२।५९ यावत्। भद्रा ४९।५३ उपरि, सिद्धियोगः रा.२।४४ यावत्
१४	सोम	५२।४७	रा.३।५३	विशाखा	२४।१८	सं.४।३०	अतिगण्ड	०६।२६	भद्रा २१।२०	तुला ८।२०	दि.१०।०७	७।२०।५९।५०	२६।०४	६।४७	५।१३	१६	२१	७	प्रदोष १४ व्रतं, भद्रा २१।२० यावत्, अमृतयोगः रा.३।५३ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.४।३० उपरि
३०	मंगल	५६।५२	प्रा.५।३२	अनुराधा	२६।०७	सं.६।२६	सुकर्मा	०५।५९	चतुरघ्न २४।४९	वृश्चिक	अहोरात्र	७।२२।०१।००	२६।०२	६।४८	५।१२	१७	२२	८	मार्गीअमावस्या, स्नानदान श्राद्धादौ। भौमवत्ती अमावस्या। मृत्युयोगः प्रा.५।३२ उपरि, मार्गी पूर्वास्तः बुधः ३४।२४।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	बुध	४।०४।११।१३	६।२०।४९।४८	४।०३।४७।००	५।२७।१६।४९	११।११।१३।४२	४।०२।४६।२०	४३।११	१६।४८	१८।४४	२०।५७	२३।१५	१।३१	३।४६	६।०३	८।२०	१०।२५	१२।११	१३।४२	१५।११
२	गुरु	४।०४।३५।४६	६।२१।५६।२६	४।०३।५०।५८	५।२७।४९।१७	११।११।११।४९	४।०२।४३।०६	४३।१०	१६।४४	१८।४०	२०।५३	२३।११	१।२७	३।४२	५।५९	८।१६	१०।२१	१२।०७	१३।३८	१५।०७
३	शुक्र	४।०४।५८।२६	६।२३।२१।३०	४।०३।५३।३५	५।२८।३०।२७	११।११।१०।४६	४।०२।३९।५८	४३।०९	१६।३९	१८।३५	२०।४८	२३।०६	१।२२	३।३७	५।५४	८।११	१०।१६	१२।०२	१३।३३	१५।०२
४	शनि	४।०५।२१।१२	६।२४।४६।३४	४।०३।५६।१२	५।२९।११।३८	११।११।०९।४२	४।०२।३६।४८	४३।०९	१६।३५	१८।३१	२०।४४	२३।०२	१।१८	३।३३	५।५०	८।०७	१०।१२	११।५८	१३।२९	१४।५८
५	रवि	४।०५।४३।५५	६।२६।११।३८	४।०३।५८।४९	५।२९।५२।४९	११।११।०८।३८	४।०२।३३।३७	४३।०८	१६।३१	१८।२७	२०।४०	२२।५८	१।१४	३।२९	५।४६	८।०३	१०।०८	११।५४	१३।२५	१४।५४
६	सोम	४।०६।०६।३८	६।२७।३६।४२	४।०४।०१।२६	६।००।३४।००	११।११।०७।३४	४।०२।३०।२७	४३।०७	१६।२६	१८।२२	२०।३५	२२।५३	१।०९	३।२४	५।४१	७।५८	१०।०३	११।४९	१३।२०	१४।४९
८	मंगल	४।०६।२९।२२	६।२९।०१।५६	४।०४।०४।०३	६।०१।१५।११	११।११।०६।३०	४।०२।२७।१६	४३।०६	१६।२२	१८।१८	२०।३१	२२।४९	१।०५	३।२०	५।३७	७।५४	९।५९	११।४५	१३।१६	१४।४५
९	बुध	४।०६।५२।०६	७।००।२६।५०	४।०४।०६।४१	६।०१।५३।२२	११।११।०५।२६	४।०२।२४।०५	४३।०५	१६।१८	१८।१४	२०।२७	२२।४५	१।०१	३।१६	५।३३	७।५०	९।५५	११।४१	१३।१२	१४।४१
१०	गुरु	४।०७।१४।५१	७।०१।५१।५४	४।०४।०९।१९	६।०२।३७।३१	११।११।०४।२२	४।०२।२०।५४	४३।०४	१६।१३	१८।०९	२०।२२	२२।४०	००।५६	३।११	५।२८	७।४५	९।५०	११।३६	१३।०७	१४।३६
११	शुक्र	४।०७।३४।३१	७।०३।२७।१२	४।०४।१०।२९	६।०३।२६।१५	११।११।०४।१३	४।०२।१७।४४	४३।०४	१६।०९	१८।०५	२०।१८	२२।३६	००।५२	३।०७	५।२४	७।४१	९।४६	११।३२	१३।०३	१४।३२
१२	शनि	४।०७।५४।११	७।०५।०२।३०	४।०४।११।४०	६।०४।१४।५९	११।११।०४।०४	४।०२।१४।३३	४३।०४	१६।०५	१८।०१	२०।१४	२२।३२	००।४८	३।०३	५।२०	७।३७	९।४२	११।२८	१२।५९	१४।२८
१३	रवि	४।०८।१३।५१	७।०६।३७।४८	४।०४।१२।५१	६।०५।०३।४३	११।११।०३।५५	४।०२।११।२२	४३।०३	१६।०१	१७।५७	२०।१०	२२।२८	००।४४	२।५९	५।१६	७।३३	९।३८	११।२४	१२।५५	१४।२४
१४	सोम	४।०८।३३।३१	७।०८।१३।०६	४।०४।१४।०२	६।०५।५२।२७	११।११।०३।४५	४।०२।०८।११	४३।०२	१५।५६	१७।५२	२०।०५	२२।२३	००।३९	२।५४	५।११	७।२८	९।३३	११।१९	१२।५०	१४।१९
३०	मंगल	४।०८।५३।११	७।०९।४८।२५	४।०४।१५।१३	६।०६।४१।११	११।११।०३।३५	४।०२।०५।००	४३।०१	१५।५२	१७।४८	२०।०१	२२।१९	००।३५	२।५०	५।०७	७।२४	९।२९	११।१५	१२।४६	१४।१५

२ गुरु वल्ली ८।४०।१५।०६ अयनांशा: २२।५४।४६

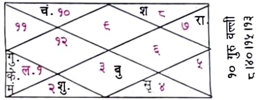

१० गुरु वल्ली ८।४०।१५।१३ अयनांशा: २२।५४।५०

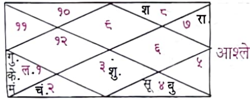

मूलविचारः-
आश्लेषा/मघा ति.५ रवि सं.५।१९ ति.८ मंगल दि.२।४६ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.३० मंगल सं.६।२६ तः..........।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा (घण्टा मिनट)	रात का अर्धप्रहरा (घण्टा मिनट)
१	बुध	दि.९:२३-१०:४२ दि.१२:०१-१:२०।	रा.१२:०१-१:४२ रा.३:२३-५:०४।
२	गुरु	दि.२:३८-५:१४।	रा.१२:०२-१:४३ रा.५:०५-६:४६।
३	शुक्र	दि.९:२४-१२:०२।	रा.८:३८-१०:२०।
४	शनि	प्र.६:४६-८:०५ दि.१:२०-२:३८ सं.३:५६-५:१४।	सं.५:१४-६:५६ रा.१:४३-३:२४ रा.५:०५-६:४६।
५	रवि	दि.१०:४३-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०१ रा.१:४३-३:२५।
६	सोम	दि.८:०६-९:२५ दि.२:३७-३:५५।	रा.१०:१९-१२:०१ रा.३:२५-५:०६।
८	मंगल	दि.८:०६-९:२५ दि.१:१९-२:३७।	रा.६:५५-८:३७।
९	बुध	दि.९:२४-१०:४२ दि.१२:००-१:१८।	रा.१२:००-१:४२ रा.३:२४-५:०६।
१०	गुरु	दि.२:३६-५:१२।	रा.१२:००-१:४२ रा.५:०६-६:४८।
११	शुक्र	दि.९:२४-१२:००।	रा.८:३६-१०:१८।
१२	शनि	प्र.६:४८-८:०६ दि.१:१८-२:३६ सं.३:५४-५:१२।	सं.५:१२-६:५४ रा.१:४२-३:२४ रा.५:०६-६:४८।
१३	रवि	दि.१०:४२-१:१८।	रा.१०:१८-१२:०० रा.१:४२-३:२४।
१४	सोम	दि.८:०६-९:२४ दि.२:३६-३:५४।	रा.१०:१८-१२:०० रा.५:०६-६:४८।
३०	मंगल	दि.८:०७-९:२५ दि.१:१९-२:३७।	रा.६:५४-८:३७।

विविधः—रविव्रत- आदौ वृश्चिकमेषान्ते रविवारो यदा भवेत्। तदा रविव्रतारम्भविसर्गौ शास्त्रसम्मतौ। शुक्लपक्षे व्रतं कुर्यात् सम्यग्देवस्य भास्वतः।। मार्गशीर्ष काल भैरवाष्टमी- सा च रात्रिव्यापिनी ग्राह्या । मार्गशीर्षसिताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ। उपोष्य जागरणं कुर्वन् सर्व पापैः प्रमुच्यते।। इतिकाशीखण्डाद्रात्रिव्रतत्वावगतेः। 'रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्त्तव्या सम्मुखीतिथिः'। इतिब्रह्मवैवर्तेउच्यते।

शनिस्तोत्र-पिप्पलाद उवाच -नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते।। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चराय नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरुदेवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।।

ब्राह्मणक उत्पत्ति

सृष्टिक प्रारम्भमे ब्रह्माक मुखसँ ब्राह्मणक प्रादुर्भाव भेल। ओहि समयक ब्राह्मणक एक रूप छल। तदन्तर देश-भेदसँ दू प्रकारक भेलाह। **प्रथम पंच गौड़, द्वितीय पंच द्रविड़। • पंच गौड़मे-** सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौर, उत्कुल आ मैथिल, ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ उत्तर रहैत छलाह एतदर्थ पंच गौड़ कहबैत छथि। **द्वितीय पंचमेः-** कर्णाट, तेलांग, महाराष्ट्र, द्रविड़, गुर्जर ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ दक्षिण रहने पंच द्राविड़ कहौलन्हि, ई दसो ब्राह्मण षट् कर्मक अधिकारी भेलाह। आओर ८४ चौरासी प्रकारक ब्राह्मण सम्पूर्ण भारत खण्डमें छथि। ओहो लोकनि षट्कर्मक अधिकारी छथि। हिनका लोकनिमे मूल ओ ग्राम नाहि छन्हि, केवल गोत्र मात्र छन्हि। ब्रह्माजी सृष्टि करबाक समय पहिने सरीचिकेँ उत्पन्न कएलन तदन्तर अत्रि, अंगिरा, पुलस्त, पुलहस्त, क्रतु, प्रचेता, बसिष्ठ, भृगु, नारद, दक्षिणनेत्र सँ अत्रि क, वामनेत्र सँ क्रतु, नासिका सँ वरूण, मुह सँ अंगिरा आ रूचिके, दक्षिणपर्श्वसँ दक्ष, बाम पार्श्वसँ भृगु, स्कन्धसँ मरीचि, जिह्वासँ वसिष्ठ आ ओष्टसँ प्रचेताकेँ उत्पन्न कए हिनका लोकनिकेँ सृष्टि-करक हेतु आदेश देलगेल। **ब्राह्मण्यां ब्राह्मनो होवमुत्पनो ब्राह्मणः स्मृतः।**अर्थात्- ब्राह्मणी द्वारा ब्राह्मणसँ उत्पन्न ब्राह्मण होइत छथि-**सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः।** सवर्णसँ सवर्ण स्त्रीमे सजातीय उत्पन्न होइत छथि-**तपःश्रुतञ्च योनिश्चेत्येतद् ब्राह्मणकारकम्।** तपःश्रुताभ्यां यो हीनो याति ब्राह्मण एव सः।। विप्रो वृक्षस्तस्य मूलञ्च सन्ध्या। वेदाः शाखा धर्म्मकर्माणि पत्रम्।। तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयम्। छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्।। न विप्रपादोदककर्दमानि न वेदशास्त्रप्रतिघोषितानि। स्वाहा, स्वधा स्वस्ति विवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि।।

अग्रहायणशुक्लपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,दक्षिणगोलः, हेमन्त-ऋतुः, पूर्वं कालः, शुद्ध/अशुद्धः।
दिनांक ६ दिसम्बरतः २४ दिसम्बर यावत् सन् २०२६ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	ने.	अं.	
१	बुध	६०।००	अहोरात्र	ज्येष्ठा	३४।४८	रा.०८।४३	धृति	०६।२४	किंगस्तुघ्न१६।१८	वृश्चिक३४।४८	दि.८।४३	७।२३।०२।१०	२६।०१	६।४८	५।१२	१८	२३	६	हरिशोव्रतं, रुद्रव्रतम्। विवाहः-द्विरागमनं मूले रा.८।४३ उपरि। गण्डान्त २८।४८ उपरि ४३।४८ यावत्, पूर्वयात्रा रा.८।४३ उपरि। अमृतयोगः अहोरात्र
१	गुरु	०१।४४	प्रा.७।३०	मूल	४१।०७	रा.११।१५	शूल	०७।२०	बव १।४४	धनु	अहोरात्र	७।२४।०३।२०	२६।००	६।४८	५।१२	१९	२४	१०	चन्द्रदर्शनं सौम्यशृगं सुभिक्षकरम्। विवाहः-द्विरागमनं मूले रा.११।१५ यावत्। पूर्वउत्तरयात्रा। शिववासः प्रा.७।३० उपरि, अग्निवासः
२	शुक्र	०७।०५	दि.६।३८	पूर्वाषाढा	४७।३६	रा.०१।५२	गण्ड	०८।३८	कौलव ७।०५	धनु	अहोरात्र	७।२५।०४।३६	२५।५६	६।४८	५।१२	२०	२५	११	विवाहः-द्विरागमनं उत्तराषाढ़ायां रा.१।५२ उपरि। पूर्वउत्तरयात्रा तृतीयायां दि.६।३८ उपरि। मृत्युयोगः दि.६।३८ यावत्, शिववास दि.६।३८ यावत्
३	शनि	१२।३०	दि.११।४८	उत्तराषाढा	५३।५७	रा.शे.४।२३	वृद्धि	०६।५७	गर १२।३०	धनु ४।१३	दि.८।२६	७।२६।०५।५२	२५।५८	६।४८	५।१२	२१	२६	१२	श्रीगणेश४ व्रतं। भद्रा ४५।०० उपरि, सिद्धियोगः- राज्यप्रदयोगः दि.११।४८ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।२३ उपरि, अग्निवासः
४	रवि	१७।३१	दि.१।४६	श्रवण	५६।३६	रा.शे.६।४०	ध्रुव	१०।५६	भद्रा १७।३१	मकर	अहोरात्र	७।२७।०७।०६	२५।५६	६।४६	५।११	२२	२७	१३	पञ्चक(भदवारम्भः) रा.शे.६।४० उपरि। मंगलवेधात् विवाहोनैव, द्विरागमनं पञ्चम्यां दि.१।४६ उपरि। पश्चिमां विनायात्रा दि.१।४६ उपरि। भद्रा १७।३१ यावत्, अमृतयोगः- शिववासः- अग्निवासः दि.१।४६ उपरि
५	सोम	२१।४६	दि.३।३३	धनिष्ठा	६०।००	अहोरात्र	व्याघात	११।२६	बालव २१।४६	मकर ३२।०३	रा.७।३८	७।२८।०८।२६	२५।५४	६।४६	५।११	२३	२८	१४	विवाहपञ्चमी,श्रीसीतारामविवाहोत्सवः जनकपुरे-सीतामढ्यां च श्रीसीतारामदर्शनं। विवाहः दिवारात्रौ द्विरागमनं वधूप्रवेश मुण्डनं, कर्णवेधः, गृहप्रवेशः पञ्चम्यां। शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगः दि.३।३३ यावत्।
६	मंगल	२५।००	सं.४।५०	धनिष्ठा	०४।२८	दि.०८।३७	हर्षण	११।१४	तैतिल २५।००	कुम्भ	अहोरात्र	७।२९।०९।४३	२५।५२	६।५०	५।१०	२४	२९	१५	मासान्तः, स्कन्दषष्ठी६, चम्पकषष्ठी व्रतं, वक्री गुरु ४५।३५। मृत्युयोगः सं.४।५० यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः सं.४।५० यावत्
७	बुध	२७।०८	सं.५।४१	शतभिषा	०८।१३	दि.१०।०७	वज्र	१०।०७	वर्णिज् २७।०८	कुम्भ ४६।०४	रा.१।१५	८।००।११।००	२५।५१	६।५०	५।१०	२५	१	१६	मूले धनुषि च रविः ३२।०८ रा.१०।०६ मु.३० सामासमकाकरं, षडशीतिसंक्रान्तिसंक्रान्तिःपुण्यकालो दि.१२।०० उपरि पुण्याहः अशुद्धारम्भः, खरमासारम्भः, ने.पौषमासारम्भः। ❖
८	गुरु	२७।५२	सं.५।५८	पूर्वाभाद्रपद	१०।४३	दि.११।०७	सिद्धि	०७।५६	बव २७।५२	मीन	अहोरात्र	८।०१।१२।१७	२५।५०	६।५०	५।१०	२६	२	१७	मासादिः, अमृतयोगः सं.५।५८ यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः-अग्निवासः सं.५।५८ उपरि। ❖भद्रा २७।०८ तः५७।३० यावत्, सिद्धियोगः सं.५।४१ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः सं.५।४१ यावत्
९	शुक्र	२७।१७	सं.५।४५	उत्तराभाद्रपद	११।५६	दि.११।३६	व्यतीपात	०४।५२	कौलव २७।१७	मीन	अहोरात्र	८।०२।१३।३८	२५।४६	६।५०	५।१०	२७	३	१८	महानन्दानवमी ९ व्रतं, देवीपूजनेन विष्णुलोकप्राप्तिः। अमृतयोगः सं.५।४५ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।३६ उपरि, शिववासः-अग्निवासः सं.५।५४ यावत्
१०	शनि	२५।३०	सं.५।०२	रेवती	११।५८	दि.११।३७	वरीयान्	००।४५	गर २५।३०	मीन ११।५८	दि.११।३७	८।०३।१४।५६	२५।४८	६।५०	५।१०	२८	४	१९	परिघयोगमानं ५३।५६, पूर्वां विनायात्रा एकादश्याम्। पञ्चक(भदवा)समाप्तिः दि.११।३७ उपरि। पञ्चक(भदवा)समाप्तिः दि.११।३७ उपरि। भद्रा ५४।०४ उपरि, मृत्युयोगः सं.५।२ ततः अमृतयोगः, अग्निवासः सं.५।०२ उपरि
११	रवि	२२।३६	दि.३।५४	अश्विनी	१०।५०	दि.११।१०	शिव	४६।५४	भद्रा २२।३६	मेष	अहोरात्र	८।०४।१६।२१	२५।४८	६।५०	५।१०	२९	५	२०	मोक्षदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। गीताजयन्ती। धनुषेबुधः ४०।२४,भद्रा २२।३६ यावत्, मृत्युयोगः दि.३।५४यावत्,सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।३७यावत्,शिववासःदि.३।५४उ
१२	सोम	१८।४६	दि.२।२२	भरणी	०८।५१	दि.१०।२२	सिद्ध	४३।२४	बालव १८।४६	मेष २३।०८	दि.४।०५	८।०५।१७।४३	२५।४८	६।५०	५।१०	३०	६	२१	गोमूत्रेणपारणं, मत्सद्वादशीव्रतं, धरणीव्रतं, प्रदोष १३ व्रतं, मृत्युयोगः दि.२।२२ यावत्, शिववासः, अग्निवासः
१३	मंगल	१४।०८	दि १२।२६	कृत्तिका	०६।०१	दि.०६।१४	साध्य	३६।१८	तैतिल १४।०८	वृष	अहोरात्र	८।०६।१९।०५	२५।४८	६।५०	५।१०	१	७	२२	प्रदोष १४ व्रतं, सिद्धियोगः दि.१२।२६ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, शिववासः दि.१२।२६ यावत्
१४	बुध	८।५३	दि.१०।२३	रोहिणी	०२।३१	दि.०७।५०	शुभ	२८।४७	वर्णिज् ८।५३	वृष ३१।३६	रा.७।३०	८।०७।२०।२७	२५।४८	६।५०	५।१०	२	८	२३	मृगशिरानक्षत्रमानं ५५।५५, व्रतायपूर्णिमा१५, भद्रा ८।५३ तः ३६।०३ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.७।५० यावत्, अग्निवासः, उत्तरां विनायात्रा मृगशिरायां।
१५	गुरु	३।१३	दि.८।०७	आर्द्रा	५४।२७	रा.०४।३७	शुक्ल	२०।५६	बव ३।१३	मिथुन	अहोरात्र	८।०८।२१।४६	२५।४८	६।५०	५।१०	३	९	२४	प्रतिपदातिथिमानं ५४।०८, मार्गी१५ स्नानदानादिः पूर्णिमा। हरिहरक्षेत्रस्नानं, हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं। दत्तात्रेयावतारः। शिववासः-अग्निवासः दि.८।०७ उपरि

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतुः राश्यादि	मिश्रमानं	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	बुध	४।०६।१२।५१	७।११।२३।४४	४।०४।१६।२४	६।०७।२६।५५	११।११।०३।२५	४।०२।०१।४६	४३।००	१५।४८	१७।४४	१९।५७	२२।१५	००।३१	२।४६	५।०३	७।२०	९।२५	११।११	१२।४२	१४।११
१	गुरु	४।०६।३२।३१	७।१२।५६।०३	४।०४।१७।३५	६।०८।१८।३६	११।११।०३।१५	४।०१।५८।३८	४२।५९	१५।४३	१७।३९	१९।५२	२२।१०	००।२६	२।४१	४।५८	७।१५	९।२०	११।०६	१२।३७	१४।०६
२	शुक्र	४।०६।४६।२५	७।१४।४०।४३	४।०४।१७।२६	६।०९।१२।०७	११।११।०३।४४	४।०१।५५।२८	४२।५९	१५।३९	१७।३५	१९।४८	२२।०६	००।२२	२।३७	४।५४	७।११	९।१६	११।०२	१२।३३	१४।०२
३	शनि	४।१०।०६।१६	७।१६।२२।२३	४।०४।१७।१६	६।१०।०५।३५	११।११।०४।१३	४।०१।५२।१७	४२।५९	१५।३५	१७।३१	१९।४४	२२।०२	००।१८	२।३३	४।५०	७।०७	९।१२	१०।५८	१२।२९	१३।५८
४	रवि	४।१०।२३।१३	७।१८।०४।०४	४।०४।१७।०६	६।१०।५६।०३	११।११।०४।४२	४।०१।४९।०६	४२।५८	१५।३१	१७।२७	१९।४०	२१।५८	००।१४	२।२९	४।४६	७।०३	९।०८	१०।५४	१२।२५	१३।५४
५	सोम	४।१०।४०।०७	७।१९।४५।४५	४।०४।१६।५६	६।११।५२।३२	११।११।०५।११	४।०१।४५।५६	४२।५७	१५।२७	१७।२३	१९।३६	२१।५४	००।१०	२।२५	४।४२	६।५९	९।०४	१०।५०	१२।२१	१३।५०
६	मंगल	४।१०।५७।०१	७।२१।२७।२६	४।०४।१६।४६	६।१२।४६।०१	११।११।०५।४१	४।०१।४२।४५	४२।५६	१५।२३	१७।१९	१९।३२	२१।५०	००।०६	२।२१	४।३८	६।५५	९।००	१०।४६	१२।१७	१३।४६
७	बुध	४।११।१३।५६	७।२३।०६।०७	४।०४।१६।३७	६।१३।३९।३०	११।११।०६।११	४।०१।३९।३४	४२।५५	१५।१९	१७।१५	१९।२८	२१।४६	००।०२	२।१७	४।३४	६।५१	८।५६	१०।४२	१२।१३	१३।४२
८	गुरु	४।११।३०।५१	७।२५।५०।४८	४।०४।१६।२८	६।१४।३२।५६	११।११।०६।४१	४।०१।३६।२४	४२।५४	१५।१५	१७।११	१९।२४	२१।४२	२३।५८	२।१३	४।३०	६।४७	८।५२	१०।३८	१२।०९	१३।३८
९	शुक्र	४।११।४४।०३	७।२६।३५।२४	४।०४।१४।५८	६।१५।३०।४०	११।११।०८।०५	४।०१।३३।१३	४२।५४	१५।१०	१७।०६	१९।१९	२१।३७	२३।५३	२।०८	४।२५	६।४२	८।४७	१०।३३	१२।०४	१३।३३
१०	शनि	४।११।५७।१५	७।२८।२०।००	४।०४।१३।२८	६।१६।२८।२१	११।११।०९।२६	४।०१।३०।०३	४२।५४	१५।०६	१७।०२	१९।१५	२१।३३	२३।४९	२।०४	४।२१	६।३८	८।४३	१०।२९	१२।००	१३।२९
११	रवि	४।१२।१०।२७	८।००।०४।३६	४।०४।११।५८	६।१७।२६।०२	११।११।१०।५३	४।०१।२६।५२	४२।५४	१५।०१	१६।५७	१९।१०	२१।२८	२३।४४	१।५९	४।१६	६।३३	८।३८	१०।२४	११।५५	१३।२४
१२	सोम	४।१२।२३।३९	८।०१।४९।१२	४।०४।१०।२८	६।१८।२३।४३	११।११।१२।१७	४।०१।२३।४१	४२।५४	१४।५७	१६।५३	१९।०६	२१।२४	२३।४०	१।५५	४।१२	६।२९	८।३४	१०।२०	११।५१	१३।२०
१३	मंगल	४।१२।३६।५१	८।०३।३३।४८	४।०४।०८।५८	६।१९।२१।२४	११।११।१३।४१	४।०१।२०।३०	४२।५४	१४।५२	१६।४८	१९।०१	२१।१९	२३।३५	१।५०	४।०७	६।२४	८।२९	१०।१५	११।४६	१३।१५
१४	बुध	४।१२।५०।०३	८।०५।१८।२५	४।०४।०७।२८	६।२०।१९।०६	११।११।१५।०६	४।०१।१७।१९	४२।५४	१४।४८	१६।४४	१८।५७	२१।१४	२३।३१	१।४६	४।०३	६।२०	८।२५	१०।११	११।४२	१३।११
१५	गुरु	४।१३।०३।१५	८।०७।०३।०२	४।०४।०५।५८	६।२१।१६।४८	११।११।१६।३१	४।०१।१४।०८	४२।५४	१४।४३	१६।३९	१८।५२	२१।१०	२३।२६	१।४१	३।५८	६।१५	८।२०	१०।०६	११।३७	१३।०६

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल ति.१ गुरु रा.११।१५ यावत्। रेवती/ अश्विनी - ति.९ शुक्र दि.११।३६ तः ति.११ रवि दि.११।१०

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	बुध	दि.६:२५-१०:४३ दि.१२:०१-१:१९।	रा.१२:०१-१:४३ रा.३:२५-५:०७।
१	गुरु	दि.२:३६-५:१०।	रा.१२:०२-१:४४ रा.५:०८-६:५०।
२	शुक्र	दि.६:२६-१२:०२।	रा.८:३६-१०:१९।
३	शनि	प्र.६:५०-८:०८ दि.१:१९-२:३६ सं.३:५३-५:१०।	सं.५:१०-६:५३ रा.१:१४-३:२६ रा.५:०८-५:५०।
४	रवि	दि.१०:४४-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.१:४४-३:२६।
५	सोम	दि.८:०८-९:२६ दि.२:३६-३:५३।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.३:२६-५:०८।
६	मंगल	दि.८:०८-९:२६ दि.१:१९-२:३६।	रा.६:५३-८:३६।
७	बुध	दि.९:२६-१०:४४ दि.१२:२-१:१९।	रा.१२:०२-१:४४ रा.३:२६-५:०८।
८	गुरु	दि.२:३६-५:१०।	रा.१२:०२-१:४४ रा.५:०८-६:५०।
९	शुक्र	दि.९:२६-१२:०२।	रा.८:३६-१०:१९।
१०	शनि	प्र.६:५०-८:०८ दि.१:१९-२:३६ सं.३:५३-५:१०।	सं.५:१०-६:५३ रा.१:४४-३:२६ रा.५:०८-६:५०।
११	रवि	दि.१०:४४-१:१९।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.१:४४-३:२६।
१२	सोम	दि.८:०८-९:२६ दि.२:३६-३:५३।	रा.१०:१९-१२:०२ रा.३:२६-५:०८।
१३	मंगल	दि.८:०८-९:२६ दि.१:१९-२:३६।	रा.६:५३-८:३६।
१४	बुध	दि.९:२६-१०:४४ दि.१२:०२-१:१९।	रा.१२:०२-१:४४ रा.३:२६-५:०८।
१५	गुरु	दि:२:३७-५:११।	रा.१२:०१-१:४३ रा.५:०७-६:४६

विविधविषयाः—रवौ त्याज्यवस्तूनि-क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्।। मार्गादिमासे रविव्रतभक्ष्याणि - पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्भिविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।। रात्रौ लग्नज्ञानम्- ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति।
चन्द्रोदयास्तसाधनम्- तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च।।

१५ गुरु वल्ली ८।४०।१५।३४
अयनांशाः २२।५४।५३

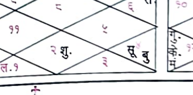

८ गुरु वल्ली ८।४०।१५।२७
अयनांशाः २२।५४।५२

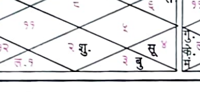

१ गुरु वल्ली ८।४०।१५।२०
अयनांशाः २२।५४।५१

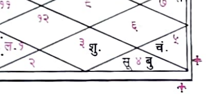

पौषकृष्णपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिणायनं,दक्षिणगोलः, हेमन्त-ऋतुः, पूर्वे कालः:, अशुद्ध।
दिनांक २५ दिसम्बरतः ७ जनवरी यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
२	शुक्र	५१।२७	रा.३।२५	पुनर्वसु	५०।१७	रा.२।५७	ब्रह्म	१३।०२	तैतिल२४।२४	मिथुन३८।२३	दि.१०।११	८।०६।२३।१४	२५।४८	६।५०	५।१०	४	१०	२५
३	शनि	४५।४३	रा.१।०७	पुष्य	४६।१७	रा.१।२१	ऐन्द्र	०५।११	वणिज्१८।३५	कर्क	अहोरात्र	८।१०।२४।३६	२५।४८	६।५०	५।१०	५	११	२६
४	रवि	४०।२५	रा.११।००	आश्लेषा	४२।४२	रा.११।५५	विष्कुम्भ	५०।०६	बव १३।०४	कर्क ४२।४२	रा.११।५५	८।११।२६।०४	२५।४६	६।५०	५।१०	६	१२	२७
५	सोम	३५।३८	रा.६।०५	मघा	३६।४०	रा.१०।४२	प्रीति	४३।१६	कौलव ८।०१	सिंह	अहोरात्र	८।१२।२७।२६	२५।५०	६।५०	५।१०	७	१३	२८
६	मंगल	३१।४२	रा.७।३१	पूर्वाफाल्गुनी	३७।३१	रा.६।५०	आयुष्मान	३७।०८	गर ३।४२	सिंह ५२।१०	रा.३।४२	८।१३।२८।५४	२५।५१	६।५०	५।१०	८	१४	२९
७	बुध	२८।४१	सं.६।१८	उत्तराफाल्गुनी	३६।१०	रा.६।१८	सौभाग्य	३१।४२	भद्रा ००।११	कन्या	अहोरात्र	८।१४।३०।१६	२५।५२	६।५०	५।१०	९	१५	३०
८	गुरु	२६।४३	सं.५।३०	हस्त	३५।५५	रा.६।११	शोभन	२७।०५	कौलव२६।४३	कन्या	अहोरात्र	८।१५।३१।४४	२५।५४	६।४९	५।११	१०	१६	३१
९	शुक्र	२६।००	सं.५।१३	चित्रा	३६।५१	रा.६।३३	अतिगण्ड	२३।२६	गर २६।००	कन्या ६।२३	दि.६।२२	८।१६।३३।०६	२५।५६	६।४९	५।११	११	१७	जन
१०	शनि	२६।३४	सं.५।२६	स्वाती	३९।०४	रा.१०।२६	सुकर्मा	२०।४८	भद्रा २६।३४	तुला	अहोरात्र	८।१७।३४।३४	२५।५८	६।४८	५।१२	१२	१८	२
११	रवि	२८।३०	सं.६।१२	विशाखा	४२।३४	रा.११।५०	धृति	१९।११	बालव२८।३०	तुला २६।४०	सं.५।२८	८।१८।३६।००	२६।००	६।४८	५।१२	१३	१९	३
१२	सोम	३१।३१	रा.७।२४	अनुराधा	४७।१०	रा.१।४०	शूल	१८।२६	कौलव००।००	वृश्चिक	अहोरात्र	८।१९।३७।२६	२६।०२	६।४८	५।१२	१४	२०	४
१३	मंगल	३५।४३	रा.९।०४	ज्येष्ठा	५२।४४	रा.३।५३	गण्ड	१८।३५	गर ३।३७	वृश्चिक५२।४४	रा.३।५३	८।२०।३८।५२	२६।०४	६।४७	५।१३	१५	२१	५
१४	बुध	४०।३९	रा.११।०३	मूल	५८।५८	रा.शे.६।२२	वृद्धि	१९।२१	भद्रा ८।११	धनु	अहोरात्र	८।२१।४०।१८	२६।०५	६।४७	५।१३	१६	२२	६
३०	गुरु	४६।०३	रा.१।१२	पूर्वाषाढा	६०।००	अहोरात्र	ध्रुव	२०।२३	चतुरघ्न१३।२१	धनु	अहोरात्र	८।२२।४१।४४	२६।०६	६।४७	५।१३	१७	२३	७

पौषे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदम्। दग्धतिथि द्वितीया रा.३।२५ यावत्। मृत्युयोगः रा.३।२५ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.२।५७ यावत्, अग्निवासः
वैधृतियोगमानं ५२।१६, पूर्वां विनायात्रा पुष्ये रा.३।२१ यावत्। भद्रा १८।३५ तः ४५।४३ यावत्, सिद्धियोगः- राज्यप्रदयोगः रा.१।०७ उपरि
लम्बोदर ४ व्रत, पूर्व-उत्तरयात्रा पञ्चम्यां, अमृतयोग रा.११।०० उपरि, शिववासः, गण्डान्त ३१।४४ उपरि ४६।४४ यावत्।
उत्तरयात्रा, अमृतयोगः रा.६।०५ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः
पूर्वाषाढ़ायां रविः ३४।१६ रा.८।३२। पूर्वयात्रा सप्तम्यां, भद्रा ३१।४२ उपरि, मृत्युयोगः रा.७।३१ यावत् ततः अमृतयोगः
भद्रा ००।११ यावत्, सिद्धियोगः सं.६।१८ यावत् ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.६।१८ उपरि, अग्निवासः सं.६।१८ यावत्।
अपूपाष्टमी, अन्वष्टकानवमी। पूर्वयात्रा अष्टम्यां, अमृतयोगः सं.५।३० यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः सं.५।३० यावत्
जनवरी १ खीष्ट्रीयनववर्षारम्भः २०२७। अन्वष्टकाश्राद्ध। दक्षिणयात्रा दशम्यां, भद्रा ५६।१७ उपरि, अमृतयोगः सं.५।१३ यावत्, अग्निवासः सं.५।१३ यावत्
वृश्चिके शुक्रः १६।१९, दक्षिण-पश्चिमयात्रा एकादश्यां, भद्रा २६।३४ यावत्, मृत्युयोगः सं.५।२६यावत् ततः अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।२६ यावत्, शिववासः सं.५।२६उपरि
सफलाएकादशी ११ सर्वेषाम्। मृत्युयोगः सं.६।१२ यावत्, शिववासः, अग्निवासः
गोमयेन पारणं, पश्चिम-उत्तरयात्रा त्रयोदश्यां,मृत्युयोगः रा.७।२४ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१।४० यावत्, शिववासः
प्रदोष१३ व्रतं, दशतारकारम्भ रा.३।५३ उपरि। गण्डान्त ४६।४४ उपरि, भद्रा ३३।४३ उपरि, सिद्धियोगः रा.९।०४ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, अग्निवासः
प्रदोष१४ व्रतं, भद्रा ८।११ यावत्, गण्डान्त १।४४ यावत्।
पौषमासीय अमावस्या स्नानदानादिः, शिववासः, अग्निवासः, मकरे बुधः ००।०१।

सप्तम्यां मेघदर्शने सत्यार्द्रायां श्रावण्याञ्च सुवृष्टिः।
शकुनं- पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्मिन्तिथौ तोयधरो हि दृश्यः।
तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन		भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
२	शुक्र	४।१३।१२।२०	८।०८।४७।५७	४।०४।०३।०३	६।२२।१७।३५	११।११।१८।४२	४।०१।१०।५८	४२।५४
३	शनि	४।१३।२१।२६	८।१०।३२।५२	४।०४।००।०७	६।२३।१८।२३	११।११।२०।५३	४।०१।०७।४७	४२।५४
४	रवि	४।१३।३०।३२	८।१२।१७।४८	४।०३।५७।११	६।२४।१९।०९	११।११।२३।०५	४।०१।०४।३६	४२।५५
५	सोम	४।१३।३९।३८	८।१४।०२।४४	४।०३।५४।१५	६।२५।१९।५६	११।११।२५।१७	४।०१।०१।२६	४२।५६
६	मंगल	४।१३।४८।४४	८।१५।४७।४०	४।०३।५१।१९	६।२६।२०।४३	११।११।२७।२९	४।००।५८।१५	४२।५७
७	बुध	३।१३।५७।५०	८।१७।३२।३६	४।०३।४८।२३	६।२७।२१।३०	११।११।२९।४१	४।००।५५।०४	४२।५८
८	गुरु	४।१४।०६।५६	८।१९।१७।३२	४।०३।४५।२७	६।२८।२२।१८	११।११।३१।५३	४।००।५१।५४	४२।५९
९	शुक्र	४।१४।११।१२	८।२०।५९।४७	४।०३।४१।११	६।२९।२५।४६	११।११।३४।४७	४।००।४८।४३	४२।५९
१०	शनि	४।१४।१५।२८	८।२२।४२।०२	४।०३।३६।५५	७।००।२९।१४	११।११।३७।४२	४।००।४५।३३	४२।५९
११	रवि	४।१४।१९।४४	८।२४।२४।१७	४।०३।३२।३९	७।०१।३२।४२	११।११।४०।३७	४।००।४२।२२	४३।००
१२	सोम	४।१४।२४।०१	८।२६।०६।३२	४।०३।२८।२३	७।०२।३६।१०	११।११।४३।३२	४।००।३९।११	४३।०१
१३	मंगल	४।१४।२८।१८	८।२७।४८।४७	४।०३।२४।०६	७।०३।३९।३८	११।११।४६।२७	४।००।३६।०१	४३।०२
१४	बुध	४।१४।३२।३५	८।२९।३१।०३	४।०३।१९।४९	७।०४।४३।०७	११।११।४९।२२	४।००।३२।५०	४३।०३
३०	गुरु	४।१४।३६।५२	९।०१।१३।१९	४।०३।१५।३२	७।०५।४६।३६	११।११।५२।१७	४।००।२९।३९	४३।०४

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन		मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
२	शुक्र	१४।३९	१६।३५	१८।४८	२१।०६	२३।२२	१।३७	३।५४	६।११	८।१६	१०।०२	११।३३	१३।०२
३	शनि	१४।३५	१६।३१	१८।४४	२१।०२	२३।१८	१।३३	३।५०	६।०७	८।१२	९।५८	११।२९	१२।५८
४	रवि	१४।३०	१६।२६	१८।३९	२०।५७	२३।१३	१।२८	३।४५	६।०२	८।०७	९।५३	११।२४	१२।५३
५	सोम	१४।२६	१६।२२	१८।३५	२०।५३	२३।०९	१।२४	३।४१	५।५८	८।०३	९।४९	११।२०	१२।४९
६	मंगल	१४।२१	१६।१७	१८।३०	२०।४८	२३।०४	१।१९	३।३६	५।५३	७।५८	९।४४	११।१५	१२।४४
७	बुध	१४।१७	१६।१३	१८।२६	२०।४४	२३।००	१।१५	३।३२	५।४९	७।५४	९।४०	११।११	१२।४०
८	गुरु	१४।१२	१६।०८	१८।२१	२०।३९	२२।५५	१।१०	३।२७	५।४४	७।४९	९।३५	११।०६	१२।३५
९	शुक्र	१४।०८	१६।०४	१८।१७	२०।३५	२२।५१	१।०६	३।२३	५।४०	७।४५	९।३१	११।०२	१२।३१
१०	शनि	१४।०४	१६।००	१८।१३	२०।३१	२२।४७	१।०२	३।१९	५।३६	७।४१	९।२७	१०।५८	१२।२७
११	रवि	१३।५९	१५।५५	१८।०८	२०।२६	२२।४२	००।५७	३।१४	५।३१	७।३६	९।२२	१०।५३	१२।२२
१२	सोम	१३।५५	१५।५१	१८।०४	२०।२२	२२।३८	००।५३	३।१०	५।२७	७।३२	९।१८	१०।४९	१२।१८
१३	मंगल	१३।५०	१५।४६	१७।५९	२०।१७	२२।३३	००।४८	३।०५	५।२२	७।२७	९।१३	१०।४४	१२।१३
१४	बुध	१३।४६	१५।४२	१७।५५	२०।१३	२२।२९	००।४४	३।०१	५।१८	७।२३	९।०९	१०।४०	१२।०९
३०	गुरु	१३।४१	१५।३७	१७।५०	२०।०८	२२।२४	००।३९	२।५६	५।१३	७।१८	९।०४	१०।३५	१२।०४

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.३ शनि रा.१।२१ तः ति.५ सोम रा.१०।४२ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१२ सोम रा.१।४० ति.१४ बुध रा.शे.६।२२ यावत्

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
२	शुक्र	दि.९:२५-१२:०१।	रा.८:३५-१०:१७
३	शनि	प्र.६:४९-८:०७ दि.११९-२:३७ दि.३:५४-५:११।	सं.५।१०-६।५२ रा.१:४२-३:२५ रा.५:७-६:५०
४	रवि	दि.१०:४३-१:१९।	रा.१०:१७-१२, रा.१:४२-३:२५
५	सोम	दि.८:०६-९:२४ दि.२:३६-३:५४।	रा.१०:१७-१२, रा.३:२४-५:०६
६	मंगल	दि.८:०६-९:२४ दि.१:१८-२:३६।	रा.६:५३-८:३५,
७	बुध	दि.९:२४-१०:४२ दि.१२:००-१:१८।	रा.१२:००-१:४२, रा.३:२४-५:०६
८	गुरु	दि.२:३७-५:१३।	रा.१२:००-१:४२ रा.५:६-६:४९
९	शुक्र	दि.९:२५-१२:०१।	रा.८:३६ - १०:१८
१०	शनि	प्र.६:४७-८:०६ दि.११९-२:३७ सं.३:५५-५:१३।	सं.५।१२-६।५४ रा.१:४२-३:२४ रा.५:६-६:४७
११	रवि	दि.१०:४३-१:१९।	रा.१०:१८-१२, रा.१:४२-३:२४
१२	सोम	दि.८:०५-९:२४ दि.२:३८-३:५६।	रा.१०:१८-१२, रा.३:२३-५:०५
१३	मंगल	दि.८:०५-९:२४ दि.१:२०-२:३८।	रा.६:५४-८:३६,
१४	बुध	दि.९:२४-१०:४३ दि.१२:०२-१:२०।	रा.१२:००-१:४१, रा.३:२७-५:०५
३०	गुरु	दि.२:३९-५:१५।	रा.१२:००-१:४१ रा.५:५-६:४६

ग्रहस्थितिः- मार्गी पश्चिमास्तो मंगलः, मार्गी पूर्वोदितः बुध वक्री पूर्वोदितः गुरुः मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः ति.४ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्- पक्षादिभागे वातमेघचारादयस्तदन्तभागे वाताच्छिन्नवृष्टिशीतादयः।

शकुनम्-पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यांतिथौ तोयधरो हि दृश्यः। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिःप्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।
दशतारकविचारः-पौषेमूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्।
गर्भपुष्टिविचारः-वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टेगर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति।
गोचरशन्यादिविचारः- द्विजन्मनि पंचम- सप्त- मगाश्चतुराष्टक द्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्य-विनाशकरा रविराहुशनैश्चर भूमिसुताः।
कौशिकिस्नानमन्त्रः- गाधिराजसुते देवि विश्वामित्र मुने श्वसः। ऋचिकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।

८ गुरु वल्ली ८।४०।१५।४१
अयनांशाः २२।५४।५४

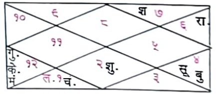

३० गुरु वल्ली ८।४०।१५।४८
अयनांशाः २२।५४।५५

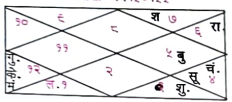

पौषशुक्लपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, दक्षिण/उत्तरायन,दक्षिणगोलः, हमन्त/शिशिर-ऋतुः, पूर्व कालः, अशुद्ध/शुद्धः।
दिनांक ८-२२ जनवरी यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि द.प.	समा.कालः घं.मि.	योगाः	योगः समा.कालः द.प.	करणानि	द.प.	चन्द्रराशयः राशिः द.प.	समाप्तिकालः घ.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सूर्योदयः घं.मि.	सूर्यास्तः घं.मि.	दिनाकाः रा.	ने.	अं.
१	शुक्र	५१।२८	रा.३।२२	पूर्वाषाढा	५।३०	दि.८।५६	व्याघात	२१।५४	किंगस्तुघ्न	१८।४५	धनु २२।०४	दि.३।३६	८।२३।४३।०७	२६।०७	६।४७	५।१३	१८	२४	८
२	शनि	५६।२७	रा.शे५।२१	उत्तराषाढा	११।५७	दि.११।३३	हर्षण	२३।०५	बालव	२३।५७	मकर	अहोरात्र	८।२४।४४।३०	२६।०८	६।४६	५।१४	१९	२५	९
३	रवि	६०।००	अहोरात्र	श्रवण	१७।५१	दि.१।५४	वज्र	२३।४७	तैतिल	२८।३४	मकर ५०।२३	रा.२।५५	८।२५।४५।५३	२६।१०	६।४६	५।१४	२०	२६	१०
३	सोम	००।४१	दि.७।०२	धनिष्ठा	२२।५६	दि.३।५६	सिद्धि	२३।५०	गर	००।४१	कुम्भ	अहोरात्र	८।२६।४७।१६	२६।१२	६।४६	५।१४	२१	२७	११
४	मंगल	०३।४७	दि.८।१६	शतभिषा	२६।५४	सं.५।३१	व्यतीपात	२२।५९	भद्रा	३।४७	कुम्भ	अहोरात्र	८।२७।४८।४०	२६।१४	६।४५	५।१५	२२	२८	१२
५	बुध	०५।४८	दि.९।०४	पूर्वाभाद्रपद	२९।४४	रा.६।३९	वरीयान्	२१।१५	बालव	५।४८	कुम्भ १४।००	दि.१२।२१	८।२८।५०।०४	२६।१५	६।४५	५।१५	२३	२९	१३
६	गुरु	६।२७	दि.९।२०	उत्तराभाद्रपद	३१।१७	रा.७।१६	परिघ	१८।३०	तैतिल	६।२७	मीन	अहोरात्र	८।२९।५१।२८	२६।१६	६।४५	५।१५	२४	३०	१४
७	शुक्र	५।४८	दि.९।०५	रेवती	३१।३६	रा.७।२२	शिव	१४।४४	वर्णिज्	५।४८	मीन ३१।३६	रा.७।२२	९।००।५२।४७	२६।१७	६।४५	५।१५	२५	१	१५
८	शनि	०३।५५	दि.८।१८	अश्विनी	३०।४६	रा.७।२	सिद्ध	१०।०२	बव	३।५५	मेष	अहोरात्र	९।०१।५४।०६	२६।१८	६।४४	५।१६	२६	२	१६
९	रवि	००।५८	दि.७।०७	भरणी	२८।५७	सं.६।१८	साध्य	०४।३०	कौलव	००।५८	मेष ४३।१७	रा.२।०३	९।०२।५५।२५	२६।२०	६।४४	५।१६	२७	३	१७
११	सोम	५२।२३	दि.३।४१	कृत्तिका	२६।१७	सं.५।१५	शुक्ल	५१।२२	वर्णिज्	२४।४४	वृष	अहोरात्र	९।०३।५६।४५	२६।२२	६।४४	५।१६	२८	४	१८
१२	मंगल	४७।०६	दि.१।३३	रोहिणी	२२।५७	दि.३।५४	ब्रह्म	४३।५९	बव	१९।४४	वृष ५०।४९	रा.३।०३	९।०४।५८।०५	२६।२४	६।४३	५।१७	२९	५	१९
१३	बुध	४१।२६	रा.११।१७	मृगशिरा	१९।०८	दि.२।२२	ऐन्द्र	३६।१८	कौलव	१४।१६	मिथुन	अहोरात्र	९।०५।५९।२५	२६।२६	६।४३	५।१७	३०	६	२०
१४	गुरु	३५।३३	रा.८।५५	आर्द्रा	१५।०४	दि.१२।४४	वैधृति	२८।२७	गर.	८।२९	मिथुन ५६।५५	रा.शे५।२८	९।०७।००।४५	२६।२८	६।४२	५।१८	१	७	२१
१५	शुक्र	२९।४०	रा.६।३४	पुनर्वसु	१०।५२	दि.११।०३	विष्कुम्भ	२०।३३	भद्रा	२।३६	कर्क	अहोरात्र	९।०८।०१।५८	२६।३०	६।४२	५।१८	२	८	२२

८ दग्धतिथि द्वितीया रा.३।२२ उपरि। पूर्व-उत्तरयात्रा प्रतिपदायां रा.३ ।२२ यावत्। पश्चिमोदितः बुधः ५१।३४, सिद्धियोगः रा.३।।२२ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः
९ चन्द्रदर्शनं सौम्यश्रृगं सुभिक्षकरम्। दग्धतिथि द्वितीया रा.शे ५।२१ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।३३ उपरि, शिववासः, अग्निवासः
१० पञ्चारम्भः(भदवा) दि.१।५४ उपरि। पश्चिमां विनायात्रा श्रवणे दि.१।५४ यावत् ततः पूर्वयात्रा रा.२।५५ यावत् ततः पश्चियात्रा। सिद्धियोगः अहोरात्र
११ श्रीगणेश४ व्रतं, उत्तराषाढ़ायां रविः ३५।५८ रा.६।०६। पश्चिमयात्रा तृतीयायां, भद्रा ३२।१४ उपरि, अग्निवासः दि.७।०२ उपरि
१२ राष्ट्रीययुवादिवसः, भद्रा ३।४७ यावत्, राज्यप्रदयोगः दि.८।१६ यावत्, अग्निवासः दि.८।१६ यावत् ततः शिववासः
१३ अमृतयोगः दि.६।०४ उपरि, शिववासः, अग्निवासः दि.६।०४ उपरि
१४ मकरे रविः ५१।२८ रा.३।२०, मु.३० समासमताकरम्। मासान्तः। सर्वार्थसिद्धियोगः रा.७।१६ उपरि, शिववासः- अग्निवासः दि.६।२० उपरि
१५ गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती। सौम्यायनं संक्रान्तिः पुण्यकालोः दि.१२।०० यावत् पुण्याहः तिलसंक्रान्तिः, माघमासारम्भः, प्रयागेकल्पवासारम्भः, शुद्धारम्भः, उत्तरायणरम्भः, शिशिरऋतुः, ❖
१६ मासादिः। सिद्धियोगः दि.८।१८ उपरि, अग्निवासः दि.८।१८ यावत् ततः शिववासः। ♍सर्वार्थसिद्धियोगः सं.५।१५ उपरि, शिववासः- अग्निवासः दि.३।४१ उपरि।
१७ दशमीतिथिमानं ५६।०८ रा.शे.५।११। **शुभयोगमानं५३।४६कर्मा१०**, विश्वकर्मार्चा, दग्धतिथि दशमी दि.७।०७ तःरा.शे.५।११यावत्। अमृतयोगः दि.७।०७ उपरि, शिववासः दि.७।०७ यावत्, अग्निवासः
१८ पुत्रदाएकादशी११ व्रतं स्मार्त्तानां,धर्मसावर्णिमन्वादिः, विवाहः-गृहप्रवेशः रोहिण्यां सं.५।१५ उपरि। भद्रा २४।४४ तः २२।०३ यावत्, सिद्धियोगः दि.३।४१ यावत् ततः मृत्युयोगः, ♍
१९ वैष्णवानां एकादशीव्रतं, नारायण १२, गोमयेनपारणं। पूर्व-दक्षिणयात्रा रोहिण्यां दि.३।५४ उपरि ततः उत्तरां विनायात्रा। अमृतयोगः दि.१।३३ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः दि.१।३३ यावत्
२० **प्रदोष१३ व्रतं, मुण्डनं-कर्णविधः-देवादिप्रतिष्ठा-गृहप्रवेशः मृगशिरायां**, मृत्युयोगः रा.११।१७ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।२२ यावत्, शिववासः,
२१ **प्रदोष १४ व्रतं**, भद्रा ३५।३३ उपरि, मृत्युयोगः रा.८।५५ यावत् ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।४४ उपरि, अग्निवासः।
२२ पौषीपूर्णिमा१५,स्नानदान-व्रतादौ,शाकम्भरीजयन्ती, कौशिकीस्नानं, तनमन्त्रश्च- गाधिराजसुते देवि विश्वमित्रमुनेःश्वसः ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि। **देवादिप्रतिष्ठा गृहारम्भः,**←

❖ ने.माघंश्रमासारम्भः, खरमाससमाप्तिः। दशतारकान्त, पञ्चक(भदवा) रा.७।२२ यावत्। भद्रा ५।४८ तः ३४।५१ यावत्, मृत्युयोगः दि.६।५ या., सर्वार्थसिद्धियोगः, अग्निवासः दि.६।५ उपरि
← तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विनायात्रा। भद्रा २।३६ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।०३ यावत्, सिद्धियोगः रा.६।३४ उपरि

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	वक्रीभौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	शुक्र	४।१४।३६।२१व	६।०२।४६।३४	४।०३।१०।१२	७।०६।५२।१२	११।११।५५।५५	४।००।२६।२८	४३।०४
२	शनि	४।१४।३५।५०	६।०४।२५।४६	४।०३।०४।५२	७।०७।५७।३८	११।११।५६।३४	४।००।२३।१७	४३।०४
३	रवि	४।१४।३५।१६	६।०६।०२।०४	४।०२।५६।३२	७।०६।०३।२५	११।१२।०३।१३	४।००।२०।०७	४३।०५
३	सोम	४।१४।३४।४८	६।०७।३८।१६	४।०२।५४।१२	७।१०।०६।०२	११।१२।०६।५२	४।००।१६।५६	४३।०६
४	मंगल	४।१४।३४।१६	६।०९।१४।३४	४।०२।४८।५२	७।११।१४।३६	११।१२।१०।३१	४।००।१३।४५	४३।०७
५	बुध	४।१४।३३।४४	६।१०।५०।४६	४।०२।४३।३१	७।१२।२०।१६	११।१२।१४।१०	४।००।१०।३४	४३।०८
६	गुरु	४।१४।३३।१२	६।१२।२७।०५	४।०२।३८।१०	७।१३।२५।५३	११।१२।१७।४६	४।००।०७।२३	४३।०९
७	शुक्र	४।१४।२६।५८	६।१३।५२।३६	४।०२।३१।४७	७।१४।३३।०४	११।१२।२२।१४	४।००।०४।१२	४३।०९
८	शनि	४।१४।२०।४४	६।१५।१८।०७	४।०२।२५।२४	७।१५।४०।१५	११।१२।२६।३६	४।००।०१।०२	४३।०९
९	रवि	४।१४।१४।३०	६।१६।४३।३८	४।०२।१९।०१	७।१६।४७।२६	११।१२।३१।०४	३।२९।५७।५१	४३।१०
११	सोम	४।१४।०८।१६	६।१८।०९।१०	४।०२।१२।३८	७।१७।५४।३७	११।१२।३५।२६	३।२९।५४।४०	४३।११
१२	मंगल	४।१४।०२।०२	६।१९।३४।४२	४।०२।०६।१५	७।१९।०१।४८	११।१२।३९।५५	३।२९।५१।२९	४३।१२
१३	बुध	४।१३।५५।४७	६।२१।००।१४	४।०१।५९।५२	७।२०।०८।५९	११।१२।४४।२१	३।२९।४८।१८	४३।१३
१४	गुरु	४।१३।४९।३२	६।२२।२५।४६	४।०१।५३।२८	७।२१।१६।१०	११।१२।४८।४७	३।२९।४५।०७	४३।१४
१५	शुक्र	४।१३।३८।०५	६।२३।३४।४४	४।०१।४६।१८	७।२२।२४।२३	११।१२।५३।३०	३।२९।४१।५७	४३।१५

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	शुक्र	१३।३७	१५।३३	१७।४६	२०।०४	२२।२०	००।३५	२।५२	५।०९	७।१४	९।००	१०।३१	१२।००
२	शनि	१३।३२	१५।२८	१७।४१	१९।५९	२२।१५	००।३०	२।४७	५।०४	७।०९	८।५५	१०।२६	११।५५
३	रवि	१३।२८	१५।२४	१७।३७	१९।५५	२२।११	००।२६	२।४३	५।००	७।०५	८।५१	१०।२२	११।५१
३	सोम	१३।२३	१५।१९	१७।३२	१९।५०	२२।०६	००।२१	२।३८	४।५५	७।००	८।४६	१०।१७	११।४६
४	मंगल	१३।१९	१५।१५	१७।२८	१९।४६	२२।०२	००।१७	२।३४	४।५१	६।५६	८।४२	१०।१३	११।४२
५	बुध	१३।१५	१५।११	१७।२४	१९।४२	२१।५८	००।१३	२।३०	४।४७	६।५२	८।३८	१०।०९	११।३८
६	गुरु	१३।१०	१५।०६	१७।१९	१९।३७	२१।५३	००।०८	२।२५	४।४२	६।४७	८।३३	१०।०४	११।३३
७	शुक्र	१३।०६	१५।०२	१७।१५	१९।३३	२१।४९	००।०४	२।२१	४।३८	६।४३	८।२९	१०।००	११।२९
८	शनि	१३।०२	१४।५८	१७।११	१९।२९	२१।४५	००।००	२।१७	४।३४	६।३९	८।२५	९।५६	११।२५
९	रवि	१२।५७	१४।५३	१७।०६	१९।२४	२१।४०	२३।५५	२।१२	४।२९	६।३४	८।२०	९।५१	११।२०
११	सोम	१२।५३	१४।४९	१७।०२	१९।२०	२१।३६	२३।५१	२।०८	४।२५	६।३०	८।१६	९।४७	११।१६
१२	मंगल	१२।४९	१४।४५	१६।५८	१९।१६	२१।३२	२३।४७	२।०४	४।२१	६।२६	८।१२	९।४३	११।१२
१३	बुध	१२।४५	१४।४१	१६।५४	१९।१२	२१।२८	२३।४३	२।००	४।१७	६।२२	८।०८	९।३९	११।०८
१४	गुरु	१२।४१	१४।३७	१६।५०	१९।०८	२१।२४	२३।३९	१।५६	४।१३	६।१८	८।०४	९।३५	११।०४
१५	शुक्र	१२।३६	१४।३२	१६।४५	१९।०३	२१।१९	२३।३४	१।५१	४।०८	६।१३	७।५९	९।३०	१०।५९

मूलविचारः-रेवती/अश्विनी ति.६. गुरु रा.७।१६ तः ति.८ शनि रा.७।०२ यावत्।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शुक्र	दि.९:२३–१२:०१।	रा.८:३६ - १०:१८
२	शनि	प्र.६:४५-८:०४ दि.१:२०-२:३९ दि.३:५७-५:१५।	सं.५:१५-६:५७ रा.१:४२-३:२३ रा.५:०४-६:४५।
३	रवि	दि.१०:४२-१२:१।	रा.१०:२०-१२:०१ रा.१:४२-३:२३।
३	सोम	दि.८:०३-९:२२ दि.२:३८-३:५७।	रा.१०:१९-१२:०० रा.३:२२-५:०३।
४	मंगल	दि.८:०३-९:२२ दि.१:१९-२:३८।	रा.६:५७-८:३८।
५	बुध	दि.९:२२-१०:४१ दि.१२:००-१:१९।	रा.१२:००-१:४१ रा.३:२२-५:०३।
६	गुरु	दि.२:३९-५:१७।	रा.१२:०१-१:४२ रा.५:०३-६:४३।
७	शुक्र	दि.९:२३-१२:०१।	रा.८:३९-१०:२०।
८	शनि	प्र.६:४२-८:२ दि.१:२१-२:४० दि.३:५९-५:१८।	सं.५:१८-६:५९ रा.१:४२-३:२२ रा.५:०२-६:४२।
९	रवि	दि.१०:४२-१:२१।	रा.१०:२१-१२:०२ रा.१:४२-३:२२।
११	सोम	दि.८:०२-९:२२ दि.२:४०-३:५९।	रा.१०:२१-१२:०२ रा.३:२२-५:०२।
१२	मंगल	दि.८:०१-९:२१ दि.१:२१-२:४१।	रा.७:००-८:४१।
१३	बुध	दि९:२०-१०:४० दि.१२:००-१:२०।	रा.१२:००-१:४० रा.३:२०-५:००।
१४	गुरु	दि.२:४०-४:००।	रा.१२:००-१:४० रा.५:००-६:३९।
१५	शुक्र	दि.९:२१-१२:०१।	रा.८:४१-१०:२१।

विविधविषयाः-वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः-दशमी पञ्चपञ्चाशद् घटिका चेद्दृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्।। दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराबिन्दुपातेन त्याज्यो गंगाघटो यथा।। नारदपुराणे-क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम्।। कौर्मे-तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन।। **भविष्ये**-दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्।। अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्त्तितः। **अरुणोदयकालो ब्रह्मवैवर्ते**-चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भः सदृशं फलम्।। **एकादश्यां त्याज्यवस्तूनि**-कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने।। **केषामन्नं परान्नं नेत्याह**-गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वसुरान्नं तथैव च। पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः।।

१४ गुरु वल्ली ८।४०।१६।०२
अयनांशाः २२।५४।५७

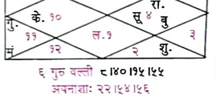

६ गुरु वल्ली ८।४०।१५।५५
अयनांशाः २२।५४।५६

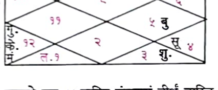

मातृमहिमा-पितुरप्यधिका माता गर्भधारणपोषणात्। अतो हि त्रिषु लोकेषु नास्ति मातृसमो गुरुः।। नास्ति गंगासमं तीर्थं नास्ति विष्णुसमः प्रभुः। नास्ति शम्भुसमः पूज्यो नास्ति मातृसमो गुरुः।। माता धरित्री जननी दयार्द्रहृदया शिवा। देवी त्रिभुवनश्रेष्ठा निर्दोषा सर्वदुःखहा।। **गौतमः**-आचार्यः श्रेष्ठो गुरूणां मातेत्येके। **मनुः**-उपाध्यायान्दशाचार्या आचार्याणां शतं पिता। सहस्रं तु पितॄन्माता गौरवेणातिरिच्यते।। **वशिष्ठः**-उपाध्यायाद्दशाऽऽचार्य आचार्याणांशतं पिता। पितुर्दशगुणं माता गौरवेणातिरिच्यते।। **आपस्तम्बोऽपि**-माता पुत्रत्वस्य भूयाँसि कर्माण्यारभते तस्याँ शुश्रूषा नित्या पतितायामपि। **अथर्ववेदे**-माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। **तन्त्रशास्त्रेऽपि**-न मातुर्दैवतं परम्।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	समाप्तिकालः द. प. घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	शनि	२४।००	दि.४।१८	पुष्य	०६।५१	दि.६।२६	प्रीति	१३।००	कौलव	२४।००	कर्क	अहोरात्र	६।०६।०३।११	२६।३२	६।४२	५।१८	३	६	२३
२	रवि	१८।४५	दि.२।११	आश्लेषा	०३।१०	दि.७।५७	आयुष्मान	०५।२२	गर	१८।४५	कर्क ३।१०	दि.७।५७	६।१०।०४।२४	२६।३५	६।४१	५।१९	४	१०	२४
३	सोम	१४।०३	दि.१२।१७	पूर्वाफाल्गुनी	५९।५९	राशे६।३९	शोभन	५२।००	भद्रा	१४।०३	सिंह	अहोरात्र	६।११।०५।३७	२६।३८	६।४०	५।२०	५	११	२५
४	मंगल	१०।१३	दि.१०।४५	उत्तराफाल्गुनी	५६।०६	राशे५।०६	अतिगण्ड	४६।१८	बालव	१०।१३	सिंह१२।०६	दि.११।३२	६।१२।०६।५१	२६।४१	६।४०	५।२०	६	१२	२६
५	बुध	०७।१८	दि.९।३४	हस्त	५५।३६	रा.४।५३	सुकर्मा	४१।२६	तैतिल	०७।१८	कन्या	अहोरात्र	६।१३।०८।५१	२६।४४	६।३९	५।२१	७	१३	२७
६	गुरु	०५।२७	दि.८।४९	चित्रा	५६।१७	रा.शे५।९	धृति	३७।२८	वणिज	५।२७	कन्या२५।५६	सं.५।०१	६।१४।०९।१९	२६।४७	६।३९	५।२१	३८	१४	२८
७	शुक्र	०४।५०	दि.८।३४	स्वाती	५८।१३	राशे५।५५	शूल	३४।३२	बव	४।५०	तुला	अहोरात्र	६।१५।१०।२४	२६।५०	६।३८	५।२२	९	१५	२९
८	शनि	०५।३१	दि.८।४९	विशाखा	६०।००	अहोरात्र	गण्ड	३२।३५	कौलव	५।३१	तुल४५।३७	रा.१२।५२	६।१६।११।२९	२६।५४	६।३७	५।२३	१०	१६	३०
९	रवि	०७।३७	दि.९।३८	विशाखा	१।२७	प्रा.७।१०	वृद्धि	३१।३७	गर	७।३७	वृश्चिक	अहोरात्र	६।१७।१२।३४	२६।५८	६।३६	५।२४	११	१७	३१
१०	सोम	१०।४५	दि.१०।५४	अनुराधा	०५।४६	दि.८।५४	ध्रुव	३१।३१	भद्रा	१०।४५	वृश्चिक	अहोरात्र	६।१८।१३।३९	२७।०१	६।३६	५।२४	१२	१८	१
११	मंगल	१५।०२	दि.१२।३५	ज्येष्ठा	११।१०	दि.११।०३	व्याघात	३२।११	बालव	१५।०२	वृश्चिक११।१०	दि.११।०३	६।१९।१४।४५	२७।०४	६।३५	५।२५	१३	१९	२
१२	बुध	२०।००	दि.२।३५	मूल	१७।१५	दि.१।२९	हर्षण	३३।१८	तैतिल	२०।००	धनु	अहोरात्र	६।२०।१५।५१	२७।०७	६।३५	५।२५	१४	२०	३
१३	गुरु	२५।२३	सं.४।४३	पूर्वाषाढा	२३।४७	सं.४।०४	वज्र	३४।४५	वणिज	२५।२३	धनु४०।२४	रा.१०।४३	६।२१।१६।५७	२७।१०	६।३४	५।२६	१५	२१	४
१४	शुक्र	३०।४५	रा.६।५१	उत्तराषाढा	३०।१६	सं.६।३९	सिद्धि	३६।०१	शकुनी	३०।४५	मकर	अहोरात्र	६।२२।१७।५३	२७।१३	६।३३	५।२७	१६	२२	५
३०	शनि	३५।३७	रा.८।४७	श्रवण	३६।१९	रा.९।०४	व्यतीपात	३६।५७	चतुरघ्न	३।११	मकर	अहोरात्र	६।२३।१८।५०	२७।१६	६।३३	५।२७	१७	२३	६

माघकृष्णपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, उत्तरायनं,दक्षिणगोलः, शिशिर-ऋतुः, पूर्वे कालः:, शुद्धः।

दिनांक २३ जनवरी तः ६ फरवरी यावत् सन् २०२७ ई।

- २३ — माघे कमलास्नानं महापुण्यप्रदं, लक्षमणसंवत्६१३ प्रारम्भ। मकरे मूलकं त्यजेत्। पूर्वाविना यात्रा पुष्ये दि.६।२६ यावत्। अमृतयोगः -शिववासः-अग्निवासः दि.४।१८ यावत्
- २४ — मघानक्षत्रमानं ५७।३०, सौभाग्ययोगमानं ५३।११, **श्रवणे रविः ३८।३० रा.१०।१६। विवाहः रा.१०।१६ याचत् ततः सूर्यविधमघायां,** अग्निवासः
- २५ — भालचन्द्र ४ व्रतं, श्रीगणेशावतारः, गणेशपूजनं, उत्तरयात्रा तृतीयायां दि.१२।१७ यावत्। शिववासः दि.१२।१७ उपरि
- २६ — गणतंत्र दिवसः, राज्यप्रदयोगः दि.१०।४५ यावत्, शिववासः, अग्निवासः
- २७ — मुण्डनं पञ्चम्यां, पूर्व-दक्षिणयात्रा। अमृतयोगः दि.९।३४ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.४।५३ यावत्, शिववासः दि.९।३५ यावत्
- २८ — विवाहः दिवारात्रौ, पूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे सं.५।०१ यावत् ततः पश्चिमयात्रा। अग्निवासः। **कुम्भे बुधः ५३।१०,**
- २९ — विवाहः स्वात्यां रा.शे.५।५५ यावत्, दक्षिणयात्रा अष्टम्यां दि.३।३४ उपरि। मृत्युयोगः दि.८।३४ यावत्, शिववासः दि.८।३४ उपरि। **धनुषे शुक्रः २३।१८,**
- ३० — **श्रीरामानन्दाचार्यजयन्ती, अन्वाष्टकाश्राद्ध।** सिद्धियोगः- राज्यप्रदयोगः दि.८।४६ उपरि, शिववासः दिं.८।४९ यावत्, अग्निवासः
- ३१ — **विवाहः दशम्यां दि.९।३८ उपरि।** उत्तरयात्रा दशम्यां, अमृतयोगः दि.९।३८ उपरि, अग्निवासः दि.९।३८ उपरि
- १ — फरवरी२। पश्चिम-उत्तरयात्रा। अमृतयोगः दि.१०।५४ यावत् ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।५४ यावत्, अग्निवासः दि.१०।५४ यावत् ततः शिववासः
- २ — षट्तिलाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषामूं, दग्धतिथि द्वादशी दि.१२।३५ उपरि। मृत्युयोगः दि.१२।३५ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः, अग्निवासः दि.१२।३५ उपरि
- ३ — गोदुग्धेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, दग्धतिथि दि.२।३५ यावत्। सिद्धियोगः दि.२।३५ यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः-अग्निवासः दि.२।३५ यावत्
- ४ — प्रदोष १४ व्रतं, नरकनिवारण १४ व्रतं, प्रदोषे शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, कुशेश्वर-कपिलेश्वरप्रतिष्ठादिनम्। अमृतयोगः दि.४।४३ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः दि.४।४३ उपरि
- ५ — वक्रात् कर्के बृहस्पतिः ५५।४५, अमृतयोगः सं.६।५१ यावत् ततः सर्वार्थसिद्धियोगः, अग्निवासः सं.६।५१ यावत् ततः शिववासः
- ६ — माघी अमावस्या, मौनीअमावस्या, स्नानदानश्राद्धादौ पुण्यतमा, धनिष्ठायां रविः ४४।४५-रा.१२।२७। भदवारम्भः रा.६।०४ उपरि। पूर्वा विनायात्रा श्रवणे। अमृतयोगः रा.८।४७ उपरि, शिववासः रा.८।४७ यावत्

मिश्रमानकालिकदैनिक्रमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन		वक्री भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	शनि	४।१३।२६।३८	९।२४।४३।४२	४।०१।३९।०८	७।२३।३२।३७	११।१२।५८।१३	३।२६।३८।४७	४३।१६
२	रवि	४।१३।१५।११	९।२५।५२।४०	४।०१।३१।५८	७।२४।४०।५१	११।१३।०२।५६	३।२६।३५।३६	४३।१७
३	सोम	४।१३।०३।४३	९।२७।०१।३९	४।०१।२४।४७	७।२५।४९।०५	११।१३।०७।४०	३।२६।३२।२५	४३।१८
४	मंगल	४।१२।५२।१५	९।२८।१०।३८	४।०१।१७।३६	७।२६।५७।१९	११।१३।१२।२४	३।२६।२९।१४	४३।१९
५	बुध	४।१२।४०।४७	९।२९।१९।३७	४।०१।१०।२५	७।२८।०५।३३	११।१३।१७।०८	३।२६।२६।०३	४३।२१
६	गुरु	४।१२।२९।१९	१०।००।२८।३६	४।०१।०३।१४	७।२९।१३।४७	११।१३।२१।५२	३।२६।२२।५२	४३।२३
७	शुक्र	४।१२।१३।१९	१०।०१।०८।४७	४।००।५५।३३	८।००।२३।१३	११।१३।२७।१०	३।२६।१९।४२	४३।२५
८	शनि	४।११।५७।१३	१०।०१।४८।५९	४।००।४७।५२	८।०१।३२।३९	११।१३।३२।२८	३।२६।१६।३२	४३।२७
९	रवि	४।११।४१।१०	१०।०२।२९।११	४।००।४०।११	८।०२।४२।०५	११।१३।३७।४६	३।२६।१३।२१	४३।२९
१०	सोम	४।११।२५।०७	१०।०३।०९।२३	४।००।३२।३०	८।०३।५१।३१	११।१३।४३।०४	३।२६।१०।१०	४३।३१
११	मंगल	४।११।०९।०४	१०।०३।४९।३५	४।००।२४।४९	८।०५।००।५७	११।१३।४८।२३	३।२६।०६।५९	४३।३३
१२	बुध	४।१०।५३।०१	१०।०४।२९।४७	४।००।१७।०८	८।०६।१०।२३	११।१३।५३।४२	३।२६।०३।४८	४३।३५
१३	गुरु	४।१०।३६।५७	१०।०५।०९।५९	४।००।०९।२६	८।०७।१९।५०	११।१३।५९।०१	३।२६।००।३७	४३।३६
१४	शुक्र	४।१०।१९।४७	१०।०५।०९।५९	४।००।०१।३५	८।०८।३०।१०	११।१४।०५।०८	३।२८।५७।२७	४३।३७
३०	शनि	४।०९।५६।३७	१०।०५।०९।५९	३।२९।५३।४४	८।०९।४०।३०	११।१४।११।१५	३।२८।५४।१६	४३।३८

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन		मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	शनि	१२।३२	१४।२८	१६।४१	१८।५६	२१।१५	२३।३०	१।४७	४।०४	६।०६	७।५५	९।२६	१०।५५
२	रवि	१२।२८	१४।२४	१६।३७	१८।५५	२१।११	२३।२६	१।४३	४।००	६।०५	७।५१	९।२२	१०।५१
३	सोम	१२।२४	१४।२०	१६।३३	१८।५१	२१।०७	२३।२२	१।३९	३।५६	६।०१	७।४७	९।१८	१०।४७
४	मंगल	१२।२०	१४।१६	१६।२९	१८।४७	२१।०३	२३।१८	१।३५	३।५२	५।५७	७।४३	९।१४	१०।४३
५	बुध	१२।१५	१४।११	१६।२४	१८।४२	२०।५८	२३।१३	१।३०	३।४७	५।५२	७।३८	९।०९	१०।३८
६	गुरु	१२।११	१४।०७	१६।२०	१८।३८	२०।५४	२३।०९	१।२६	३।४३	५।४८	७।३४	९।०५	१०।३४
७	शुक्र	१२।०७	१४।०३	१६।१६	१८।३४	२०।५०	२३।०५	१।२२	३।३९	५।४४	७।३०	९।०१	१०।३०
८	शनि	१२।०३	१३।५९	१६।१२	१८।३०	२०।४६	२३।०१	१।१८	३।३५	५।४०	७।२६	८।५७	१०।२६
९	रवि	११।५९	१३।५५	१६।०८	१८।२६	२०।४२	२२।५७	१।१४	३।३१	५।३६	७।२२	८।५३	१०।२२
१०	सोम	११।५४	१३।५०	१६।०३	१८।२१	२०।३७	२२।५२	१।०९	३।२६	५।३१	७।१७	८।४८	१०।१७
११	मंगल	११।५०	१३।४६	१५।५९	१८।१७	२०।३३	२२।४८	१।०५	३।२२	५।२७	७।१३	८।४४	१०।१३
१२	बुध	११।४६	१३।४२	१५।५५	१८।१३	२०।२९	२२।४४	१।०१	३।१८	५।२३	७।०९	८।४०	१०।०९
१३	गुरु	११।४२	१३।३८	१५।५१	१८।०९	२०।२५	२२।४०	००।५७	३।१४	५।१९	७।०५	८।३६	१०।०५
१४	शुक्र	११।३८	१३।३४	१५।४७	१८।०५	२०।२१	२२।३६	००।५३	३।१०	५।१५	७।०१	८।३२	१०।०१
३०	शनि	११।३३	१३।२९	१५।४२	१८।००	२०।१६	२२।३१	००।४८	३।०५	५।१०	६।५६	८।२७	९।५६

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शनि	प्र.६:३९-८:०० दि.१:२१-२:४१ दि.४:०१-५:२१।	सं.५:२१-७:०१ रा.१:४१-३:२१ रा.५:००-६:३८।
२	रवि	दि.१०:४१-१:२२।	रा.१०:२२-१२:०२ ।रा.१:४१-३:२०
३	सोम	दि.७:५८-९:१९ दि.२:४३-४:०३।	रा.१०:२२-१२:०१ ।रा.३:१६-४:५८
४	मंगल	दि.७:५७-९:१८ दि.१:२१-२:४२।	रा.७:०३-८:४२।
५	बुध	दि.९:१८-१०:३९ दि.१२:००-१:२१।	रा.१२:००-१:३६ ।रा.३:१८-४:५७।
६	गुरु	दि.२:४३-५:२५।	रा.१२:०१-१:४० ।रा.४:५७-६:३४।
७	शुक्र	दि.९।१८-१२।०२	रा.८:४४-१०:२३।
८	शनि	प्र.६:३४-७:५६ दि.१:२३-२:४४ सं.४:०५-५:२६।	सं.५:२६-७:०५ रा.१:४०-३:१८ रा.४:५६-६:३३।
९	रवि	दि.१०:३९-१:२३।	रा.१०:२३-१२:०१ ।रा.१:३६-३:१७।
१०	सोम	दि.७:५४-९:१६ दि.२:४४-४:०६।	रा.१०:२२-१२:०० ।रा.३:१६-४:५४
११	मंगल	दि.७:५४-९:१६ दि.१:२२-२:४४।	रा.७:०६-८:४४।
१२	बुध	दि.९:१७-१०:३९ दि.१२:०१-१:३३।	रा.१२:०१-१:३६ ।रा.३:१७-४:५४।
१३	गुरु	दि.२:४६-५:३०।	रा.१२:०२-१:३६ ।रा.४:५३-६:२६।
१४	शुक्र	दि.९:१६-१२:०२।	रा.८:४६-१०:२४।
३०	शनि	प्र.६:२९-७:५२ दि.१:२८-२:४७ सं.४:०९-५:३१।	सं.५:३१-७:०६ रा.१:३८-३:१५ रा.४:५२-६:२६।

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.१ शनि दि.९।२६ तः ति २ रवि रा.शे५।४० यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१० सोम ८।५४ तः ति.१२ बुध दि.१।२९ यावत्।

विविधविषयाः-माघे प्रातःस्नानफलं-यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।।
मकरार्के प्रातःस्नानमन्त्रः- मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव।
प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।।
दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च।
प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।।
माघे कुत्रापि स्नानफलम्-स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते।
यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे।।
चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्तिः- सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां नरकनिवारण चतुर्दशीव्रतं- चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च । प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

१३ गुरु वल्ली ८।४०।१६।१६
अयनांशाः २२।५४।५६

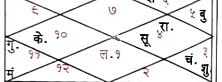

६ गुरु वल्ली ८।४०।१६।०६
अयनांशाः २२।५४।५८

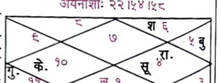

आचमन विधि :-सभ कार्यमे आचमनक विधान अछि। एवं स ब्राह्मणो नित्यमुपस्पर्शनमाचरेत्। ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत् स परितर्पयेत्।। अर्थात् आचमनसँ अपनाशुद्धि के संग ब्रह्मा सँ लक तृण पर्यन्त तृप्त कऽ दैन अछि। यः क्रियां कुरुते मोहादनाचम्यैव नास्तिकः। भवन्ति हि वृथा तस्य क्रियाः सर्वा न संशयः।। अर्थात् आचमन नै कयलासँ अपन सभ कृत्य व्यर्थ भऽ जाइत छैक नैं शौचक उपरान्त आचमनक विधान अछि।
आचमन वास्ते जलक मात्रा- आचमन वास्ते हाथ मे जल एतवा ली जाहिसँ(हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः। शुध्येरन् स्त्री च शूद्रश्च सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः।। याज्ञवल्क्यस्मृति क वचन) ब्राह्मणकें हृदय धरि, [illegible] धरि, वैश्यकें तालु धरि आ शूद्र तथा महिला कें जीभ धरि पहुँच जाय। हथेलीक मोडि गायक कानसदृश वना कनिष्ठा आ अंगूठा आंगुर अलग कऽ ब्राह्मतीर्थसँ निम्नलिखित एक- एक मन्त्रक उच्चारण कऽ आचमन करी। आचमनकऽ [illegible] काल (शुर) अवाज नै हेवाक चाही। ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। आचमन पश्चात् अंगुठाक मूलभागसँ ओठ दू वेरि पोछि ॐ हृषीकेशाय नमः वाजि हाथ धो ली।

माघशुक्लपक्ष

शक१६४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, उत्तरायनं,दक्षिणगोलः, शिशिर-ऋतुः, पूर्व/दक्षिण कालः, शुद्धः।
दिनांक ७-२० फरवरी यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	रवि	३६।४५	रा.१०।२६	धनिष्ठा	४१।३८	रा.११।११	वरीयान्	३७।१८	किंस्तुघ्न ७।४१	मकर ८।५७	दि.१०।०७	६।२४।१६।४७	२७।१६	६।३२	५।२८	१८	२४	७
२	सोम	४२।४२	रा.११।३७	शतभिषा	४५।५१	रा.१२।५२	परिघ	३६।४६	बालव ११।१३	कुम्भ	अहोरात्र	६।२५।२०।४४	२७।२२	६।३२	५।२८	१९	२५	८
३	मंगल	४४।३३	रा.१२।२०	पूर्वाभाद्रपद	४६।००	रा.२।०७	शिव	३५।२५	तैतिल १३।३७	कुम्भ ३३।१२	रा.७।४८	६।२६।२१।४१	२७।२५	६।३१	५।२९	२०	२६	९
४	बुध	४५।०४	रा.१२।३२	उत्तराभाद्रपद	५०।५७	रा.२।५३	सिद्ध	३३।०१	वर्णिज् १४।४८	मीन	अहोरात्र	६।२७।२२।३८	२७।२८	६।३०	५।३०	२१	२७	१०
५	गुरु	४४।१६	रा.१२।१२	रेवती	५१।२८	रा.३।०५	साध्य	२९।३८	बव १४।४०	मीन ५१।२८	रा.३।०५	६।२८।२३।३५	२७।३२	६।३०	५।३०	२२	२८	११
६	शुक्र	४२।१६	रा.११।२३	अश्विनी	५०।५३	रा.२।५०	शुभ	२५।१४	कौलव १३।१६	मेष	अहोरात्र	६।२९।२४।१६	२७।३६	६।२९	५।३१	२३	२९	१२
७	शनि	३९।१३	रा.१०।०९	भरणी	४९।१६	रा.२।१०	शुक्ल	२०।०१	गर १०।४४	मेष	अहोरात्र	१०।००।२५।०४	२७।४०	६।२८	५।३२	२४	१	१३
८	रवि	३५।१५	रा.८।३३	कृत्तिका	४६।५०	रा.१।११	ब्रह्म	१४।०६	भद्रा ७।१४	मेष ३।३९	दि.७।५५	१०।०१।२५।४९	२७।४४	६।२७	५।३३	२५	२	१४
९	सोम	३०।२८	सं.६।३८	रोहिणी	४३।३८	रा.११।५४	ऐन्द्र	०७।४०	बालव २।५१	वृष	अहोरात्र	१०।०२।२६।३४	२७।४७	६।२७	५।३३	२६	३	१५
१०	मंगल	२५।०७	दि.४।२९	मृगशिरा	३९।५७	रा.१०।२५	वैधृति	००।१२	गर २५।०७	वृष ११।४६	दि.११।०८	१०।०३।२७।१९	२७।५०	६।२६	५।३४	२७	४	१६
११	बुध	१९।२६	दि.२।११	आर्द्रा	३५।५४	रा.८।४६	प्रीति	४४।५४	भद्रा १९।२६	मिथुन	अहोरात्र	१०।०४।२८।०४	२७।५३	६।२५	५।३५	२८	५	१७
१२	गुरु	१३।३०	दि.११।५०	पुनर्वसु	३१।४४	रा.७।०७	आयुष्यमान	३७।०१	बालव १३।३०	मिथुन१७।४५	दि.१।३१	१०।०५।२८।४९	२७।५६	६।२५	५।३५	२९	६	१८
१३	शुक्र	०७।३५	दि.९।२६	पुष्य	२७।४१	सं.५।२८	सौभाग्य	२९।१७	तैतिल ७।३५	कर्क	अहोरात्र	१०।०६।२९।२२	२७।५९	६।२४	५।३६	३०	७	१९
१४	शनि	१।५६	दि.७।१०	आश्लेषा	२३।५५	दि.३।५८	शोभन	२१।४७	वर्णिज १।५६	कर्क २३।५५	दि.३।५८	१०।०७।२९।५५	२८।०२	६।२४	५।३६	१	८	२०

अं.	विवरणम्
७	शिशिरनवरात्रारम्भः,कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः। विवाहः दिवारात्री, मृत्युयोगः रा.१०।२६ यावत्, अग्निवासः, गुरु-केतु वेधात् विवाहो मध्यम्।
८	चन्द्रदर्शनम्, रेमन्तपूजा, मुण्डनं, देवादिप्रतिष्ठा, मृत्युयोगः रा.११।३७ यावत्, शिववासः।
९	वदरी ३, कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, छन्दोगानां उपनयनं, सिद्धियोगः रा.१२।२० यावत् ततः राज्यप्रयोगः, अग्निवासः
१०	श्रीगणेश ४ व्रतं, विवाहः पञ्चम्यां रा.१२।३२ उपरि। ←दक्षिणां विनायात्रा। सिद्धियोगः रा.११।२३ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः अहोरात्र, शिववासः, अग्निवासः
११	वसन्तपञ्चमी, सरस्वतीपूजनं, तक्षकपूजा,उत्तराभिमुख हलप्रवाहः,मदवसमाप्तिः रा.३।०५ उपरि। विवाहः दिवारात्री, मुण्डनं, उपनयनं,देवादिप्रतिष्ठा, पश्चिम-उत्तर यात्रा रेवत्यां ततः ←
१२	श्रीस्कन्दषष्ठी व्रतं, मासान्तः। बिल्वाभिमन्त्रणं, सिद्धियोगः रा.११।२३ यावत् ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।०० यावत्, शिववासः सिद्धियोगः -राज्यप्रदयोगः दि.७।१० यावत् ततः मृत्युयोगः
१३	पत्रिकाप्रवेशः,महारात्रिर्निशापूजा,ब्रह्मसावर्णिमन्वादि, कुम्भे रविः १६।०२ दि.२।०५ मु.१५ महर्घताकरं, विष्णुपदिसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.१२।०० उपरि पुण्याहः, माघस्नान समाप्तिः,❖
१४	मासादिः। महाष्टमीव्रतं। दीक्षाग्रहणं, महागौरी देवीदर्शनम्। भीष्माष्टमी व्रत। सिद्धियोगः। ◆पूर्वा विनायात्रा। अमृतयोगः सं.६।३८ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः सं.६।३८ यावत्,अग्निवासः
१५	महानन्दानवमी त्रिशूलनीपूजा, श्रीहरसूब्रह्मदेवजयन्ती६। विवाहः-द्विरागमनं-वधूप्रवेशः-गृहप्रवेशः दशम्यां सं.६।३८ उपरि, दक्षिणयात्रा दशम्यां रोहिण्यां च सं.६।३८ तः रा.११।५४ या.ततः ◆
१६	वि.यो.५२।२७, वजयादशमी, गुप्तनवरात्रस्य पारणा। देवीविसर्जनं, छन्दोगानां उपनयनं, उत्तरां विनायात्रा। ♍ अमृतयोगः दि.११।५० उ., सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः दि.११।५० उपरि
१७	भैमीएकादशी११ व्रतं सर्वेषां, व्रतोद्यापनम्। श्रीमाधव१२, सन्तान१२। उपनयनं, द्विरागमनं-गृहप्रवेशः पुनर्वसौ रा.८।४६ उपरि। अमृतयोग दि.२।११ यावत् ततः सिद्धियोगः-शिववासः,अग्निवासः।
१८	गोदुग्धेनपारणा। प्रदोष१३ व्रतं। द्विरागमनं,वधूप्रवेशः,देवादिप्रतिष्ठा,गृहप्रवेशः, मुण्डनं त्रयोदश्याम्। पश्चिमयात्रा दि.१।३३ यावत् ततः उत्तरायत्रा रा.७।७ यावत् ततः दक्षिणां विनायात्रा।♍
१९	प्रदोश १४ व्रत, शतभिषायां रविः ५४।३०। मुण्डनं-कर्णवेधः-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा-गृहारम्भःगृहप्रवेशः त्रयोदश्यां दि.६।२६ यावत्। पश्चिमा विनायात्रा। शिववासः-अग्निवासः दि.६।२६या.।
२०	पूर्णिमातिथिमानं ५६।४५, माघीपूर्णिमा१५ स्नानदानव्रतादौ, गोशालाघट्टे कमलायां जीवछघट्टे जीववत्सायां स्नानदानशिवार्चनादिकं। श्रीरविदासजयन्ती। गण्डान्त १२।५५ उपरि २७।५५ यावत्✦

❖प्रयागेकल्पवाससमाप्तिः, ने. फाल्गुनमासारम्भः दक्षिणेकालः।अचलासप्तमी ७ व्रतं, अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे च कोटिसूर्यग्रहणसमं फलदं। अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	वक्रीभौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	रवि	४।०९।३६।२७	१०।०५।१०।००	३।२६।४५।५३	८।१०।५०।५१	११।१४।१७।२२	३।२८।५१।०५	४३।३९
२	सोम	४।०९।१६।१७	१०।०५।१०।०१	३।२६।३८।०२	८।१२।०१।१२	११।१४।२३।२९	३।२८।४७।५४	४३।४०
३	मंगल	४।०८।५६।०६	१०।०५।१०।०२	३।२६।३०।११	८।१३।११।३३	११।१४।२९।३६	३।२८।४४।४३	४३।४२
४	बुध	४।०८।३५।५५	१०।०५।१०।०३	३।२६।२२।२०	८।१४।२१।५४	११।१४।३५।४३	३।२८।४१।३२	४३।४४
५	गुरु	४।०८।१५।४४	१०।०५।१०।०४	३।२६।१४।२८	८।१५।३२।१५	११।१४।४१।५०	३।२८।३८।२१	४३।४६
६	शुक्र	४।०७।५३।०५	१०।०४।३१।१२व	३।२६।०६।२१	८।१६।४३।१२	११।१४।४८।३२	३।२८।३५।११	४३।४८
७	शनि	४।०७।३०।२६	१०।०३।५२।२०	३।२८।५८।१३	८।१७।५४।०९	११।१४।५५।१५	३।२८।३२।०१	४३।५०
८	रवि	४।०७।०७।४७	१०।०३।१३।२८	३।२८।५०।०५	८।१९।०५।०६	११।१५।०१।५८	३।२८।२८।५०	४३।५२
९	सोम	४।०६।४८।०८	१०।०२।३४।३५	३।२८।४१।५७	८।२०।१६।०३	११।१५।०८।४१	३।२८।२५।३९	४३।५४
१०	मंगल	४।०६।२२।२८	१०।०१।५५।४२	३।२८।३३।४९	८।२१।२७।००	११।१५।१५।२४	३।२८।२२।२८	४३।५६
११	बुध	४।०५।५९।४८	१०।०१।१६।४९	३।२८।२५।४१	८।२२।३७।५७	११।१५।२२।०७	३।२८।१९।१७	४३।५८
१२	गुरु	४।०५।३७।०८	१०।००।३७।५६	३।२८।१७।३३	८।२३।४८।५४	११।१५।२८।५०	३।२८।१६।०६	४३।५९
१३	शुक्र	४।०५।१३।४०	०९।२९।५४।१५	३।२८।०९।५१	८।२५।००।२०	११।१५।३५।३२	३।२८।१२।५६	४४।००
१४	शनि	४।०४।५०।१२	९।२९।१०।३४	३।२८।०२।०९	८।२६।११।४६	११।१५।४२।१४	३।२८।०९।४६	४४।०१

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अ. घं.मि.
१	रवि	११।२९	१३।२५	१५।३८	१७।५६	२०।१२	२२।२७	००।४४	३।०१	५।०६	६।५२	८।२३	६।५२
२	सोम	११।२५	१३।२१	१५।३४	१७।५२	२०।०८	२२।२३	००।४०	२।५७	५।०२	६।४८	८।१९	६।४८
३	मंगल	११।२१	१३।१७	१५।३०	१७।४८	२०।०४	२२।१९	००।३६	२।५३	४।५८	६।४४	८।१५	६।४४
४	बुध	११।१७	१३।१३	१५।२६	१७।४४	२०।००	२२।१५	००।३२	२।४९	४।५४	६।४०	८।११	६।४०
५	गुरु	११।१३	१३।०९	१५।२२	१७।४०	१९।५६	२२।११	००।२८	२।४५	४।५०	६।३६	८।०७	६।३६
६	शुक्र	११।०९	१३।०५	१५।१८	१७।३६	१९।५२	२२।०७	००।२४	२।४१	४।४६	६।३२	८।०३	६।३२
७	शनि	११।०५	१३।०१	१५।१४	१७।३२	१९।४८	२२।०३	००।२०	२।३७	४।४२	६।२८	७।५९	६।२८
८	रवि	११।०२	१२।५८	१५।११	१७।२९	१९।४५	२२।००	००।१७	२।३४	४।३९	६।२५	७।५६	६।२५
९	सोम	१०।५८	१२।५४	१५।०७	१७।२५	१९।४१	२१।५६	००।१३	२।३०	४।३५	६।२१	७।५२	६।२१
१०	मंगल	१०।५४	१२।५०	१५।०३	१७।२१	१९।३७	२१।५२	००।०९	२।२६	४।३१	६।१७	७।४८	६।१७
११	बुध	१०।५०	१२।४६	१४।५९	१७।१७	१९।३३	२१।४८	००।०५	२।२२	४।२७	६।१३	७।४४	६।१३
१२	गुरु	१०।४६	१२।४२	१४।५५	१७।१३	१९।२९	२१।४४	००।०१	२।१८	४।२३	६।०९	७।४०	६।०९
१३	शुक्र	१०।४३	१२।३९	१४।५२	१७।१०	१९।२६	२१।४१	२३।५८	२।१५	४।२०	६।०६	७।३७	६।०६
१४	शनि	१०।३९	१२।३५	१४।४८	१७।०६	१९।२२	२१।३७	२३।५४	२।११	४।१६	६।०२	७।३३	६।०२

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	रवि	दि.१०:३८-१:२४।	रा.१०:२४-१२:०१ रा.१:३८-३:१५।
२	सोम	दि.७:५१-९:१४ दि.२:४६-४:०९।	रा.१०:२३-१२:०० रा.३:१४-४:५१।
३	मंगल	दि.७:५१-९:१५ दि.१:२४-२:४७।	रा.७:१०-८:४७।
४	बुध	दि.९:१४-१०:३८ दि.१२:०२-१:२५।	रा.१२:०२-१:३८ रा.३:१४-४:५०।
५	गुरु	दि.२:४८-५:३४।	रा.१२:०२-१:३८ रा.४:५०-६:२६।
६	शुक्र	दि.९:१३-१:२५।	रा.८:४९-१०:२५।
७	शनि	प्र.६:२४-७:४८ दि.१:२४-२:४८ सं.४:१२-५:३६।	सं.५:३६-७:१२ रा.१:३६-३:१२ रा.४:४८-६:२४।
८	रवि	दि.१०:३६-१:२४।	रा.१०:२४-१२:०० रा.१:३६-३:१२।
९	सोम	दि.७:४८-९:१३ दि.२:४९-४:१३।	रा.१०:२५-१२:०१ रा.३:१३-४:४८।
१०	मंगल	दि.७:४७-९:१२ दि.१:२६-२:५०।	रा.७:१४-८:५०।
११	बुध	दि.९:१२-१०:३७ दि.१२:०२-१:२६।	रा.१२:०२-१:३७ रा.३:१२-४:४८।
१२	गुरु	दि.२:५१-५:३९।	रा.१२:०१-१:३६ रा.४:४६-६:२१।
१३	शुक्र	दि.९:१०-१२:००।	रा.८:५०-१०:२५।
१४	शनि	प्र.६:१८-७:४५ दि.१:२६-२:५१ सं.४:०६-५:४१।	सं.५:४१-७:१६ रा.१:३६-३:११ रा.४:४५-६:२०।

ग्रहस्थितिः- मार्गी पशिमास्तो मंगलः, मार्गी पूर्वास्तः बुधः ८ तः पश्चिमोदितः, वक्री गुर्वोदितः गुरुः मार्गी पूर्वास्तः शुक्र ७ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयो मेघचाराच्छिन्नवृष्टिवातोपलपातादयस्तन्मध्यभागे नातपशीतादयः।

मूलविचारः-रेवती/ अश्विनी - ति.४ बुध रा.२।५३ तः ति.६ शुक्र रा.२।५० यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.१३ शुक्र सं.५।२८ तः.................।

माघी पूर्णिमा- परयुताग्राह्या। यथोक्तं ब्रह्मवैवर्ते "भूतविद्धे न कर्तव्ये दशपूर्णे कदाचन।। माघस्थयोश्च जीवेन्द्वोमहामाघीति कथ्यते। ज्योतिषे मेषपृष्ठे यदासौरिः सिंहे च गुरु चन्द्रमाः। भास्करः श्रवणर्क्षे च महामाघीति सा स्मृता।।
अचलासप्तम्यां- सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र।।
स्नानमन्त्रः-यद्यज्जन्मकृतं पापं मयासप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्चशोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाता ज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्त विधं पापं स्नानं मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवी हर माकरि सप्तमी।।
सूर्य का अर्घ्य दें- सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। अर्घ्योपरान्त प्रणाम करें-जननी सर्वलोकानां सप्तमीसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्य मूर्त्तये।। अष्टम्यां भीष्मतर्पण मन्त्रः- वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृति प्रवरायच । अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्म वर्मणे।। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीर जगः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च। इदं जीवत्पित्राति कर्त्तव्यम्।

५ गुरु वल्ली ८।४०।१६।२३
अयनांशाः २२।५५।००

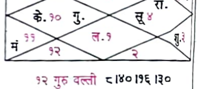

१२ गुरु वल्ली ८।४०।१६।३०
अयनांशाः २२।५५।०१

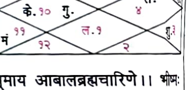

दन्तधावन(दातमनि) विधि- (आह्निकसूत्रावली)- मुखे पर्युषिते नित्यं भवत्यप्रयतो नरः। दन्तधावनमुद्दिष्टं जिह्वोल्लेखनिका तथा।। अतो मुखविशुद्ध्यर्थं गृह्णीयाद् दन्तधावनम्। आचान्तोऽप्यशुचिर्नित्यमकृत्वा दन्तधावनम्।। अर्थात् मुखशुद्धिकें विना पूजा-पाठ, मन्त्र-जप आदि निष्फल होइत अछि, अतःप्रतिदिन मुख-शुद्ध्यर्थ दन्तधावन अथवा मंजनादि अवश्य करवा क चाहि। शौचादिक बाद पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख वैसि अगिला मन्त्र पढ़ि दातमनि क अभिमन्त्रित करी। मन्त्र-ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च। ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते।। मुखदुर्गन्धनाशाय दन्तानां च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।। मन्त्र पढ़ि मौन भऽ दन्त दातमनि करी। ग्राह्य दातुनः- चिड़चिड़ि, गूलर, आम, नीम, बेल, करैया, करंज, खैर आदि क दातुन उत्तम मानल जाइत अछि। दूध आ कण्टक वाला वृक्षक दातुन से हो शास्त्र विहित अछि। सर्वे कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणश्च विशेषतः।। (हारीतस्मृति) क्षौर कर्म :-एकादशी, अमावास्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतीपात, यात्रा समय एवं पुण्य-कार्यमे तथा प्रातः संध्या कऽ लेवाक बाद क्षौर कर्म नहि करी

फाल्गुनकृष्णपक्ष

शक१६४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, उत्तरायनं,दक्षिणगोलः, शिशिर-ऋतुः, दक्षिण कालः:, शुद्धः।
दिनांक २१ फरवरी तः ८ मार्च यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि नक्षत्राणि	समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगः योगाः	समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	रवि	५२।०२	रा.३।१२	मघा	२०।३६	दि.२।३६	अतिगण्ड	१३।४०	बालव २५।२१	सिंह	अहोरात्र	१०।०८।३०।२८	२८।०६	६।२३	५।३७	२	६	२१
२	सोम	४८।१३	रा.१।३६	पूर्वाफाल्गुनी	१८।०३	दि.१।३५	सुकर्मा	०८।०८	तैतिल २०।०७	सिंह ३२।३७	रा.७।१६	१०।०६।३१।०१	२८।१०	६।२२	५।३८	३	१०	२२
३	मंगल	४५।२१	रा.१२।२६	उत्तराफाल्गुनी	१६।१६	दि.१२।५२	धृति	०२।१६	वर्णिज् १६।४७	कन्या	अहोरात्र	१०।१०।३१।३४	२८।१४	६।२१	५।३६	४	११	२३
४	बुध	४३।३४	रा.११।४६	हस्त	१५।३५	दि.१२।३४	गण्ड	५३।०२	बव १४।२७	कन्या४५।४७	रा.११।५६	१०।११।३२।०८	२८।१८	६।२०	५।४०	५	१२	२४
५	गुरु	४३।००	रा.११।३२	चित्रा	१६।०२	दि.१२।४५	वृद्धि	४६।४६	कौलव १३।१७	तुला	अहोरात्र	१०।१२।३२।४२	२८।२२	६।२०	५।४०	६	१३	२५
६	शुक्र	४३।४४	रा.११।४८	स्वाती	१७।४४	दि.१।२६	ध्रुव	४७।३७	गर १३।२२	तुला	अहोरात्र	१०।१३।३३।०२	२८।२६	६।१६	५।४१	७	१४	२६
७	शनि	४५।५३	रा.१२।३६	विशाखा	२०।४०	दि.२।३४	व्याघात	४६।२८	भद्रा १४।४८	तुला ४'।५६	दि.८।१६	१०।१४।३३।२२	२८।३०	६।१८	५।४२	८	१५	२७
८	रवि	४६।०५	रा.१।५५	अनुराधा	२४।४५	दि.४।११	हर्षण	४६।०८	बालव १७।२६	वृश्चिक	अहोरात्र	१०।१५।३३।४२	२८।३४	६।१७	५।४३	६	१६	२८
६	सोम	५३।२३	रा.३।३७	ज्येष्ठा	२६।५८	सं.६।१५	वज्र	४६।३६	तैतिल २१।१४	वृश्चिक२६।५८	सं.६।१५	१०।१६।३४।०३	२८।३८	६।१६	५।४४	१०	१७	१
१०	मंगल	५८।२२	राशे५।३७	मूल	३६।५७	रा.६।०३	सिद्धि	४७।४२	वर्णिज् २५।५२	धनु	अहोरात्र	१०।१७।३४।२४	२८।४२	६।१६	५।४४	११	१८	२
११	बुध	६०।००	अहोरात्र	पूर्वाषाढा	४२।२५	रा.११।१३	व्यतीपात	४७।५२	बव ३१।०३	धनु ५६।०३	राशे५।५२	१०।१८।३४।४५	२८।४६	६।१५	५।४५	१२	१६	३
११	गुरु	०३।४५	दि.७।४४	उत्तराषाढा	४८।५६	रा.१।५०	वरीयान्	५०।३२	बालव ३।४५	मकर	अहोरात्र	१०।१६।३५।०६	२८।५०	६।१४	५।४६	१३	२०	४
१२	शुक्र	०६।०१	दि.६।४६	श्रवण	५५।१०	रा.४।०७	परिघ	५१।३६	तैतिल ६।०१	मकर	अहोरात्र	१०।२०।३५।१२	२८।५५	६।१३	५।४७	१४	२१	५
१३	शनि	१३।४६	दि.११।४२	धनिष्ठा	६०।००	अहोरात्र	शिव	५२।१६	वर्णिज १३।४६	मकर२७।५४	सं.५।२२	१०।२१।३५।१८	२६।००	६।१२	५।४८	१५	२२	६
१४	रवि	१७।४५	दि.१।१७	धनिष्ठा	००।४१	प्रा.६।२७	सिद्ध	५२।०६	शकुनी १७।४५	कुम्भ	अहोरात्र	१०।२२।३५।२४	२६।०४	६।११	५।४६	१६	२३	७
३०	सोम	२०।३२	दि.२।२३	शतभिषा	०५।१२	दि.८।१५	साध्य	५१।०४	नाग २०।३२	कुम्भ५२।४५	रा.३।१६	१०।२३।३५।३१	२६।०८	६।१०	५।५०	१७	२४	८

२१ फाल्गुने वाङ्मतिस्नानं महापुण्यप्रदं, विवाहः मघायां दि.२।३६ यावत्। मृत्युयोगः दि.३।१२ यावत्, शिववासः दि.३।१२ यावत्

२२ विवाहः उत्तरा फाल्गुन्यां दि.१।३५ उपरि। द्विरागमनं वधूप्रवेशः तृतीयायां रा.१।३६ उपरि। मुण्डनं-कर्णवेधः-गृहारम्भ उत्तराफाल्गुन्या। अग्निवासः।

२३ शूलयोगमानं ५४।५७, दग्धतिथि चतुर्थी रात्र१२।२६ उपरि। पूर्व-दक्षिण यात्रा तृतीयायां, सिद्धियोगः रा.१२।२६ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः

२४ श्रीहेरम्ब ४ व्रतं, विवाहः-द्विरागमनं पञ्चम्यां रा.११।४६ उपरि। दग्धतिथि चतुर्थी रा.११।४६ यावत् ततः दक्षिणपश्चिमयात्रा। सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः

२५ विवाहः, द्विरागमनं, वधूप्रवेशः, मुण्डनं, कणवेधः, गृहारम्भः पश्चिमयात्रा। सिद्धियोगः रा.११।३२ यावत्, शिववासः

२६ दक्षिणयात्रा स्वात्यां दि.१।२६ यावत्। सिद्धियोगः रा.११।४८ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः

२७ श्रीहनुमत्पूजनोत्वाः नौलागढ़, पूर्वोदितः बुधः २४।४५, पश्चिम-उत्तरयात्रा अनुराधायां दि.२।३४ उपरि।

२८ विवाहः अनुराधायां दि.४।११ यावत्। सिद्धियोगः रा.१।५५ यावत्, शिववासः

१ मार्च३। विवाहः दशम्यां रा.३।३७ उपरि। उत्तरयात्रा दशम्यां। गण्डान्त २३।५७ उपरि ३८।५७ यावत्, अमृतयोगः रा.३।३७ उपरि, अग्निवासः

२ पूर्वयात्रा, मृत्युयोगः रा.शे.५।३७ उपरि

३ विवाहः उत्तराषाढ़ायां। पूर्वयात्रा, अमृतयोगः अहोरात्र, शिववासः, अग्निवासः

४ विजयाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। विवाहः दिवारात्रौ, दक्षिणां विनायात्रा श्रवणे रा.१।५० उपरि। शिववासः अग्निवासः

५ पूर्वाभाद्रपदायां रविः ६।१४ दि.६।४६, प्रदोष १३ व्रतं, भदवारम्भः रा.४।०७ उपरि। पश्चिमां विनायात्रा त्रयोदश्यां सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।१७ यावत्, शिववासः दि.६।०१ यावत् ततः अग्निवासः

६ प्रदोष १४ व्रतं, महाशिवरात्रिव्रतं प्रदोषे यावद्रात्रौ तत्र शिवार्चनं सहस्रश्वमेधसमफलदं,श्रीगौरीशंकरविवाहोत्सवः,श्रीशिवदर्शनं, श्रीरावणेश्वरवैद्यनाथयो प्रतिष्ठा दिनम्। अग्निवासः दि.११।४२ यावत् ततःसिद्धि

७ महाशिवरात्रीव्रतस्य पारणा, अमृतयोगः दि.१।१७ उपरि, शिववासः दि.१।१७ उपरि, अग्निवासः

८ फाल्गुनी अमावस्या स्नानदानादिः, गोसहस्रिका ३०, मन्वादि, सोमवती अमावस्या, सोवमवारीव्रत, सिद्धियोगः दि.२।२३ उपरि, शिववासः दि.२।२३ यावत् ततः अग्निवासः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	वक्रीभौम राश्यादि	वक्री बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	रवि	४।०४।२६।४४	६।२८।२६।५३	३।२७।५४।२७	८।२७।२३।१२	११।१५।४८।५७	३।२८।०६।३५	४४।०३
२	सोम	४।०४।०३।१६	६।२७।४३।१२	३।२७।४६।४४	८।२८।३४।३८	११।१५।५५।४०	३।२८।०३।२४	४४।०५
३	मंगल	४।०३।३६।४८	६।२६।५६।३१	३।२७।३६।०१	८।२६।४६।०४	११।१६।०२।२३	३।२८।००।१३	४४।०७
४	बुध	४।०३।१६।२०	६।२६।१५।५०	३।२७।३१।१८	६।००।५७।३०	११।१६।०६।०६	३।२७।५७।०२	४४।०६
५	गुरु	४।०२।५२।५१	६।२५।३२।०८	३।२७।२३।१५	६।०२।०८।५७	११।१६।१५।४६	३।२७।५३।५१	४४।११
६	शुक्र	४।०२।३०।५६	६।२५।२४।३२	३।२७।१६।०२	६।०३।२०।५०	११।१६।२२।५१	३।२७।५०।४१	४४।१३
७	शनि	४।०२।०६।०७	६।२५।१६।५६	३।२७।०८।२६	६।०४।३२।४३	११।१६।२६।५३	३।२७।४७।३१	४४।१५
८	रवि	४।०१।४७।१५	६।२५।०६।२०	३।२७।००।५५	६।०५।४४।३६	११।१६।३६।५५	३।२७।४४।२०	४४।१७
६	सोम	४।०१।२५।२३	६।२५।०१।४४	३।२६।५३।२१	६।०६।५६।२६	११।१६।४३।५७	३।२७।४१।०६	४४।१६
१०	मंगल	४।०१।०३।३१	६।२४।५४।०८	३।२६।४५।४७	६।०८।०८।२२	११।१६।५०।५६	३।२७।३७।५८	४४।२१
११	बुध	४।००।४१।३६	६।२४।४६।३२	३।२६।३८।१३	६।०६।२०।१५	११।१६।५८।०१	३।२७।३४।४७	४४।२३
११	गुरु	४।००।१६।४७	६।२४।३८।५६	३।२६।३०।३६	६।१०।३२।०६	११।१७।०५।०४	३।२७।३१।३६	४४।२५
१२	शुक्र	४।००।०१।१६	६।२५।१३।४०मा	३।२६।२३।४८	६।११।४४।०१	११।१७।१२।०६	३।२७।२८।२६	४४।२७
१३	शनि	३।२६।४२।४४	६।२५।४८।२४	३।२६।१६।५७	६।१२।५५।५३	११।१७।१६।०८	३।२७।२५।१५	४४।३०
१४	रवि	३।२६।२४।१२	६।२६।२३।०८	३।२६।१०।०६	६।१४।०७।४६	११।१७।२६।१०	३।२७।२२।०५	४४।३२
३०	सोम	३।२६।०५।४०	६।२६।५७।५३	३।२६।०३।१५	६।१५।१६।३६	११।१७।३३।१३	३।२७।१८।५३	४४।३४

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	रवि	१०।३५	१२।३१	१४।४४	१७।०२	१६।१८	२१।३३	२३।५०	२।०७	४।१२	५।५८	७।२६	८।५८
२	सोम	१०।३१	१२।२७	१४।४०	१६।५८	१६।१४	२१।२६	२३।४६	२।०३	४।०८	५।५४	७।२५	८।५४
३	मंगल	१०।२७	१२।२३	१४।३६	१६।५४	१६।१०	२१।२५	२३।४२	१।५६	४।०४	५।५०	७।२१	८।५०
४	बुध	१०।२४	१२।२०	१४।३३	१६।५१	१६।०७	२१।२२	२३।३६	१।५६	४।०१	५।४७	७।१८	८।४७
५	गुरु	१०।२०	१२।१६	१४।२६	१६।४७	१६।०३	२१।१८	२३।३५	१।५२	३।५७	५।४३	७।१४	८।४३
६	शुक्र	१०।१६	१२।१२	१४।२५	१६।४३	१८।५६	२१।१४	२३।३१	१।४८	३।५३	५।३६	७।१०	८।३६
७	शनि	१०।१२	१२।०८	१४।२१	१६।३६	१८।५५	२१।१०	२३।२७	१।४४	३।४६	५।३५	७।०६	८।३५
८	रवि	१०।०८	१२।०४	१४।१७	१६।३५	८।५१	२१।०६	२३।२३	१।४०	३।४५	५।३१	७।०२	८।३१
६	सोम	१०।०५	१२।०१	१४।१४	१६।३२	१८।४८	२१।०३	२३।२०	१।३७	३।४२	५।२८	६।५६	८।२८
१०	मंगल	१०।०१	११।५७	१४।१०	१६।२८	१८।४४	२०।५६	२३।१६	१।३३	३।३८	५।२४	६।५५	८।२४
११	बुध	६।५७	११।५३	१४।०६	१६।२४	१८।४०	२०।५५	२३।१२	१।२६	३।३४	५।२०	६।५१	८।२०
११	गुरु	६।५३	११।४६	१४।०२	१६।२०	१८।३६	२०।५१	२३।०८	१।२५	३।३०	५।१६	६।४७	८।१६
१२	शुक्र	६।४६	११।४५	१३।५८	१६।१६	१८।३२	२०।४७	२३।०४	१।२१	३।२६	५।१२	६।४३	८।१२
१३	शनि	६।४६	११।४२	१३।५५	१६।१३	१८।२६	२०।४४	२३।०१	१।१८	३।२३	५।०६	६।४०	८।०६
१४	रवि	६।४२	११।३८	१३।५१	१६।०६	१८।२५	२०।४०	२२।५७	१।१४	३।१६	५।०५	६।३६	८।०५
३०	सोम	६।३८	११।३४	१३।४७	१६।०५	१८।२१	२०।३६	२२।५३	१।१०	३।१५	५।०१	६।३२	८।०१

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.१ रविवार दि.२।३६ यावत्।। ज्येष्ठा/मूल ति.८ रविवार दि.४।११ तः ति.१० मंगल रा.६।०३ यावत्।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	रवि	दि.१०:३६-१:२७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.१:३६-३:१०।
२	सोम	दि.७:४४-६:१० दि.२:५२-४:१७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.३:१०-४:४४।
३	मंगल	दि.७:४३-६:०६ दि.१:२७-२:५३।	रा.७:१८-८:५३।
४	बुध	दि.६:०८-१०:३४ दि.१२:००-१:२६।	रा.१२:००-१:३४ रा.३:०८-४:४२।
५	गुरु	दि.२:५३-५:४५।	रा.१२:०१-१:३५ रा.४:४२-६:१४।
६	शुक्र	दि.६:०८-१२:०२।	रा.८:५४-१०:२८।
७	शनि	प्र.६:१४-७:४१ दि.१:२८-२:५४ दि.४:२०-५:४६।	सं.५:४६-७:२० रा.१:३५-३:०८ रा.४:४१-६:१३।
८	रवि	दि.१०:३४-१:२८।	रा.१०:२८-१२:०१ रा.१:३४-३:०७।
६	सोम	दि.७:३६-६:०६ दि.२:५४-४:२१।	रा.१०:२७-१२:०० रा.३:०६-४:४६।
१०	मंगल	दि.७:३६-६:०७ दि.१:२८-२:५५।	रा.७:२२-८:५५।
११	बुध	दि.६:०६-१०:३४ दि.१२:०२-१:३६।	रा.१२:०२-१:३४ रा.३:०६-४:३८।
११	गुरु	दि.२:५६-५:५०।	रा.१२:०२-१:३४ रा.४:३८-६:१०।
१२	शुक्र	दि.६:०५-१२:०१।	रा.८:५७-१०:२६।
१३	शनि	प्र.६:०८-७:३६ दि.१:२८-२:५६ सं.४:२४-७:५२।	सं.५:२२-७:२४ रा.१:३२-३:०४ रा.४:३६-६:०७।
१४	रवि	दि.१०:३३-१:२६।	रा.१०:२६-१२:०१ रा.१:३३-३:०५।
३०	सोम	दि.७:३५-६:०४ दि.२:५८-४:२६।	रा.१०:३०-१२:०२ रा.३:०४-४:३५।

विविधविषयाः-माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां- शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे- माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।। तथा च - उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।

गंगासागरसंगमस्नानमन्त्रः - त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै।। **समुद्रस्नानमन्त्रः** - त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः।। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते।। **गंगास्नानमन्त्रः** - ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव।।

गंगामाहात्म्यं विष्णुपुराणे - गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।। पुनश्च - इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्।।

५ गुरु वल्ली ८।४०।१६।३७
अयनांशाः २२।५५।०२

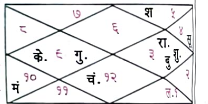

११ गुरु वल्ली ८।४०।१६।४४
अयनांशाः २२।५५।०३

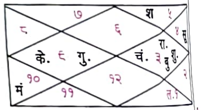

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	मंगल	२२।१४	दि.३।०४	पूर्वाभाद्रपद	०८।३७	दि.६।३७	शुभ	४६।०२	बव २२।१४	मीन	अहोरात्र	१०।२४।३५।३८	२६।१२	६।१०	५।५०	१८	२५	९
२	बुध	२२।३५	दि.३।११	उत्तराभाद्रपद	१०।४४	दि.१०।२७	शुक्ल	४५।५६	कौलव २२।३५	मीन	अहोरात्र	१०।२५।३५।४५	२६।१६	६।०९	५।५१	१९	२६	१०
३	गुरु	२१।३८	दि.२।४७	रेवती	११।३५	दि.१०।४६	ब्रह्म	४१।५९	गर २१।३८	मीन ११।३५	दि.१०।४६	१०।२६।३५।५२	२६।२०	६।०८	५।५२	२०	२७	११
४	शुक्र	१९।२९	दि.१।५५	अश्विनी	११।१६	दि.१०।३७	ऐन्द्र	३७।०६	भद्रा १९।२९	मेष	अहोरात्र	१०।२७।३५।४३	२६।२४	६।०७	५।५३	२१	२८	१२
५	शनि	१६।१५	दि.१२।३६	भरणी	०९।५०	दि.१०।०२	वैधृति	३१।२४	बालव १६।१५	मेष २४।१६	दि.३।४८	१०।२८।३५।३४	२६।२८	६।०६	५।५४	२२	२९	१३
६	रवि	१२।१०	दि.१०।५८	कृत्तिका	०७।३७	दि.९।०९	विष्कुम्भ	२५।०१	तैतिल १२।१०	वृष	अहोरात्र	१०।२९।३५।२५	२६।३२	६।०६	५।५४	२३	३०	१४
७	सोम	०७।१६	दि.९।००	रोहिणी	०४।३३	दि.७।५४	प्रीति	१८।०२	वर्णिज ७।१६	वृष ३२।४५	सं.६।२२	११।००।३५।१७	२६।३६	६।०५	५।५५	२४	१	१५
८	मंगल	०१।५१	प्रा.६।४८	मृगशिरा	००।५७	प्रा.६।२७	आयुष्मान	१०।३९	बव १।५१	मिथुन	अहोरात्र	११।०१।३५।०९	२६।४०	६।०४	५।५६	२५	२	१६
१०	बुध	५०।०७	रा.२।०६	पुनर्वसु	५२।४८	रा.३।१०	सौभाग्य	०२।५८	तैतिल २३।०५	मिथुन३८।३३	रा.६।२८	११।०२।३५।०१	२६।४४	६।०३	५।५७	२६	३	१७
११	गुरु	४४।१०	रा.११।४२	पुष्य	४८।४३	रा.१।३१	अतिगण्ड	४७।२८	वर्णिज १६।५७	कर्क	अहोरात्र	११।०३।३४।५३	२६।४८	६।०२	५।५८	२७	४	१८
१२	शुक्र	३८।२८	रा.९।२५	आश्लेषा	४४।५२	रा.११।५८	सुकर्मा	३९।५६	बव ११।०८	कर्क४४।५२	रा.११।५८	११।०४।३४।२९	२६।५१	६।०२	५।५८	२८	५	१९
१३	शनि	३३।१०	रा.७।१७	मघा	४१।२८	रा.१०।३६	धृति	३२।४४	कौलव ५।४९	सिंह	अहोरात्र	११।०५।३४।०५	२६।५४	६।०१	५।५९	२९	६	२०
१४	रवि	२८।२९	सं.५।२३	पूर्वाफाल्गुनी	३८।४३	रा.९।२९	शूल	२६।०५	गर ००।४९	सिंह ५३।१५	रा.३।१८	११।०६।३३।४१	२६।५८	६।००	६।००	३०	७	२१
१५	सोम	२४।३८	दि.३।५१	उत्तराफाल्गुनी	३६।५२	रा.८।४५	गण्ड	२०।०४	बव २४।३८	कन्या	अहोरात्र	११।०७।३३।१७	३०।०२	६।००	६।००	१	८	२२

फाल्गुनशुक्लपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, उत्तरायन,दक्षिणगोल, शिशिर/वसन्त-ऋतु, दक्षिणे काल:, शुद्ध:/अशुद्ध: ति.७ त: खरमास:।
दिनांक ९-२२ मार्च यावत् सन् २०२७ ई।

कल्याणेश्वरराज्जनकपुर परिक्रमारम्भः, श्रीरामकृष्णपरमहं जयन्ती। चन्द्रदर्शनं याम्यशृंगंदुर्भिक्षकरम्। मृत्युयोग: दि.३।०४ यावत् ततः अमृतयोग:, शिववास: दि.३।०४ उपरि।

श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती। विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं द्वितीयायां दि.३।११ यावत्। मुण्डनं, कर्णविध:, देवादिप्रतिष्ठा। सिद्धियोग: दि.३।११ यावत् ततः मृत्युयोग:, शिववास: दि.३।११ यावत्, अग्निवास:।

विवाहः-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा-मुण्डनं तृतीयायां दि.२।४७ यावत्। श्रीगणेश ४ व्रत, भद्रवाससमाप्ति: दि.१०।४६ उपरि। दग्धतिथि दि.२।४७ उपरि। पश्चिम-उत्तरयात्रा रेवत्यां दि.१०।४६यावत्❖

दग्धतिथि चतुर्थी रा.१।५५ यावत्। कुम्भे बुधः ५३।१०, अमृतयोग: दि.१।५५ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोग: दि.१०।३७ यावत्, शिववास: दि.१।५५ उपरि, अग्निवास:।

मृत्युयोग: दि.१२।३६ यावत् ततः अमृतयोग:, शिववास:। ❖ततः दक्षिणां विनायात्रा दि.२।४७ यावत्। अमृतयोग: दि.२।४७ यावत् ततः मृत्युयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: अहोरात्र।

गोरुपणीषष्ठी, मासन्तः। मृत्युयोग: दि.१०।५८ यावत्, शिववास: -अग्निवास: दि.१०।५८ यावत्। ♍मृत्युयोग: दि.९।०० यावत्, सर्वार्थसिद्धियोग: अहोरात्र, अग्निवास: दि.९।०० उपरि।

कामदासप्तमी ७ व्रतं, मीने रविः ९।२२ दि.९।५१ मु.३० समासमताकरं, षडशीतिसंक्रान्ति: पुण्यकाल: दि.९।५१ उपरि पुण्याहः, खरमासारम्भः, वसन्त ऋतुः, ने.चैत्रमासरम्भः ♍

नवमीतिथिमानं ५४।१२, आर्द्रायोगमानं ५५।५१ होलाष्टकारम्भः, मासादि:। सिद्धियोग: प्रा.६।४८ यावत् ततः राज्यप्रदयोग:, अग्निवास: प्रा.६।४८ यावत् ततः शिववास:

शोभनयोगमानं ५२।१२, छ.वै. उननयनं, दक्षिणयात्रा रा.६।२८ यावत्। पश्चिमयात्रा रा.३।१० यावत् ततः उत्तरां विनायात्रा। पश्चिमास्तः शनिः ५४।१९❋

उत्तराभाद्रपदायां रविः २९।५७ सं.६।०२, आमलकीएकादशी११ व्रतं सर्वेषां, व्रतोद्यापनं, उपनयनं, जनकपुर-अन्तर्गृहीयपरिक्रमारम्भ:, रंगभरीएकादशी, श्रीकाशीविश्वनाथशृंगारदिनं, दक्षिणां विनायात्रा पुष्ये।

गोविन्द १२, श्रीनृसिंह१२, गोदघ्नापारणं, समुद्रस्नानं, श्रीजगन्नाथदर्शनम्। गण्डान्त ३३।५३ उपरि ४८।५३ यावत्, मृत्युयोग: रा.९।२५ यावत्, शिववास:, अग्निवास:। ❋अमृतयोग: रा.२।०६ उपरि, अग्निवास:

प्रदोष १३-१४ व्रतं, सिद्धियोग: -राज्यप्रदयोग: रा.७।१७ उपरि, शिववास:, कुम्भे शुक्रः ५३।३६। ← दक्षिण यात्रा। अमृतयोग: दि.३।५१ यावत्, अग्निवास: -शिववास: दि.३।५१ उपरि।

व्रताय पूर्णिमा, होलीकादाहः रा.४।३८ उपरि। अमृतयोग: सं.५।२३ उपरि, अग्निवास:। भ.२८।१७ त: भद्रा ५६।२७ यावत्।

फाल्गुनीपूर्णिमा १५, स्नानदानादिः, सावर्णिमन्वादिः, कुलदेवताभ्यः सिन्दूरार्पणं, पातरिदानं, जनकपुरपरिक्रमासमाप्तिः, श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती, होली। होलीकाभस्मधारणं चैत्रे तस्मिणास्नानं महापुण्यप्रदं।←

मूलविचारः-रेवती/ अश्विनी - ति.२ बुध दि.१०।२७ ति.४ शुक्र दि.१०।३७ यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.११ गुरु रा.१।३१ त: ति.१३ शनि रा.१०।३६ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन		वक्रीभौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	मंगल	३।२८।४७।०८	९।२७।३२।३८	३।२५।५६।२४	९।१६।३१।३२	११।१७।४०।१६	३।२७।१५।४२	४४।३६
२	बुध	३।२८।२८।३६	९।२८।०७।२३	३।२५।४६।३३	९।१७।४३।२५	११।१७।४७।१६	३।२७।१२।३१	४४।३८
३	गुरु	३।२८।१०।०४	९।२८।४२।०८	३।२५।४२।४१	९।१८।५५।१८	११।१७।५४।२०	३।२७।०९।२०	४४।४०
४	शुक्र	३।२७।५५।५३	९।२९।४८।२१	३।२५।३६।३८	९।२०।०७।५६	११।१८।०१।५०	३।२७।०६।१०	४४।४२
५	शनि	३।२७।४१।४२	१०।००।५४।३४	३।२५।३०।३५	९।२१।२०।३४	११।१८।०९।२१	३।२७।०३।००	४४।४४
६	रवि	३।२७।२७।३१	१०।०२।००।४८	३।२५।२४।३२	९।२२।३३।१२	११।१८।१६।५२	३।२६।५९।४९	४४।४६
७	सोम	३।२७।१३।१९	१०।०३।०७।०२	३।२५।१८।२९	९।२३।४५।५०	११।१८।२४।२३	३।२६।५६।३८	४४।४८
८	मंगल	३।२६।५९।०७	१०।०४।१३।१६	३।२५।१२।२५	९।२४।५८।२८	११।१८।३१।५४	३।२६।५३।२७	४४।५०
१०	बुध	३।२६।४४।५५	१०।०५।१३।३०	३।२५।०६।२१	९।२६।११।०७	११।१८।३९।२५	३।२६।५०।१६	४४।५२
११	गुरु	३।२६।३०।४३	१०।०६।२५।४४	३।२५।००।१७	९।२७।२३।४६	११।१८।४६।५६	३।२६।४७।०५	४४।५४
१२	शुक्र	३।२६।२२।००	१०।०७।५१।४५	३।२४।५५।२७	९।२८।३६।३८	११।१८।५४।५३	३।२६।४३।५५	४४।५६
१३	शनि	३।२६।१३।१७	१०।०९।१७।४६	३।२४।५०।३६	९।२९।४९।३०	११।१९।०२।५०	३।२६।४०।४५	४४।५७
१४	रवि	३।२६।०४।३४	१०।१०।४३।४७	३।२४।४५।४५	१०।०१।०२।२२	११।१९।१०।४७	३।२६।३७।३४	४४।५९
१५	सोम	३।२५।५५।५१	१०।१२।०९।४८	३।२४।४०।५४	१०।०२।१५।१४	११।१९।१८।५४	३।२६।३४।२३	४५।०१

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन		मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	मंगल	९।३४	११।३०	१३।४३	१६।०१	१८।१७	२०।३२	२२।४९	१।०६	३।११	४।५७	६।२८	७।५७
२	बुध	९।३०	११।२६	१३।३९	१५।५७	१८।१३	२०।२८	२२।४५	१।०२	३।०७	४।५३	६।२४	७।५३
३	गुरु	९।२७	११।२३	१३।३६	१५।५४	१८।१०	२०।२५	२२।४२	००।५९	३।०४	४।५०	६।२१	७।५०
४	शुक्र	९।२३	११।१९	१३।३२	१५।५०	१८।०६	२०।२१	२२।३८	००।५५	३।००	४।४६	६।१७	७।४६
५	शनि	९।१९	११।१५	१३।२८	१५।४६	१८।०२	२०।१७	२२।३४	००।५१	२।५६	४।४२	६।१३	७।४२
६	रवि	९।१५	११।११	१३।२४	१५।४२	१७।५८	२०।१३	२२।३०	००।४७	२।५२	४।३८	६।०९	७।३८
७	सोम	९।११	११।०७	१३।२०	१५।३८	१७।५४	२०।०९	२२।२६	००।४३	२।४८	४।३४	६।०५	७।३४
८	मंगल	९।०७	११।०३	१३।१६	१५।३४	१७।५०	२०।०५	२२।२२	००।३९	२।४४	४।३०	६।०१	७।३०
१०	बुध	९।०४	११।००	१३।१३	१५।३१	१७।४७	२०।०२	२२।१९	००।३६	२।४१	४।२७	५।५८	७।२७
११	गुरु	९।००	१०।५६	१३।०९	१५।२७	१७।४३	१९।५८	२२।१५	००।३२	२।३७	४।२३	५।५४	७।२३
१२	शुक्र	८।५६	१०।५२	१३।०५	१५।२३	१७।३९	१९।५४	२२।११	००।२८	२।३३	४।१९	५।५०	७।१९
१३	शनि	८।५२	१०।४८	१३।०१	१५।१९	१७।३५	१९।५०	२२।०७	००।२४	२।२९	४।१५	५।४६	७।१५
१४	रवि	८।४९	१०।४५	१२।५८	१५।१६	१७।३२	१९।४७	२२।०४	००।२१	२।२६	४।१२	५।४३	७।१२
१५	सोम	८।४५	१०।४१	१२।५४	१५।१२	१७।२८	१९।४३	२२।००	००।१७	२।२२	४।०८	५।३९	७।०८

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मंगल	दि.७:३५-९:०४ दि.१:३०-२:५८।	रा.७:२६-८:५८।
२	बुध	दि.९:०३-१०:३२ दि.१२:०१-१:३०।	रा.१२:०१-१:३२ रा.३:०३-४:३४।
३	गुरु	दि.२:५८-५:५६।	रा.१२:००-१:३१ रा.४:३३-६:०३।
४	शुक्र	दि.९:०३-१२:०१।	रा.८:५९-१०:३०।
५	शनि	प्र.६:०२-७:३२ दि.१:३१-३:०० सं.४:२९-५:५८।	सं.५:५८-७:२६ रा.१:३२-३:०२ रा.४:३२-६:०२।
६	रवि	दि.१०:३२-१:३१।	रा.१०:३१-१२:०२ रा.१:३२-३:०२।
७	सोम	दि.७:३१-९:०१ दि.३:०१-४:३०।	रा.१०:३१-१२:०१ रा.३:०१-४:३१।
८	मंगल	दि.७:३०-९:०० दि.१:३०-३:००।	रा.७:३०-९:००।
१०	बुध	दि.९:०१-१०:३१ दि.१२:०१-१:३१।	रा.१२:०१-१:३१रा.३:०१-४:३०।
११	गुरु	दि.३:०२-६:०२।	रा.१२:०२-१:३१ रा.४:२९-५:५८।
१२	शुक्र	दि.९:००-१२:०२।	रा.९:०२-१०:३२।
१३	शनि	प्र.५:५७-७:२८ दि.१:३२-३:०३ सं.४:३३-६:०३।	सं.६:०३-७:३३ रा.१:३०-२:५९ रा.४:२८-५:५६।
१४	रवि	दि.१०:२९-१:३१।	रा.१०:३१-१२:०० रा.१:२९-२:५८।
१५	सोम	दि.७:२७-८:५६ दि.३:०३-४:३४।	रा.१०:३२-१२:०१ रा.२:५९-४:२७।

होलिकादाहविशेष- तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत। घृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दै- र्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जलपन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां दाहयेत्। ध्यानमन्त्रः-असृमयावसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होति बालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदा भव। ततो 'होलिकायै नमः' इति मन्त्रेण यथोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्।
होलिका प्रदीपमन्त्रः-दीपयाम्यत्र ते घोरां चितिं राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने
होलीकाभस्मधारणमन्त्रः- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव।।
होलिका दाहे वायु विचार- होलिकादाहे पूर्ववायौ राजाप्रजासुखम् अग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टिः वायव्ये वायुवृद्धिः उत्तरैशान्योः सुभिक्षं, निर्वातसमयो राज्ञो हानिकरः।

आचमन विधि :- सभ कार्यमे आचमनक विधान अछि। एवं स ब्राह्मणो नित्यमुपस्पर्शनमाचरेत्। ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत् स परितर्पयेत्।। अर्थात् आचमनसँ अपनाशुद्धि के संग ब्रह्मा सँ लक तृण पर्यन्त तृप्त कऽ दैत अछि। यः क्रियां कुरुते मोहादनाचम्यैव नास्तिकः। भवन्ति हि वृथा तस्य क्रियाः सर्वा न संशयः।। अर्थात् आचमन नै कयलासँ अपन सभ कृत्य व्यर्थ भऽ जाइत छैक तैं शौचक उपरान्त आचमनक विधान अछि। आचमन वास्ते जलक मात्रा- आचमन वास्ते हाथ मे जल एतवा ली जाहिसँ(हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः। शुध्येरन् स्त्री च शूद्रश्च सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः।। याज्ञवल्क्यस्मृति क वचन) ब्राह्मणकें हृदय धरि, क्षत्रियकें कण्ठ धरि, वैश्यकें तालु धरि आ शूद्र तथा महिला कें जीभ धरि पहुँच जाय। हथेलीक मोडि गायक कानसदृश बना कनिष्ठा आ अंगूठा आंगुर अलग कऽ ब्रह्मतीर्थसँ निम्नलिखित एक- एक मन्त्रक उच्चारण कऽ आचमन करी। आचमन करैत काल (शुर) अवाज नै हैवाक चाही। ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। आचमन पश्चात् अंगुठाक मूलभागसँ ओठ दू बेरि पोछि ॐ हृषीकेशाय नमः बाजि हाथ धो लीं।

३ गुरु वल्ली ८।४०।१६।५१
अयनांशाः २२।५५।०४

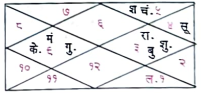

११ गुरु वल्ली ८।४०।१६।५८
अयनांशाः २२।५५।०५

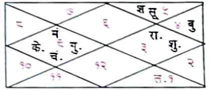

चैत्रकृष्णपक्ष

शक१९४८, संवत् २०८३, सन् १४३४, उत्तरायन,दक्षिणगोलः, वसन्त-ऋतुः, दक्षिणे कालः, अशुद्धः,खरमासः।
दिनांक २३ मार्च तः ६ अप्रैल यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	मंगल	२१|४५	दि.२|४१	हस्त	३५|५३	रा.८|२०	वृद्धि	१४|५०	कौलव २१|४५	कन्या	अहोरात्र	११|०८|३२|५४	३०|०६	५|५९	६|०१	२	६	२३
२	बुध	१६|५८	दि.१|५७	चित्रा	३६|०४	रा.८|२३	ध्रुव	१०|२६	गर १६|५८	कन्या ५|५७	दि.८|२१	११|०९|३२|३१	३०|१०	५|५८	६|०२	३	१०	२४
३	गुरु	१६|२२	दि.१|४२	स्वाती	३७|२८	रा.८|५६	व्याघात	०७|०१	भद्रा १६|२२	तुला	अहोरात्र	११|१०|३२|०८	३०|१४	५|५७	६|०३	४	११	२५
४	शुक्र	२०|०६	दि.१|५८	विशाखा	४०|१०	रा.१०|००	हर्षण	०४|३७	बालव २०|०६	तुला २४|२८	दि.३|४३	११|११|३१|२८	३०|१८	५|५६	६|०४	५	१२	२६
५	शनि	२२|१३	दि.२|४६	अनुराधा	४४|०३	रा.११|३३	वज्र	०३|०६	तैतिल २२|१३	वृश्चिक	अहोरात्र	११|१२|३०|४८	३०|२२	५|५६	६|०४	६	१३	२७
६	रवि	२५|२२	दि.४|०४	ज्येष्ठा	४६|०३	रा.१|३२	सिद्धि	०२|४५	वणिज २५|२२	वृश्चिक ४६|१३	रा.१|३२	११|१३|३०|०८	३०|२६	५|५५	६|०५	७	१४	२८
७	सोम	२६|३७	सं.५|४५	मूल	५४|५४	रा.३|५२	व्यतीपात	०३|०७	बव २६|३७	धनु	अहोरात्र	११|१४|२६|२६	३०|३०	५|५४	६|०६	८	१५	२९
८	मंगल	३४|३३	रा.७|४२	पूर्वाषाढा	६०|००	अहोरात्र	वरीयान्	०४|०७	बालव २|०५	धनु	अहोरात्र	११|१५|२८|५०	३०|३४	५|५३	६|०७	९	१६	३०
९	बुध	३९|५०	रा.९|४८	पूर्वाषाढा	०१|१८	प्रा.७|२३	परिघ	०५|३१	तैतिल ०७|११	धनु १७|५७	दि.१|०३	११|१६|२८|११	३०|३८	५|५२	६|०८	१०	१७	३१
१०	गुरु	४५|०३	रा.१०|५३	उत्तराषाढा	७|५४	दि.९|०२	शिव	०७|०३	वणिज् १२|२६	मकर	अहोरात्र	११|१७|२७|३२	३०|४२	५|५२	६|०८	११	१८	१
११	शुक्र	४६|४६	रा.१|४५	श्रवण	१४|१३	दि.११|३२	सिद्ध	०८|२१	बव १७|२३	मकर ४७|०३	रा.१२|४०	११|१८|२६|३६	३०|४६	५|५१	६|०९	१२	१९	२
१२	शनि	५३|३५	रा.३|१६	धनिष्ठा	१६|५३	दि.१|४७	साध्य	०६|१२	कौलव २१|३६	कुम्भ	अहोरात्र	११|१९|२५|४१	३०|५०	५|५०	६|१०	१३	२०	३
१३	रवि	५६|१५	रा.४|१६	शतभिषा	२४|३७	दि.३|४०	शुभ	०६|२१	गर २४|५५	कुम्भ	अहोरात्र	११|२०|२४|४६	३०|५४	५|४९	६|११	१४	२१	४
१४	सोम	५७|४८	रा.४|५५	पूर्वाभाद्रपद	२८|१७	सं.५|०७	शुक्ल	०८|३६	भद्रा २७|०१	कुम्भ १२|२२	दि.१०|४५	११|२१|२३|५१	३०|५८	५|४८	६|१२	१५	२२	५
३०	मंगल	५८|००	राशे५|००	उत्तराभाद्रपद	३०|४३	सं.६|०५	ब्रह्म	०६|५६	चतुरघ्न२७|५४	मीन	अहोरात्र	११|२२|२२|५६	३१|०२	५|४८	६|१२	१६	२३	६

चैत्रे लक्ष्मणास्नानं महापुण्यप्रदं, **सप्तडोराकबन्धनं**, दग्धतिथि द्वितीया दि.२|४१ उपरि। मृत्युयोगः दि.२|४१ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः –अग्निवासः दि.२|४१ यावत्।

दग्धतिथि द्वितीया दि.१|५७ यावत्। सिद्धियोगः दि.१|५७ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः दि.१|५७ उपरि। भद्रा ४६|४१ उपरि।

श्रीविकचतुर्थी ४ व्रतं, पश्चिम यात्रा तृतीयायां दि.१|४२ यावत्। अमृतयोगः दि.१|४२ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः दि.१|४२ यावत् ततः शिववासः। भद्रा १६|२२ यावत्

उत्तरयात्रा अनुराधायां रा.१०|०० उपरि। अमृतयोगः दि.१|५८ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०|०० उपरि, शिववासः, अग्निवासः दि.१|५८ उपरि।

रंगपञ्चमी ५ व्रत, पश्चिम-उत्तरायात्रा षष्ठयां दि.२|४६ उपरि। मृत्युयोगः दि.२|४६ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः –अग्निवासः दि.२|४६ यावत्।

स्कन्दषष्ठी, उत्तर यात्रा सप्तम्यां दि.४|०४ उपरि। गण्डान्त ४३|०४ उपरि ५८|०४ यावत्, मृत्युयोगः दि.४|०४ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१|३२ उपरि, अग्निवासः। भद्रा२५|२२ उ. भद्रा.५७|३१ यावत्।

भानुसप्तमी, उत्तर यात्रा अष्टम्यां सं.५|४५ उपरि। मृत्युयोगः सं.५|४५ यावत्, शिववासः –अग्निवासः सं.५|४५ उपरि।

शीतलाष्टमी ८ व्रत, पूर्वयात्रा, सिद्धियोगः रा.७|४२ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, शिववासः, अग्निवासः।

श्रीऋषभनाथ जी जयन्ती। **रेवत्यां रविः ५७|१५ रा.४|४६।**

अप्रैल ४। दक्षिणां विनायात्रा श्रवणे दि.९|०२ उपरि। सिद्धियोगः रा.११|५३ यावत्, अग्निवासः। भद्रा १२|२६ उपरि भद्रा ४५|०० यावत्।

पापमोचमी एकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्, भद्वारम्भः दि.११|३२ उपरि। पश्चिमां विनायात्रा श्रवणे दि.११|३२ यावत्। सिद्धियोगः रा.१|४५ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११|३२ यावत्, शिववासः।

गोघृतेन पारणं, **महामहावारुणीयोग रात्रयन्ते अरुणोदय घ.४|३४ उपरि,** पश्चिम यात्रा। शिववासः, अग्निवासः।

प्रदोष १३ व्रतं। वारुणीयोगः, **वारुणीयोगे गंगायां यदि स्नान-दानात् शत सूर्यग्रहणकोटि सूर्यग्रहण समफल लभ्यते घ.३|४० यावत् दिने,** सिद्धियोगः रा.४|१६ यावत्।

प्रदोष १४ व्रतं । अमृतयोगः रा.४|५५ उपरि, अग्निवासः। भद्रा २७|०१ यावत्।

प्रतिपदातिथिमानं ५६|५१ चैत्रीअमावस्या ३०, स्नानदानादौ पुण्यतमा, विक्रसंवत् २०८४ प्रारम्भोऽमान्तात्। मृत्युयोगः रा.शे.५|०० उपरि, शिववासः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	वक्रीभौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	मंगल	३|२५|४७|०८	१०|१३|३५|४६	३|२४|३६|०३	१०|०३|२८|०६	११|१६|२६|४१	३|२६|३१|१२	४५|०३
२	बुध	३|२५|३८|२४	१०|१५|०१|५०	३|२४|३१|१२	१०|०४|४०|५८	११|१६|३४|३८	३|२६|२८|०१	४५|०५
३	गुरु	३|२५|२६|४०	१०|१६|२७|५१	३|२४|२६|२१	१०|०५|५३|५०	११|१६|४२|३७	३|२६|२४|५०	४५|०७
४	शुक्र	३|२५|२६|१६	१०|१८|०६|३६	३|२४|२२|३५	१०|०७|०६|३७	११|१६|५०|३७	३|२६|२१|४०	४५|०६
५	शनि	३|२५|२२|५१	१०|१६|४५|२७	३|२४|१८|४६	१०|०८|१६|२४	११|१६|५८|३७	३|२६|१८|३०	४५|११
६	रवि	३|२५|१६|२६	१०|२१|२४|१५	३|२४|१५|०३	१०|०६|३२|११	११|२०|०६|३८	३|२६|१५|१६	४५|१३
७	सोम	३|२५|१६|०१	१०|२३|०३|०३	३|२४|११|१७	१०|१०|४४|५८	११|२०|१४|३६	३|२६|१२|०८	४५|१५
८	मंगल	३|२५|१२|३६	१०|२४|४१|५१	३|२४|०७|३१	१०|११|५७|४५	११|२०|२२|४०	३|२६|०८|५७	४५|१७
९	बुध	३|२५|०६|११	१०|२६|२०|४०	३|२४|०३|४५	१०|१३|१०|३२	११|२०|३०|४१	३|२६|०५|४६	४५|१६
१०	गुरु	३|२५|०५|४६	१०|२७|५६|२६	३|२३|५६|५६	१०|१४|२३|२०	११|२०|३८|४२	३|२६|०२|३५	४५|२१
११	शुक्र	३|२५|०७|४६मा	१०|२६|४६|४६	३|२३|५७|३४	१०|१५|३६|३५	११|२०|४६|३४	३|२५|५६|२५	४५|२३
१२	शनि	३|२५|०६|४६	११|०१|३४|०६	३|२३|५५|०६	१०|१६|४६|५०	११|२०|५४|२६	३|२५|५६|१४	४५|२५
१३	रवि	३|२५|११|४६	११|०३|२१|२६	३|२३|५२|४४	१०|१८|०३|०५	११|२१|०२|१८	३|२५|५३|०३	४५|२७
१४	सोम	३|२५|१३|४६	११|०५|०८|४६	३|२३|५०|१६	१०|१६|१६|२०	११|२१|१०|१०	३|२५|४६|५२	४५|२६
३०	मंगल	३|२५|१५|४६	११|०६|५६|०६	३|२३|४७|५३	१०|२०|२६|३५	११|२१|१८|०२	३|२५|४६|४१	४५|३१

मूलविचारः–ज्येष्ठा/मूल ति.५ शनि रा.११|३३ ति.७ सोम रा.३|५२ यावत्।
रेवती/ अश्विनी – ति.३० मंगल सं.६|०५ तः....................।

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	मंगल	८|४१	१०|३७	१२|५०	१५|०८	१७|२४	१६|३६	२१|५६	००|१३	२|१८	४|०४	५|३५	७|०४
२	बुध	८|३७	१०|३३	१२|४६	१५|०४	१७|२०	१६|३५	२१|५२	००|०६	२|१४	४|००	५|३१	७|००
३	गुरु	८|३४	१०|३०	१२|४३	१५|०१	१७|१७	१६|३२	२१|४६	००|०६	२|११	३|५७	५|२८	६|५७
४	शुक्र	८|३०	१०|२६	१२|३६	१४|५७	१७|१३	१६|२८	२१|४५	००|०२	२|०७	३|५३	५|२४	६|५३
५	शनि	८|२६	१०|२२	१२|३५	१४|५३	१७|०६	१६|२४	२१|४१	२३|५८	२|०३	३|४६	५|२०	६|४६
६	रवि	८|२३	१०|१६	१२|३२	१४|५०	१७|०६	१६|२१	२१|३८	२३|५५	२|००	३|४६	५|१७	६|४६
७	सोम	८|१६	१०|१५	१२|२८	१४|४६	१७|०२	१६|१७	२१|३४	२३|५१	१|५६	३|४२	५|१३	६|४२
८	मंगल	८|१५	१०|११	१२|२४	१४|४२	१६|५८	१६|१३	२१|३०	२३|४७	१|५२	३|३८	५|०६	६|३८
९	बुध	८|११	१०|०७	१२|२०	१४|३८	१६|५४	१६|०६	२१|२६	२३|४३	१|४८	३|३४	५|०५	६|३४
१०	गुरु	८|०८	१०|०४	१२|१७	१४|३५	१६|५१	१६|०६	२१|२३	२३|४०	१|४५	३|३१	५|०२	६|३१
११	शुक्र	८|०४	१०|००	१२|१३	१४|३१	१६|४७	१६|०२	२१|१६	२३|३६	१|४१	३|२७	४|५८	६|२७
१२	शनि	८|००	६|५६	१२|०६	१४|२७	१६|४३	१८|५८	२१|१५	२३|३२	१|३७	३|२३	४|५४	६|२३
१३	रवि	७|५६	६|५२	१२|०५	१४|२३	१६|३६	१८|५४	२१|११	२३|२८	१|३३	३|१६	४|५०	६|१६
१४	सोम	७|५३	६|४६	१२|०२	१४|२०	१६|३६	१८|५१	२१|०८	२३|२५	१|३०	३|१६	४|४७	६|१६
३०	मंगल	७|४६	६|४५	११|५८	१४|१६	१६|३२	१८|४७	२१|०४	२३|२१	१|२६	३|१२	४|४३	६|१२

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मंगल	दि.७:२६-८:५८ दि.१:३३-३:०४।	रा.७:३५-६:०४।
२	बुध	दि.८:५८-१०:३० दि.१२:०२-१:३३।	रा.१२:०२-१:३० रा.२:५८-४:२६।
३	गुरु	दि.३:०५-६:०७।	रा.१२:०१-१:२६ रा.४:२५-५:५३।
४	शुक्र	दि.८:५६-१२:००।	रा.६:०४-१०:३२।
५	शनि	प्र.५:५१-७:२४ दि.१:३३-३:०५ दि.४:३७-६:०६।	सं.६:०६-७:३७ रा.१:२६-२:५७ रा.४:२४-५:२१।
६	रवि	दि.१०:२६-१:३३।	रा.१०:३३-१२:०१ रा.१:२६-२:५७।
७	सोम	दि.७:२३-८:५६ दि.३:०६-४:३८।	रा.१०:३४-१२:०२ रा.२:५६-४:२३।
८	मंगल	दि.७:२२-८:५५ दि.१:३४-३:०७।	रा.७:३६-६:०७।
९	बुध	दि.८:५४-१०:२७ दि.१२:००-१:३३।	रा.१२:००-१:२७ रा.२:५४-४:२१।
१०	गुरु	दि.३:०६-६:१२।	रा.१२:००-१:२७ रा.४:२१-५:४७।
११	शुक्र	दि.८:५५-१२:०१।	रा.६:०७-१०:३४।
१२	शनि	प्र.५:४६-७:२० दि.१:३५-३:०८ दि.४:४१-६:१४।	सं.६:१४-७:४१ रा.१:२८-२:५४ रा.४:२०-५:४५।
१३	रवि	दि.१०:२७-१:३५।	रा.१०:३५-१२:०१ रा.१:२७-२:५३।
१४	सोम	दि.७:१८-८:५२ दि.३:०८-४:४२।	रा.१०:३४-१२:०० रा.२:५२-४:१८।
३०	मंगल	दि.७:१८-८:५२ दि.१:३४-३:०८	रा.७:४२-६:०८।

विविधः-प्रयागे केशवपनफलम्ः किं गयापिंडदानेन काश्यां वा मरणेन किम् । किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानांजाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन-सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्यपीनसकेतवः। केतवः कपटः, पिनसो, मुहुर्नासाश्रावी । रत्नावलीरत्नकलापयोः- प्रागन्यपुंसः पुरतोऽथरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतम् अवश्यमेव वर्जनीयम्। रत्न कलापे- अग्रे क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः पश्चात् क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। शुभक्षुतम्

सर्वशाकुने- औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्। से उत्तम मानल गेल अछि। एहिसँ प्रजापत्यक फल प्राप्त होइत अछि। तेल लगाक आ देह मल-मलक नदी में नहायब मना अछि। अतः नदी सँ बाहर तटपर देह हाथ मलिक नहा लेथि, तखन नदीमें गोता लगावि **मलं प्रक्षालयेत्तीरे ततः स्नानं समाचरेत्।** शास्त्र में एही प्रकारक स्नान क **मलापकर्षण** स्नान कहल गेल अछि। ई स्नान अमन्त्रक होइत अछि। स्नान सँ स्वास्थ्य आ शुद्धता दुनु के लेल उत्तम मानल गेल अछि। प्रथम जलक बाहर ठाढ़ भऽ संकल्प करथि। तन्त्रसँ मृत्तिका लगाय अन्यान्य तीर्थक आवाहन नाभि पर्वन्त जलमे करथि। जलक ऊपर इन्द्राजकश्राप देल ब्रह्महत्या रहैत छथि। एहि हेतु दुनू हाथे जल हिलाकऽ स्नान करी। किन्तु भागीरथी गंगामे अन्य तीर्थक आवाहन नहि करी केवल गंगाजीक प्रार्थना करी। यदि घरमे स्नान करी त पात्रमे जल लऽ पूर्वाभिमुख भऽ जलक प्रार्थना कऽ अन्य तीर्थक आवाहन कऽ संकल्प

३ गुरु वल्ली ८|४०|१७|०५
अयनांशाः २२|५५|०६

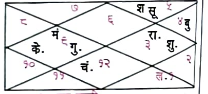

१० गुरु वल्ली ८|४०|१७|१२
अयनांशाः २२|५५|०७

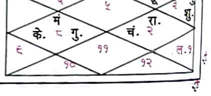

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि द. प.	समा.कालः घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	बुध	५६।५७	रा.४।३४	रेवती	३१।४८	सं.६।३०	ऐन्द्र	०४।१६	किंगस्तुघ्न२७।२६	मीन ३१।४८	सं.६।३०	११।२३।२२।०१	३१।०६	५।४७	६।१३	१७	२४	७
२	गुरु	५४।४०	रा.३।३८	अश्विनी	३१।४४	सं.६।२७	वैधृति	००।३५	बालव २५।४८	मेष	अहोरात्र	११।२४।२१।०६	३१।१०	५।४६	६।१४	१८	२५	८
३	शुक्र	५१।३४	रा.२।२३	भरणी	३०।३१	सं.५।५७	प्रीति	५०।३०	तैतिल २३।०७	मेष ४५।००	रा.११।४५	११।२५।१९।५५	३१।१४	५।४५	६।१५	१९	२६	९
४	शनि	४७।०८	रा.१२।३५	कृत्तिका	२८।३०	दि.५।०८	आयुष्यमान	४४।२२	वर्णिज १९।२१	वृष	अहोरात्र	११।२६।१८।४४	३१।१८	५।४४	६।१६	२०	२७	१०
५	रवि	४२।०८	रा.१०।३५	रोहिणी	२५।३५	दि.३।५८	सौभाग्य	३७।३५	बव १४।३८	वृष ५३।४९	रा.३।१६	११।२७।१७।३३	३१।२२	५।४४	६।१६	२१	२८	११
६	सोम	३६।३८	रा.८।२२	मृगशिरा	२२।०४	दि.२।३३	शोभन	३०।१९	कौलव ९।२३	मिथुन	अहोरात्र	११।२८।१६।२२	३१।२६	५।४३	६।१७	२२	२९	१२
७	मंगल	३०।४५	सं.६।००	आर्द्रा	१८।०८	दि.१२।५७	अतिगण्ड	२२।४५	वर्णिज ३।४१	मिथुन	अहोरात्र	११।२९।१५।११	३१।३०	५।४२	६।१८	२३	३०	१३
८	बुध	२४।४५	दि.३।३४	पुनर्वसु	१४।०२	दि.११।१८	सुकर्मा	१५।०४	बव २४।४५	मिथुन००।०२	प्रा.५।५०	००।००।१४।००	३१।३४	५।४१	६।१९	२४	१	१४
९	गुरु	१८।४२	दि.१।०९	पुष्य	०९।५३	दि.९।३७	धृति	०७।२२	कौलव १८।४२	कर्क	अहोरात्र	००।०१।१२।५०	३१।३८	५।४०	६।२०	२५	२	१५
१०	शुक्र	१२।५५	दि.१०।५०	आश्लेषा	५।५७	दि.८।०३	गण्ड	५२।३८	गर १२।५५	कर्क ५।५७	दि.८।०३	००।०२।११।२३	३१।४२	५।४०	६।२०	२६	३	१६
११	शनि	०७।३३	दि.८।४०	मघा	२।२८	प्रा.६।३८	वृद्धि	४५।५४	भद्रा ७।३३	सिंह	अहोरात्र	००।०३।०९।५६	३१।४६	५।३९	६।२१	२७	४	१७
१२	रवि	०२।४८	प्रा६।४५	उत्तराफाल्गुनी	५७।३२	रा.४।३८	ध्रुव	३९।४९	कौलव २।४८	सिंह १२।११	दि.१०।३०	००।०४।०८।३०	३१।५०	५।३८	६।२२	२८	५	१८
१४	सोम	५५।५७	रा.४।००	हस्त	५६।२०	रा.४।०९	व्याघात	३४।२६	गर २७।२१	कन्या	अहोरात्र	००।०५।०७।०४	३१।५४	५।३७	६।२३	२९	६	१९
१५	मंगल	५४।०६	रा.३।१४	चित्रा	५६।१५	रा.४।०६	हर्षण	२९।५४	भद्रा २५।०१	कन्या२६।१६	दि.४।०६	००।०६।०५।३८	३१।५८	५।३६	६।२४	३०	७	२०

चैत्रशुक्लपक्ष

शक१९४९, संवत् २०८४, सन् १४३४, उत्तरायन,दक्षिण/उत्तरगोल, वसन्त-ऋतु, दक्षिणे कालः, अशुद्धः,खरमासः।

दिनांक ७-२० अप्रैल यावत् सन् २०२७ ई।

७ वसन्तनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गाजपूजनोत्सवः, हिन्दुनववर्षारम्भः २०८४, [illegible] सं.६।३० उपरि। [illegible] रा.४।३४ उपरि। [illegible] सं.६।३० यावत् ततः उत्तरा विनायात्रा रा.४।३४यावत्।❖

८ विष्कुम्भयोगमानं ५५।२३, श्रीरेमन्तपूजा, झूलेलाजयनती, दग्धतिथि द्वितीया रा.३।३८ यावत्। सर्वार्थसिद्धियोगः सं.६।२७ यावत्, शिववासः, अग्निवासः। ❖अमृतयोगः रा.४।३४ यावत् ततः सिद्धियोगः

९ अमृतयोगः रा.२।२३ उपरि। ♍दीक्षाग्रहणं, अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानं, ब्रह्मपुत्रस्नानं,ने.वैशाखस्नानारम्भः,उत्तरगोलारम्भः, खरमाससमाप्तिः शिववासः दि.३।३४ उपरि

१० श्रीगणेश ४ व्रतं, स्वायंभुवमन्वादिः, श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्य नहाय-खाय, सिद्धियोगः रा.१२।३५ यावत् ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.५।०८ उपरि, अग्निवासः। भद्रा १९।२१ उपरि भद्रा ४७।०८ यावत्।

११ श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तं (खरना), मीनावतारः, श्रीरामराज्याभिषेकमहोत्सवः, श्रीपञ्चमी, लक्ष्मीपूजनं, उपनयनं, पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.३।५८ यावत् ततः पश्चिमा विनायात्रा रा.१०।३५ यावत्। अमृतयोगः,शिववासः,अग्निवासः

१२ श्रीसूर्यषष्ठिव्रतं, सायंकालिकार्घदानं, विल्वाभिमन्त्रणं, गजपूजा। पूर्वा विनायात्रा दि.३।३३ यावत्। सिद्धियोगः रा.८।२२ यावत् ततः मृत्युयोगः सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।३३ यावत्, शिववासः

१३ मासान्तः। प्रातःकालिकार्घ्यदानं पारणञ्च, नवपत्रिकाप्रवेशः, निशापूजा, रात्रिजागरणं, सन्धिपूजा,अमृतयोगः,अग्निवासः। भद्रा ३।४१ उपरि ३४।४५ यावत्।

१४ महाष्टमीव्रतं८ व्रतं, अश्विन्यौ मेषे च रविः ३१।२८ सं.६।१७, मु.१५ समासमताकरं, यवदिषुवसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.१२।०० उपरि पुण्याहः, सतुआईन, सोदकगन्धवारिपूर्णघटदान,प्रपाजलान्तिकदानं,वैशाखस्नानारम्भः,♍

१५ शूलयोगमानं ५२।२९ श्रीरामनवमी ९ व्रतं सर्वेषाम्। महानवमी व्रतं, रामावतार, नवम्या हवन, हनुमद्ध्वजदान, [illegible] ←

१६ महानवमीव्रतस्य पारणं। विजयादशमी१०। नवरात्रव्रतपारणं, देवीविर्सजनं, जयन्तीधारण, दीक्षाग्रहणं, नागश्रीसीतारामदर्शन। विवाहः मघायां दि.८।३ उपरि, पूर्व-उत्तर यात्रा मघायां, सिद्धियोगः दि.१०।५० उपरि। भद्रा४०।१४३

१७ पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमानं ५७।०५ कामदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। श्रीविष्णुदोलोत्सवः। उत्तरयात्रा। अमृतयोगः दि.८।४० यावत्, शिववासः दि.८।४० उपरि, अग्निवासः। भद्रा ७।३३ यावत्।

१८ त्रयोदशीतिथिमानं ५६।०५, श्रीविष्णु१२, गोघृतेनपारणं, प्रदोष १३ व्रतं, चैत्रावली, मदन१३ गोष्ठे सत्संगारम्भः,श्रीमदनपूजन,श्रीमहावीरजयन्ती २६२५। द्विरागमन, देवादिप्रतिष्ठा। सिद्धियोगः-अग्निवासः दि.६।४५उपरि,शिववासः।

१९ प्रदोष १४ व्रतं, द्विरागमनं-वधूप्रवेशः पूर्णिमायां, मेषेबुधः १६।०२। भद्रा ५५।५७ उपरि। ← मार्गी गुरु ४२।१७ मृत्युयोगः दि.१।०६६ यावत् ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः-शिववासः दि.१।०६ यावत्, अग्निवासः

२० चैत्रीपूर्णिमा १५ स्नानदानादिः, स्वारोचिष मन्वादिः। हनुमद्ध्वजदा, पूर्व-दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे दि.४।०६ यावत् ततः दक्षिण पश्चिम यात्रा रा.३।१४ यावत्। अग्निवासः। भद्रा २५।०१ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	बुध	३।२५।१७।४७	११।०८।४३।३०	३।२३।४५।२७	१०।२१।४२।५०	११।२१।२५।५४	३।२५।४३।३०	४५।३३
२	गुरु	३।२५।१९।४८	११।१०।३०।५१	३।२३।४३।०१	१०।२२।५६।०६	११।२१।३३।४६	३।२५।४०।१९	४५।३५
३	शुक्र	३।२५।२७।०२	११।१२।२१।१३	३।२३।४२।०६	१०।२४।०९।०९	११।२१।४१।३७	३।२५।३७।०९	४५।३७
४	शनि	३।२५।३४।१६	११।१४।११।३५	३।२३।४१।१०	१०।२५।२२।१२	११।२१।४९।२९	३।२५।३३।५९	४५।३९
५	रवि	३।२५।४१।३०	११।१६।०१।५७	३।२३।४०।१४	१०।२६।३५।१६	११।२१।५७।२१	३।२५।३०।४८	४५।४१
६	सोम	३।२५।४८।४४	११।१७।५२।२०	३।२३।३९।१८	१०।२७।४८।२०	११।२२।०५।१३	३।२५।२७।३७	४५।४३
७	मंगल	३।२५।५५।५८	११।१९।४२।४३	३।२३।३८।२२	१०।२९।०१।२४	११।२२।१३।०५	३।२५।२४।२६	४५।४५
८	बुध	३।२६।०३।१३	११।२१।३३।०६	३।२३।३७।२६	११।००।१४।२८	११।२२।२०।५७	३।२५।२१।१५	४५।४७
९	गुरु	३।२६।१०।२८	११।२३।२३।२९	३।२३।३६।३०	११।०१।२७।३२	११।२२।२८।४९	३।२५।१८।०४	४५।४९
१०	शुक्र	३।२६।२१।५५	११।२५।१६।४१	३।२३।३६।५१मा	११।०२।४०।४२	११।२२।३६।४९	३।२५।१४।५४	४५।५१
११	शनि	३।२६।३३।२२	११।२७।०९।५४	३।२३।३७।१२	११।०३।५३।५२	११।२२।४४।४९	३।२५।११।४४	४५।५३
१२	रवि	३।२६।४४।४९	११।२९।०३।०७	३।२३।३७।३४	११।०५।०७।०२	११।२२।५२।४९	३।२५।०८।३३	४५।५५
१४	सोम	३।२६।५६।१७	००।००।५६।२०	३।२३।३७।५६	११।०६।२०।१२	११।२३।००।४९	३।२५।०५।२२	४५।५७
१५	मंगल	३।२७।०७।४५	००।०२।४९।३३	३।२३।३८।१८	११।०७।३३।२३	११।२३।०८।५०	३।२५।०२।११	४५।५९

वैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	बुध	७।४५	९।४१	११।५४	१४।१२	१६।२८	१८।४३	२१।००	२३।१७	१।२२	३।०८	४।३९	६।०८
२	गुरु	७।४२	९।३८	११।५१	१४।०९	१६।२५	१८।४०	२०।५७	२३।१४	१।१९	३।०५	४।३६	६।०५
३	शुक्र	७।३८	९।३४	११।४७	१४।०५	१६।२१	१८।३६	२०।५३	२३।१०	१।१५	३।०१	४।३२	६।०१
४	शनि	७।३४	९।३०	११।४३	१४।०१	१६।१७	१८।३२	२०।४९	२३।०६	१।११	२।५७	४।२८	५।५७
५	रवि	७।३०	९।२६	११।३९	१३।५७	१६।१३	१८।२८	२०।४५	२३।०२	१।०७	२।५३	४।२४	५।५३
६	सोम	७।२६	९।२२	११।३५	१३।५३	१६।०९	१८।२४	२०।४१	२२।५८	१।०३	२।४९	४।२०	५।४९
७	मंगल	७।२२	९।१८	११।३१	१३।४९	१६।०५	१८।२०	२०।३७	२२।५४	००।५९	२।४५	४।१६	५।४५
८	बुध	७।१९	९।१५	११।२८	१३।४६	१६।०२	१८।१७	२०।३४	२२।५१	००।५६	२।४२	४।१३	५।४२
९	गुरु	७।१५	९।११	११।२४	१३।४२	१५।५८	१८।१३	२०।३०	२२।४७	००।५२	२।३८	४।०९	५।३८
१०	शुक्र	७।१२	९।०८	११।२१	१३।३९	१५।५५	१८।१०	२०।२७	२२।४४	००।४९	२।३५	४।०६	५।३५
११	शनि	७।०८	९।०४	११।१७	१३।३५	१५।५१	१८।०६	२०।२३	२२।४०	००।४५	२।३१	४।०२	५।३१
१२	रवि	७।०४	९।००	११।१३	१३।३१	१५।४७	१८।०२	२०।१९	२२।३६	००।४१	२।२७	३।५८	५।२७
१४	सोम	७।०१	८।५७	११।१०	१३।२८	१५।४४	१७।५९	२०।१६	२२।३३	००।३८	२।२४	३।५५	५।२४
१५	मंगल	६।५७	८।५३	११।०६	१३।२४	१५।४०	१७।५५	२०।१२	२२।२९	००।३४	२।२०	३।५१	५।२०

नैवेद्यक सम्बन्ध :-गीता२,अध्याय१२,श्लोक१३। श्रीकृष्ण भगवान् कहै छथि, जे व्यक्ति हमर देल वस्तु हमरा अर्पण नहि कय स्वतः स्वयं भक्षण करेत छथि से चोर थिकाह। **ईष्टान्भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तान्नप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः।।** यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।। अर्थात् यज्ञसँ शेष बाँचल अन्न खायवाला श्रेष्ठ पुरुष सब पापसँ मुक्त भऽ जाइत छथि। जे पापी अपन शरीर पोषणक हेतु पकबै छथि से पापकेँ भक्षण करैत छथि। **भोजन विधि** :-हस्त-पाद प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कय भोजनक स्थानमे आसनपर बैसि जल लय चतुष्कोन मण्डल करी, तकर मध्यमे परसल अन्न हर्षपूर्वक देखि- ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धावनामासि प्रियन्देवानामन धृष्टन्देवयजन्मसि। ई मन्त्र पढ़ि प्रणाम कय दहिना भागमे जाहि रूपेँ कुलाचार हो तदनुसार नैवेद्य राखि उत्सर्ग करी, बहुत वयक्ति ६ ठाम नैवेद्य राखि- ॐ विष्णवे नमः, ॐ दुर्गादिव्यै नमः, ॐ गणपतये नमः। ॐ इन्द्राय नमः, ॐ चन्द्राय नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ वसुभ्यो नमः। एहि मन्त्रें उत्सर्ग करैत छथि।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	बुध	दि.८:५३-१०:२७ दि.१२:०१-१:३५।	रा.१२:०१-१:२७ रा.२:५३-४:१८।
२	गुरु	दि.३:१०-६:१८।	रा.१२:०२-१:२७ रा.४:१७-५:४१।
३	शुक्र	दि.८:५१-१२:०१।	रा.९:११-१०:३६।
४	शनि	प्रा.५:४०-७:१५ दि.१:३५-३:१० दि.४:४५-६:२०।	सं.६:२०-७:४५ रा.१:२५-२:५० रा.४:१५-५:४०।
५	रवि	दि.१०:२५-१:३५।	रा.१०:३५-१२:०० रा.१:३५-२:५०।
६	सोम	दि.७:१५-८:५१ दि.१:३६-३:११।	रा.१०:३६-१२:०१ रा.२:५१-४:१५।
७	मंगल	दि.७:१४-८:५० दि.१:३७-३:१२।	रा.७:४७-९:१२।
८	बुध	दि.८:४९-१०:२५ दि.१२:०१-१:३७।	रा.१२:०१-१:२५ रा.२:४९-४:१३।
९	गुरु	दि.३:१२-६:२४।	रा.१२:००-१:२४ रा.४:१२-५:३५।
१०	शुक्र	दि.८:४८-१२:००।	रा.९:१२-१०:३६।
११	शनि	प्रा.५:३५-७:१२ दि.१:३७-३:१३ सं.४:३९-६:२५।	सं.६:२५-७:४६ रा.१:२५-२:४९ रा.४:१२-५:३४।
१२	रवि	दि.१०:२५-१:३७।	रा.१०:३७-१२:०१ रा.१:२५-२:४९।
१४	सोम	दि.७:११-८:४८ दि.३:१४-४:५०।	रा.१०:३८-१२:०२ रा.२:४८-४:११।
१५	मंगल	दि.७:१०-८:४७ दि.१:३८-३:१५।	रा.७:५१-९:१५।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। एहि मन्त्रें जलप्राशन कय-ॐ **प्राणाय स्वाहा**, ॐ **अपानाय स्वाहा**, ॐ **व्यानाय स्वाहा**, ॐ **उदानाय स्वाहा**, ॐ **समानाय स्वाहा**। एहि मन्त्रें पंचग्रास कय यथारुचि भोजन कय- ॐ **अमृतापिधानमसि स्वाहा**।। एहि मन्त्रें पुनः जलप्राशन करी। अतः पर उठि विशेष रूपें हस्त ओ मुखक प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कए दहिना पैरक अंगुठाक मन्त

मूलविचारः-रेवती/ अश्विनी - ति.२ गुरु सं.६।२७ यावत्।

आश्लेषा/मघा ति.९ गुरु दि.९।३७ ततः ति.११ शनि प्रा.६।३८ यावत्।

विविधविषयाः-चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावत् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्, सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। **चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः** - त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं **लिंगपुराणे** - अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः।। **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः** ब्रह्मपुत्रमहाभाग शन्तनोः कुलसम्भवः। अमोघागर्भसम्भूत पापं लौहित्य मे हर।। **चैत्रशुक्लनवम्यां** रामनवमीव्रतन्तत्रांगदेवतापूजनपूर्वकं **श्रीरामं** संपूज्यार्घ्यं **दद्यात्मन्त्रः** - दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। **मिथिलामाहात्म्यं बृहद्विष्णुपुराणे** - मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।। **चक्षूरक्षार्थं पठनीयमन्त्रः** - शर्यातिञ्च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।। **होलिकादाहविशेष**-तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्र विवर्जयेत। धृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दै- र्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जलपन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां दाहयेत्। **ध्यानमन्त्रः**-असृग्भयावसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होलि बालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदा भव। ततो 'होलिकायै नमः' इति मन्त्रेण षदोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्।

२ गुरु वल्लो ८।४०।१७।१९ अयनांशा: २२।५५।०८

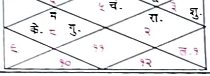

९ गुरु वल्लो ८।४०।१७।२६ अयनांशा: २२।५५।०९

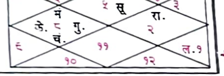

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	बुध	५३।२६	रा.२।५८	स्वाती	५७।२१	राशे.४।३२	वज्र	२६।१८	बालव २३।४६	तुला	अहोरात्र	००।०७।०४।१२	३२।०१	५।३६	६।२४
२	गुरु	५४।०७	रा.३।१४	विशाखा	५९।४७	राशे५।२६	सिद्धि	२३।४३	तैतिल २६।४६	तुला ४४।०६	रा.११।१५	००।०८।०२।४६	३२।०४	५।३५	६।२५
३	शुक्र	५६।१०	रा.४।०३	अनुराधा	६०।००	अहोरात्र	व्यतीपात	२२।०७	वर्णिज २५।०८	वृश्चिक	अहोरात्र	००।०९।०१।०४	३२।०७	५।३५	६।२५
४	शनि	५९।१६	राशे५।१६	अनुराधा	०३।२७	प्रा.६।५६	वरीयान्	२१।३०	बव २७।४५	वृश्चिक	अहोरात्र	००।०९।५९।२२	३२।१०	५।३४	६।२६
५	रवि	६०।००	अहोरात्र	ज्येष्ठा	८।१३	दि.८।५०	परिघ	२१।४६	कौलव ३१।२१	वृश्चिक८।१३	दि.८।५०	००।१०।५७।४०	३२।१३	५।३३	६।२७
५	सोम	०३।२७	प्रा.६।५६	मूल	१३।५५	दि.११।०७	शिव	२२।४२	तैतिल ३।२७	धनु	अहोरात्र	००।११।५५।५८	३२।१६	५।३३	६।२७
६	मंगल	०८।१९	दि.८।५२	पूर्वाषाढा	२०।१४	दि.१।३७	सिद्ध	२४।०७	वर्णिज ८।१९	धनु ३६।५३	रा.८।१७	००।१२।५४।१६	३२।१९	५।३२	६।२८
७	बुध	१३।३२	दि१०।५६	उत्तराषाढा	२६।५१	दि.४।१६	साध्य	२५।४३	बव १३।३२	मकर	अहोरात्र	००।१३।५२।३४	३२।२२	५।३२	६।२८
८	गुरु	१८।३६	दि.१२।५७	श्रवण	३३।१६	सं.६।४९	शुभ	२७।११	कौलव १८।३६	मकर	अहोरात्र	००।१४।५०।५३	३२।२५	५।३१	६।२९
९	शुक्र	२३।०८	दि.२।४५	धनिष्ठा	३९।०७	रा.९।०८	शुक्ल	२८।१३	गर २३।०८	मकर ६।१२	दि.७।५९	००।१५।४८।५६	३२।२८	५।३०	६।३०
१०	शनि	२६।५४	दि.४।१५	शतभिषा	४४।०७	रा.११।०८	ब्रह्म	२८।३७	भद्रा २६।५४	कुम्भ	अहोरात्र	००।१६।४६।५६	३२।३२	५।३०	६।३०
११	रवि	२९।२८	सं.५।१६	पूर्वाभाद्रपद	४८।००	रा.१२।४१	ऐन्द्र	२८।०७	बालव २९।२८	कुम्भ ३२।१	सं.६।१७	००।१७।४५।०२	३२।३६	५।२९	६।३१
१२	सोम	३०।५७	सं.५।५०	उत्तराभाद्रपद	५०।४२	रा.१।४४	वैधृति	२६।४६	कौलव ००।१२	मीन	अहोरात्र	००।१८।४३।०५	३२।३९	५।२८	६।३२
१३	मंगल	३१।०५	सं.५।५४	रेवती	५२।०६	रा.२।१८	विष्कुम्भ	२४।२१	गर ०१।०१	मीन ५२।०६	रा.२।१८	००।१९।४१।०८	३२।४२	५।२८	६।३२
१४	बुध	२९।५८	सं.५।२६	अश्विनी	५२।१७	रा.२।२१	प्रीति	२०।५६	भद्रा ००।३१	मेष	अहोरात्र	००।२०।३९।११	३२।४५	५।२७	६।३३
३०	गुरु	२७।३८	दि.४।२६	भरणी	५१।१७	रा.१।५६	आयुष्मान	१६।३५	नाग २७।३८	मेष	अहोरात्र	००।२१।३७।१५	३२।४८	५।२६	६।३४

वैशाखकृष्णपक्ष

शक१९४९, संवत् २०८४, सन् १४३४, उत्तरायनं,उत्तरगोलः, वसन्त-ऋतुः, दक्षिण कालः:, शुद्धः,। अजय मित्र

दिनांक २१ अप्रैल तः ६ मई यावत् सन् २०२७ ई।

दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
१	८	२१	वैशाखे तैलं त्यजेत्। वैशाखे कौशिकी स्नानं महापुण्यप्रदं, विवाहः-द्विरागमनं स्वात्यां, दक्षिण-पश्चिमयात्रा। अमृतयोगः रा.२।५८ यावत्, शिववासः।
२	९	२२	अग्निवासः, पश्चिम-उत्तरयात्रा अनुराधायां।
३	१०	२३	विवाहः-द्विरागमनं-वधूप्रवेशः तृतीयायां रा.४।०३ यावत्। गृहारम्भः, उत्तरयात्रा। सर्वार्थसिद्धियोगः अहोरात्र। भद्रा २५।०८ उपरि भद्रा ५६।१० यावत्।
४	११	२४	वक्रतुण्ड ४ व्रतं, सिद्धिंयोगः, राज्यप्रदयोगः, शिववासः, अग्निवासः
५	१२	२५	विवाहः-द्विरागमनं मूले दि.८।५० उपरि, उत्तरयात्रा, दक्षिणयात्रा दि.८।५० उपरि। अमृतयोगः, शिववासः, अमृतयोगः प्रा.६।५६ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः प्रा.६।५६ यावत्, अग्निवासः
६	१३	२६	द्विरागमनं-उत्तरयात्रा पञ्चम्यां प्रा.६।५६ यावत्। दग्धतिथि षष्ठी प्रा.६।५६ उपरि।
७	१४	२७	कोकिलाषष्ठी, दग्धतिथि षष्ठी दि.८।५२ यावत्। मृत्युयोगः दि. ८।५२ यावत् ततः अमृतयोगः। भद्रा ८।१९ उपरि भद्रा ४०।५५ यावत्। ❁शिववासः दि.१२।५७ यावत्
८	१५	२८	विवाहः उत्तराषाढ़ायां श्रवण वेधात् वेवाहो नेव, उत्तरां विनायात्रा श्रवणे दि.४।१६ उपरि। भरणीसु रविः १२।३७ दि.१०।३५, सर्करा सप्तमी, मेषादित्ये निम्वपत्रद्वययुतमसूर वीजपानं।❖
९	१६	२९	श्रीशीतलाष्टमी व्रत, पञ्चकारम्भः(भदवा) सं.६।४९ उपरि। श्रवण वेधात् वेवाहो नेव, दक्षिणां विनायात्रा अष्टम्यां दि.१२।५७ यावत्। पूर्वोदितः शनि ६।५६, अमृतयोगः दि.१२।५७ यावत्❁
१०	१७	३०	अमृतयोगः दि.२।४५ यावत्, अग्निवासः। भद्रा ५५।०१ उपरि। ❖ सिद्धियोगः दि.१०।५६ यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः दि.१०।५३ उपरि, अग्निवासः
११	१८	१	मई ५। श्रमिक दिवसः। मृत्युयोगः दि.४।१५ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः दि.४।१५ उपरि । भद्रा २६।५४ यावत्।
१२	१९	२	बरूथिनी ११ व्रतं सर्वेषाम्। विवाहः उत्तराभाद्रपदायां रा.१२।४१ उपरि। मृत्युयोगः सं.५।१६ यावत्, शिववासः, अग्निवासः सं.५।१६ यावत्
१३	२०	३	कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः दिवारात्रौ, मृत्युयोगः सं.५।५० यावत्, शिववासः सं.५।५० यावत् ततः अग्निवासः
१४	२१	४	प्रदोष १४ व्रतं,पञ्चक(भदवा)समाप्तिः रा.२।१८ उपरि। पश्चिमयात्रा, सिद्धियोगः सं.५।५३ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, अग्निवासः सं.५।५३ यावत्। भद्रा ३१।०५ उपरि।
१५	२२	५	शिववासः -अग्निवासः सं.५।५३ उपरि, पश्चिमोदित बुधः २६।५०। भद्रा ००।३१ यावत्।
१६	२३	६	वैशाखी अमावस्या ३०, स्नानदानश्राद्धादौ, शिववासः दि.४।२६ यावत्,_ अग्निवासः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	बुध	३।२७।१६।१३	००।०४।४२।४६	३।२३।३८।४०	११।०८।४६।३४	११।२३।१६।५१	३।२५।५६।००	४६।०१
२	गुरु	३।२७।३०।४१	००।०६।३५।५६	३।२३।३९।०२	११।०९।५९।४५	११।२३।२४।५२	३।२४।५५।४६	४६।०३
३	शुक्र	३।२७।४६।०३	००।०८।२७।५८	३।२३।४०।४३	११।११।१३।०२	११।२३।३२।५२	३।२४।५२।३६	४६।०४
४	शनि	३।२८।०१।२६	००।१०।१९।५७	३।२३।४२।२४	११।१२।२६।१६	११।२३।४०।५२	३।२४।४९।२६	४६।०५
५	रवि	३।२८।१६।४९	००।१२।११।५७	३।२३।४४।०६	११।१३।३९।३६	११।२३।४८।५२	३।२४।४६।१८	४६।०६
५	सोम	३।२८।३२।१२	००।१४।०३।५७	३।२३।४५।४८	११।१४।५२।५३	११।२३।५६।५२	३।२४।४३।०७	४६।०७
६	मंगल	३।२८।४७।३५	००।१५।५५।५७	३।२३।४७।०३	११।१६।०६।१०	११।२४।०४।५३	३।२४।३९।५६	४६।०८
७	बुध	३।२९।०२।५८	००।१७।४७।५७	३।२३।४९।१२	११।१७।१९।२७	११।२४।१२।५४	३।२४।३६।४५	४६।१०
८	गुरु	३।२९।१८।२१	००।१९।३९।५७	३।२३।५०।५४	११।१८।३२।४४	११।२४।२०।५५	३।२४।३३।३४	४६।१२
९	शुक्र	३।२९।३३।४५	००।२१।२९।५९	३।२३।५४।०६	११।१९।४५।५५	११।२४।२८।५६	३।२४।३०।२४	४६।१४
१०	शनि	३।२९।५५।०९	००।२३।२०।०१	३।२३।५७।१८	११।२०।५९।०६	११।२४।३५।४४	३।२४।२७।१४	४६।१६
११	रवि	४।००।१३।३३	००।२५।१०।०३	३।२४।००।३०	११।२२।१२।१८	११।२४।४३।०६	३।२४।२४।०३	४६।१८
१२	सोम	४।००।३१।५७	००।२७।००।०५	३।२४।०३।४३	११।२३।२५।३०	११।२४।५०।३४	३।२४।२०।५२	४६।२०
१३	मंगल	४।००।५०।२१	००।२८।५०।०७	३।२४।०६।५६	११।२४।३८।४२	११।२४।५७।५६	३।२४।१७।४१	४६।२२
१४	बुध	४।०१।०८।४५	०१।००।४०।१०	३।२४।१०।०६	११।२५।५१।५४	११।२५।०५।२४	३।२४।१४।३०	४६।२४
३०	गुरु	४।०१।२७।१०	०१।०२।३०।१३	३।२४।१३।२२	११।२७।०५।०५	११।२५।१२।४६	३।२४।११।१९	४६।२५

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	बुध	६।५२	८।४६	११।०२	१३।२०	१५।३६	१७।५१	२०।०८	२२।२५	००।३०	२।१६	३।४७	५।१६
२	गुरु	६।४९	८।४५	१०।५८	१३।१६	१५।३२	१७।४७	२०।०४	२२।२१	००।२६	२।१२	३।४३	५।१२
३	शुक्र	६।४६	८।४२	१०।५५	१३।१३	१५।२९	१७।४४	२०।०१	२२।१८	००।२३	२।०९	३।४०	५।०९
४	शनि	६।४२	८।३८	१०।५१	१३।०९	१५।२५	१७।४०	१९।५७	२२।१४	००।१९	२।०५	३।३६	५।०५
५	रवि	६।३८	८।३४	१०।४७	१३।०५	१५।२१	१७।३६	१९।५३	२२।१०	००।१५	२।०१	३।३२	५।०१
५	सोम	६।३४	८।३०	१०।४३	१३।०१	१५।१७	१७।३२	१९।४९	२२।०६	००।११	१।५७	३।२८	४।५७
६	मंगल	६।३१	८।२७	१०।४०	१२।५८	१५।१४	१७।२९	१९।४६	२२।०३	००।०८	१।५४	३।२५	४।५४
७	बुध	६।२७	८।२३	१०।३६	१२।५४	१५।१०	१७।२५	१९।४२	२१।५९	००।०४	१।५०	३।२१	४।५०
८	गुरु	६।२३	८।१९	१०।३२	१२।५०	१५।०६	१७।२१	१९।३८	२१।५५	००।००	१।४६	३।१७	४।४६
९	शुक्र	६।१९	८।१५	१०।२८	१२।४६	१५।०२	१७।१७	१९।३४	२१।५१	२३।५६	१।४२	३।१३	४।४२
१०	शनि	६।१६	८।१२	१०।२५	१२।४३	१४।५९	१७।१४	१९।३१	२१।४८	२३।५३	१।३९	३।१०	४।३९
११	रवि	६।१२	८।०८	१०।२१	१२।३९	१४।५५	१७।१०	१९।२७	२१।४४	२३।४९	१।३५	३।०६	४।३५
१२	सोम	६।०८	८।०४	१०।१७	१२।३५	१४।५१	१७।०६	१९।२३	२१।४०	२३।४५	१।३१	३।०२	४।३१
१३	मंगल	६।०४	८।००	१०।१३	१२।३१	१४।४७	१७।०२	१९।१९	२१।३६	२३।४१	१।२७	२।५८	४।२७
१४	बुध	६।००	७।५६	१०।०९	१२।२७	१४।४३	१६।५८	१९।१५	२१।३२	२३।३७	१।२३	२।५४	४।२३
३०	गुरु	५।५७	७।५३	१०।०६	१२।२४	१४।४०	१६।५५	१९।१२	२१।२९	२३।३४	१।२०	२।५१	४।२१

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल ति.४ शनि प्रा.६।५६ तः ति.५ सोम दि.११।०७ यावत्। रेवती/ अश्विनी - ति.१२ सोम रा.१।४४ तः ति.१४ बुध रा.२।२१ यावत्।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	बुध	दि.८:४७-१०:२४ ।दि.१२:०१-१:३८।	रा.१२:०१-१:२४ ।रा.२:४७-४:१०
२	गुरु	दि.३:१४-६:२८।	रा.१२:००-१:२३ ।रा.४:०६-५:३२।
३	शुक्र	दि.८:५७-१२:०१।	रा.६:१५-१०:३८।
४	शनि	प्रा.५:३१-७:०६ ।दि.१:३८-३:१५ सं.४:५२-६:२६।	सं.६:२६-७:५२ ।रा.१:२४-२:४७ ।रा.४:०६-५:३०।
५	रवि	दि.१०:२४-१:३६।	रा.१०:३६-१२:०२ ।रा.१:२४-२:४६।
५	सोम	दि.७:०८-८:४६ ।दि.३:१६-४:५३।	रा.१०:३६-१२:०२ ।रा.२:४६-४:०८।
६	मंगल	दि.७:०७-८:४५ ।दि.१:३६-३:१७।	रा.७:४४-६:०७।
७	बुध	दि.८:४४-१०:२२ ।दि.१२:००-१:३८।	रा.१२:००-१:२२ ।रा.२:४४-४:०६।
८	गुरु	दि.३:१६-६:३२।	रा.१२:००-१:२२ ।रा.४:०६-५:२७।
९	शुक्र	दि.८:४५-१२:०१।	रा.६:१७-१०:३६।
१०	शनि	प्रा.५:२६-७:०५ दि.१:४०-३:१८ ।सं.४:५६-६:३४	सं.६:३४-७:५६ ।रा.१:२३-२:४४ ।रा.४:०५-५:२५।
११	रवि	दि.१०:२३-१:४०।	रा.१०:४०-१२:०२ ।रा.१:२३-२:४४।
१२	सोम	दि.७:०४-८:४३ ।दि.३:१९-४:५७।	रा.१०:४०-१२:०१ ।रा.२:४३-४:०४।
१३	मंगल	दि.७:०३-८:४२ ।दि.१:३६-३:१८।	रा.७:५७-६:१८।
१४	बुध	दि.८:४२-१०:२१ ।दि.१२:००-१:३६।	रा.१२:००-१:२१ ।रा.२:४२-४:०३।
३०	गुरु	दि.३:१९-६:३७।	रा.१२:०१-१:२२ ।रा.४:०३-५:२२।

-वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः-वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।।

विविधविषयाः प्रातःस्नानसमयः -उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।।
वैशाखे त्याज्यवस्तूनि-कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुनम्।।
वैशाखे दानवस्तूनि - प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्।। जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च।। **तिथितत्त्वे** - ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते।।
मासविशेषे स्नानम्-कौशिकीं माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्तिके यामुनीं तथा।। भूमसीं गैरिकां चैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा।। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुने मता। इक्षुवतीं तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।। वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः।। गंगा तु सर्वदेति।

२ गुरु वल्ली ८।४०।१७।३३
अयनांशाः २२।५५।१०

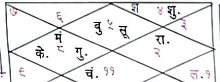

८ गुरु वल्ली ८।४०।१७।४०
अयनांशाः २२।५५।११

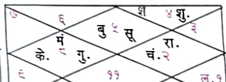

३० गुरु वल्ली ८।४०।१७।४७
अयनांशाः २२।५५।१२

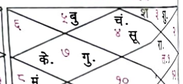

वैशाखशुक्लपक्ष

शक१९४९, संवत् २०८४, सन् १४३४, उत्तरायण,उत्तरगोलः, वसन्त/ग्रीष्म-ऋतुः, दक्षिण/पश्चिम कालः, शुद्धः,।
दिनांक ७-२० मई यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमान द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	शुक्र	२४।१४	दि.३।०७	कृत्तिका	४६।२५	रा.१।१२	सौभाग्य	११।२३	बव २४।१४	मेष ५।४६	दि.७।४५	००।२२।३५।०६	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२४	७
२	शनि	१६।५६	दि.१।२४	रोहिणी	४६।३६	रा.१२।०४	शोभन	०५।२६	कौलव १६।५६	वृष	अहोरात्र	००।२३।३२।५७	३२।५४	५।२५	६।३५	१८	२५	८
३	रवि	१४।५६	दि.११।२२	मृगशिरा	४०।१४	रा.६।२६	सुकर्मा	५१।४२	गर १४।५६	वृष १३।२५	दि.१०।४७	००।२४।३०।४६	३२।५८	५।२४	६।३६	१९	२६	९
४	सोम	०६।२१	दि.६।०८	आर्द्रा	३६।२३	रा.६।०६	धृति	४४।१६	भद्रा ६।२१	मिथुन	अहोरात्र	००।२५।२८।४१	३३।०१	५।२४	६।३६	२०	२७	१०
५	मंगल	०३।२५	प्रा६।४५	पुनर्वसु	३५।१७	रा.७।२६	शूल	३६।४०	बालव ३।२५	मिथुन२१।१७	दि.१।५४	००।२६।२६।३३	३३।०४	५।२३	६।३७	२१	२८	११
७	बुध	५१।१४	रा.१।५२	पुष्य	३१।१६	सं.५।५३	गण्ड	२६।००	गर २४।१६	कर्क	अहोरात्र	००।२७।२४।२५	३३।०७	५।२३	६।३७	२२	२९	१२
८	गुरु	४५।२२	रा.११।३०	आश्लेषा	२७।०६	दि.४।१२	वृद्धि	२१।२८	भद्रा १८।०८	कर्क २७।६	दि.४।१२	००।२८।२२।१७	३३।१०	५।२२	६।३८	२३	३०	१३
९	शुक्र	३९।५४	रा.९।१८	मघा	२३।३०	दि.२।४५	ध्रुव	१४।१४	बालव १४।३८	सिंह	अहोरात्र	००।२९।१९।५४	३३।१३	५।२१	६।३९	२४	३१	१४
१०	शनि	३५।०४	रा.७।२२	पूर्वाफाल्गुनी	२०।२७	दि.१।३१	व्याघात	०७।२७	तैतिल ७।२९	सिंह ३४।५३	सं.७।१८	१।००।१७।३१	३३।१६	५।२१	६।३९	२५	१	१५
११	रवि	३१।०४	सं.५।४५	उत्तराफाल्गुनी	१८।१४	दि.१२।३७	हर्षण	०१।१८	वर्णिज ३।०४	कन्या	अहोरात्र	१।०१।१५।०८	३३।१९	५।२०	६।४०	२६	२	१६
१२	सोम	२८।०२	दि.४।३२	हस्त	१६।४८	दि.१२।०३	सिद्धि	५१।०७	बालव २८।०२	कन्या४६।३८	रा.१।१९	१।०२।१२।४६	३३।२२	५।२०	६।४०	२७	३	१७
१३	मंगल	२६।०४	दि.३।४४	चित्रा	१६।२८	दि.११।५४	व्यतीपात	४७।२२	तैतिल २६।०४	तुला	अहोरात्र	१।०३।१०।२४	३३।२५	५।१९	६।४१	२८	४	१८
१४	बुध	२५।१९	दि.३।२५	स्वाती	१७।२१	दि.१२।१४	वरीयान्	४४।३७	वर्णिज २५।१९	तुला	अहोरात्र	१।०४।०८।०२	३३।२८	५।१८	६।४२	२९	५	१९
१५	गुरु	२५।५२	दि.३।३८	विशाखा	१९।२८	दि.१।०५	परिघ	४२।५४	बव २५।५२	तुला ३।५४	दि.८।१५	१।०५।०५।४०	३३।३१	५।१८	६।४२	३०	६	२०

चन्द्रदर्शनम्। शिवाजीजयन्ती, विवाहः रोहिण्यां रा.१।१२ उपरि। सिद्धियोगः दि.३।०७ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः दि.३।०७ यावत् ततः शिववासः

अतिगण्डयोगमानं ५३।२४, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां रा.१२।०४ यावत् ततः पूर्वा दिनायात्रा। सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः दि.१।२४ यावत् ततः अग्निवासः

विवाहः-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा तृतीयायां, अक्षयतृतीया, गंगास्नानादि, त्रेतायुगादि, परशुरामजयन्ती [illegible] षण्मासिक रविव्रतविसर्गः अत्र उशरी(कतरा)चन्दनेन पूजनं।❖

गृहप्रवेशः-द्विरागमनं-वधूप्रवेशः पुनर्वसौ, उपनयनं पञ्चम्यां, दक्षिण-पश्चिम यात्रा पुनर्वसौ। अमृतयोगः दि.६।०८ उपरि, शिववासः दि.६।०८ उपरि, अग्निवासः। भद्रा ६।२१ यावत्।

षष्ठीतिथिमानं ५३।५४ रा.२।५६, दग्धतिथि षष्ठी प्रा.६।४५ उपरि तः रा.२।५६ यावत्। मृत्युयोगः प्रा.६।४५ उपरि, शिववासः।

जाह्नवी सप्तमी, द्विरागमनं-गृहप्रवेशः पुष्ये, मुण्डनं, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, कृतिकासु रविः ००।२६ प्रा.५।३५, उत्तरां दिनायात्रा पुष्ये सं.५।५३ यावत्। सिद्धियोगः,अग्निवासः। भद्रा ५१।१४उ.।

विवाहः मघायां अष्टम्यां च दि.४।१२ तः रा.११।३० यावत्। अमृतयोगः। भद्रा १८।१८ यावत्। ❖ पश्चिमां दिनायात्रा। सिद्धियोगः दि.११।२२ यावत्। भद्रा ४२।०८ उपरि।

जानकी नवमी, मैथिली दिवसः, हनुमद्ध्वजदानं, दीक्षाग्रहणं, भूगर्भाज्जगज्जनन्याः जानक्याः प्रादुर्भावः, [illegible]। मासान्तः। अमृतयोगः, शिववासः, अग्निवासः

जानकीनवमी व्रतस्य पारणं, वृषे रविः २८।२२ दि.४।४२ मु.३० फलं साम्यं, विष्णुपदीसंक्रान्ति पुण्यकालो दि.१२।०० उपरि पुण्याहः, वैशाखस्नान समाप्तिः,ने.ज्येष्ठमासारम्भः,🡐

वज्रयोगमानं ५४।२९, मोहिनी एकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। मासादिः। मृत्युयोगः सं.५।४५ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।३७ उपरि, शिववासः सं.५।४५ उपरि। भद्रा ३।८ तः ३१।८ यावत्।

मधुसूदन १२, कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः दिवारात्रौ, मुण्डनं त्रयोदश्यां, देवादिप्रतिष्ठा गृहप्रवेशः गृहारम्भः हस्ते दि.१२।०३ यावत् ततः चक्र-अशुद्धिः, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां,♍

प्रदोष १४ व्रतं, दक्षिण-पश्चिमयात्रा त्रयोदश्यां। सिद्धियोगः दि.३।४४ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, शिववासः दि.३।४४ यावत्। 🡐ग्रीष्मऋतुः,पश्चिमे कालः । मृत्युयोगः

नरसिंहावतारः, नरसिंह १४ व्रत्, अग्निवासः। भद्रा २५।१९ उपरि भद्रा ५५।३५ यावत्। ♍ पश्चिमयात्रा तुलास्थे चन्द्रे रा.१।१९ उपरि। मृत्युयोगः दि.४।३२ यावत्, शिववासः, अग्निवासः

वैशाखी पूर्णिमा स्नानदानादिः। विवाहः अनुराधायां । गृहारम्भः पूर्णिमायां अनुराधायां च दि.१।०५ तः दि.३।३८ यावत्। सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।०५ उपरि, शिववासः दि.३।३८ उपरि

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	शुक्र	४।०१।४८।४६	०१।०४।१०।१५	३।२४।१७।५२	११।२८।१८।३०	११।२५।२०।००	३।२४।०८।०६	४६।२६
२	शनि	४।०२।१०।२२	०१।०५।५०।१७	३।२४।२२।२२	११।२९।३१।५५	११।२५।२७।११	३।२४।०४।५९	४६।२७
३	रवि	४।०२।३१।५८	०१।०७।३०।१९	३।२४।२६।५२	००।००।४५।२०	११।२५।३४।२२	३।२४।०१।४८	४६।२९
४	सोम	४।०२।५३।३४	०१।०९।१०।२१	३।२४।३१।२२	००।०१।५८।४६	११।२५।४१।३३	३।२३।५८।३७	४६।३१
५	मंगल	४।०३।१५।११	०१।१०।५०।२३	३।२४।३५।५२	००।०३।१२।१२	११।२५।४८।४४	३।२३।५५।२६	४६।३३
७	बुध	४।०३।३६।४८	०१।१२।३०।२५	३।२४।४०।२२	००।०४।२५।३८	११।२५।५५।५६	३।२३।५२।१५	४६।३५
८	गुरु	४।०३।५८।२५	०१।१४।१०।२७	३।२४।४४।५३	००।०५।३९।०४	११।२६।०३।०८	३।२३।४९।०३	४६।३६
९	शुक्र	४।०४।२२।०१	१।१५।४०।०५	३।२४।५०।११	००।०६।४२।३९	११।२६।१०।१०	३।२३।४५।५३	४६।३७
१०	शनि	४।०४।४५।३७	१।१७।०९।४३	३।२४।५५।२९	००।०८।०६।१४	११।२६।१७।१२	३।२३।४२।४३	४६।३८
११	रवि	४।०५।०९।१३	१।१८।३९।२१	३।२५।००।४७	००।०९।१९।४९	११।२६।२४।१४	३।२३।३९।३२	४६।४०
१२	सोम	४।०५।३२।५०	१।२०।०८।५९	३।२५।०६।०६	००।१०।३३।२४	११।२६।३१।१६	३।२३।३६।२१	४६।४२
१३	मंगल	४।०५।५६।२७	१।२१।३८।३७	३।२५।११।२५	००।११।४६।५९	११।२६।३८।१९	३।२३।३३।१०	४६।४४
१४	बुध	४।०६।२०।०४	१।२३।०८।१५	३।२५।१६।४४	००।१३।००।३४	११।२६।४५।२२	३।२३।२९।५९	४६।४५
१५	गुरु	४।०६।४३।४१	१।२४।३७।५३	३।२५।२२।०५	००।१४।१४।०९	११।२६।५२।२५	३।२३।२६।४८	४६।४६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
५।५३	७।४९	१०।०२	१२।२०	१४।३६	१६।५१	१९।०८	२१।२५	२३।३०	१।१६	२।४७	४।१६
५।४९	७।४५	९।५८	१२।१६	१४।३२	१६।४७	१९।०४	२१।२१	२३।२६	१।१२	२।४३	४।१२
५।४५	७।४१	९।५४	१२।१२	१४।२८	१६।४३	१९।००	२१।१७	२३।२२	१।०८	२।३९	४।०८
५।४१	७।३७	९।५०	१२।०८	१४।२४	१६।३९	१८।५६	२१।१३	२३।१८	१।०४	२।३५	४।०४
५।३८	७।३४	९।४७	१२।०५	१४।२१	१६।३६	१८।५३	२१।१०	२३।१५	१।०१	२।३२	४।०१
५।३४	७।३०	९।४३	१२।०१	१४।१७	१६।३२	१८।४९	२१।०६	२३।११	००।५७	२।२८	३।५७
५।३०	७।२६	९।३९	११।५७	१४।१३	१६।२८	१८।४५	२१।०२	२३।०७	००।५३	२।२४	३।५३
५।२६	७।२२	९।३५	११।५३	१४।०९	१६।२४	१८।४१	२०।५८	२३।०३	००।४९	२।२०	३।४९
५।२२	७।१८	९।३१	११।४९	१४।०५	१६।२०	१८।३७	२०।५४	२२।५९	००।४५	२।१६	३।४५
५।१८	७।१४	९।२७	११।४५	१४।०१	१६।१६	१८।३३	२०।५०	२२।५५	००।४१	२।१२	३।४१
५।१४	७।१०	९।२३	११।४१	१३।५७	१६।१२	१८।२९	२०।४६	२२।५१	००।३७	२।०८	३।३७
५।१०	७।०६	९।१९	११।३७	१३।५३	१६।०८	१८।२५	२०।४२	२२।४७	००।३३	२।०४	३।३३
५।०६	७।०२	९।१५	११।३३	१३।४९	१६।०४	१८।२१	२०।३८	२२।४३	००।२९	२।००	३।२९
५।०२	६।५८	९।११	११।२९	१३।४५	१६।००	१८।१७	२०।३४	२२।३९	००।२५	१।५६	३।२५

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शुक्र	दि.८:४३-१२:०१।	रा.९:१९-१०:४०।
२	शनि	प्र.५:२२-७:०२ दि.१:४१-३:१० सं.४:५९-६:३८।	सं.६:३८-७:५९ रा.१:२२-२:४२ रा.४:०२-५:२१।
३	रवि	दि.१०:२१-१:४१।	रा.१०:४१-१२:०१ रा.१:२१-२:४१।
४	सोम	दि.७:०१-८:४१ दि.३:२१-५:००।	रा.१०:४१-१२:०१ रा.२:४१-४:०१।
५	मंगल	दि.७:००-८:४० दि.१:४०-३:२०।	रा.८:००-९:२०।
७	बुध	दि.८:४०-१०:२० दि.१२:००-१:४०।	रा.१२:००-१:२० रा.२:४०-४:००।
८	गुरु	दि.३:२१-६:४१।	रा.१२:०१-१:२१ रा.४:००-५:१८।
९	शुक्र	दि.८:४०-१२:०२।	रा.९:२२-१०:४२।
१०	शनि	प्र.५:१८-६:५९ दि.१:४२-३:२२ सं.५:०२-६:४२।	सं.६:४२-८:०२ रा.१:२१-२:४० रा.३:५९-५:१७।
११	रवि	दि.१०:२०-१:४२।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.१:२०-२:३९।
१२	सोम	दि.६:५८-८:३९ दि.३:२३-५:०३।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.२:३९-३:५८।
१३	मंगल	दि.६:५७-८:३८ दि.१:४१-३:२२।	रा.८:०३-९:२२।
१४	बुध	दि.८:३८-१०:१९ दि.१२:००-१:४१।	रा.१२:००-१:१९ रा.२:३८-३:५७।
१५	गुरु	दि.३:२२-६:४४।	रा.१२:००-१:१९ रा.३:५७-५:१५।

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.७ बुध सं.५।५३ तः ति.९ शुक्र दि.२।४५ यावत्।

विविधः-परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः-जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। जानकीनवमीव्रतम्, वृहद्विष्णुपुराणे - वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु मघायुता। सैव मध्याह्नयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि।। तत्र जानकीं सम्पूज्य प्रणमेत्तन्मन्त्रः-दशाननविनाशाय जाता धरणिसम्भवा। मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता।। वैशाखे त्याज्य वस्तुनिः- कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने। वैशाखेदान वस्तूनि-प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद् व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथा पुपग्रहाणि च । तिथितत्वेः- ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनंबुघटान्वितान् पितुउदिस्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते मूलवासः-स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यध स्तात्तु तपस्यमार्ग वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। अभुक्तमूलविचारः- अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात्। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण, यतो हि-मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः । सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। मूलवृक्षविचारः-मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपूला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। त्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।

८ गुरु वल्ली
८।४०।१७।५४
अयनांशाः
२२।५५।१३

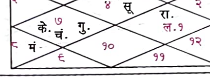

१५ गुरु वल्ली
८।४०।१८।०१
अयनांशाः २२।५५।१४

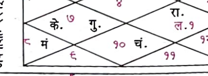

• **स्नान विशेषः-** प्रातःकाल स्नानक पश्चात् मनुष्य शुद्ध भऽ जप, पूजा-पाठ आदि समस्त कार्यक योग्य बनैत छथि तै प्रातः स्नानक प्रशंसा कयल जाइत अछि। **प्रातः स्नानं प्रशंसन्ति दृष्टादृष्टकरं हि तत्। सर्वमर्हति शुद्धात्मा प्रातः स्नायी जपादिकम्।** मनुष्यक शरीरमे नव छिद्र होइत अछि ओ रातिमे शयन कैलासँ अपवित्र भऽ जाइत अछि। एहि हेतु सूर्योदयसँ पूर्व उठि मल-मूत्र त्याग कैल वस्त्र बदलि गंगादि तीर्थमे स्नान करी। **अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः। स्रवत्येष दिवारात्रौ प्रातः स्नानं विशोधनम्।।** प्रातःकाल स्नान करवला मनुष्यक लग दुष्ट(भूत-प्रेत आदि) नै अवैत अछि। दृष्टफल- शरीरक स्वच्छता आ अदृष्टफल-पापक नाश तथा पुण्य प्राप्ति। ई दू प्रकारक फल मिलैत अछि। तैं प्रातः स्नान करवाक चाहि। **प्रातः स्नानं चरित्वाथ शुद्धे तीर्थे विशेषतः। प्रातः स्नानाद्यतः शुद्ध्येत् कायोऽयं मलिनः सदा।। नोपसर्पन्ति वै दुष्टाः प्रातः स्नायिजनं क्वचित्। दृष्टादृष्टफलं तस्मात् प्रातःस्नानं समाचरेत्।।** रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयु, आरोग्य, निर्लोभता, दुःस्वप्नक नाश, तप आ मेधा ई दस गुण नित्य स्नान करवला व्यक्तिक प्राप्त होइत अछि। **गुणा दश स्नानपरस्य साधो ! रूपं च तेजश्च बलं च शौचम्। आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च तपश्च मधाः।।** वेद-स्मृतिमे कहल गेल सभकार्य स्नानमूल अछि,

ज्येष्ठकृष्णपक्ष

शक१९४९, संवत् २०८४, सन् १४३४, उत्तरायनं,उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतुः, पश्चिम कालः:, शुद्धः,।
दिनांक २१ मई तः ४ जून यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	शुक्र	२७।४९	दि.४।२४	अनुराधा	२२।५४	दि.२।२६	शिव	४२।०९	कौलव २७।४९	वृश्चिक	अहोरात्र	१।०६।०३।०६	३३।३४	५।१७	६।४३
२	शनि	३०।४८	सं.५।३६	ज्येष्ठा	२७।२५	दि.४।१५	सिद्ध	४२।१९	गर ३०।४८	वृश्चिक२७।२५	दि.४।१५	१।०७।००।३२	३३।३६	५।१७	६।४३
३	रवि	३४।५१	रा.७।१२	मूल	३२।५८	सं.६।२७	साध्य	४३।१२	वर्णिज २।४९	धनु	अहोरात्र	१।०७।५७।५८	३३।३८	५।१६	६।४४
४	सोम	३९।३७	रा.९।०६	पूर्वाषाढा	४०।१०	रा.९।२०	शुभ	४४।३६	बव ७।१४	धनु ५६।३३	रा.३।५३	१।०८।५५।२४	३३।४०	५।१६	६।४४
५	मंगल	४४।४४	रा.११।०९	उत्तराषाढा	४५।४५	रा.११।३४	शुक्ल	४६।१७	कौलव १२।१०	मकर	अहोरात्र	१।०९।५२।५१	३३।४२	५।१६	६।४४
६	बुध	५०।१५	रा.१।२१	श्रवण	५२।१४	रा.२।०८	ब्रह्म	४७।५२	गर १७।२९	मकर	अहोरात्र	१।१०।५०।१८	३३।४३	५।१५	६।४५
७	गुरु	५४।१९	रा.२।५८	धनिष्ठा	५८।१४	रा.शे४।३२	ऐन्द्र	४९।०४	भद्रा २२।१७	मकर२५।१४	दि.३।२१	१।११।४७।४५	३३।४४	५।१५	६।४५
८	शुक्र	५८।०३	प्रा.४।२८	शतभिषा	६०।००	अहोरात्र	वैधृति	४९।४३	बालव २७।११	कुम्भ	अहोरात्र	१।१२।४५।००	३३।४५	५।१५	६।४५
९	शनि	६०।००	अहोरात्र	शतभिषा	०३।२८	प्रा.६।३८	विष्कुम्भ	४९।२७	तैतिल २९।१९	कुम्भ ५१।३१	रा.१।५१	१।१३।४२।१५	३३।४६	५।१५	६।४५
९	रवि	००।३५	प्रा.५।२८	पूर्वाभाद्रपद	०७।३४	दि.८।१५	प्रीति	४८।२२	गर ००।३५	मीन	अहोरात्र	१।१४।३९।३०	३३।४८	५।१४	६।४६
१०	सोम	०२।०२	प्रा.६।०२	उत्तराभाद्रपद	१०।३१	दि.९।२६	आयुष्मान	४६।१४	भद्रा २।०२	मीन	अहोरात्र	१।१५।३६।४५	३३।४९	५।१४	६।४६
११	मंगल	०२।०९	प्रा.६।०५	रेवती	१२।१३	दि.१०।०७	सौभाग्य	४३।०६	बालव २।०९	मीन १२।१३	दि.१०।०७	१।१६।३४।००	३३।५०	५।१४	६।४६
१२	बुध	००।५७	प्रा.५।३६	अश्विनी	१२।३९	दि.१०।१७	शोभन	३८।५७	तैतिल ००।५७	मेष	अहोरात्र	१।१७।३१।१६	३३।५१	५।१४	६।४६
१४	गुरु	५५।१०	रा.३।१८	भरणी	११।५५	दि.१०।००	अतिगण्ड	३३।५६	भद्रा २६।५३	मेष २६।२६	दि.३।५०	१।१८।२८।३२	३३।५२	५।१४	६।४६
३०	शुक्र	५०।५२	रा.१।३३	कृत्तिका	१०।११	दि.९।१७	सुकर्मा	२८।११	चतुरघ्न२३।०१	वृष	अहोरात्र	१।१९।२५।३९	३३।५३	५।१३	६।४७

दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
१	७	२१	ज्येष्ठेवृन्ताकं त्यजेत्। विवाहः अनुराधायां दि.२।२६ यावत्, मुण्डनं द्वितीयायां, उत्तरयात्रा प्रतिपदायां दि.४।२४ यावत्। सिद्धियोगः दि.४।२४ यावत् मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।२६ यावत्, ❖
२	८	२२	गृहारम्भः मूले, पश्चिमयात्रा वृश्चिकस्थे चन्द्रे दि.४।१५ यावत् उत्तरयात्रा अहोरात्र। गण्डान्त २६।२६ उपरि ३६।२६ यावत्, ❖शिववासः दि.४।२४ यावत्, अग्निवासः
३	९	२३	दग्धतिथि चतुर्थी। विवाहः मूले सं.६।२७ यावत्। सिद्धियोगः रा.७।१२ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.६।२७ यावत्, अग्निवासः भद्रा २।४९ उपरि भद्रा ३४।५१ यावत्।
४	१०	२४	दग्धतिथि चतुर्थी। विवाहः उत्तराषाढ़ायां, अमृतयोगः रा.९।०६ उपरि, शिववासः
५	११	२५	रोहिण्यां रविः ५४।०१ रा.२।५८। मिथुने बुधः ८।२०, शिववासः, अग्निवासः
६	१२	२६	विवाहः दिवारात्रौ, उत्तरां विनायात्रा श्रवणे रा.२।८ यावत् ततः पूर्व यात्रा। पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.२।०८ उपरि। अमृतयोगः। भद्रा ५०।१४ उपरि।
७	१३	२७	विवाहः धनिष्ठायां रा.शे ४।३२ यावत्, पूर्वयात्रा। अग्निवासः, सम्प्रति विवाहे वेध विचार नैवकृयते। भद्रा २२।१७ यावत्।
८	१४	२८	शिववासः
९	१५	२९	सिद्धियोगः, अग्निवासः। ♍ अगस्तयास्त, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।०७ उपरि,शिववासः,अग्निवासः प्रा.६।०५ उ
१०	१६	३०	विवाहः उत्तराभाद्रपदायां दि.८।१५ उपरि, अमृतयोगः प्रा.५।२८ उपरि, अग्निवासः प्रा.५।२८ उपरि, नैऋत्यां गस्तायास्तः, भद्रा ३१।१८ उपरि।
११	१७	३१	विवाहः दिवारात्रौ, पश्चिम-उत्तरयात्रा। अमृतयोगः प्रा.६।०२ यावत् ततः सिद्धियोगः, अग्निवासः प्रा.६।०२ यावत् ततः शिववासः। भद्रा २।२ यावत्।
१२	१८	१	जून६। अपराएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां, पञ्चक(भदवा)समाप्ति दि.१०।०७ उपरि। पश्चिमयात्रा प्रा.६।५ तः दि.१०।०७ यावत् ततः उत्तरां विनायात्रा। मृत्युयोगः प्रा.६।०५ यावत् ततः अमृतयोगः,♍
१३	१९	२	त्रयोदशीतिथिमानं ५७।३६, तिलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः अश्विन्यां दि.१०।१७ यावत्। उत्तरां विनायात्रा द्वादश्यां प्रा.५।३६ यावत्। सिद्धियोगः प्रा.५।५६ यावत् ततः मृत्युयोगः, ←
१४	२०	३	प्रदोष १४ व्रतं, मृत्युयोगः, अग्निवासः। भद्रा २६।५३ यावत्। ←भद्रा ५८।३६ उपरि, शिववासः -अग्निवासः प्रा.५।५६ यावत्
१५	२१	४	वटसावित्री(वरसाति) व्रतं, ज्यैष्ठी अमावस्या, स्नानदानादिः, विवाहः प्रतिपदायां। शिववासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	शुक्र	४।०७।०९।४१	१।२५।४७।५०	३।२५।२९।०७	००।१५।२७।१९	११।२६।५९।०९	३।२३।२३।३८	४६।४७
२	शनि	४।०७।३५।४१	१।२६।५७।४८	३।२५।३६।०९	००।१६।४०।३०	११।२७।०५।५३	३।२३।२०।२८	४६।४८
३	रवि	४।०८।०१।४१	१।२८।०७।४६	३।२५।४३।११२	००।१७।५३।४१	११।२७।१२।३७	३।२३।१७।१७	४६।४९
४	सोम	४।०८।२७।४२	१।२९।१७।४४	३।२५।५०।१४	००।१९।०६।५२	११।२७।१९।२१	३।२३।१४।०६	४६।५०
५	मंगल	४।०८।५३।४३	२।००।२७।४२	३।२५।५७।१७	००।२०।२०।०३	११।२७।२६।०५	३।२३।१०।५५	४६।५१
६	बुध	४।०९।१९।४४	२।०१।३७।४०	३।२६।०४।२०	००।२१।३३।१४	११।२७।३२।४९	३।२३।०७।४४	४६।५२
७	गुरु	४।०९।४५।४५	२।०२।४७।३८	३।२६।११।२३	००।२२।४६।२५	११।२७।३९।३४	३।२३।०४।३३	४६।५३
८	शुक्र	४।१०।१३।५०	२।०३।२६।११	३।२६।१९।०६	००।२३।५९।४५	११।२७।४६।१९	३।२३।०१।२३	४६।५३
९	शनि	४।१०।४०।४५	२।०४।०४।४५	३।२६।२९।४९	००।२५।१३।०५	११।२७।५३।०४	३।२२।५८।१३	४६।५३
९	रवि	४।११।०८।१५	२।०४।४३।१९	३।२६।३४।३२	००।२६।२६।२५	११।२७।५९।४९	३।२२।५५।०२	४६।५४
१०	सोम	४।११।३५।४५	२।०५।२१।५३	३।२६।४२।१५	००।२७।३९।४५	११।२८।०६।३४	३।२२।५१।५१	४६।५५
११	मंगल	४।१२।०३।१५	२।०६।००।२७	३।२६।४९।५८	००।२८।५३।०५	११।२८।१३।१९	३।२२।४८।४०	४६।५६
१२	बुध	४।१२।३०।४६	२।०६।३९।०१	३।२६।५७।४२	०१।००।०६।२५	११।२८।२०।०४	३।२२।४५।५९	४६।५७
१४	गुरु	४।१२।५८।१७	२।०७।१७।३५	३।२७।०५।२६	०१।०१।१९।४६	११।२८।२६।५०	३।२२।४२।१८	४६।५७
३०	शुक्र	४।१३।२७।३०	२।०७।१३।०७	३।२७।१४।०४	१।०२।३३।०८	११।२८।३२।४५	३।२२।३९।०८	४६।५७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	शुक्र	४।५८	६।५४	९।०७	११।२५	१३।४१	१५।५६	१८।१३	२०।३०	२२।३५	००।२१	१।५२	३।२१
२	शनि	४।५४	६।५०	९।०३	११।२१	१३।३७	१५।५२	१८।०९	२०।२६	२२।३१	००।१७	१।४८	३।१७
३	रवि	४।५०	६।४६	८।५९	११।१७	१३।३३	१५।४८	१८।०५	२०।२२	२२।२७	००।१३	१।४४	३।१३
४	सोम	४।४६	६।४२	८।५५	११।१३	१३।२९	१५।४४	१८।०१	२०।१८	२२।२३	००।०९	१।४०	३।०९
५	मंगल	४।४१	६।३७	८।५०	११।०८	१३।२४	१५।३९	१७।५६	२०।१३	२२।१८	००।०४	१।३५	३।०४
६	बुध	४।३७	६।३३	८।४६	११।०४	१३।२०	१५।३५	१७।५२	२०।०९	२२।१४	००।००	१।३१	३।००
७	गुरु	४।३३	६।२९	८।४२	११।००	१३।१६	१५।३१	१७।४८	२०।०५	२२।१०	२३।५६	१।२७	२।५६
८	शुक्र	४।२९	६।२५	८।३८	१०।५६	१३।१२	१५।२७	१७।४४	२०।०१	२२।०६	२३।५२	१।२३	२।५२
९	शनि	४।२५	६।२१	८।३४	१०।५२	१३।०८	१५।२३	१७।४०	१९।५७	२२।०२	२३।४८	१।१९	२।४८
९	रवि	४।२१	६।१७	८।३०	१०।४८	१३।०४	१५।१९	१७।३६	१९।५३	२१।५८	२३।४४	१।१५	२।४४
१०	सोम	४।१७	६।१३	८।२६	१०।४४	१३।००	१५।१५	१७।३२	१९।४९	२१।५४	२३।४०	१।११	२।४०
११	मंगल	४।१३	६।०९	८।२२	१०।४०	१२।५६	१५।११	१७।२८	१९।४५	२१।५०	२३।३६	१।०७	२।३६
१२	बुध	४।०९	६।०५	८।१८	१०।३६	१२।५२	१५।०७	१७।२४	१९।४१	२१।४६	२३।३२	१।०३	२।३२
१४	गुरु	४।०५	६।०१	८।१४	१०।३२	१२।४८	१५।०३	१७।२०	१९।३७	२१।४२	२३।२८	००।५९	२।२८
३०	शुक्र	४।००	५।५६	८।०९	१०।२७	१२।४३	१४।५८	१७।१५	१९।३२	२१।३७	२३।२३	००।५४	२।२३

अतेव लक्ष्मी, पुष्टि आ आरोग्यक वृद्धि चाहवला मनुष्य नित्य स्नान करैथि। स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रुतिस्मृत्युदिता नृणाम्। तस्मात् स्नानं निषेवेत श्रीपुष्ट्यारोग्यवर्धनम्।। क्रमश....आगु
• स्नानक भेदः- मन्त्रस्नान, भौमस्नान, अग्निस्नान, वायव्यस्नान. दिव्यस्नान. वारुणस्नान आ मानसिक स्नान- ई सात प्रकारकें स्नान अछि। १. आपो हिष्ठा.....इत्यादि मन्त्रसँ मार्जन करनाइं मन्त्र स्नान कहवैत अछि। २.समस्त शरीरमें माटी लगायब ई भौमस्नान, ३. भस्म लगायब अग्निस्नान, ४.गायकें खुरक धूलि लगायब वायव्यस्नान, ५.सूर्यकिरणमें वर्षाके जलसँ स्नान करब दिव्यस्नान कहबैत अछि। ६.जलमें डुबकी लगाक स्नान करब वारुणस्नान, ७.आत्मचिन्तन करब

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शुक्र	दि.८:३९-१२:०१।	रा.९:२३-१०:४२।
२	शनि	प्रा.५:१५-६:५७।दि.१:४२-३:२३।सं.५:०४-६:४५।	सं.६:४५-८:०४।रा.१:२०-२:३९।रा.३:५७-५:१४।
३	रवि	दि.१०:२०-१:४२।	रा.१०:४२-१२:०१।रा.१:२०-२:३९।
४	सोम	दि.६:५७-८:३९।दि.३:२३-५:०४।	रा.१०:४२-१२:०१।रा.२:३९-३:५७।
५	मंगल	दि.६:५६-८:३८।दि.१:४३-३:२४।	रा.८:०५-९:२४।
६	बुध	दि.८:३८-१०:२०।दि.१२:०२-१:४३।	रा.१२:०२-१:२०।रा.२:३८-३:५६।
७	गुरु	दि.३:२४-६:४६।	रा.१२:०२-१:२०।रा.३:५६-५:१४।
८	शुक्र	दि.८:३८-१२:०२।	रा.९:२४-१०:४३।
९	शनि	प्रा.५:१४-६:४६।दि.१:४३-३:२४।सं.५:०५-६:४६।	सं.६:४६-८:०५।रा.१:२०-२:३८।रा.३:५६-५:१३।
९	रवि	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१।रा.१:१९-२:३७।
१०	सोम	दि.६:५५-८:३७।दि.३:२५-५:०६।	रा.१०:४३-१२:०१।रा.२:३७-३:५५।
११	मंगल	दि.६:५५-८:३७।दि.१:४३-३:२५।	रा.८:०६-९:२५।
१२	बुध	दि.८:३६-१०:५८।दि.१२:००-१:४२।	रा.१२:००-१:१८।रा.२:३६-३:५४।
१४	गुरु	दि.३:२४-६:४८।	रा.१२:००-१:१८।रा.३:५४-५:१२।
३०	शुक्र	दि.८:३६-१२:००।	रा.९:२४-१०:४२।

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल ति.१ शुक्र दि.२।२६ तः ति.३ रवि सं.६।२७ यावत्।
रेवती/अश्विनी - ति.१० सोम दि.९।२६ तः ति.१२ बुध दि.१०।१७ यावत्।

विविधविषया-वटसावित्री व्रतम्:- अमावास्याञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपोजयेत्। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात् सौवर्णीं वापी मृण्मयीम्।। सत्यवानेन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभां। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फल नैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिती विधिपूर्वकं सुपूज्य ब्रह्मणाय दद्यात्।
मन्त्रः-सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। वाह्मणः प्रीरणार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यतांम्।
कतिचिन्नियमाः-समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः।।
मासविशेषे नदीविशेषे स्नानम्-कौशिकीं माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्त्तिके यामुनीं तथा।। भूयसी गैरिका चैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा।। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुने मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।। वाड्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्त्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः। गंगा तु सर्वदेति।
सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः-देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। इति मन्त्रस्य सपादलक्षसंख्याकजपः,तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणम्, तद्दशांशमार्जनम्, तद्दशांशब्राह्मणभोजनं च कारयेत्।

७ गुरु वल्ली ८।४०।१८।०८
अयनांशाः २२।५५।१५

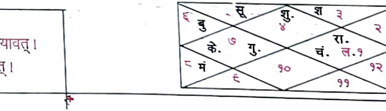

१४ गुरु वल्ली ८।४०।१८।१५
अयनांशाः २२।५५।१६

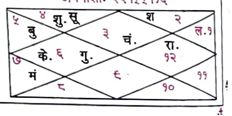

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

शक१९४९, संवत् २०८४, सन् १४३४, उत्तरायन,उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतुः, पश्चिम कालः:, शुद्धः,।
दिनांक ५-१९ जून यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः समाप्तिकालः राशिः द. प.	घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.
१	शनि	४५।४६	रा.११।३१	रोहिणी	७।३५	दि.८।१५	धृति	२१।४४	किंगस्तुघ्न१८।१९	वृष ३५।५३	सं.७।३४	१।२०।२२।४६	३३।५४	५।१३	६।४७
२	रवि	४०।०८	रा.६।१६	मृगशिरा	४।१४	प्रा६।५४	शूल	१४।४४	बालव १२।५७	मिथुन	अहोरात्र	१।२१।१९।५४	३३।५६	५।१३	६।४७
३	सोम	३४।०८	सं.६।५२	आर्द्रा	००।३२	प्रा.५।२५	गण्ड	०७।२४	तैतिल ७।०८	मिथुन४२।५०	रा.१०।२१	१।२२।१७।०२	३३।५७	५।१३	६।४७
४	मंगल	२७।५७	दि.४।२३	पुष्य	५२।१५	रा.२।०६	ध्रुव	५२।११	वर्णिज १।०२	कर्क	अहोरात्र	१।२३।१४।१०	३३।५८	५।१२	६।४८
५	बुध	२१।४८	दि.१।५५	आश्लेषा	४८।१३	रा.१२।२९	व्याघात	४४।४१	बालव २१।४८	कर्क४८।१३	रा.१२।२९	१।२४।११।१८	३३।५९	५।१२	६।४८
६	गुरु	१५।५४	दि.११।३३	मघा	४४।३०	रा.११।००	हर्षण	३७।२४	तैतिल १५।५४	सिंह	अहोरात्र	१।२५।०८।२६	३४।००	५।१२	६।४८
७	शुक्र	१०।२४	दि.९।२१	पूर्वाफाल्गुनी	४१।१८	रा.९।४३	वज्र	३०।३१	वर्णिज १०।२४	सिंह ५५।४१	रा.३।२८	१।२६।०५।२६	३४।०१	५।१२	६।४८
८	शनि	०५।२९	प्रा.७।२३	उत्तराफाल्गुनी	३८।५१	रा.८।४४	सिद्धि	२४।१४	बव ५।२९	कन्या	अहोरात्र	१।२७।०२।२६	३४।०२	५।१२	६।४८
९	रवि	०१।२३	प्रा.५।४४	हस्त	३७।१३	रा.८।०४	व्यतीपात	१८।३७	कौलव १।२३	कन्या	अहोरात्र	१।२७।५९।२६	३४।०४	५।११	६।४९
११	सोम	५६।०९	रा.३।३८	चित्रा	३६।३७	रा.७।४९	वरीयान्	१३।४९	वर्णिज २७।११	कन्या ६।५५	प्रा.७।५७	१।२८।५६।२६	३४।०६	५।११	६।४९
१२	मंगल	५५।१७	रा.३।१६	स्वाती	३७।१४	रा.८।०३	परिघ	०९।५५	बव २५।४३	तुला	अहोरात्र	१।२९।५३।२६	३४।०८	५।१०	६।५०
१३	बुध	५५।४०	रा.३।२६	विशाखा	३८।५७	रा.८।४४	शिव	०६।५९	कौलव २५।२८	तुला २३।२९	दि.२।३४	२।००।५०।२६	३४।०९	५।१०	६।५०
१४	गुरु	५७।३०	रा.शे४।१०	अनुराधा	४२।१२	रा.१०।०२	सिद्ध	०५।०३	गर २६।३५	वृश्चिक	अहोरात्र	२।०१।४७।२७	३४।१०	५।१०	६।५०
१५	शुक्र	६०।००	अहोरात्र	ज्येष्ठा	४६।२५	रा.११।४४	साध्य	०४।१२	भद्रा २८।५५	वृश्चिक४६।२५	रा.११।४४	२।०२।४४।२२	३४।११	५।१०	६।५०
१५	शनि	००।२०	प्रा.५।१८	मूल	४१।४४	रा.६।५१	शुभ	०४।१२	बव ००।२०	धनु	अहोरात्र	२।०३।४१।१७	३४।१२	५।१०	६।५०

दिनांकाः रा.	ने.	अ.	
१६	२२	५	दक्षिणयात्रा रोहिण्यां दि.८।१५ यावत् ततः पूर्वा विनायात्रा। अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।१५ यावत्,
१७	२३	६	रम्भातृतीया, पञ्चाग्निव्रत पतिपुत्रफलप्रदम्, देवादिप्रतिष्ठा मृगशिरायां, पश्चिमा विनायात्रा मृगशिरायां। शिववासः, अग्निवासः
१८	२४	७	पुनर्वसुनक्षत्रमानं५५।५५, वृद्धियोगमानं ५२।२७ गणेश ४ व्रतं, उमाचतुर्थी, उमापूजनं। मुण्डनं-कर्णवेधः-देवादिप्रतिष्ठा पुनर्वसौ, दग्धतिथि चतुर्थी। सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.५।२९ उपरि, अग्निवासः सं.६।५२ उपरि
१९	२५	८	मृगशिरसे रविः ५३।०७ रा.२।२७ । दग्धतिथि चतुर्थी। उत्तरां विनायात्रा पञ्चम्यां पुष्ये च दि.४।२३ तः रा.२।०६ यावत्। राज्यप्रदयोगः दि.४।२३ यावत्, अग्निवासः दि.४।२३ यावत् ततः शिववासः,♎
२०	२६	९	विवाहः मघायां, उपनयनं पञ्चम्यां, पश्चिमास्तः बुधः १३।०५, अमृतयोगः दि.१।५५ उपरि, शिववासः, अग्निवासः दि.१।५५ उपरि। ♎ भद्रा १।०२ उपरि भद्रा ५७।५७ यावत्।
२१	२७	१०	अरण्यषष्ठी, स्कन्दषष्ठी, विन्ध्यवासिनीपूजनदर्शनादिम्। विवाहः मघायां, शिववासः -अग्निवासः दि.११।३३ यावत्
२२	२८	११	पूर्व-उत्तरयात्रा अष्टम्यां, मृत्युयोगः दि.६।२१ यावत्, अग्निवासः दि.६।२१ उपरि, भद्रा १०।२४ उपरि भद्रा ३७।५६ यावत्।
२३	२९	१२	सिद्धियोगः -राज्यप्रदयोगः प्रा.७।२३ उपरि, अग्निवासः प्रा.७।२३ यावत् ततः शिववासः। ❖पूर्व-दक्षिणयात्रा दशम्यां, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।०४ यावत्, अमृतयोगः प्रा.५।४४ उपरि, शिववासः प्रा.५।४४ यावत्, अग्निवासः
२४	३०	१३	दशमी तिथिमानं ५६।५१, दशपापहरा गंगादशहरा, पृथिव्यां गंगावतरणम्, गंगास्नानदानादिः, रामेश्वरप्रतिष्ठादिन तद्दर्शनं शिवसायुज्यप्रदम्। विवाहः-उपनयनं-देवादिप्रतिष्ठा दशम्यां, ❖
२५	३१	१४	निर्जलाएकादशी ११ व्रतं स्मार्त्तानां, उद्यापन, विवाहः दिवारात्रौ, मुण्डनं, उपनयंन, देवादिप्रतिष्ठा गृहरम्भः, गृहप्रवेशः, दक्षिणयात्रा अहोरात्र,पश्चिम यात्रा तुलास्थे चन्द्रे प्रा.७।५७उपरि।■
२६	३१	१५	तिलेन पारणम्, वैष्णवानां ११ व्रतं, त्रिविक्रम१२, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, मिथुने रविः ५३।५७ रा.२।४५ मु.३० समताकरम्। मासान्तः। अमृतयोगः, शिववासः, अग्निवासः
२७	१	१६	प्रदोष १३ व्रतं, षडशीतिसंक्रान्तिः पुण्यकालो दि.१२।०० यावत् पुण्याहः, ने.आषाढ़मासारम्भः। मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।४४ उपरि, शिववासः
२८	२	१७	प्रदोष १४ व्रतं, चम्पक चतुर्दशी, मासादिः। मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१०।०२ यावत्, अग्निवासः, भद्रा ५७।३० उपरि। ■ सिद्धियोगः, भद्रा २७।११ उपरि भद्रा ५६।०६ यावत्।
२९	३	१८	ज्यैष्ठीपूर्णिमा १५, स्नानदानादिः, तिलादिदानम्, साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, विवाहः मूले उत्तरयात्रा, भद्रा २८।५५ यावत्।
३०	४	१९	स्नानादि पूर्णिमा, मृत्युयोगः प्रा.५।१८ यावत् ततः अमृतयोगः, शिववासः प्रा.५।१८ उपरि, अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	वक्रीबुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	शनि	४।१३।५६।४४	२।०७।०८।३६	३।२७।२२।४२	१।०३।४६।३०	११।२८।३८।४०	३।२२।३५।५७	४६।५७
२	रवि	४।१४।२५।५८	२।०७।०४।११	३।२७।३१।२१	१।०४।५६।५२	११।२८।४४।३६	३।२२।३२।४६	४६।५८
३	सोम	४।१४।५५।१२	२।०६।५९।४३	३।२७।४०।००	१।०६।१३।१४	११।२८।५०।३२	३।२२।२९।३५	४६।५९
४	मंगल	४।१५।२४।२६	२।०६।५५।१५	३।२७।४८।३६	१।०७।२६।३६	११।२८।५६।२८	३।२२।२६।२४	४७।००
५	बुध	४।१५।५३।४०	२।०६।५०।४७	३।२७।५७।१८	१।०८।३९।५९	११।२९।०२।२४	३।२२।२३।१३	४७।०१
६	गुरु	४।१६।२२।५४	२।०६।४६।१९	३।२८।०५।५७	१।०९।५३।२२	११।२९।०८।२०	३।२२।२०।०२	४७।०१
७	शुक्र	४।१६।५३।१७	२।०६।०३।४६	३।२८।१५।२६	१।११।०६।४३	११।२९।१३।४३	३।२२।१६।५२	४७।०१
८	शनि	४।१७।२३।४०	२।०५।२१।१६	३।२८।२४।५५	१।१२।२०।०४	११।२९।१९।०६	३।२२।१३।४२	४७।०१
९	रवि	४।१७।५४।०३	२।०४।३८।४६	३।२८।३४।२४	१।१३।३३।२६	११।२९।२४।२९	३।२२।१०।३१	४७।०२
११	सोम	४।१८।२४।२६	२।०३।५६।१६	३।२८।४३।५३	१।१४।४६।४८	११।२९।२९।५०	३।२२।०७।२०	४७।०३
१२	मंगल	४।१८।५४।४६	२।०३।१३।४५	३।२८।५३।२३	१।१६।००।१०	११।२९।३५।१५	३।२२।०४।०६	४७।०४
१३	बुध	४।१९।२५।१३	२।०२।३१।१४	३।२९।०२।५३	१।१७।१३।३२	११।२९।४०।३६	३।२२।००।५८	४७।०५
१४	गुरु	४।१९।५५।३७	२।०१।४८।४३	३।२९।१२।२३	१।१८।२६।५३	११।१९।४६।०३	३।२१।५७।४७	४७।०६
१५	शुक्र	४।२०।२७।१६	२।०१।१०।४७व	३।२९।२२।४७	१।१९।४०।०६	११।२९।५०।५१	३।२१।५४।३७	४७।०६
१५	शनि	४।२०।५८।५५	२।००।३२।५१	३।२९।३३।११	१।२०।५३।२५	११।२९।५५।३६	३।२१।५१।२७	४७।०६

दैमिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	शनि	३।५६	५।५२	८।०५	१०।२३	१२।३९	१४।५४	१७।११	१९।२८	२१।३३	२३।१९	००।५०	२।१९
२	रवि	३।५२	५।४८	८।०१	१०।१९	१२।३५	१४।५०	१७।०७	१९।२४	२१।२९	२३।१५	००।४६	२।१५
३	सोम	३।४८	५।४४	७।५६	१०।१५	१२।३१	१४।४६	१७।०३	१९।२०	२१।२५	२३।११	००।४२	२।११
४	मंगल	३।४४	५।४०	७।५३	१०।११	१२।२७	१४।४२	१६।५९	१९।१६	२१।२१	२३।०७	००।३८	२।०७
५	बुध	३।४०	५।३६	७।४९	१०।०७	१२।२३	१४।३८	१६।५५	१९।१२	२१।१७	२३।०३	००।३४	२।०३
६	गुरु	३।३६	५।३२	७।४५	१०।०३	१२।१९	१४।३४	१६।५१	१९।०८	२१।१३	२२।५९	००।३०	१।५९
७	शुक्र	३।३२	५।२८	७।४१	९।५९	१२।१५	१४।३०	१६।४७	१९।०४	२१।०९	२२।५५	००।२६	१।५५
८	शनि	३।२८	५।२४	७।३७	९।५५	१२।११	१४।२६	१६।४३	१९।००	२१।०५	२२।५१	००।२२	१।५१
९	रवि	३।२४	५।२०	७।३३	९।५१	१२।०७	१४।२२	१६।३९	१८।५६	२१।०१	२२।४७	००।१८	१।४७
११	सोम	३।२०	५।१६	७।२९	९।४७	१२।०३	१४।१८	१६।३५	१८।५२	२०।५७	२२।४३	००।१४	१।४३
१२	मंगल	३।१६	५।१२	७।२५	९।४३	११।५९	१४।१४	१६।३१	१८।४८	२०।५३	२२।३९	००।१०	१।३९
१३	बुध	३।१२	५।०८	७।२१	९।३९	११।५५	१४।१०	१६।२७	१८।४४	२०।४९	२२।३५	००।०६	१।३५
१४	गुरु	३।०८	५।०४	७।१७	९।३५	११।५१	१४।०६	१६।२३	१८।४०	२०।४५	२२।३१	००।०२	१।३१
१५	शुक्र	३।०४	५।००	७।१३	९।३१	११।४७	१४।०२	१६।१९	१८।३६	२०।४१	२२।२७	२३।५८	१।२७
१५	शनि	३।००	४।५६	७।०९	९।२७	११।४३	१३।५८	१६।१५	१८।३२	२०।३७	२२।२३	२३।५४	१।२३

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	शनि	प्र.५:१२-६:५४ दि.१:४२-३:२४ सं.५:०६-६:४८।	सं.६:४८-८:०६ रा.१:१८-२:३६ रा.३:५४-५:११।
२	रवि	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.१:१९-२:३७।
३	सोम	दि.६:५४-८:३७ दि.३:२५-५:०७।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.२:३७-३:५४।
४	मंगल	दि.६:५४-८:३७ दि.१:४३-३:२५।	रा.८:०७-९:२५।
५	बुध	दि.८:३७-१०:१९ दि.१२:०१-१:४३।	रा.१२:०१-१:१९ रा.२:३७-३:५४।
६	गुरु	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:०२-१:१९ रा.३:५३-५:१०।
७	शुक्र	दि.८:३६-१२:०२।	रा.९:२६-१०:४४।
८	शनि	प्र.५:१०-६:५३ दि.१:४४-३:२६ सं.५:०८-६:५०।	सं.६:५०-८:०८ रा.१:१९-२:३६ रा.३:५३-५:१०।
९	रवि	दि.१०:१९-१:४४।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.१:१९-२:३६।
११	सोम	दि.६:५३-८:३६ दि.३:३६-५:०८।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.२:३६-३:५३।
१२	मंगल	दि.६:५३-८:३६ दि.१:४४-३:२६।	रा.८:०८-९:२६।
१३	बुध	दि.८:३६-१०:१९ दि.१२:०२-१:४४।	रा.१२:०२-१:१९ रा.२:३६-३:५३।
१४	गुरु	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:०२-१:१९ रा.३:५३-५:१०।
१५	शुक्र	दि.८:३६-१२:०२।	रा.९:२६-१०:४४।
१५	शनि	प्र.५:१०-६:५३ दि.१:४४-३:२६ सं.५:०८-६:५०।	सं.६:५०-८:०८ रा.१:१९-२:३६ रा.३:५३-५:१०।

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.४ मंगल रा.२।०६ तः ति.६ गुरु रा.११।०० यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१४ गुरु रा.१०।०२ तः ति.१५ शनि रा.६।५१ यावत्।

दशपापानि-पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाहवि। दशपापहरा यस्मात् तस्मात् दशहरा स्मृता।

विविधः-ज्येष्ठमासे दानवस्तुनि वामनपुराणे- उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च । गंगादशहरा वाराहपुराणे- दशमीशुक्लपक्षेतु ज्येष्ठेमासे कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वारा हरते दशपापानि तस्मात् दशहरा स्मृता। दशहरायां दशयोगाः,स्कन्दे-ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरःस्नात्वा सर्व पापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या।

६ गुरु वल्ली ८।४०।१८।२२
अयनांशः २२।५५।१७

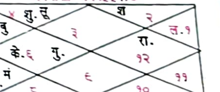

१४ गुरु वल्ली ८।४०।१८।२६
अयनांशः २२।५५।१८

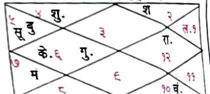

पर्यन्त जलमे स्नान करी। •स्नान सं पूर्व गंगाजी द्वारा उक्त श्लोक क स्मरण :- नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा। विष्णुपादाब्जसम्भूता गङ्गा त्रिपथगामिनी।। भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी। द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये।। स्नानोद्यतः स्मरेन्नित्यं यत्र तत्र वसाम्यहम्।। • जलक श्रेष्ठता :-निपानदुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्। ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते।। तीर्थतोयं ततः पुण्यं गङ्गातोयं ततोऽधिकम्।।(अग्निपुराण)। अर्थ- कुआसँ निकालल जलक अपेक्षा झरनाक जल, झरनाक जलक अपेक्षा सरोवरक जल, सरोवरक जलक अपेक्षा नदीक जल, नदीक जलक अपेक्षा तीर्थक जल आ तीर्थक जलक अपेक्षा गंगाजीक जल अधिक श्रेष्ठ मानल गेल अछि। वासाँसि धावतो यत्र पतन्ति जलबिन्दवः। तदपुण्यं जलस्थानं रजकस्य शिलांकितम्।। अर्थ-रजक(धोबीक) वस्त्र धोएवाक पाथर तथा जतेक दूर जलमे वस्त्रक छींटा पड़ैत छैक ओ अपवित्र होइत अछि। पश्चात् नाभिपर्यन्त जलमे जाक, निरुध्य कर्णौ नासां च त्रिः कृत्वोन्मज्जनं ततः। अर्थात् कान आ नाक मुनि जलक प्रवाह दिश या सूर्य दिश मुह कक स्नान करी। तीन, पाँच, सात या बारह डुबकि लगावि, डुबकी लगाव सँ पहिने शिख खोल ली, गंगाक जल में वस्त्र निचोड़वाक नहि चाहि आ नहि त मल मूत्र त्याग करवाक चाहि।

...क्रमशः आगु...

आषाढ़कृष्णपक्ष

शक१९४९, संवत् २०८४, सन् १४३४, उत्तरायन,उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतुः, पश्चिम कालः:, शुद्धः,।
दिनांक २० जूनतः ४ जुलाई यावत् सन् २०२७ ई।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
१	रवि	०४।१७	प्रा.६।५२	पूर्वाषाढा	५७।४६	प्रा.४।१६	शुक्ल	०५।००	कौलव ४।१७	धनु	अहोरात्र	२।०४।३८।१२	३४।१२	५।१०	६।५०	१	५	२०	विल्वमाषाढ़के त्यजेत्। पूर्व-उत्तरयात्रा द्वितीयायां प्रा.६।५२ उपरि। मृत्युयोगः प्रा.६।५२ यावत् शिववासः प्रा.६।५२ यावत् ततः अग्निवासः।
२	सोम	०८।५५	दि.८।४४	उत्तराषाढा	६०।००	अहोरात्र	ब्रह्म	०६।१९	गर ८।५५	धनु१४।२३	दि.१०।५५	२।०५।३५।०७	३४।१२	५।१०	६।५०	२	६	२१	मुण्डनं, कर्णवेधः, गृहारम्भः, मृत्युयोगः दि.८।४४ यावत्, अग्निवासः दि.८।४४ यावत्। भद्रा ४१।२६ उपरि। ❖शिववासः -अग्निवासः दि.१०।४५ उपरि। भद्रा १३।५८ यावत्।
३	मंगल	१३।५८	दि.१०।४५	उत्तराषाढा	०४।१७	प्रा.६।५२	ऐन्द्र	०७।५८	भद्रा १३।५८	मकर	अहोरात्र	२।०६।३२।०२	३४।१२	५।१०	६।५०	३	७	२२	वघ्नराज ४ व्रतं, आर्द्रायां रविः ५५।३० रा.४।११। उत्तरां विनायात्रा श्रवणे, सिद्धियोगः दि.१०।४५ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, ❖
४	बुध	१८।५८	दि.१२।४५	श्रवण	१०।४७	दि.६।२८	वैधृति	०६।३७	बालव १८।५८	मकर४३।४६	रा.१०।४२	२।०७।२८।५७	३४।१२	५।१०	६।५०	४	८	२३	विवाहः-मुण्डनं-गृहारम्भः पञ्चम्यां, पूर्वयात्रा पञ्चम्यां, पञ्चकारम्भः(मदवा) दि.६।२८ उपरि। शिववासः, अग्निवासः दि.१२।४५ यावत्।
५	गुरु	२३।२६	दि.२।३३	धनिष्ठा	१६।५४	दि.११।५५	विष्कुम्भ	१०।५६	तैतिल २३।२६	कुम्भ	अहोरात्र	२।०८।२५।५२	३४।१२	५।१०	६।५०	५	९	२४	विवाहः धनिष्ठायां, मुण्डनं-कर्णवेधः-गृहारम्भः पञ्चम्यां, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां, सिद्धियोगः दि.२।३३ यावत्, शिववासः दि.२।३३ यावत् ततः अग्निवासः।
६	शुक्र	२७।१४	दि.४।०३	शतभिषा	२२।१७	दि.२।०४	प्रीति	११।४२	वणिज २७।१४	कुम्भ	अहोरात्र	२।०९।२२।४३	३४।१२	५।१०	६।५०	६	१०	२५	सिद्धियागः दि.४।०३ यावत् ततः मृत्युयोगः, अग्निवासः दि.४।०३ यावत्, पूर्वोदित बुधः १८।३८। भद्रा २७।१४ उपरि भद्रा ५८।३२ यावत्।
७	शनि	२९।५१	सं.५।०६	पूर्वाभाद्रपद	२६।३६	दि.३।४८	आयुष्यमान	११।४०	बव २९।५१	कुम्भ१०।२९	दि.६।२२	२।१०।१९।३४	३४।१२	५।१०	६।५०	७	११	२६	शिववासः -अग्निवासः सं.५।०६ उपरि। दग्धतिथि अष्टमी सं.५।६ उपरि।।
८	रवि	३१।२०	सं.५।४२	उत्तराभाद्रपद	२९।५०	सं.५।०६	सौभाग्य	१०।४६	बालव ००।३५	मीन	अहोरात्र	२।११।१६।२६	३४।१०	५।१०	६।५०	८	१२	२७	सिद्धियोगः सं.५।४२ यावत्, शिववासः सं.५।४२ यावत्। दग्धतिथि अष्टमी सं.५।४२ यावत्। , मिथुने शुक्रः १४।३०।
९	सोम	३१।२९	सं.५।४५	रेवती	३१।४६	सं.५।५२	शोभन	०८।५१	तैतिल १।२४	मीन ३१।४६	सं.५।५२	२।१२।१३।१८	३४।०८	५।१०	६।५०	९	१३	२८	पञ्चक(भदवा)समाप्तिः सं.५।५२ उपरि। पूर्वां विनायात्रा अश्विन्यां, अमृतयोगः सं.५।४५ उपरि, अग्निवासः।
१०	मंगल	३०।२०	सं.५।१९	अश्विनी	३१।२६	सं.५।४५	अतिगण्ड	०५।५३	वणिज ००।५४	मेष	अहोरात्र	२।१३।१०।१०	३४।०६	५।११	६।४९	१०	१४	२९	धृतियोगमानं५५।०६। उतरांविनायात्रा दशम्यां, मृत्युयोगः सं.५।१९ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.५।४५ यावत्, शिववासः सं.५।१९ उपरि। भद्रा ००।५४ उपरि भद्रा ३०।२० यावत्।
११	बुध	२७।५९	दि.४।२२	भरणी	३१।५५	सं.५।५७	सुकर्मा	०१।५७	बालव २७।४९	मेष ४६।३१	रा.११।४७	२।१४।०७।०२	३४।०५	५।११	६।४९	११	१५	३०	योगिनी एकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। अमृतयोगः दि.४।२२ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः।
१२	गुरु	२४।३५	दि.३।०१	कृत्तिका	३०।२१	सं.५।१९	शूल	५१।२८	तैतिल २४।३५	वृष	अहोरात्र	२।१५।०३।५४	३४।०४	५।११	६।४९	१२	१६	१	जुलाई ७। यवचूर्णेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, सौराठससौला वैवाहिक सभारम्भः। विवाहः रोहिण्यां, अमृतयोगः दि.३।०१ उपरि, शिववासः दि.३।०१ यावत्।
१३	शुक्र	२०।१९	दि.१।१८	रोहिणी	२७।५९	दि.४।२२	गण्ड	४५।०८	वणिज २०।१९	वृष ५६।२३	रा.३।४४	२।१६।००।४४	३४।०३	५।११	६।४९	१३	१७	२	प्रदोष १४ व्रतं, विवाहः त्रयोदश्यां, अमृतयोगः दि.१।१८ उपरि, अग्निवासः। भद्रा २०।१९ उपरि भद्रा ४७।४५ यावत्।
१४	शनि	१५।१२	दि.११।१६	मृगशिरा	२४।४९	दि.३।०७	वृद्धि	३८।१३	शकुनी १५।१२	मिथुन	अहोरात्र	२।१६।५७।३४	३४।०२	५।१२	६।४८	१४	१८	३	सिद्धियोगः दि.११।१६ यावत्, शिववासः दि.११।१६ उपरि।
३०	रवि	०९।३५	दि.९।०२	आर्द्रा	२१।०७	दि.१।३८	ध्रुव	३०।५६	नाग ९।३५	मिथुन	अहोरात्र	२।१७।५४।२४	३४।००	५।१२	६।४८	१५	१९	४	आषाढ़ी अमावस्या ३०, स्नानदान-श्राद्धादौ अमावस्या, मृत्युयोगः दि.९।०२ उपरि, शिववासः दि.९।०२ यावत्, अग्निवासः, मिथुने बुधः ५७।०९।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	रवि	४।२१।३०।३५	१।२६।५४।५५	३।२६।४३।३६	१।२२।०६।४१	००।००।००।२७	३।२१।४८।१६	४७।०६
२	सोम	४।२२।०२।१५	१।२६।१६।५८	३।२६।५४।०१	१।२३।१९।५७	००।००।०५।१५	३।२१।४५।०५	४७।०६
३	मंगल	४।२२।३३।५५	१।२८।३६।०१	४।००।०४।२६	१।२४।३३।१४	००।००।१०।०३	३।२१।४१।५४	४७।०६
४	बुध	४।२३।०५।३५	१।२८।०१।०४	४।००।१४।५१	१।२५।४६।३१	००।००।१४।५१	३।२१।३८।४३	४७।०६
५	गुरु	४।२३।३७।१५	१।२७।२३।०७	४।००।२५।१६	१।२६।५९।४८	००।००।१९।४०	३।२१।३५।३२	४७।०६
६	शुक्र	४।२४।०९।५४	१।२७।२५।४१मा	४।००।३६।०४	१।२८।१३।०८	००।००।२९।५९	३।२१।३२।२२	४७।०६
७	शनि	४।२४।४२।३३	१।२७।२८।१५	४।००।४६।५२	१।२९।२६।२८	००।००।३४।१८	३।२१।२९।१२	४७।०६
८	रवि	४।२५।१५।४२	१।२७।३०।४९	४।००।५७।४०	२।००।३९।४८	०।००।३८।३७	३।२१।२६।०१	४७।०५
९	सोम	४।२५।४७।५१	१।२७।३३।२४	४।०१।०८।२९	२।०१।५३।०८	०।००।४२।५६	३।२१।२२।५०	४७।०४
१०	मंगल	४।२६।२०।३०	१।२७।३५।५९	४।०१।१९।१८	२।०३।०६।२८	०।००।४७।१५	३।२१।१९।३९	४७।०३
११	बुध	४।२६।५३।०९	१।२७।३८।३४	४।०१।३०।०७	२।०४।१९।४८	०।००।५१।३४	३।२१।१६।२८	४७।०२
१२	गुरु	४।२७।२५।४८	१।२७।४१।०९	४।०१।४०।५६	२।०५।३३।०९	०।००।४९।५४	३।२१।१३।१७	४७।०१
१३	शुक्र	४।२७।५९।२८	१।२८।२४।५७	४।०१।५२।२८	२।०६।४६।३२	०।००।५३।२७	३।२१।१०।०७	४७।०१
१४	शनि	४।२८।३३।०८	१।२९।०८।४६	४।०२।०४।००	२।०७।५९।५५	०।००।५७।००	३।२१।०६।५६	४७।०१
३०	रवि	४।२९।०६।४८	१।२९।५२।३५	४।०२।१५।३२	२।०९।१३।१८	०।०१।००।३३	३।२१।०३।४५	४७।००

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	रवि	२।५६	४।५२	७।०५	९।२३	११।३९	१३।५४	१६।११	१८।२८	२०।३३	२२।१९	२३।५०	१।१९
२	सोम	२।५२	४।४८	७।०१	९।१९	११।३५	१३।५०	१६।०७	१८।२४	२०।२९	२२।१५	२३।४६	१।१५
३	मंगल	२।४८	४।४४	६।५७	९।१५	११।३१	१३।४६	१६।०३	१८।२०	२०।२५	२२।११	२३।४२	१।११
४	बुध	२।४४	४।४०	६।५३	९।११	११।२७	१३।४२	१५।५९	१८।१६	२०।२१	२२।०७	२३।३८	१।०७
५	गुरु	२।४०	४।३६	६।४९	९।०७	११।२३	१३।३८	१५।५५	१८।१२	२०।१७	२२।०३	२३।३४	१।०३
६	शुक्र	२।३६	४।३२	६।४५	९।०३	११।१९	१३।३४	१५।५१	१८।०८	२०।१३	२१।५९	२३।३०	००।५९
७	शनि	२।३२	४।२८	६।४१	८।५९	११।१५	१३।३०	१५।४७	१८।०४	२०।०९	२१।५५	२३।२६	००।५५
८	रवि	२।२८	४।२४	६।३७	८।५५	११।११	१३।२६	१५।४३	१८।००	२०।०५	२१।५१	२३।२२	००।५१
९	सोम	२।२४	४।२०	६।३३	८।५१	११।०७	१३।२२	१५।३९	१७।५६	२०।०१	२१।४७	२३।१८	००।४७
१०	मंगल	२।२०	४।१६	६।२९	८।४७	११।०३	१३।१८	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।४३	२३।१४	००।४३
११	बुध	२।१६	४।१२	६।२५	८।४३	१०।५९	१३।१४	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३९	२३।१०	००।३९
१२	गुरु	२।११	४।०७	६।२०	८।३८	१०।५४	१३।०९	१५।२६	१७।४३	१९।४८	२१।३४	२३।०५	००।३४
१३	शुक्र	२।०७	४।०३	६।१६	८।३४	१०।५०	१३।०५	१५।२२	१७।३९	१९।४४	२१।३०	२३।०१	००।३०
१४	शनि	२।०३	३।५९	६।१२	८।३०	१०।४६	१३।०१	१५।१८	१७।३५	१९।४०	२१।२६	२२।५७	००।२६
३०	रवि	१।५९	३।५५	६।०८	८।२६	१०।४२	१२।५७	१५।१४	१७।३१	१९।३६	२१।२२	२२।५३	००।२२

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	रवि	दि.१०:१९-१:४४।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.१:१९-२:३६।
२	सोम	दि.६:५३-८:३६ दि.३:२६-५:०८।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.२:३६-३:५३।
३	मंगल	दि.६:५३-८:३६ दि.१:४४-३:२६।	रा.८:०८-९:२६।
४	बुध	दि.८:३६-१०:१९ दि.१२:०२-१:४४।	रा.१२:०२-१:१९ रा.२:३६-३:५३।
५	गुरु	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:१-१:१९ रा.३:५३-५:११।
६	शुक्र	दि.८:३६-१२:०२।	रा.९:२६-१०:४४।
७	शनि	प्र.५:११-६:५४ दि.१:४३-३:२५ स.५:०७-६:४९।	स.६:४९-८:०७ रा.१:१९-२:३७ रा.३:५४-५:११।
८	रवि	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.१:१९-२:३७।
९	सोम	दि.६:५४-८:३६ दि.३:२४-५:०६।	रा.१०:४३-१२:०० रा.२:३६-३:५४।
१०	मंगल	दि.६:५४-८:३६ दि.१:४२-३:२४।	रा.८:०६-९:२४।
११	बुध	दि.८:३६-१०:१८ दि.१२:००-१:४२।	रा.१२:००:१:१८ रा.२:३६-३:५४।
१२	गुरु	दि.३:२४-६:४८।	रा.१२:००-१:१८ रा.३:५४-५:१३।
१३	शुक्र	दि.८:३७-१२:०१।	रा.९:२५-१०:४३।
१४	शनि	प्र.५:१३-६:५५ दि.१:४३-३:२५ स.५:०६-६:४७।	स.६:४७-८:०६ रा.१:१९-२:३७ रा.३:५५-५:१३।
३०	रवि	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.१:१९-२:३७।

मूलविचारः-रेवती/अश्विनी ति.८ रवि सं.५।०६ तः ति.१० मंगल सं.५।४५ यावत्।

विविधः-ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचारः-बुधः शुक्र समीपस्थः करोत्येकार्णवा महीं । तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्। पुरतः पृष्ठतो भानुःशुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेते प्रतिलोमगा। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगे वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवावृष्टिश्शनैश्चरे । वारिपूर्णां महींकृत्वा पश्चात्संचरतेगुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते। सूर्यनक्षत्राणि-रोहिणी-मृगशिरा पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त- चित्रा- स्वाती - विशाखा-अनुराधा- ज्येष्ठा-मूल-शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। एतत्फलम्-चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। नक्षत्राणा पुरुषादिसंज्ञा-मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आद्रार्दिदश स्त्रीसंज्ञकानि,विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः।

१२ गुरु वल्ली ८।४०।१८।४३
अयनांशाः २२।५५।२०

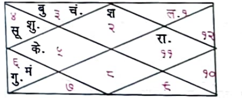

५ गुरु वल्ली ८।४०।१८।३६
अयनांशाः २२।५५।१९

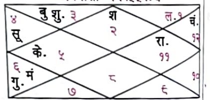

नैवेद्यक सम्बन्ध :-गीता२,अध्याय१२,श्लोक१३। श्रीकृष्ण भगवान् कहै छथि, जे व्यक्ति हमर देल वस्तु हमरा अर्पण नहि कय स्वतः स्वयं भक्षण करेत छथि से चोर थिकाह। ईष्टान्भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तान्नप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः।। यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।। अर्थात् यज्ञसँ शेष बाँचल अन्न खायबाला श्रेष्ठ पुरुष सब पापसँ मुक्त भऽ जाइत छथि। जे पापी अपन शरीर पोषणक हेतु पकवै छथि से पापकेँ भक्षण करेत छथि। भोजन विधि :-हस्त-पाद प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कय भोजनक स्थानमे आसनपर बैसि जल लय चतुष्कोन मण्डल करी, तकर मध्यमे परसल अन्न हर्षपूर्वक देखि- ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धावनामासि प्रियन्देवानामन धृष्टन्देवयजन्मसि। ई मन्त्र पढ़ि प्रणाम कय दहिना भागमे जाहि रूपेँ कुलाचार हो तदनुसार नैवेद्य राखि उत्सर्ग करी, बहुत वयक्ति ६ ठाम नैवेद्य

आषाढ़शुक्लपक्ष

शक१९४९, संवत् २०८४, सन् १४३४, उत्तरायनं/दक्षिणायनं,उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतुः, पश्चिम कालः, शुद्धः।
दिनांक ५-१८ जुलाई यावत् सन् २०२७ ई। ति.१२ पूर्वास्तः शुक्रः

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.	
१	सोम	०३।३४	प्रा.६।३७	पुनर्वसु	१७।०४	दि.१२।०१	व्याघात	२३।२४	बव ३।३४	मिथुन ३।०४	दि.६।२६	२।१८।५१।१४	३३।५९	५।१२	६।४८	१६	२०	५	द्वितीयाथिमानं ५३।४८, मुण्डनं,देवादिप्रतिष्ठा द्वितीयायां, ग्रीष्मनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः। जगन्नाथरथयात्रा, [illegible] सिद्धियोग प्रा.६।३७ यावत् ततः मृत्युयोग।
३	मंगल	५९।१०	रा.१।४०	पुष्य	१२।५३	दि.१०।२१	हर्षण	१२।४३	तैतिल २४।१६	कर्क	अहोरात्र	२।१९।४८।०५	३३।५८	५।१२	६।४८	१७	२१	६	पुनर्वसौ रविः ५६।३२ प्रा.५।०१। छन्दोगानां उपनयनं, उत्तरां विनायात्रा पुष्ये, सिद्धियोगः, अग्निवासः।
४	बुध	४५।१२	रा.११।१७	आश्लेषा	०८।४६	दि.८।४३	वज्र	०८।१०	वणिज १८।११	कर्क ८।४६	दि.८।४३	२।२०।४४।५६	३३।५७	५।१३	६।४७	१८	२२	७	श्रीगणेश४ व्रतं, विवाहः पञ्चम्यां। भद्रा १८।११ उपरि भद्रा ४५।१२ यावत्। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।०१ उपरि, अग्निवासः प्रा.६।३७ यावत् ततः शिववासः, दक्षिण-पश्चिमयात्रा प्रतिपदायां।
५	गुरु	३९।३९	रा.९।०४	मघा	०४।५६	प्रा.७।११	सिद्धि	००।४९	बव १२।२५	सिंह	अहोरात्र	२।२१।४१।४७	३३।५६	५।१३	६।४७	१९	२३	८	व्यतीपातयोगमानं५३।०१। उपनयनं पूर्वाफाल्गुन्या, सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः
६	शुक्र	३४।३५	रा.७।०३	पूर्वाफाल्गुनी	०१।३५	प्रा.५।५१	वरीयान्	४७।२४	कौलव ०७।०७	सिंह२०।२९	दि.१।२५	२।२२।३८।३९	३३।५५	५।१३	६।४७	२०	२४	९	उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमानं ५७।१९, विवाहः-देवादिप्रतिष्ठा उत्तराफाल्गुन्यां, गृहप्रवेशः सप्तम्यां सौराठ-ससौला वैवाहिक सभासमाप्तिः। सिद्धियोगः, शिववासः
७	शनि	३०।२८	सं.५।२४	हस्त	५७।०५	रा.शे४।३	परिघ	४१।४०	गर ०२।३१	कन्या	अहोरात्र	२।२३।३५।३१	३३।५४	५।१३	६।४७	२१	२५	१०	नवपत्रिकाप्रवेशः, गृहप्रवेशः सप्तम्यां, दक्षिणयात्रा सप्तम्यां, अग्निवासः सं.५।२४ यावत्। दग्धतिथि अष्टमी। भद्रा ३०।२८ उपरि भद्रा ५८।५० यावत्।
८	रवि	२७।१३	दि.४।०७	चित्रा	५६।१४	रा.३।४३	शिव	३६।४०	बव २७।१३	कन्या२६।३६	दि.३।५४	२।२४।३२।२३	३३।५२	५।१४	६।४६	२२	२६	११	महाष्टमी ८ व्रतं, करमूले पुलिक बन्धनं। क्षीणः शुक्रः३७।१९ उपरिं अशुद्धारम्भः, सिद्धियोगः दि.४।०७ यावत्, शिववासः -अग्निवासः दि.४।०७ उपरि। दग्धतिथि अष्टमी।
९	सोम	२५।००	दि.३।१४	स्वाती	५६।३२	रा.३।५०	सिद्ध	३२।३३	कौलव २५।००	तुला	अहोरात्र	२।२५।२९।१६	३३।५०	५।१४	६।४६	२३	२७	१२	महानवमी ९ व्रतं, मुण्डनं-कर्णवेधः दशम्यां, अमृतयोगः दि.३।१४ उपरि, शिववासः -अग्निवासः दि.३।१४ यावत्
१०	मंगल	२४।००	दि.२।५०	विशाखा	५८।०४	राशे४।२७	साध्य	२९।२६	गर २४।००	तुला४२।४१	रा.१०।१८	२।२६।२६।०९	३३।४८	५।१४	६।४६	२४	२८	१३	विजयादशमी, नवरात्रव्रतस्य पारणं, रैवतमन्वादिः, मृत्युयोगः दि.२।५० उपरि, अग्निवासः दि.२।५० उपरि, भद्रा ५४।०९ उपरि।
११	बुध	२४।१८	दि.२।५८	अनुराधा	६०।००	अहोरात्र	शुभ	२७।१९	भद्रा २४।१८	वृश्चिक	अहोरात्र	२।२७।२३।०२	३३।४७	५।१५	६।४५	२५	२९	१४	हरिशयनी एकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। चातुर्मास्यव्रतारम्भः, पूर्वास्तः शुक्रः ३७।१९, अमृतयोगः दि.२।५८ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः अग्निवासः दि.२।५८ यावत् ततः शिववासः, पश्चिमयात्रा। भद्रा २८।१४ यावत्।
१२	गुरु	२६।००	दि.३।३६	अनुराधा	००।५३	प्रा.५।३६	शुक्ल	२६।१५	बालव २६।००	वृश्चिक	अहोरात्र	२।२८।१९।५५	३३।४६	५।१५	६।४५	२६	३०	१५	वासुदेव १२, यवचूर्णेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिम-उत्तरयात्रा। अमृतयोगः दि.३।३६ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.५।३६ यावत्, शिववासः, अग्निवासः दि.३।३६ उपरि
१३	शुक्र	२८।४३	दि.४।४४	ज्येष्ठा	०४।५१	प्रा.७।११	ब्रह्म	२६।०१	तैतिल २८।४३	वृश्चिक४।५१	प्रा.७।११	२।२९।१६।५१	३३।४५	५।१५	६।४५	२७	३१	१६	प्रदोष १४ व्रतं, मासान्तः। अमृतयोगः दि.४।४४ उपरि, शिववासः -अग्निवासः दि.४।४४ यावत्
१४	शनि	३२।३४	सं.६।१६	मूल	०९।५७	दि.९।१३	ऐन्द्र	२६।४२	गर ००।३८	धनु	अहोरात्र	३।००।१३।४७	३३।४४	५।१५	६।४५	२८	१	१७	कर्के रविः ३२।२० सं.६।११ मु.१५ महार्घ, याम्यन संक्रान्तिः दि.१२।०० उपरि पुण्याह, याम्यायनारम्भः, ने.श्रावणमासारम्भः, राज्यप्रदयोगः, सिद्धियोगः सं.६।१६ यावत्, अग्निवासः सं.६।१६ उपरि, भद्रा ३२।५४ उपरि।
१५	रवि	३३।०९	सं.६।३१	पूर्वाषाढा	१५।५१	दि.११।३६	वैधृति	२७।५५	भद्रा ०२।५१	धनु ३०।५१	सं.५।३६	३।०१।१०।४३	३३।४२	५।१६	६।४४	२९	२	१८	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयोः पूजनं। करमूले पुलिक बन्धनं। मासादिः। अमृतयोगः सं.६।३१ यावत् ततः मृत्युयोगः। भद्रा ०२।५१ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि	दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१	सोम	४।२९।४०।२८	२।००।३६।२४	४।०२।२७।०४	२।१०।२६।४१	०।०१।०४।०६	३।२१।००।३४	४६।५९
३	मंगल	५।००।१४।०८	२।०१।२०।१३	४।०२।३८।३७	२।११।४०।०४	०।०१।०७।३९	३।२०।५७।२३	४६।५८
४	बुध	५।००।४७।४८	२।०२।०४।०२	४।०२।५०।१०	२।१२।५३।२७	०।०१।११।१२	३।२०।५४।१२	४६।५७
५	गुरु	५।०१।२१।२९	२।०२।४७।५१	४।०३।०१।४३	२।१४।०६।५०	०।०१।१४।४५	३।२०।५१।०१	४६।५७
६	शुक्र	५।०१।५५।४७	२।०४।००।५०	४।०३।१३।४२	२।१५।२०।१०	०।०१।१७।४०	३।२०।४७।५१	४६।५७
७	शनि	५।०२।३०।०५	२।०५।१३।४९	४।०३।२५।४१	२।१६।३३।३०	०।०१।२०।३५	३।२०।४४।४१	४६।५७
८	रवि	५।०३।०४।२३	२।०६।२६।४८	४।०३।३७।४०	२।१७।४६।५०	०।०१।२३।३०	३।२०।४१।३०	४६।५६
९	सोम	५।०३।३८।४१	२।०७।३९।४७	४।०३।४९।३९	२।१९।००।१०	०।०१।२९।२०	३।२०।३८।१९	४६।५५
१०	मंगल	५।०४।१२।५९	२।०८।५२।४७	४।०४।०१।३८	२।२०।१३।३१	०।०१।३२।१५	३।२०।३५।०८	४६।५४
११	बुध	५।०४।४७।१८	२।१०।०५।४७	४।०४।१३।३८	२।२१।२६।५२	०।०१।३५।११	३।२०।३१।५७	४६।५३
१२	गुरु	५।०५।२१।३७	२।११।१८।४७	४।०४।२५।३८	२।२२।४०।१३	०।०१।३७।१४	३।२०।२८।४६	४६।५२
१३	शुक्र	५।०५।५६।५३	२।१२।४८।३३	४।०४।३८।०१	२।२३।५३।३७	०।०१।३९।१७	३।२०।२५।३६	४६।५२
१४	शनि	५।०६।३२।०९	२।१४।१८।१९	४।०४।५०।२४	२।२५।०७।०१	०।०१।४१।२०	३।२०।२२।२६	४६।५२
१५	रवि	५।०७।०७।२५	२।१५।४८।०५	४।०५।०२।४८	२।२६।२०।२५	०।०१।४३।२३	३।२०।१९।१५	४६।५१

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१	सोम	१।५५	३।५१	६।०४	८।२२	१०।३८	१२।५३	१५।१०	१७।२७	१९।३२	२१।१८	२२।४९	००।१८
३	मंगल	१।५१	३।४७	६।००	८।१८	१०।३४	१२।४९	१५।०६	१७।२३	१९।२८	२१।१४	२२।४५	००।१४
४	बुध	१।४७	३।४३	५।५६	८।१४	१०।३०	१२।४५	१५।०२	१७।१९	१९।२४	२१।१०	२२।४१	००।१०
५	गुरु	१।४३	३।३९	५।५२	८।१०	१०।२६	१२।४१	१४।५८	१७।१५	१९।२०	२१।०६	२२।३७	००।०६
६	शुक्र	१।३९	३।३५	५।४८	८।०६	१०।२२	१२।३७	१४।५४	१७।११	१९।१६	२१।०२	२२।३३	००।०२
७	शनि	१।३५	३।३१	५।४४	८।०२	१०।१८	१२।३३	१४।५०	१७।०७	१९।१२	२०।५८	२२।२९	२३।५८
८	रवि	१।३१	३।२७	५।४०	७।५८	१०।१४	१२।२९	१४।४६	१७।०३	१९।०८	२०।५४	२२।२५	२३।५४
९	सोम	१।२७	३।२३	५।३६	७।५४	१०।१०	१२।२५	१४।४२	१६।५९	१९।०४	२०।५०	२२।२१	२३।५०
१०	मंगल	१।२३	३।१९	५।३२	७।५०	१०।०६	१२।२१	१४।३८	१६।५५	१९।००	२०।४६	२२।१७	२३।४६
११	बुध	१।१९	३।१५	५।२८	७।४६	१०।०२	१२।१७	१४।३४	१६।५१	१८।५६	२०।४२	२२।१३	२३।४२
१२	गुरु	१।१५	३।११	५।२४	७।४२	९।५८	१२।१३	१४।३०	१६।४७	१८।५२	२०।३८	२२।०९	२३।३८
१३	शुक्र	१।११	३।०७	५।२०	७।३८	९।५४	१२।०९	१४।२६	१६।४३	१८।४८	२०।३४	२२।०५	२३।३४
१४	शनि	१।०७	३।०३	५।१६	७।३४	९।५०	१२।०५	१४।२२	१६।३९	१८।४४	२०।३०	२२।०१	२३।३०
१५	रवि	१।०३	२।५९	५।१२	७।३०	९।४६	१२।०१	१४।१८	१६।३५	१८।४०	२०।२६	२१।५७	२३।२६

राखि- ॐ विष्णवे नमः, ॐ दुर्गादेव्यै नमः, ॐ गणपतये नमः। ॐ इन्द्राय नमः, ॐ चन्द्राय नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ वसुभ्यो नमः। एहि मन्त्रें उत्सर्ग करैत छथि। ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। एहि मन्त्रें जलप्राशन कय-ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा। एहि मन्त्रें पंचग्रास कय यथारुचि भोजन कय-ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।। एहि मन्त्रें पुनः जलप्राशन करी। अतः पर उठि विशेष रूपें हस्त ओ मुखक प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कए दहिना पैरक अंगुठाक मूल पर-ॐ अंगुष्ठमात्रः पुरुषो अंगुष्ठं च समाश्रितः। ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातु विश्वभुक्।। एहि मन्त्रें जलप्रक्षेप कए- ॐ विष्णुः समस्तेन्द्रियदेहिदेहे प्रधानभूतो भगवान्यथैकः। सत्येन तनन्नमशेषमेतदारोग्यदं मे परिणाममेतु।। ॐ विष्णुरातो यथैवात्रं परिणामञ्च वै यथा। सत्येन तेन मद्भुक्तं जीर्य्यत्वन्नमिदं

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	सोम	दि.६:५४-८:३६ दि.३:२४-५:०६।	रा.१०:४२-१२:०० रा.२:३६-३:५४।
३	मंगल	दि.६:५४-८:३६ दि.१:४२-३:२४।	रा.८:०६-९:२४।
४	बुध	दि.८:३६-१०:१८ दि.१२:००-१:४१।	रा.१२:००-१:१८ रा.२:३६-३:५४।
५	गुरु	दि.३:२३-६:४७।	रा.१२:०-१:१८ रा.३:५४-५:१३।
६	शुक्र	दि.८:३६-१२:००।	रा.९:२३-१०:४१।
७	शनि	प्र.५:१४-६:५५ दि.१:४१-३:२३ सं.५:०४-६:४६	सं.६:४६-८:०४ रा.१:१८-२:३७ रा.३:५५-५:१४
८	रवि	दि.१०:१८-१:४१।	रा.१०:४१-१२:०० रा.१:१८-२:३७।
९	सोम	दि.६:५५-८:३७ दि.३:२३-५:०४।	रा.१०:४१-१२:०० रा.२:३७-३:५५।
१०	मंगल	दि.६:५५-८:३३ दि.१:४१-३:२३।	रा.८:०४-९:२३।
११	बुध	दि.८:३७-१०:१८ दि.१२:००-१:४१	रा.१२:००-१:१८ रा.२:३७-३:५६।
१२	गुरु	दि.३:२२-६:४५।	रा.१२:००-१:१८ रा.३:५६-५:१५।
१३	शुक्र	दि.८:३७-१२:००।	रा.९:२२-१०:४१।
१४	शनि	प्र.५:१५-६:५६ दि.१:४१-३:२२ सं.५:०३-६:४५	सं.६:४५-८:०३ रा.१:१८-२:३७ रा.३:५६-५:१६
१५	रवि	दि.१०:१९-१:४१।	रा.१०:४१-१२:०० रा.१:१८-२:३७।

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.३ मंगल दि.१०।२१ तः ति.५ गुरु प्रा.७।११ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१२ गुरु प्रा.५।३६ तः ति.१४ शनि दि.९।१३ यावत्।।

विविधः-आषाढ़े शकुन विचार :- आषाढ़कृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं,तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः । आषाढ़ शुक्लद्वितीयायाम् नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढ़े सति सुभिक्षं, प्रजापीडा च उत्तराषाढ़े। आषाढ़शुक्लद्वितीयायां
जगन्नाथ रथयात्रा- तद्दिने रथस्थरामावलोकिनो नैव विपद्यते। पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम्- तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धान्यः उत्पत्तिः। सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते, तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति।
आर्द्रानक्षत्रस्येसूर्येपायसभोजनमहत्वम्- आर्द्रायाः प्रथमेपादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरम् अत्र पायसम् इति। आषाढ़ शुक्लपक्षे रविवासरे करमूले
पुलिकमूलबन्धन मन्त्रः- शुचिसितदिन करवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्य। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्य व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेत् इत्यनेन कार्त्तिकशुक्ल द्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः।

५ गुरु वल्ली ८।४०।१८।५०
अयनांशाः २२।५५।२१

१२ गुरु वल्ली ८।४०।१८।५७
अयनांशाः २२।५५।२२

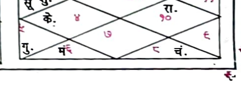

इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च **प्रथम लग्नसारणी** यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात्।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	०१	०८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	०३	११	१९	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	०८	१६	२५	३३	४२
२८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	०७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३३	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२	०३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४१
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	०७	१८	२९	४०	५२	०३	१४	२५	३७	४७	५१	११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४५	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१८	३०	४१	५२	०३	१५	२६	३७	५९	००	११	२२	३४	४५	५६	०७
२८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	४२	०४	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३९	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	४८	३२	०६	४०	१४	४७	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	०१	०९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	०८	१६	२४	३३	४९	४१	५८	०६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	०५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	०५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	०३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	०१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	०८	२४	४०	५९	१२	५८	४०	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	०२	२	२	२	२
३	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	०७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	०३	१०	१८	२५	३२	३९
२८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

लग्नसारणीदेखने की रीति–जिस समय लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट काल बना कर उसमें उस दिन का सूर्य स्पष्ट लिखा होता है। सूर्य स्पष्ट जितने राशि पर जितने अंश पर हो उसको लग्न सारणी में देखें कि उन राशि के सामने और उतने अंशो कोष्टक के नीचे जो घटी पल हो उसमें अपने इष्ट काल के घटी पल जोड़ दे वो लग्न के घटी पल बन जायेंगे तो वह घटी पल लग्न सारणी में जिस राशि के सामने और जितने कोष्ठ के नीचे मिलेगा। वही लग्न राशि अंशादि होंगे। यथा– इष्टकाल १४।२३ है और सूर्यस्पष्ट उस दिन ६।२६।१०।४ है। लग्न सारणी में ६राशि के सामने और २६ अंश के नीचे ३९।०६ है। अब ३९।०६को इष्टकाल के १४।२३ में जोड़ दिया तो ५३।२९ घट्यादि हुए इनको लग्न सारणी में देखा तो ९राशि १८ अंश के नीचे ५३।३४ लिखा हुआ है अर्थात ९।१८।२३।३४ लग्न स्पष्ट हुआ।

नतसाधनानपेक्षिता–दशमलग्नानयनसारिणीयम् **दशम लग्नसारणी** विलग्नलग्नांशसमानकोष्ठेह्यधः फलं तद्दशमं निरुक्तम्

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	८	८	८	८	९	९	९	०९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
२९९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२९	३९	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
	१४	१२	३०	००	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५९	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	४६	०२	४८	३४	२०	६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
	३८	२४	१०	५६	४२	४८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	४६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३२३	७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२८	३६	४५
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१४	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	३०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
	०८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
२९९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	५१	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
३२३	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१२	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२७	३६	४५
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	०	००	००	१	१	१	१	१	१	०२	२	२	२	२	०२	२	३	३	३
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

☙लग्नको घटाकर, राशि में ३०से गुणा कर अंश को जोड़ दे फिर जो आये उसको ६ से भाग देने पर जो लब्धि आयें वों अंश होंगे जो शेष बचे उसे पुनः ६०से गुणा करके फिर ६ से भाग दे वो घड़ी होगी इस तरह क्रमशः जो लब्धि आये वो ही षष्ट्यांश: होगा।

दशम लग्न बनाने की रीति -जिस समय दशम सारणी से दशम स्पष्ट लग्न करना हो तो सबसे प्रथम लग्न स्पष्ट के राशि अंश के घटी पलों में से घटी पल जितने हो दशम सारणी से उस कोष्टक में देखे कि घटी पल कहाँ पर है वहीं दशम लग्न स्पष्ट होगा।

यथा– प्रथम लग्न स्पष्ट:४।२६।२७।४०है तो लग्न स्पष्ट के घड़ी पल २७।४०को दशम लग्न सारणी में देखों तो पता चला कि २७।४० ११राशि २५अंश पर आया तो यह दशम स्पष्ट हुआ इसमें ६ राशि जोड़न से चतुर्थ लग्न होगा। चतुर्थ लग्न में प्रथम ☙

वेलान्तर सारणी

मास	जन.	फर	मार्च	अप्रै	मई	जून	जुला	अग	सित	अक्टू	नव	दिस.
दिनांक	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	-३	-१४	-१२	-४	+३	+२	-३	-६	+०	+१०	+१६	+११
२	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+१०	+१६	+११
३	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+११	+१६	+११
४	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
५	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
६	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+१२	+१६	+९
७	-६	-१४	-११	-२	+३	+२	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
८	-६	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
९	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+८
१०	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+८
११	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१२	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१३	-८	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१३	+१६	+६
१४	-९	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१४	+१६	+६
१५	-९	-१४	-०९	+०	+४	-०	-६	-५	+४	+१४	+१६	+५
१६	-१०	-१४	-९	+०	+४	-०	-६	-४	+५	+१४	+१६	+५
१७	-१०	-१४	-९	+०	+४	-०	-६	-४	+५	+१४	+१५	+४
१८	-१०	-१४	-९	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१५	+१५	+४
१९	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२०	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२१	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२२	-११	-१४	-७	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२३	-१२	-१४	-७	+१	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+१४	+१
२४	-१२	-१३	-७	+२	+३	-२	-६	-३	+८	+१६	+१४	+१
२५	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+७	+१६	+१३	+०
२६	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+८	+१६	+१३	-०
२७	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+९	+१६	+१३	-१
२८	-१३	-१३	-५	+२	+३	-३	-६	-२	+९	+१६	+१२	-१
२९	-१३	-१२	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+९	+१६	+१२	-२
३०	-१३	०	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+१०	+१६	+१२	-२
३१	-१३	०	-५	०	+३	०	-६	-१	०	+१६	०	-३

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार प्रकार:

सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही हैं। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह ५या ७ बजते हैं। परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार(जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे १ मार्च को कटिहार के इष्टकाल में १२ मिनट वेलान्तर ऋण एवं २०मिनट ४० सेकेण्ड देशान्तर धन कर देगें तो देवघर का स्थानीय समय हो जायेगा।

देशान्तर साधन- १.(८२।३०-इष्टस्थान का रेखांश)४= इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश ऋण।यथा-दिल्ली-रेखांश ७७।१८।(८२।३०-७७।१८= ५।१२)४ =२०।४८ दिल्ली का रेखांश ऋण।

२. (इष्टस्थान का रेखांश –८२।३०)४= इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश धन।यथा-पटना-रेखांश८५।१३।(८५।१३-८२।३०= २।४३)४ =१०।५२ पटना का रेखांश धन।

डॉ.बाबूलाल मिश्रः द्वाराप्राप्त-श्लोकाः

सन्ध्या दानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम्।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट्कर्माणि दिने दिने।।

●●●●●

दैवाधीनं जगत् सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्राः ब्राह्मणाधीनाः तस्माद् ब्राह्मणदेवताः।।

●●●●●

शान्ताः सन्तः सुशीलाश्च सर्वभूतहिते रताः।
क्रोधं कर्तुं न जानन्ति एतद्ब्राह्मणलक्षणम्।।

●●●●●

पाठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः यः क्रियावान् स पण्डितः।।

नक्षत्र मेलापक चक्रम् पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि उपरि वरनक्षत्राणि

नक्षत्राणि	अश्वनी	भर	कृति १	कृति ३.	रो.	मृग २	मृग २	आर्द्रा	पुन ३.	पुन १.	पूष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा१.	उ.फा३.	हस्त	चित्रा २.	चित्रा २.	स्वाति	विशा ३.	विशा १.	अनुधा	ज्ये १.	मूल	पू.पा१	पू.पा३	उ.पा१	उ.पा३	श्रव.१	श्रव २.	धनि २	धनि २	शत	पू.भा३	पू.भा१	उ.भा.	रेव
अश्वि.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२०॥	२६	१७॥	११	०६	३३	२२॥	२६॥	२२॥	१६॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भरणी	३४	२८	२६	१६	२२॥	१४॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१६	२८	२१॥	१६	०६	१४॥	२६॥	२२॥	१६॥	१७॥	१६॥	२०	१६	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृति.१	२७॥	२७॥	२८	१६॥	०६	१५॥	१६	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१६॥	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१६	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१६॥	१७॥	१६॥	११॥
कृति.३	१८॥	१८॥	१६	२८	१६	२५॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१६॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	०६॥	१४	११	१०	२२॥	२६॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	२३॥	२३॥	१०	१६	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१६	१५॥	०६॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१६	२०	१२॥	१७	१६	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१६
मृग.२	२३॥	१३॥	१८॥	२८॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	२०	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१२	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	११	१८	२१॥	२४॥	२४॥	१३	१६	२७	२६॥	२६	१७	२७
मृग-२	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	२८	३३	३१॥	१६॥	१३	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१६॥	१४	११	१३	२३	१६	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आर्द्रा	१६	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२६॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	०४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	१८	११	१६	१६	२७	२७
पुन-३	१६	२६	२२	१६॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	०५	१३	२७	२६	२७	२२॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१६॥	२७॥	२८
पुन-१	२१॥	२८॥	२५॥	२०	२४	२५	१६	१०॥	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०	२७	२०	१६	२६	१०॥	०८	२१	२१॥	२१॥	२६॥	२५	२७	२१	१२॥	०७॥	११	१७	२५	२५॥
पूष्य.	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१६	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	०४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	२५	२३॥	२२॥	१६	१२	२१	१३	१२	१५	२८॥	८	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०	२६	२५॥	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१६॥	०८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघ	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१६॥	२२॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	०५॥	०५॥	०४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१८॥	१८॥	१२
पू.फा.	२७	१६	२१	२२	२५॥	१७॥	२०॥	२८॥	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	०८॥	११॥	२५॥	१६॥	२६॥	२४॥	२४॥	१६	१६	१६	२७	२१	१६॥	१८॥	०४॥	११॥	१६॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ.फा.१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६॥	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३०॥	१६॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१६॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ.फा.३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	२०॥	२३॥	२३॥	१६॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१६	२८	२५॥	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२६॥	२८॥	२६॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२६॥	२७
हस्त	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२३॥	२३॥	१६॥	२८॥	२१॥	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१६	२६॥	१७॥	१६॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१६	१६	०८॥	१४॥	१६॥	२७॥	२७
चित्रा२	१३	०६	१६	२५॥	२०	१२	१६	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	०६॥	१५॥	२४॥	२७	२८	२०	१६	२६॥	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१६	१६	१८	१८	२४	१८॥	२२॥	११	२१
चित्रा२	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०॥	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	०७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२०॥	१५॥	०४	१३
स्वाती	२७॥	२६॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	२७	२६	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२५	१६॥	२०	१३
विशा३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१६॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१६॥	१७॥	१६॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२०॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	३२॥	२६	२६	२२	१६॥	१३॥	०५
विशा१	१६॥	१६॥	१४॥	१६॥	१४॥	२२॥	१३	१४॥	१४॥	६	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१६	२८	२३॥	०८	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१६॥	१६॥	०६॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	०६॥
अनुधा	२४॥	१४॥	१६॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२६॥	२६	२७	१२	०७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्येष्ठा	१२	१८॥	२४॥	२६॥	२२॥	२२॥	१३	०३	०६	१०॥	२०	२६	३१॥	२३॥	१६॥	१३	१२	२५	२०॥	२६॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२६	२५	१८	११	०६	२१	२१
मूल	१२	२०	२४॥	१६	१३	१४	२१	१५	१२	०८॥	१७॥	२४	२५	१६	०६॥	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	१७	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२८॥	२१॥	१६॥	१६॥	२५॥	२७॥
पू.षा.१	२६	१८	१८	१२॥	१६	११	१६	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१६	२५	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१७॥	२८	१७	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	०८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	१२
पू.षा.३	२७	२०	१६	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१६	२७	२७	२६	११	११	२६	१६	१८॥	१८॥	१६॥	२७	१८	२८	३४	२४	२४॥	२३॥	०८॥	१५॥	२२॥	२६॥	३२॥	२३॥	३२॥
उ.षा-१	२५॥	२७	१४	०८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	०६॥	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१६	१२	११॥	२५॥	१६॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ.षा-३	२८	२६॥	१६॥	१४	१७	२२॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८॥	१३	०६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	१६	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	३३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्रवण१	२८	२७	१४॥	१२	१८	२७	२४	२१॥	२१॥	२७	२५	१५	०५॥	१६॥	२०	२४	२५	१६	२६	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२३॥
श्रवण२	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३॥	२१	२३॥	२८	२६	१५	०६॥	१८॥	२०॥	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५॥	१५	२४	२७	२८	३०	२०॥	१८	२३	३६॥	३१॥	२४॥
धनि.२	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	०८	१७॥	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	०५॥	१२॥	१६	१८	१६॥	२३	२६	३०	२८	१४	२६	२१	०६	०६॥	१६॥	२५॥	२८	२८	२८	१८॥	२३॥	२१	२६॥	१५॥	२२॥
धनि.२	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१६	१०	२०	१६	१४	०५	२०	२५॥	११॥	१६॥	१७॥	२१	१८	१६	२२	२५॥	२७	१२	२६	२६॥	१७॥	१६॥	२३॥	१८॥	२१	२१	२१	२८	३३	२८॥	१८	०७	१४॥
शतभि.	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२५	१८	१०	१०	०७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	०८॥	२६	२६	१६	२६	२६॥	२१	१६	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१६	०६॥	१७	१६॥
पू.भा-३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२०॥	१४	१६॥	२५॥	१७॥	१५॥	१७॥	१८॥	१६॥	२८	२१	२१॥	२७॥	१२	१५॥	३१॥	३०॥	२६॥	२४	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१६	२८	१८॥	२३॥	२०॥
पू.भा-१	१४॥	२१॥	१६॥	१६	२६	२६	२५॥	१८	१८	१८	२५	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१६॥	१२॥	१६	१४	२१	२७	११॥	१५	३१	३१॥	३०॥	२८॥	२६॥	३०॥	२५॥	१७	०७॥	१६॥	२८	२३	३०॥
उ.भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१६	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६	०६॥	०५	१६॥	१२	१६	२०	२२	२४	२२	२२॥	३१॥	२६॥	२८॥	२६॥	१४॥	०६	१६॥	२१॥	३३	२८	१५
रेवती	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२५॥	२४॥	२७॥	१३	१२	२२	२२॥	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	०५॥	१२॥	२७	२२	२७	३०॥	३०	२१	१६	२०॥	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२६॥	३३	२८

अक्षांस-रेखांश एवं देशान्तरसारणी

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
आरा	२५।३४	८४।३२	+ ०८।०८
औरंगाबाद	२४।४५	८४।२५	+ ०७।४०
कटिहार	२५।३०	८७।४०	+ २०।४०
कमतौल	२६।२०	८५।५०	+ १३।२०
कहलगाँव	२५।१६	८७।१७	+ १६।०८
क्वाथ	२५।२०	८४।१६	+ ०७।०४
खगड़िया	२५।३१	८६।२७	+ १५।४८
गया	२४।४६	८५।०१	+ १०।०४
गोगरी	२५।२८	८६।३८	+ १६।३२
गोपालगंज	२६।२८	८४।२६	+ ०७।४४
छपरा	२५।४७	८४।४७	+ ०६।०८
जमालपुर	२५।१६	८६।३२	+ १६।०८
जयनगर	२६।३६	८६।०८	+ १४।३२
जहानाबाद	२५।१३	८४।५६	+ ०६।५६
जोगबनी	२६।२३	८७।१६	+ १६।०४
झञ्झारपुर	२६।१६	८६।१७	+ १५।०८
टेकारी	२५।४०	८५।१२	+ १०।४८
डुमराँव	२५।३३	८४।१२	+ ०६।४८
दरभंगा	२६।१०	८५।५४	+ १३।३६
दानापुर	२५।३८	८५।०५	+ १०।२०
देहरी	२४।५३	८४।१४	+ ०६।५६
धंगाइन	२५।१४	८४।१३	+ ०६।५२
दुमका	२४।३०	८७।२०	+ १६।२०
नवादा	२४।५३	८५।३५	+ १२।२०
नालन्दा	२५।०७	८५।२५	+ ११।४०
नौगछिया	२५।२४	८७।०६	+ १८।२४
पुपरी	२६।२८	८५।४२	+ १२।४८
पटना	२५।३७	८५।१३	+ १०।५२
पारसनाथ	२४।००	८६।११	+ १४।४४
पूर्णिया	२५।४६	८७।३१	+ २०।०४
फार्बेसगंज	२६।१८	८७।१६	+ १६।०४
वगहा	२७।०८	८४।०४	+०६।१६
वक्सर	२५।३४	८४।०१	+ ०६।०४
वगौनी	२५।२८	८५।५६	+ १३।५६
वहेड़ी	२५।५७	८६।०३	+ १४।१२
वाँकीपुर	२५।३६	८५।०७	- १०।२८
वाढ	२५।२	८५।४३	+ १२।५२

देशान्तर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि से
विरौलसुपौल	२५।५७	८६।१५	- १५।००
बेगूसराय	२५।२५	८६।०८	+ १४।३२
बोधगया	२४।४१	८५।०८	+ १०।०८
बेनीपट्टी	२६।२७	८५।५४	+ १३।३६
वेतिया	२६।४८	८४।३३	+ ०८।१२
भागलपुर	२५।१५	८७।०२	+ १८।०८
मधुबनी	२६।२१	८६।०७	+ १४।२८
मधेपुर	२६।११	८६।२३	+ १५।३२
मधेपुरा	२५।५७	८६।५१	+ १४।२४
मुँगेर	२५।२४	८६।५६	+ १७।५६
मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२७	- ११।४८
मोकामा	२५।२४	८५।५५	+ १३।४०
मोतिहारी	२६।४०	८४।५५	+ ०६।४०
रक्सौल	२६।५८	८४।५८	+ ०६।५२
राजगीर	२५।०१	८५।२६	+ ११।४४
रोसड़ा	२५।४५	८६।०२	+ १४।०८
लालगंज	२५।५२	८६।१०	+ १४।४०
लौकहा	२६।३३	८६।२८	+ १५।५२
शेखपुरा	२५।०६	८५।५३	+ १३।३२
समस्तीपुर	२५।५५	८५।५०	+ १३।२०
सहर्षा	२५।५४	८६।३६	+ १६।२४
सासाराम	२४।५७	८४।०३	+ ०६।१२
सिमरियाघाट	२५।२५	८६।००	+ १४।००
सीतामढ़ी	२६।३४	८५।३०	+ १२।००
सीवान	२६।०२	८४।००	+ ०६।००
सुगौली	२६।४७	८४।४८	+ ०६।१२
सोनपुर	२५।४०	८५।०२	+ १०।०८
हाजीपुर	२५।४१	८५।१४	+ १०।१७
गढ़वा	२४।१०	८३।५२	+ ०५।२८
गिरिडिह	२४।१०	८६।२१	+ १५।२४
गोविन्दपुर	२३।५१	८६।३४	+ १६।१६
घाटशिला	२२।३५	८६।२८	+ १५।५२
चतरा	२४।१२	८४।५६	+ ०६।४४
चायबासा	२२।३३	८५।५+	+ १३।२४
जमशेदपुर	२२।४८	८६।११	+ १४।४४
झरिया	२३।५०	८६।३३	+ १६।१२
डाल्टेनगंज	२४।०२	८४।०४	+ ०६।१६
डोरण्डा	२३।२२	८५।२२	+ ११।२८

झारखण्ड देशान्तर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से.
तिलैया	२४।२०	८५।३१	+ १२।०४
देवघर	२४।२६	८६।४३	- १६।५२
धनवाद	२३।४७	८६।३०	- १६।००
पकौर	२४।३८	८७।५४	+ २१।३६
पलामू	२३।५२	८४।१७	+ ०७।०८
पालकोट	२२।५२	८४।४१	+ ०८।४४
पोराहाट	२२।३६	८५।२८	+ ११।५२
बरवा	२३।१०	८४।१६	- ०७।०४
वसिया	२२।५२	८४।५३	- ०६।३२
वोकारे	२३।५१	८६।०२	+ १४।०८
मधुपुर	२४।१८	८६।३७	+ १६।२८
मानखेरी	२३।४०	८४।३३	+ ०८।१२
मेस्सनजोर	२४।०५	८७।२१	+ १६।२४
मैथन	२३।५४	८६।५४	+ १७।३६
राँची	२३।२३	८५।२३	- ११।३२
राजमहल	२५।०३	८७।५३	+ २१।३२
रामगढ़	२३।३८	८५।३४	+ १२।१६
लोहरदग्गा	२३।२६	८४।४२	+ ०८।४८
सरायकेला	२२।४२	८५।५८	+ १३।५२
सारण्डा	२२।१६	८५।१५	- ११।००
साहवगंज	२५।१३	८७।४०	+ २०।४०
सिन्दरी	२३।३६	८६।३१	- १६।०४
हजारीवाग	२३।५६	८५।२५	+ ११।४०

उत्तर प्रदेश

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से.
अयोध्या	२६।४७	८१।१२	- ५।१२
आगरा	२७।१६	७८।००	- १८।००
आजमगढ़	२६।०३	८३।१०	+ २।४०
इटावा	२६।४६	७६।०२	- १३।५२
इलाहाबाद	२५।५७	८१।५०	- ०२।४०
कानपुर	२६।२८	८०।४१	- ०७।१६
काशी	२५।१८	८३।००	+ २।००
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२६	- २०।१६
गाजीपुर	२५।३४	८३।३६	- ०४।२४
गोरखपुर	२६।४५	८३।२३	+ ०३।३२
चित्रकूट	२५।१३	८०।४८	- ०६।४८
जौनपुर	२५।४४	८२।४१	+ ००।४४
झाँसी	२५।२७	७८।३४	- १५।४४
देवरिया	२६।३१	८३।४८	+ ०५।१२
प्रतापगढ़	२५।५२	८२।०२	- ०१।५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
बरेली	२८।२०	७६।२४	- १२।२४
बलिया	२५।४५	८४।०६	+ ०६।३६
बस्ती	२६।४८	८२।४४	+ ००।५६
बाँदा	२५।२८	८०।००	- १०।००
मथुरा	२७।२८	७७।१०	- १६।१६
लखनऊ	२६।५०	८०।५४	- ०६।२४
वृन्दावन	२७।३३	७७।४४	- १६।२०
सहारनपुर	२६।५८	७७।३३	- १६।४८
सुल्तानपुर	२६।१५	८२।०४	- ०१।४४

मध्य प्रदेश

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
इटारसी	२२।३०	७७।५५	- १८।२०
उज्जैन	२३।०६	७५।४३	- २७।०८
कटनी	२३।४७	८०।२७	- ८।१२
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	- १७।२०
नीमच	२४।२७	७४।५२	- ३०।३२
भोपाल	२३।१६	७७।३६	- १६।३६
रीवा	२४।३१	८१।१६	- ०४।४४
विदिशा	२३।३२	७७।५१	- १८।३६
सतना	२४।३४	८०।५५	- ०६।२०

अन्य स्थान

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
अकोला	२०।३२	७७।०५	-२१।३०
अजमेर	२६।२२	७४।४०	-३१।२०
आन्ध्रप्रदेश	१६।००	८०।००	-१०।००
अम्बाला	३०।२०	७६।५५	-२२।२०
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३६	-३६।२६
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	-३०।२८
आसनसोल	२३।४२	८६।५८	+१७।५२
उड़ीसा	२१।१७	८५।३०	+१२।००
ऋषिकेश	३०।०७	७८।१६	- १६।५६
केदारनाथ	३०।४४	७६।०३	- १३।४८
कर्नाटक	१२।००	७६।००	-१४।००
कोचीन	६।५८	७६।१५	-२५।००
काँचीपुरम	१२।५०	७६।४२	-११।१२
कोटा	२५।१०	७५।५२	-२६।३२
कोयम्बटुर	११।००	७६।५६	-२२।१६
कटक	२०।२६	८५।५२	-६।२८
केरल	१०।००	७६।२५	-२४।२०
कलकत्ता	२२।३२	८८।३०	+२०।००
कश्मीर	३४।३०	७६।३०	-२४।००
गोत्री	३०।५६	७६।०२	-१३।५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
गढ़वाल	३०।१३	७६।३०	-१२।००
गुजरात	२२।५५	७२।३०	-३०।००
गौहाटी	२६।१०	६१।४५	+३७।००
चण्डीगढ़	३०४२	७६।५४	-२२।२४
जालन्धर	३१।२०	७५।३४	-२७।४४५१
जम्मू	३२।४३	७४।५२	-३०।३२
तंजौर	१०।४७	७६।०८	-१३।२८
तिरुचिरापल्ली	१०।५०	७८।४२	-१५।१२
तिरुपति	१३।४०	७६।२०	-१२।४०
तिरुवनन्तपुरम	०८।३१	७७।००	-२२।००
दार्जिलिंग	२७।०३	८८।१८	+२३।१२
दिल्ली	२८।३५	७७।१८	-२०।४८
द्वारका	२२।१४	६८।५८	-५४।०८
नागपुर	२१।०४	७६।१३	-१३।०८
नासिक	२०।००	७३।५०	-३४।४०
देहरादून	३०।१६	७८।०३	-१७।४८
नैनीताल	२६।२३	७६।२७	-१२।१२
पटियाला	३०।०१	७६।२८	-२४।०८
पानीपत	२६।२०	७७।०६	-२१।३६
पूने	१८।३१	७३।५३	-३४।२८
पुरी	१६।४८	८५।५०	+१३।२०
बीकानेर	२८।०२	७३।२२	-३६।३२
बंगलूर	१२।५८	७७।३६	-१६।३६
भुवनेश्वर	२०।१५	८५।५०	+१३।२०
मुम्बई	१६।००	७२।५५	-३८।२०
रामेश्वरम	०६।१८	७६।१८	-१२।४८
रुद्रप्रयाग	३०।१६	७८।५६	-१४।०४
हरिद्वार	२६।५८	७८।०६	-१०।२४
हल्द्वानी	२६।१३	७६।३१	-११।५६
लुधियाना	३०।५५	७५।५१	-२६।३६
वडोदरा	२२।१८	७३।१३	-३७।०८
शिमला	३१।०१	७७।१५	-२१।००
श्रीनगर	३४।०६	७४।४८	- ३०।४८
सूरत	२१।१०	७२।५१	- ३८।३६
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	-२६।१२
हावड़ा	२२।३६	८८।१६	-२५।१६
हैदराबाद	१७।२६	७८:२७	-१६।१२

शतपदचक्रम्

नक्षत्र वर्णाः	चु.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई ऊ.ए.	ओ.वा. बी.बू	वे.वो. का.की	कू.घ. ङ.छा	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.
नक्षत्रम्	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेष
राशिः	मेष	मेष	मेष-१ वृष-३	वृष	वृष-२ मिथुन-२	मिथुन	मिथुन-३ कर्क-१	कर्क	कर्क
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र
वश्यः	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद-२ मानव-२	मानव	मानव-३ जल-१	जलचर	जलचर
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य
हंसक (तत्त्व)	अग्नि	अग्नि	अ१. भू३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
योनिवैरः	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक
राशीशः	भौमः	भौमः	भौमः-१ शुक्रः-३	शुक्र	शुक्रः-२ बुधः-२	बुधः	बुधः-३ चन्द्र-१	चन्द्रः	चन्द्रः
गणः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

नक्षत्र वर्णाः	मा.मी. मू.मे.	मो.टा टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रु.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	न.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.
नक्षत्रम्	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
राशिः	सिंह	सिंह	सिंह-१ कन्या-३	कन्या	कन्या-२ तुला-२	तुला	तुला-३ वृश्चिक-१	वृश्चिक	वृश्चिक
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र
वश्यः	वनचर	वनचर	वनचर-१ मानव-३	मानव	मानव	मानव	मानव-३ कीट-१	कीट	कीट
युंजा	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य
हंसक (तत्त्व)	अग्नि	अग्नि	अग्नि१ भूमि३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल
योनिः	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग
योनिवैरः	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान
राशीशः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्यः-१ बुधः-३	बुधः	बुधः-२ शुक्रः-२	शुक्रः	शुक्रः-३ भौमः-१	भौमः	भौमः
गणः	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि

नक्षत्र वर्णाः	ये.यो. भा.भी	भू.धा. फा.ढा.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. द.दी.	दु.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्रम्	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशिः	धनु	धनु	धनु-१ मकर३	मकर	मकर-२ कुम्भ-२	कुम्भ	कुम्भ-३ मीन-१	मीन	मीन
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र
वश्यः	मानव	मानव।। चतु.३।।	चतुष्पद	चतु.१।। जल.२।	जलचर-२ मानव-२	मानव	मानव-३ जलचर-१	जलचर	जलचर
युंजा	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसक (तत्त्व)	अग्नि	अग्नि	अग्नि१ भूमि३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल
योनिः	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैरः	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशः	गुरुः	गुरुः	गुरुः-१ शनिः-३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः-३ गुरुः-१	गुरुः	गुरुः
गणः	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

जन्म राशेः सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयु
मेषः	१।१३।५०।६२	७५
वृषः	३।६।८।३३।४६।५२।६३	७५
मिथुनम्	६।१०।११।१८।२४।५३।६३	७५
कर्कः	१।१९।२२।२७।३५।४५।५५।६०	७०
सिंहः	१।१०।१५।२५।४५।५१।६१	६५
कन्या	१।३।१३।२६।३३।४३	६८
तुला	२।४।१६।२१।३३।४१।५१।६१	६५
वृश्चिक	३।७।८।१३।३२।३५।४५।६३	७५
धनुः	३।१०।१२।१६।२३।३६।४७।६७	६५
मकरः	३।१०।३२।३३।४२।५१।५६।६१	१००
कुम्भः	१८।३२	६१
मीनः	१८।३३	६१

जन्म लग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयु
मेषः	४।११।१६।४४।५८	१००
वृषः	१।२८।३३।४४	६०
मिथुनम्	१।१०।१४।३८।५८	६४
कर्कः	५।२५।४०।४८।६२	१००
सिंहः	५।१३।२८।३६।४८	६३
कन्या	४।१६।२३।३६।४५	१००
तुला	१५।३१।३५।५४।६२	७५
वृश्चिक	११।२८।३८।५२।६२	१००
धनुः	२।८।१०।१८।३१।३८।४२।६७	८१
मकरः	५।१३।२७।३६।५७।६२	८५
कुम्भः	२।२८।३३।४८।६४	६०
मीनः	१।८।१३।३६।४८	८३

६ गणगुणाः

गण	दे.	मा	रा.
दे.	६	५	०
मा.	५	६	०
रा.	०	०	६

।। कन्यायाः ।।

८ नाडीगुणाः

ना	आ.	म.	अ.
आ.	०	८	०
म.	८	०	८
अ.	८	८	०

अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
सर्प	मूषक	मृग	मेष

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	वृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं.मं.वृ	सू.बु.	सू.च.वृ	सू.शु.	सू.च.मं.	बु.श.	बु.शु.	मित्राणि
बुधः	मं.वृ. शु.श.	शुक्रः शनि	मं.वृ. शनि	शनि	म. वृहः	गुरुः	समाः
शु.श.	×	बुधः	चन्द्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.च.	शत्रवः

विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्

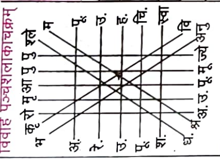

राहुकेत्वोः शनिवत्। सू.श.रा.के. ३।६।८।११ चं.२।३।११मं.३।६।११ बु.वृ.१।२।३।४।५।६।६।१०।११ शु.१।२।४।५।६।१०।११

उक्तस्थानस्थग्रहांकान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहवलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १।४।७।१०।११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभ	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्यः	१।२।५।७।९	१।२।५।९	१।३।६।१०
निन्द्य	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

विवाहे रेखाप्रदग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श	ग्र.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	सं

१ वर्णस्य गुणाः।। वरस्य

वर्णाः	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

।। कन्यायाः ।।

२ वश्यगुणाः वरस्य

वश्य	चतु.	मा.	जल	वन	कीट
चतु	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारागुणाः वरस्य

ता	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

ग्रहा	सू.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
च.	५	५	४	१	४	।।	।।
मं.	५	४	५	।।	५	३	।।
बु.	४	१	।।	५	।।	५	४
वृ.	५	४	५	।।	५	।।	३
शु.	०	।।	३	५	।।	५	५
श.	०	।।	।।	४	३	५	५

।। कन्यायाः ।।

७ राशिकूटगुणाः वरस्य

राशयः	१ मे	२ वृ	३ मि	४ क	५ सिं	६ कं	७ तु	८ वृ	९ ध	१० म	११ कुं	१२ मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

।। कन्यायाः ।।

४ योनिकूटगुणाः वरस्य

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	०
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गो	३	२	३	२	२	२	२	४	३	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	१	२	२	२	४

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञान प्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध - शनि-वृहस्पति- राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग- मित्रवर्गादिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

आयुर्विचारः-

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां,लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम्। प्रकारत्रयेप्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम्। विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो वली, समे जन्मलग्ने द्वादशेश- षष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः,आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्थमेवात्मकारकवशेनापि। १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन१०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्वपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमशः ८०, ७२, ६४ वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्वपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च -

अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा। लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानानन्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेश- दशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तर- शुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।।

विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम्

सूर्यदशावर्षाणि ६	चन्द्रदशावर्षाणि १०	भौमदशावर्षाणि ७	राहुदशावर्षाणि १८	गुरुदशावर्षाणि १६	शनिदशावर्षाणि १९	बुधदशावर्षाणि १७	केतुदशावर्षाणि ७	शुक्रदशावर्षाणि २०
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्रवण	मृ. चि. ध.	आर्द्रा. स्वा. श.	पुन. वि. पूभा.	पुष्य.अनु. उभा.	आश्ले. ज्ये. रेव.	मघा. मू. अश्वि.	पूफा. पूषा. भर.
अन्तर्दशा १८	अन्तर्दशा ३०	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ५४	अन्तर्दशा ४८	अन्तर्दशा ५७	अन्तर्दशा ५१	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ६०
ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा.दि.
सू.० ३ १८	चं.० १००	मं.० ४ २७	रा.२ ८ १२	वृ.२ १ १८	श.३ ० ३	बु.२ ४ २७	के.० ४ २७	शु.३ ४ ०
चं.० ६ ०	मं.० ७ ०	रा.१ ० १८	वृ.२ ४ २४	श.२ ६ १२	बु.२ ८ ९	के.० ११ २७	शु.१ २ ०	सू.१ ० ०
मं.० ४ ६	रा.१ ६ ०	वृ.० ११ ६	श.२ १० ६	बु.२ ३ ६	के.१ १ ९	शु.२ १० ०	सू.० ४ ६	चं.१ ८ ०
रा.० १० २४	वृ.१ ४ ०	श.१ १ ९	बु.२ ६ १८	के.० ११ ६	शु.३ २ ०	सू.० १० ६	चं.० ७ ०	मं.१ २ ०
वृ.० ९ १८	श.१ ७ ०	बु.० ११ २७	के.१ ० १८	शु.२ ८ ०	सू.० ११ १२	चं.१ ५ ०	मं.० ४ २७	रा.३ ० ०
श.० ११ १२	बु.१ ५ ०	के.० ४ २७	शु.३ ० ०	सू.० ९ १८	चं.१ ७ ०	मं.० ११ २७	रा.१ ० १८	वृ.२ ८ ०
बु.० १० ६	के.० ७ ०	शु.१ २ ०	सू.० १० २४	चं.१ ४ ०	मं.१ १ ९	रा.२ ६ १८	वृ.० ११ ६	श.३ २ ०
के.० ४ ६	शु.१ ८ ०	सू.० ४ ६	चं.१ ६ ०	मं.० ११ ६	रा.२ १० ६	वृ.२ ३ ६	श.१ १ ९	बु.२ १० ०
शु.१ ० ०	सू.० ६ ०	चं.० ७ ०	मं.१ ० १८	रा.२ ४ २४	वृ.२ ६ १२	श.२ ८ ९	बु.० ११ २७	के.१ २ ०

विंशोत्तरीदशा साधन विधि:-

कृत्तिका नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से एकादि शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्र,भौम, राहु,गुरु, शनि,बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है। **उदाहरण-** जन्म नक्षत्र मघा है । यहाँ कृत्तिका से मघा तक गणना की तो ८ संख्या हुई, इसमें ९ का भाग दिया तो लब्धी कुछ नहीं मिला, शेष ८ ही रहे । सूर्य,चन्द्र, भौमादि क्रम से आठ तक गिना तो आठवीं संख्या केतु की हुई। अतः जन्मदशा केतु की कहलायेगी।

योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम्

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
श्र.आ.चि.	ध.पुन. स्वा	श.पु.वि.	अ.आश्ले. अनु.पूभा.	भर.म. ज्ये.उभा	कृ.पूफ.मू.रे.	रो.उफ.पूषा	मृ.ह.उषा
मा.१२ चं.	मा.२४ सू.	मा.३६वृ	मा.४८मं	मा.६०बु.	मा.७२श.	मा.८४शु.	मा.९६ के.
मं.०।१०	पिं.१।१०	धा.३।०	भ्रा.५।१०	भ.८।१०	उ.१२।०	सि.१६।१०	सं.२१।१०
पि.०।२०	धा.२।००	भ्रा.४।०	भ.६।२०	उ.१०।०	सि.१४।०	सं.१८।२०	मं.२।२०
धा.१।०	भ्रा.२।२०	भ.५।०	उ.८।०	सि.११।२०	सं.१६।०	मं.२।१०	पि.५।१०
भ्रा.१।१०	भ.३।१०	उ.६।०	सि.६।१०	सं.१३।१०	मं.२।०	पिं.४।२०	धा.८।००
भ.१।२०	उ.४।०	सि.७।०	सं.१०।२०	मं.१।२०	पिं.४।०	धा.७।०	भ्रा.१०।२०
उ.२।०	सि.४।२०	सं.८।०	मं.१।१०	पि.३।१०	धा.६।०	भ्रा.६।१०	भ.१३।१०
सि.२।१०	सं.५।१०	मं.१।०	पि.२।२०	धा.५।०	भ्रा.८।०	भ.११।२०	उ.१६।००
सं.२।२०	मं.०।२०	पि.२।००	धा.४।००	भ्रा.६।२०	भ.१०।०	उ.१४।०	सि.१८।२०

योगिनीदशा की भुक्त भोग्य साधन

जन्मर्क्ष त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात्। मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः। ततो विंशोत्तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम्।

त्रिविधायुर्बोधकचक्रम्

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां(शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम्।

नवमांशचक्रम्

राशि	मे.सि. ध.	वृष कं.म.	मि.तु. कु.	क.वृ. मी.
३/२०	म.	श.	शु.	चं.
६/४०	शु.	श.	म.	सू.
१०/००	बु.	वृ.	वृ.	बु.
१३/२०	च	मं.	श.	शु.
१६/४०	सू.	शु.	श.	मं.
२०/००	बु.	बु.	वृ.	वृ.
२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६/४०	मं.	सू.	शु.	श.
३०/००	वृ.	बु.	बु.	वृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम् / समराशौ त्रिंशांशचक्रम्

अंशाः	मे.तु.मि. ध.सिं.कु.	अंशाः	वृ.क.क. वृ.म.मी.
५अ.	म.	५अं.	शु.
१०अं.	श.	१२अं.	बु.
१८अं.	वृ.	२०अं.	वृ.
२५अं.	बु.	२५अं.	श.
३०अं.	शु.	३०अं.	मं.

होराचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
१५अं	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.
३०अं	चं	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.

होरालग्नानयनम्-द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम्। दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत्।

द्रेष्काणचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
१०अं	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
२०अं	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च
३०अं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम्

शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उभा	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	संज्ञा

द्वादशांशज्ञानम्

प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभि-र्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-वृहस्पति-राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्मादिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग-मित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

मेषसंक्रमे वारिपूर्णघटदानं-कुशादिकं गृहीत्वा ओं सोपकरणवारिपूर्णघटाय नमः३। कुशोपरि-ओं ब्राह्मणाय नमः३। घटं सिक्त्वा-ओमद्यामुके मासि अमुके-पक्षेऽमुकतिथौ मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथ-सिद्धिपूर्वकपितृस्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघट वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय- ओमद्य कृतैतत्सोपकरण-वारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्नि-दैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः-एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः । इति प्रार्थयेत्।

वर्षप्रवेशसारिणी। प्रतिवर्षक्षेपकदिनादि

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
दिन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
दण्ड	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गव	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	
दिन	४	२	१	६	५	४	२	१	६	
दण्ड	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	५२	
पल	३०	४५	००	१५	३०	४५	००	१५	३०	
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	

विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम्

पति	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

गतवर्षसंख्या जन्मनक्षत्रसंख्यायुक्ता द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः।

त्रिराशिपतिः

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	वृ.	चं.
रात्रौ	वृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	वृ.	चं.

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्- सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिरततः। शेषांके जन्मनि गताच्चन्द्र-राशिरिह न्यसेत्॥ शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत्। त्रिपताके वर्षलग्नादौ स्थाप्यौ विधुदयौ॥ शुभैर्विद्धे शुभफली पापैः पापफलप्रदौ॥

वर्षमुन्थानयन-(गतवर्षसंख्या+जन्मलग्नसंख्या)÷१२। एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः। **वर्षेशनिर्णयः-**वर्षलग्नेश-जन्मलग्नेश-मुन्थेश-त्रिराशिपति- दिवारविराशीश- रात्रीचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा रावीधिकबलवत्तरो वर्षेशः।

शनि का स्वर्णादि पादः-यदि स्वजन्मराशितः शनिराशि संचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्यनिम्न लिखितानि पदानि भवेयुः-जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं, द्विपञ्च नन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लोहपादम्। **स्वर्णादि पाद फल-**लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्चकाञ्चने ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत्। **अनिष्टफलदायकशनि जपः-** कार्यः-लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्य।

गोचरफलबोधकचक्रम्

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सुखम्
सुहृद्	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीडा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीडा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुर्वृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

७॥ वर्षीय शनेः मासभेदेन फलम्-

मस्तके ७ मासाः-सर्वांशे हानिः। नेत्रे ९ मासाः-सर्वांशे हानिः। मुखे ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६ मासाः-भूषणादिलाभः। हृदये १० मासाः- यन्त्रादिलाभः। उदरे ११ मासाः-अन्नादिलाभः। नाभौ ४ मासाः-कष्टमुदरे। गुह्ये ५ मासाः-सर्वांशे हानिः। जानुनि १४ मासाः-राजबलेन जयः। जंघयोः ११ मासाः-स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५ मासाः-व्यर्थभ्रमणम्।

• गृहदैर्घ्यविस्तारघातवशेन आयादिबोधकचक्रम् • (गृहस्य दैर्घ्यं यत्र विस्तारस्तयोर्गुणनफलं पिण्डो भवति)

दैर्घ्यम्	२१	२१	२३	२३	२३	२५	२५	२५	२७	२७	२७	२९	२९	२९	३१	३१	३१	३१	३३	३३	३३	३३	३५	३५	३५	३५	३७	३७	३७	३७	३९	३९	३९	३९	४१	४१	४१	४१	४१	४३	४३	४३	४३	४३	४५	४५	४५	४५	४५	४७	४७	४७	४७
विस्तार:	१९	२१	१९	२१	२३	२१	२३	२५	२३	२५	२७	२५	२७	२९	२५	२७	२९	३१	२७	२९	३१	३३	२९	३१	३३	३५	३१	३३	३५	३७	३३	३५	३७	३९	३३	३५	३७	३९	४१	३५	३७	३९	४१	४३	३७	३९	४१	४३	४५	३९	४१	४३	४५
आय:	०७	०१	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०१	०३	०५	०७	०१	०१	०३	०५	०३	०१	०१	०३	०५	०७	०१	०१	०७	०५	०३
वार:	०७	०७	०६	०७	०१	०७	०२	०४	०३	०६	०२	०१	०५	०२	०३	०१	०६	०४	०४	०३	०२	०१	०७	०७	०७	०७	०५	०६	०७	०१	०५	०७	०२	०८	०४	०७	०३	०६	०१	०७	०८	०१	०५	०२	०५	०३	०१	०६	०४	०५	०४	०३	०२
अंश:	०९	०९	०३	०९	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९	०६	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९
द्रव्यम्	१२	१२	०४	१२	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२	०८	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२
ऋणम्	०५	०३	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०३	०१	०७	०५	०३	०३	०५	०७	०१	०३	०३	०१	०७	०५	०३	०३	०५	०७	०१
नक्षत्रम्	०६	१८	१३	०३	२०	१५	१०	०५	२७	२७	२७	२२	२७	०५	१७	२७	१०	२०	२७	१५	०३	१८	२०	१३	०६	२६	२३	२१	१९	१७	०९	१२	१५	१८	२४	०५	१३	२१	०२	२५	११	२४	१०	२३	०९	२७	१८	०९	२७	०३	२६	२२	१८
तिथि:	१२	०३	०१	०९	०२	१५	१०	०५	०३	१५	१२	१०	०९	०८	०५	०६	०७	०८	०३	०६	०९	१२	०५	१०	१५	०५	१०	०३	१०	०२	०६	१५	०९	०३	०९	०५	०१	१२	०८	१०	०८	०६	०४	०२	१५	१५	१५	१५	१५	०९	११	१३	१५
योग:	०३	०९	२०	१५	१०	२१	०५	१६	२७	२७	२७	११	२७	१६	२२	२७	०५	१०	२७	२१	१५	०९	१०	२०	०३	१३	२५	२४	२३	२२	१८	०६	२१	०९	१२	१६	२०	२४	०१	२६	११	१२	०५	२५	१८	२७	०९	१८	२७	१५	१३	११	०९
आयु:	७२	४८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	४८	१२०	७२	४०	२४	०८	८०	९६	११२	०८	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०	८०	५६	४८	८०	३२	९६	१२०	२४	४८	२४	८०	१६	७२	०८	४०	०८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	२४	५६	८८	१२०
दैर्घ्यम्	४७	४९	४९	४९	४९	४९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६५	६५	६५
विस्तार:	४७	४१	४३	४५	४७	४९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	५३	५५	५७
आय:	०१	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०५	०७	०१
वार:	०१	०७	०७	०७	०७	०७	०३	०४	०५	०६	०७	०१	०१	०३	०५	०७	०२	०४	०१	०४	०७	०३	०६	०२	०३	०७	०४	०१	०५	०२	०७	०५	०३	०१	०६	०४	०७	०६	०५	०४	०३	०२	०१	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०२	०३	०४
अंश:	०६	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०३	०९	०६	०३	०९	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०३	०९	०६	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९
द्रव्यम्	०८	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०४	१२	०८	०४	१२	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०४	१२	०८	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२
ऋणम्	०३	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०७	०५	०३
नक्षत्रम्	१४	०७	०८	०९	१०	११	१५	२१	२७	०६	१२	१८	०७	१८	०२	१३	२४	०८	०९	२५	२४	०३	१९	०८	२१	१५	०९	०३	२४	१८	१६	१५	२४	१३	१२	११	१७	२१	२५	०२	०६	१०	१४	२७	०९	१८	२७	०९	१८	२७	२०	०७	२१
तिथि:	०२	०७	११	१५	०४	०८	०३	०९	१५	०६	१२	०३	०७	१५	०८	०१	०९	०२	१५	१०	०५	१५	१०	०५	१२	०९	०६	०३	१५	१२	१३	१२	११	१०	०९	०८	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१२	१५	०३	०६	०९	१२	०५	१०	१५
योग:	०७	१७	०४	१८	०५	१९	२१	२४	२७	०३	०६	०९	१७	०९	०१	२०	१२	०४	१८	२६	०७	१५	२३	०४	२४	२१	१८	१५	१२	०९	०८	२१	०७	२०	०६	१०	२२	२४	२६	०१	०३	०५	०७	२७	१८	०९	२७	१८	०९	२७	१०	१७	२४
आयु:	३२	११२	५६	१२०	६४	०८	४८	२४	१२०	९६	७२	४८	११२	१२०	०८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	१२०	४०	८०	७२	२४	९६	४८	१२०	७२	८८	७२	५६	४०	२४	०८	३२	४८	६४	८०	६९	११२	०८	२४	७२	१२०	४८	९६	२४	७२	८०	४०	१२०

दैर्घ्यम्	६५	६५	६५	६५	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६९	६९	६९	६९	६९	६९	६९	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५
विस्तार:	५९	६१	६३	६५	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	७५
आय:	०३	०५	०७	०१	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०१
वार:	०५	०६	०७	०१	०६	०१	०३	०५	०७	०२	०४	०५	०१	०४	०७	०३	०६	०२	०२	०६	०३	०७	०४	०१	०५	०२	०४	०२	०७	०५	०३	०१	०६	०४	०१	०७	०६	०५	०४	०३	०२	०१
अंश:	०६	०३	०९	०६	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०६	०३	०९	०६	०३	०९	०६	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०३	०६	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९
द्रव्यम्	०८	०४	१२	०८	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०८	०४	१२	०८	०४	१२	०८	०४	०८	१२	०४	०८	१२	०४	०८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ऋणम्	०१	०७	०६	०३	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३	०१	०७	०५	०३	०१	०७	०५	०३	०५	०७	०१	०३	०५	०७	०१	०३
नक्षत्रम्	०८	२२	०९	२३	२३	१५	०७	२६	१८	१०	०२	०९	०६	०३	२७	२४	२१	१८	०३	०५	०७	०९	११	१३	१५	१७	०४	११	१८	२५	०५	१२	१९	२६	१५	२७	१२	२४	०९	२१	०६	१८
तिथि:	०५	१०	१५	०५	०५	१२	०४	११	०३	१०	०२	०९	०३	१२	०६	१५	०९	०३	०६	०२	१३	०९	०५	०१	१२	०८	०१	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
योग:	०४	११	१८	२५	२५	२२	१७	१३	०९	०५	०१	१८	०३	१५	२७	२१	२४	०९	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	०२	१९	०९	२६	१६	०६	२३	१३	२१	२७	०६	१२	१८	२४	०३	०९
आयु:	८०	४०	१२०	८०	८०	३२	६४	५६	४८	४०	३२	२४	८८	३२	९६	१२०	२४	८८	९६	३२	८८	२४	८०	१६	७२	[illegible]	[illegible]	१०४	७२	४०	०८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०

• पिण्डवशेन गृहाणामायादिसाधनप्रकार: •

पिण्डे नवाङ्काङ्कगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण। विभाजिते नागनगाङ्कसूर्य-नागर्क्षतिथ्यृक्षखभानुभिश्च।। आयो वारोऽशको द्रव्यमृणमृक्षन्तिथिर्युति:। आयुश्चाथ गृहेशर्क्षगृहभैक्यं मृतिप्रदम्।। विषमाय: शुभ:, रविमङ्गलभिन्नदिनराश्यंशा: शुभा:, द्विराश्यात्मकनक्षत्रस्य शेषक्रमेण राशिज्ञानं कर्त्तव्यम्, द्रव्याधिकं ऋणाल्पञ्च गृहं शोभनम्. गृहनक्षत्राद्गृहारम्भदिनकनक्षत्रं गृहपतिनक्षत्रं यावच्च विगणय्य नवभक्ते शेषे २,४,६,८,० तारा: शुभा:, रिक्तामारहिततिथय: शुभा:, योगास्तु विष्कम्भ-अतिगण्डशूलगण्डवज्रव्याघातव्यतीपातवैधृतिभिन्ना: शुभा:, अधिकायुर्गृहं शोभनम्। गृहगृहेशयो: नक्षत्रैक्यं न शोभनं परञ्च राशिभेदे सति शोभनम्। अत्र नाडीवेधो न दोषावह:। पुनश्चात्राश्विन्यादिनक्षत्रत्रयं मेषराशि:, मघादित्रयं सिंह:, मूलादित्रयं धनूराशि:। शेषभेषु यथाक्रमेण राशय:।

वास्तु विचार

ग्रामवास.विचार–मस्तकक्त पञ्चलाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः। कुक्षौ पञ्च धनं धान्यं षटपादे स्त्री दरिद्रता।। पृष्ठे चैक पादहानिर्नाभौ चत्वा रिसंपदः। गुह्ये चैक भयं पीडा हस्ते चैक तु क्रन्दनम्।। वामे चैक करे भेदो ग्राम चक्रं नरां कृतिः। गणयेज्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रतः सदा।।

-ग्राम के नक्षत्र से वास पुरूष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तरं अधोलिखित चक्र में

ग्रा.न.से. पु.ज.न.	५	३	५	५	६	१	४	१	१	१
अवयव	मस्तक	मुख	पेट	पेट	पैर	पीठ	नाभि	गुर्दा	दाया हाथ	वाया हाथ
फल	लाभ	धन हानि	धन धान्य	धन धान्य	स्त्री अभाव	पैर में पीडा	धन सम्पति	भय पीडा	युद्ध	मत भेद

भूमिपरीक्षण :- गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि शोधन की वहुत सी विधियां दी गयी है। किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियां अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित हैं।

मध्येगृहे हस्तमितं खनित्वा सम्पूरयेत्पांशुभिराश्रुतस्य ।
सम्पूरयित्वा धिकतामुपेतःपांशुर्यदा तद्गृहमुत्तमं स्यात।।
समे समं न्यूनतरे सदोषं न कारयेत्तत्र गृहं दाचित् ।

जिस भूमि पर मकान वनाना हो तो उसके वीचों वीच एक हाथ लम्बा,एक हाथ चौड़ा,एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना फिर उसी निकली हुई मिटी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी वच जाय तो उत्तम, बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निषिद्ध होता है इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये।

तदा निशादौ तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूरयेत्।
प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पौ व्रणे क्षयः।।

पूर्व विधि से गढ्ढा खोदकर पानी से सायं काल में पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो
शुभ, केवल कीचड़ बचा रहे तो सम और मिटी फट जाय तो भूमि हानिकारक होती है। वास्तुरत्नाकर के अनुसार जिस भूमि पर ओषधियॉ, वृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो ऐसी भूमि निवास के लिये प्रशस्त मानी गयी है।

गजपृष्ठादि भूमि विचार :- गजपृष्ठ जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम,नैऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ँची हो उसको गज पृष्ठ कहा गया है। उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन-धान्य, संतान,आयु की वृद्धि होती है।

कूर्मपृष्ठ : जहां कें भूमि मध्य में उँच हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो,वह कूर्मपृष्ठ भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह, धन-धान्य, संतान,आयु, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठ: ईशानकोण,पूर्व और अग्निकोण में भूमि उच्च हो और पश्चिम में नीच हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।

नागपृष्ठ :- जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि उच्च हो, बीच में नीच हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। यहाँ वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।

चारों वर्णो के आधार पर भूमि विवेचनः-

मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतगन्धा च या मही। अन्तरप्रवणा ज्ञेया ब्राह्मणानां च सा शुभा।। रक्तगान्धा कषाया च शरवीरेण संयुता। रक्ताप्राक्प्रावणज्ञेया क्षत्रियाणंा च सा मही।। दक्षिण प्रवणा भूमिर्याऽम्ला दूर्वाभिरन्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्णा प्रशस्यते ।। पशिचमप्रवणा कृष्णा विकुण्टा काश संयुता। मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा।।

स्पष्टार्थ चक्र

ब्रह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
उतरप्लव	पूर्वप्लव	दक्षिणप्लव	पश्चिमप्लव	प्लव
मधुर	कषाय	अम्ल	कटु	रस
घृतगन्ध	रक्तगन्ध	अन्नगन्ध	मद्यगन्ध	गन्ध
दर्भयुक्त	शपतयुत	बूवयुक्त	कशयुक्त	
श्वेतवण	रक्तवर्ण	पीतवर्ण	कृष्णवर्ण	वर्ण

सूर्य-चन्द्र वेध विचारः-चन्द्र वेधी मकान एवं जलाशय सूर्य वेधी शुभ होता है। ह्द या वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधी दानों से शुभ होता है। पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधी मकान में धन- धान्य एवं संतति की क्षति होती है। वाग-वगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनो प्रशस्त माना गया है। देवालय आदि के लिये सूर्यविध और चन्द्रवेध । का विचार नहीं होता ।(वास्तुरत्नाकरे)

पिण्ड ज्ञान- मकान की लम्बाई X चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है। **भवन के आय आदि का विचारः**- गृहपिण्ड को नव स्थानों मे रखकर क्रम से ९।९।६।८।३।८।८।४।८ इन अंको से अलग अलग दो २ का गुणा करके गुणनफल मे क्रमश-८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२०। इन अंको से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रम से आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि,योग और आयु होती है। कम आयु वाला मकान शुभ नहीं होता है।

१.आयः- ध्वज ,धूम्र ,सिंह ,श्वान ,वृष ,खर ,गज ,उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते हैं इसमें विषम आय १, ३,५,७ हो तो शुभ एंव सम हो २,४,६,८ तो अशुभ होता है।

वार तथा अंश-सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश मेषादिनवांश सर्वदा अग्नि भय करने वाले होते है। तथा शेष ग्रहो का वारादि अभीष्ट सिद्धि दायक होता है।

द्रव्य या धन:- यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है। ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।

नक्षत्र-गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है।

तिथि :-शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती हैं, उनमें ये ४,९,१४,१९,२४,२७,२९,३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं। **योग** :-अतिगण्ड, शूल,गण्ड, व्याघात , वज्र, व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है। **आयु** :- दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। आयु विहीने गेहे तु दुर्भगत्वं प्रजायते। **राशि** :-वासकर्ता का नाम राशि से २,९,५,१०,११ स्थानो में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १,३,४,७,८ और१२ स्थानो में हो तो अशुभ होता है।

भवन के लाभ आदि का विचार :- अपनी २ वर्ग संख्या को द्विगुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणि होता है। अतः वासकर्ता की काकणी से गाँव,मुहल्ला या शाहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।

स्पष्टार्थ-चक्र

क्र.	वर्ग	नामाक्षर	वर्गेश	वर्ग संख्या	वर्ग की दिशा या कोण
१.	अवर्ग	अ,इ,उ,ए,ऐ,ओ,औ	गरूण	१	पूर्व दिशा
२.	कवर्ग	क,ख,ग,घ,ङ.	मार्जार	२	अग्नेय कोण
३.	चवर्ग	च,छ,ज,झ,ञ	सिंह	३	दक्षिण
४.	टवर्ग	ट,ठ,ड,ढ,ण	श्वान	४	नैर्ऋत्य कोण
५.	तवर्ग	त,थ,द,ध,न	सर्प	५	पश्चिम
६	पवर्ग	प,फ,ब,भ,म	मूषक	६	वायव्य कोण
७	यवर्ग	य,र,ल,व	मृग	७	उत्तर
८	शवर्ग	श,ष,स,ह	मेष	८	ईशान कोण

मण्डलानयनः-पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १.दाता २.भूपति ३.क्लीव ४.चोर ५.पण्डित ६.भोगी ७.धनाढ्य ८.दरिद्र ९.कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते हैं। इनका फल नामके सदृश होता है।

मण्डलेशानयनः- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घाविस्तारसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्तं मण्डलाधिप उच्यते।। इन्द्रो विष्णुर्यमो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः।। इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्यमो दुःखं निरन्तरम् वायश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्।। धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्। सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः।।

स्पष्ट चक्र								
१ इन्द्र सुखद	२ विष्णु यश	३ यम दुःख	४ वायु उच्चाटन	५ धन कुवेर	६ महादेव कलह	७ विधाता सुखशान्ति	८ गणेश सर्वसिद्धि	शेष देव फल

ऑगन विचार:-ऑगन की लम्बाई चौड़ाई को आट से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रम से १.तस्कर २.भोगी ३.पण्डित ४.दाक्षा ५.नृपति ६.नपुंसक ७.कुवेर ८.दरिद्र ९.भयदाता ये नव प्रकार के ऑगन होते हैं। इनका फल नाम के समान होता है। वीच में ऑगन उँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है। इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।

राहु दिशा विचार-देवालय,जलाशय और मकान के नींव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।

देवालये गेहे विधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।
मीनार्कः सिंहार्कः मृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत्।।

नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ठ भाग से खोदना शुभ होता है।

कक्ष विवेचनं मुहूर्त चिन्तामणौ :-

स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदेवतगृहाणि च पूर्वतःस्युः।
तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषध सर्वथाम्।।

स्नान कक्ष :- वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नान घर वाथरूम भवन के पूर्व में होना चाहिये। स्नान घर में गिजर वाल सुखाने की मशीन आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये। कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये। शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये। किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष में शौचालय रखना हो तो नैर्ऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य तथा नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये। नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में,हाथ साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये। यदि कपड़े धोने की मशीन स्नान घर में रखनी है तो केवल दक्षिण पूर्व कोने में रखनी चाहिये।

भोजनालय :- इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन का अग्नेय कोण में होता है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान अग्नेय कोण या पूर्व के मध्य में रखना चाहिये। भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा अग्नेय कोण में, खाद्यान्य भण्डार पूर्व दिशा में बरतन आदि दक्षिण यापश्चिम दिशा में रखना चाहिये। भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में वनवाना चाहिये। अगर भोजनालय में हीं भोजन करना है तो पश्चिम दिशा में उत्तम स्थान माना जाता है। भण्डार रूम स्टोर रूम वायव्य मे उत्तम होता है।

शयन कक्ष :- गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम में होना चाहिये। सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिर करके सोना चाहिये। **प्राक्शिरःशयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।**
पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानि मृत्युर्त्तयोत्तरे।।

पूजाघर :- ईशान कोण में देवताओं का वास होता है। इसलिये ईशान में पूजा घर शुभ होता है। पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये। पूजा घर में शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर लाल परदा डाल कर रखें। हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये। पूजा की दीदार एवं फर्श सफेद या हल्के पीला रंग का होना चाहिये। नैऋत्य कोण में अस्त्रशस्त्र कक्ष, अग्नि कोण में बिजली, जनरेटर अर्थात् उँर्जा से सम्बन्धित कक्ष, उत्तर दिशा मे कोषाघर, वायव्य में पशु गृह, अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य मे घृत दधिमयन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में अतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष, वायव्य उत्तर में रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष, एवं नैऋत्य कोण में प्रसूति कक्ष वनवाना चाहिये।

द्वार विवेचन :- मकान की लम्बाई जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई वरावर-वरावर नव ९ भाग करके पाँच भाग दाहिने और तीन भाग वायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये।

शिलान्यासः-पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अंदरपूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिये, वाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये।

गृहारम्भे वास्तु पुरूष स्थिति ज्ञानम् - गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमें गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग देना,यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में एव ० शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरूष का निवासी होता है। स्वर्ग एवं पताल में वास्तु पुरूष का निवास होने पर लाभ एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का-ब्रह्मा के मन्दिर के वगल में तथा वि णु,सूर्य,शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

वास्तुदोष निवारण के उपायः-१.घर में वास्तुदोष होने पर उचित यहीं है कि उसे यथा संभव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करके ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभंग दोष लगता है, ऐसी स्थिति में उसे वेंच कर दुसरा मकान बनाकर रहना उचित होता है। ऐसा संभव न हो सके तो वास्तुदोष के निवाराणार्थ वर्ष में कम से कम एक बार नौरात्रि में दुर्गासप्तशती का पाठ, श्रीरामचरितमानस का पाठ अखण्ड कीर्तन या भागवत यज्ञ आदि अवश्य करें। २.अमावश्या तिथि को गाय के उपले एवं समी की लकड़ी तिल,चावल,जौ,शक्कर,गुग्गुल ,जटामाशी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा ११०० आहूति करने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। यह वर्ष में एक बार करना चाहिये। घर में तुलसी का पौधा लगाने से गृह में सुखशान्ति रहती है।

गोचरफल-बोधकचक्र

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	स्थानहानि	सौख्य	बन्धन	भय	अभय	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	भय	धन	धननाश	धनाप्ति	धनाप्ति	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	धन	लाभ	धनाप्ति	भीति	लाभ	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	मानहानि	रोग	भय	धन	धनहानि	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	दैन्य	कार्यसिद्धि	धनक्षय	रोग	पुत्रसुख	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	विजय	शत्रुभय	विजय	अलाभ	शोक	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	भ्रमण	लाभ	व्यय	विग्रह	मान	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	पीड़ा	कष्ट	कष्ट	लाभ	क्लेश	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्महानि	मान	पीड़ा	रोग	धर्मरति	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	कार्यसिद्धि	सुख	शोक	सुख	उन्नति	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	धन	लाभ	धनाप्ति	सौख्य	लाभ	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	कष्ट	व्यय	हानि	नाश	चिन्ता	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

जन्म कालिक ग्रहों का भावफल(स्त्रियों के लिये)

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	दुः ख	पुत्रवती	दुःखिता	सौभाग्यवती	सौभाग्यवती	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	पुत्रवती	धनाढ्या	पुत्रिणी	धनवती	पुत्रवती	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	दरिद्रा	दुर्भगा	अल्पसन्तति	सुखी	सुखी	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	सन्ताननाश	कन्याधिक	पुत्रमरण	उत्तमसुख	उत्तमसुखी	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	धनवती	विधवा	धनयुक्त	क्लेशप्राप्ति	धनवती	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	रोगिणी	प्रवासिनी	स्वामीनाश	क्षय	भयबन्धन	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	विधवा	अतिकष्ट	धनवती	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्मनिष्ठा	पुत्रवती	कर्मकारिणी	उत्तमभोग	धर्मवृद्धि	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	परिश्रमी	व्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	पतिधनी	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	पुत्रवती	लक्ष्मीवती	पुत्रवती	सुखी	आयुष्मती	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	अतिव्ययी	दिनान्धा	वन्ध्या	सुपुत्रवती	सुशीला	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	वु.	च	सू	वु	शु	मं.	वृ	श	श	वृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घामा	का	मार्ग	आपा	पौ	ज्ये	भा.	मा	आ	श्रा	वै	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दिन	र.	श.	चं.	वु.	श	श	वृ.	शु.	शु	मं	वृ	शु
नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	श्र	श	रे.	म.	रो.	आ	श्ले
योग	वि.	सु.	प.	व्या	धृ	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
करण	वव	श.	च	ना	वव	कौ	तै	ग	तै	श.	वणि	वि
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु.चं.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीचं.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म२८	कं१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि३	क२८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु.	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	३२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु
आकृति	ह	ह	ह	ह	दीर्घ	ह	दी	दी	दी

कारकग्रहाः- ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य- भ्रातृमातृपितृ-पुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः। अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।

स्थिरकारकाः- तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रबुध- गुरु-भौम-शुक्र-शनि-सूर्यगुरु- रविबुधगुरुशनि-गुरु-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति।

स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्-जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे,४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम्। आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु- रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति।

तेषां फलम्-स्वर्णपादेत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति।

हस्तरेखा-(हथेली में ग्रह पर्वत (Mounts) व उनका पफल)

हथेली में ग्रहों के पर्वतों का भी विशेष महत्त्व रहता है। अगर जन्म कुण्डली में कोई ग्रह वलवान होता है तो उस जातक की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत उभरा और स्पष्ट होता है। जिस व्यक्ति को अपनी जन्म-तिथि अथवा जन्म समय का ज्ञान नहीं होता, उस व्यक्ति की हथेली पर पर्वतों के आधर पर सही जन्म-कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। अंगूठे से जन्म लग्न मालूम किया जाता है। प्रथम अंगुली (तर्जनी) से वृहस्पति की स्थिति, मध्यमा से शनि, व अनामिका से सूर्य की स्थिति मालूम कर कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। तर्जनी के नीचे के स्थान को वृहस्पति का पर्वत कहते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे के स्थान को शनि का पर्वत कहते हैं। अनामिका अंगुली के नीचे के भाग को सूर्य पर्वत कहते हैं और कनिष्ठिका अंगुली के नीचे के स्थान को वुध पर्वत कहते हैं। अंगूठे के नीचे हथेली पर जो जीवन रेखा से घिरा हो उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। उसी के वाँयी ओर हथेली में ऊँचे उठे पर्वत को चन्द्र पर्वत कहते हैं। हृदय रेखा के नीचे और मस्तिष्क रेखा के ऊपर ऊँचे उठे भाग को मंगल का प्रथम क्षेत्रा कहते हैं। शुक्र पर्वत के ऊपर और वृहस्पति, को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, वुध, वृहस्पति, शुक्र शनि के एक एक ग्रह पर्वत तथा मंगल के दो ग्रह पर्वत हथेली में होते हैं। हथेली का मध्य भाग जो थोड़ा धंसा होता है उसे करतल मध्य कहते हैं। हथेली के मध्य भाग की अपेक्षा ग्रह पर्वत ऊँचे उठे होते हैं। अंग्रेजी में इन पर्वतों को डवनदजे कहते हैं।

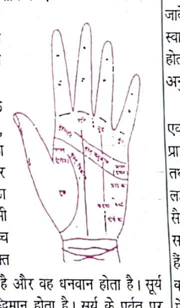

सूर्य पर्वत (Sun Mount) यह पर्वत अनामिका अंगुली के नीचे होता है। सूर्य पर्वत उन्नत होने पर जातक उत्साही, कला प्रेमी, शिल्पविद्या में निपुण, भावुक, धनवान्, उदार होता है। अगर सूर्य का पर्वत धंसा हुआ हो तो उस जातक में उत्साह की कमी होती है और उसकी वुद्धि भी तेज नहीं होती। उसे सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। यदि क्रास का चिन्ह् हो तो अनावश्यक वदनामी प्राप्त होती है। यदि सूर्य पर्वत हथेली में साधारण रूप से उच्च हो तो काव्य-कला सौन्दर्य इत्यादि में अभिरूचि होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य का पर्वत उच्च हो उसे यश व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह धनवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति लेखक, यशस्वी, सुखी एवं वुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह् हो तो जातक उच्च राज्यधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्च पदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता है। सूर्य-पर्वत पर विन्दु या वृत्त का चिन्ह् शुभ नहीं माना जाता। जिस व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत हो ही न उसका जीवन साधारण सा होता है। इस पर्वत से प्रतिभा, यश, सम्मान, सुख व सफलता की जानकारी प्राप्त होती है। अगर सूर्य-पर्वत वुध पर्वत के साथ मिला हो तो ऐसे जातक नम्र स्वभाव वाले, वाहनादि सुखों से युक्त, ईमानदार, व्यवहार दक्ष होते हैं। यदि स्त्री के हाथों में यह लक्षण हों तो रूपवती, पति से प्रीति रखने वाली, हंसमुख व सुशीला होती है। सूर्य पर्वत पर अगर दो खड़ी रेखाएँ हों तो वह महाधनी होता है। अगर सूर्य का पर्वत शनि की ओर झुक जाए तो व्यक्ति एकान्तप्रिय व उदासीन होता है कभी-कभी निराशावादी वन जाता है।

चन्द्र पर्वत (Moon Mount) दाहिने हाथ में आयु रेखा से वांयी ओर भाग्य रेखा के पास और। मणिवंध रेखा से ऊपर चन्द्र पर्वत होता है। चन्द्र क्षेत्र सौन्दर्य-प्रियता; कल्पना काव्य, साहित्य आदि से सम्बन्ध रखता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र का क्षेत्र धंसा हुआ होता है, उसमें प्रायः कल्पना शक्ति का अभाव होता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्रा उच्च होता है वह, साहित्य, काव्य, कला, संगीत, कल्पना, गायन आदि के कारण सपफल होता है धन, स्त्री, माता व विदेश यात्रा का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र क्षेत्र, साधारण हो तो पाचन शक्ति कमजोर होती है। चन्द्र-क्षेत्र का संपूर्ण भाग अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण हथेली में शुभ न हों तो सिर दर्द, पागलपन आदि के रोग होते हैं। चन्द्र-पर्वत अच्छा और उठाव हो तो मनुष्य सुखी, कला प्रेमी और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, अधिक उठा हुआ हो तो व्यक्ति में उतावलापन अधिक होता है और उसे क्रोध भी जल्दी आता है। चन्द्र पर्वत गहरा हो तो व्यक्ति चिन्ता-ग्रस्त होता है। चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिन्ह् हो तो व्यक्ति गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। इस पर्वत पर वर्तुल या कोई दाग का चिन्ह् हो तो मानसिक रोग एवं जलभय होता है। यदि इस पर ऊर्ध्व रेखाएँ हों, तो विदेश-यात्रा के अवसर मिलते हैं। इस पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ विदेश में विघ्न व परेशानियां पैदा करती है। चन्द्र-क्षेत्र मणिवन्ध की ओर झुका हुआ हो व्यक्ति कल्पना लोक में विचरण करता है। चन्द्र-पर्वत से यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो वह व्यक्ति जलयात्रा करता है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति कलाकार होते हैं तथा कोमलता और भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं। चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो जातक में कल्पना, भावुकता, सौन्दर्य प्रियता तथा प्रेम विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार और कवि होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र अनुपस्थित होता है, वह कठोर हृदय का होता है।

मंगल पर्वत (Mars Mount) मंगल के दो क्षे होते हैं। पहला हथेली में वुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत वृहस्पति पर्वत के नीचे होता है जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र पर्वत की समाप्ति पर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी,निडर तथा शक्तिशाली होते हैं। जिनके हाथों में मंगल पर्वत वलवान होता है वे प्रभुत्वाकांक्षी, परिश्रम के कामों में दक्ष, लड़ाई-झगड़े में उत्साही होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। नैतिक वलशाली, चंचल प्रकृति के सैनिक होते हैं। यदि मंगल पर्वत बहुत अधिक ऊँचा हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अकारण क्रोध करने वाला, समाज-विरोधी, निर्दयी होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से लड़ाकू तथा अपनी वात को ज़वरदस्ती मनवाने के आदी होते हैं। यदि मंगल का पर्वत नीचा हो तो व्यक्ति में सहन-शक्ति की कमी होती है, नास्तिक, डरपोक तथा शान्त विचार का होता है। यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह निश्चित समझना चाहिए कि उस व्यक्ति में सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडम्बर तथा प्रदर्शन प्रिय होते हैं। यदि मंगल पर्वत या राहु के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति (कुशल, दृढ़-निश्चयी, उत्तम सेनापति अर्थात् प्रवन्धन क्षमता से युक्त होता है। मंगल पर्वत यदि बुध की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी राय देने वाला, सलाहकार होता है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों और उनसे जाल-सा वन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है। मंगल का पर्वत यदि अशुभ, निर्वल हो तो ऐसे व्यक्ति को तीव्र ज्वर, पित्त विकार, शस्त्र, शत्रु, चोर व राजा से भय प्राप्त होता है। रक्त-विकार से पीड़ा होती है। यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊँचा पद प्राप्त करता है। संघर्षों एवं वाधाओं के वावजूद वह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाने में पूर्ण सपफलता प्राप्त करता है।

वस्तुतः मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्पष्टवक्ता वनता है।

बुध पर्वत (Mercury Mount)– कनिष्ठिका ऊँगली के नीचे (मूल में) हृदय रेखा या मंगल पर्वत के ऊपर जो स्थान है उस स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। यह पर्वत भौतिक सम्पदा एवं भौतिक समृद्धि का सूचक है। बुध का क्षेत्र अच्छा हो तो व्यक्ति को व्यापारिक एवं वैज्ञानिक कार्यों में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, ज्योतिषी, धनी एवं कवि होता है। कानून का ज्ञाता, लेखक एवं हंसमुख प्रकृति का भी होता है। यदि बुध पर्वत अत्यन्त ऊँचा हो तो वह ठग, चालाक, धुर्त, विश्वासघाती और लफंगा भी होता है। ऐसे व्यक्ति धन के पीछे पागल रहते हैं। यदि बुध पर्वत नीचा हो तो अप्रसन्न, आलसी, धनहीन एवं मन्दबुद्धि होते हैं।

यदि बुध पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति व्यापार कुशल, प्रतापी चिकित्सक, वकील, ज्योतिषी आदि होता है। ऐसे व्यक्ति विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख प्रकृति का होता है। यही फल मंगल, बुध दोनों के उच्च होने का भी समझना चाहिए। जिन व्यक्तियों के बुध व गुरु के पर्वत समान रूप से ऊँचे उठे हों, वे विद्याभ्यासी, संगीत प्रिय, सफल साहित्यकार, पत्रकार, लेखक होते हैं। श्रमवान और उद्यमी होते हैं। मान-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। बुध व शुक्र का पर्वत समान रूप से ऊँचे हों तो वह विलक्षण ज्ञान वाला, श्रृंगार प्रिय और संतति सुख से पूर्ण होता है।

जिनके हाथों में बुध पर्वत सही रूप से विकसित होता है, वे मनोविज्ञान के क्षेत्र में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी एवं भौतिकवादी कहे जाते हैं। धन-संचय करने में ये उचित-अनुचित आदि का कोई ख्याल नहीं रखते। यदि बुध पर्वत पर कोई तिरछी रेखा आई हो तो उसे गुप्त परेशानी होती है। यदि इस पर त्रिकोण Δ का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी, मान प्रतिष्ठा वाला या व्यापारी होकर प्रचुर धन पैदा करता है। यदि बुध पर्वत पर दो चार खड़ी रेखाएँ हों तो वह डॉक्टर या औषधि संग्रहकर्ता होता है। यदि बुध का पर्वत ऊँचा उठा हुआ कुछ चौरस दिखे तो वह ज्योतिषी होता है। यदि हथेली पर बुध पर्वत का अभाव हो तो उसका जीवन दरिद्रता में ही व्यतीत होता है। लम्बी उंगलियों के साथ विकसित बुध पर्वत हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला होता है।

यदि बुध पर्वत अपने आप में पूर्णतः श्रेष्ठ एवं विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

वृहस्पति क्षेत्र (Jupiter Mount)– तर्जनी अुँगली के मूल भाग में राहु पर्वत के ऊपर शनि पर्वत के पास जो स्थान है उसे गुरु का क्षेत्र या गुरु पर्वत कहते हैं। हथेली में गुरु का पर्वत उच्च हो तो उस व्यक्ति में देव-तुल्य सभी गुण पाए जाते हैं। ऐसा व्यक्ति तेजवान, ओजस्वी, दर्शनीय विद्वान्, उदार, ज्योतिषी, अध्यापक होता है। वह धनधान्य युक्त, सदाचारी, सत्यवक्ता होने के साथ-साथ जहाँ स्वयं की उन्नति करता है, वहाँ दूसरों को उन्नति देने में सहायक रहता है। यदि गुरु का पर्वत अत्यन्त उच्च हो तो व्यक्ति आडम्बर वाला, मिथ्याभिमानी, स्वार्थी, धोखा देने में चतुर तथा स्वेच्छाचारी होता है।

यदि गुरु पर्वत अल्पविकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता समझनी चाहिए। विपरीत योनि के प्रति इनके मन में कोमल भावनाएँ होती हैं। यदि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने ही कार्यों में लगा रहने वाला परन्तु जीवन में सफलता न मिल पाने के कारण धीरे-धीरे उसमें निराशा की भावना आने लगती है। यदि गुरु पर्वत राहु पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त तथा रोगी होता है। यदि गुरु, शुक्र का पर्वत एक समान ऊँचा हो तो ऐसा व्यक्ति असत्य वक्ता, शत्रु-युक्त, अविचारी, झगड़ालू तथा स्त्रियों के साथ रहकर भी उनसे कम प्रीति वाला होता है। यदि गुरु पर्वत निम्न तथा शनि पर्वत ही अधिक उठा हो तो वह समाज व घर वालों से घृणा करता है। तथा इन दोनों के एक समान ऊँचे होने पर धैर्यवान्, भाग्यवान और अदृष्टवादी होता है।

अगर वृहस्पति-क्षेत्र पर क्रास का चिन्ह हो तो जातक धार्मिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा उठ जाता है। उसका वैवाहिक जीवन सानन्द रहता है। यदि गुरु पर्वत पर सीधी रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है परन्तु बहुत सी रेखाएं होने पर अपयश प्राप्त होता है। गुरु पर्वत पर त्रिकोण चिन्ह हो तो व्यक्ति सात्विक विचार, चतुर व कुशल होता है। यदि त्रिकोण के साथ सूर्य रेखा भी हो तो ऐसा व्यक्ति संस्था का मंत्री होता है। गुरु के पर्वत पर तारा का चिन्ह हो तो अच्छा फल देता है किन्तु परिवार की ओर से परेशानी कारक होता है। यदि गुरु के पर्वत पर गुणा (क्रास) का चिन्ह हो तथा तर्जनी के मूल में स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति का विवाह सम्पन्न एवं कुलीन घराने में होता है। ऐसे व्यक्ति ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त कर अच्छी उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। गुणा का चिन्ह या अत्यन्त सूक्ष्म होने पर उसके मस्तक पर चोट चपेट आदि से कोई घाव अवश्य हो जाता है।

यदि व्यक्ति की उँगलियाँ नुकीली हों तथा गुरु पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। वर्गाकार उँगलियों के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह जीवन में निरंकुश तथा अत्याचारी बन जाता है। यदि उँगलियाँ लम्बी हों तो वह व्यक्ति अपव्ययी तथा भोगी होता है। यदि गुरु पर्वत अशुभ हो तो उसे कुष्ट, चर्म, क्षय-रोग, गठिया, पीलिया तथा फेफड़े सम्बन्धी रोग रहता है।

वस्तुतः गुरु पर्वत जीवन में अत्यधिक सहायक तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला पर्वत कहा गया है।

शुक्र पर्वत (Venus Mount)– अंगूठे के नीचे और जीवन रेखा के भीतर का भाग शुक्र क्षेत्र कहलाता है। शुक्र पर्वत से सौन्दर्य प्रियता, काम वासना, संगीत प्रियता, स्वास्थ्य, संतान उत्पन्न करने की शक्ति का विचार किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति के हाथ में शुक्र का पर्वत उठा हुआ न हो तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण न्यून मात्रा में होता है। शुक्र क्षेत्र का साधारण उच्च होना अच्छा है। साधारण उच्च होने पर जातक में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं।

शुक्र का अति उच्च होना अशुभ होता है। अति उच्च होने पर मनुष्य अत्यधिक विलासी, व्यभिचारी व कामुक होता है। शुक्र पर्वत उठावदार व शुभ होने पर व्यक्ति निरोगी होता है, और वह सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। उसकी ललित-कला में अधिक रुचि होती है। यदि शुक्र पर्वत धंसा हुआ अथवा गहरा हो तो वह व्यक्ति नपुंसक होता है तथा धातु रोग से ग्रसित होता है। शुक्र पर्वत पर व्रत या विन्दु के चिन्ह अशुभ होते हैं। शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा वृहस्पति की ओर जावे तो उस व्यक्ति को यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि कोई रेखा शुक्र से निकल कर भाग्य रेखा को काटे तो धन हानि होती है। शुक्र पर्वत हथेली में अनुपस्थित होने पर व्यक्ति निर्मोही हो जाता है। वह उदासीन व सन्यासी बन जाता है। हाथ में शुक्र पर्वत अच्छा होने पर चेहरा लावण्यमय व प्रभावशाली होता है।

शनि पर्वत (Saturn Mount)– यह मध्यमा अंगुली के नीचे होता है। एकान्त-प्रियता, परिश्रम-शीलता व किसी वस्तु का गंभीरता पूर्वक अध्ययन इसके स्वाभाविक गुण है। यदि शनि पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो उस जातक पर शनि का प्रभाव अधिक रहता है। अतः वह मनुष्य चिन्तायुक्त व दुःखी रहता है तथा अविश्वासी होता है। अगर शनि का क्षेत्र साधरण उन्नत हो तो वह जातक विचारशील होता है। अगर शनि का पर्वत विगड़ा हुआ हो तो उस मनुष्य का स्वास्थ्य खराब रहता है व विशेष रूप से वह पित-वात रोग का रोगी होता है। शनि का पर्वत उठावदार व शुभ हो तो उस व्यक्ति का जीवन सुखी होता है।

आवश्यकता से अधिक उठा हुआ हो तो वह एकान्त-प्रिय और वैराग्य की भावना रखने वाला होता है। शनि का पर्वत गहरा होने पर मनुष्य का जीवन दुःखी होता है और वह कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। जिस व्यक्ति के शनि पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो, वह यौगिक क्रियाओं और गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। शनि पर्वत पर वृत या विन्दु के चिन्ह दुःख व दरिद्रता के चिन्ह होते हैं। शनि पर्वत प्रधान व्यक्ति एकान्त-प्रिय होने के कारण भीड़ से बचना चाहते हैं। शनि क्षेत्र प्रधान व्यक्ति प्रायः इन्जिनियर, जादूगर, साहित्यकार व वैज्ञानिक होते हैं। नृत्य, गान, संगीत इत्यादि में इनकी रुचि नहीं होती है। ये संदेहशील प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। शनि क्षेत्र अत्यधिक विकसित होने पर जातक आत्महत्या तक कर लेता है। वे स्वभाव से उदासीन व चिड़चिड़े होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत वृहस्पति की ओर झुका हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। उस व्यक्ति में वृहस्पति के गुणों का समावेश हो जाता है। वह व्यक्ति उन्नतशील बन जाता है। सूर्य की ओर झुका हुआ होने पर व्यक्ति निष्क्रिय व उदासीन हो जाता है। शनि क्षेत्र पर रेखाएं शुभ होती है परन्तु चिन्ह जैसे वृत्त आदि अशुभ माने गए हैं।

ऊपर संक्षेप में भिन्न ग्रह क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो, किसी में तीन ग्रह क्षेत्र उच्च रहते हैं। इसलिए अलग-२ फलों का मिलान पर, परिणाम में जो फल आवे, वह कहना चाहिए।

विवाह सम्बन्धी योग–

(१) यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो और वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के वाद अपने पति के अधीन रहती है।

(२) यदि स्त्री के दाएँ हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायक प्राप्त होती है।

(३) यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उदित होकर गुरु-पर्वत पर गई हो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है। उसे सुख, यश एवं विदेश-गमन आदि के लाभ प्राप्त होते हैं।

(४) यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय-रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शरावी होता है।

(५) यदि हृदय रेखा गुरु क्षेत्र से उदय हो तथा चन्द्र से निकलती हुई भाग्य रेखा आकर हृदय-रेखा में विलीन हो गई तो ऐसी स्त्री को अत्यधिक प्रेम करने वाला पति प्राप्त होता है।

(६) यदि हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर वीच में शनि-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

(७) यदि भाग्य-रेखा, चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सुन्दर गहरे रूप में वृहस्पति के क्षेत्र तक चली जाये तो उस स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष की सहायता से भाग्योदय होता है।

(८) यदि किसी विवाह-रेखा स्पष्ट तथा सुन्दर हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र से आई हुई कोई प्रभाव रेखा भाग्य रेखा में आकर मिल जाये तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी धनी कुल में होता है। उसे अपने सम्बन्धियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के सहयोग से भाग्योदय होता है।

(९) यदि विवाह-रेखा में से पतली-पतली शाखायें निकलकर हृदय रेखा की ओर गई हो तो ऐसी स्त्री के पति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण दाम्पत्य सुख में बाधा होती है।

कालसर्प योग–चामत्कारिक शुभ फल भी देता है

कालसर्प योग जन्म कुण्डली में उस स्थिति में बनता है, जब कुण्डली में समस्त ग्रह राहु-केतु के एक ओर स्थित होते हैं। ज्योतिष जगत में 'कालसर्प योग' के विषय में बड़ी चर्चाएँ हैं। प्राचीन विचारधारा के ज्योतिर्विदों का कहना है कि प्राचीन ग्रन्थों में कालसर्प योग का कहीं उल्लेख नहीं है। आधुनिक ज्योतिर्विद जातक के जन्मांग में कालसर्प योग की जो स्थिति बनाते हैं, वह स्थिति पहले भी होती थी, जिसे राहु की दशा कहा जाता था। अति प्राचीन ज्योतिर्विदों ने **'कालसर्प योग'** शब्द का प्रयोग नहीं किया। परन्तु महर्षि पराशर एवं वराह मिहिर ने अपने ग्रन्थों में **'सर्प योग'** की चर्चा की है। वृहद्जातक तथा वृहत् पराशर होराशास्त्र में– योगः प्रोक्तकाल सर्पश्च .....।। एवं 'राहुकेतुमध्ये ग्रहा सर्वे विघ्नदा काल सर्प संज्ञकः तदा काल सर्पयोगस्य विषविघात जीवने भयावह पुनः पुनरपि शोकं च। मानसागरी के अध्याय ४ में स्पष्ट उल्लेख है कि **"लग्नाच्च सप्तमे स्थाने शनि राहु संयुतौ। सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपिच।।410।।"** यदि सप्तम भाव में शनि राहु के साथ हो तो उस जातक की मृत्यु 'सर्पदंश' से होती है। इसी सर्प योग को हम **'कालसर्प योग'** भी कहते हैं।

[राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर ही मनुष्य की शक्तियों का स्मरण करता है।]

कुछ विद्वान लोग यह प्रश्न करते हैं कि **'कालसर्प योग'** अस्तित्व में कैसे आया? तो यह प्रश्न अनुचित नहीं है क्योंकि अधिकांश ग्रन्थों में **'सर्प योग'** की तो चर्चा है किन्तु **'कालसर्प योग'** की नहीं। 'काल' शब्द जोड़ दिया जाए, तो साधारण प्राणी के मस्तिष्क में उसका प्रथम अर्थ 'मृत्यु' ही आएगा और जब 'काल' शब्द के साथ 'सर्प' जुड़ा हो, तब तो प्रथम दृष्ट्या जातक भयभीत हो जायेगा। समाज में सामान्य रूप से **'काल'** और **'सर्प'** दोनों प्रथमतः भयावह ही हैं। यह तो उसे धैर्य बंधाने और समझाने पर ही समझ में आयेगा कि 'काल' का अर्थ है समय और 'सर्प' हमारे पूज्य देवता हैं, नाग की पूजा और शिव भक्ति से हमें ऊर्जा प्राप्त होकर मन को शान्ति मिलती है। राहु-केतु की महादशा एवं कालसर्प/पितृदोष से पीड़ित जातकों की ऊर्जा शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए नाग पूजा एवं शिवभक्ति का विधान हमारे शास्त्रों ने सुझाया है। इससे जातक को आने वाले कष्टों से राहत होंगे।

राहु-केतु छाया ग्रह हैं। जैसे प्राचीन चरक संहिता में कैंसर एवं एड्स जैसे रोगों का उल्लेख नहीं है, परन्तु ये रोग नहीं है, ऐसा नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार कालसर्प योग जब सभी सात ग्रह राहु और केतु या केतु या राहु के मध्य आ जाते हैं, तो राहु के प्रभाव से अन्य ग्रह निष्प्रभावी हो जाते हैं और राहु का अधिक प्रभाव आता है, जन्मकुण्डली में कालसर्प योग का निर्णय करते समय विशेष सावधानी वरतनी चाहिए। राहु या केतु के साथ अन्य ग्रहों का साहचर्य की स्थिति में भाव-स्पष्ट कर लिए जाएँ तो इस योग में और भी अधिक स्पष्टता आ जाएगी। जैसे-लग्न भाव से निर्मित कालसर्प योग में यदि राहु के साथ मंगल या कोई भी ग्रह है तथा उसके भोगांश राहु से अधिक हैं तो कालसर्प योग दोषपूर्ण नहीं होगा, बल्कि योगकारक बनता है। कुछ विद्वान तो इसे भंग कालसर्प दोष की कुण्डली मानते हैं।

वैदिक रूप से राहु का अधिदेवता काल, प्रति अधिदेवता सर्प है, जबकि केतु का अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रतिअधिदेवता ब्रह्माजी हैं। कालसर्प योग से सम्बन्धित जन्मकुण्डलियों के अध्ययन करने पर यह दिखाई पड़ता है कि कुछ कालसर्प योग से युक्त जातक असहनीय कष्ट झेल रहे हैं और कुछ उत्तरोत्तर समृद्धि, वैभव प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्ति जब पद, प्रतिष्ठा, धन, परिवार आदि के मद में चूर हो जाता है, तब वह अपने सम्माननीय माता-पिता, पितर तथा आश्रित अन्य लोगों को सम्मान न देकर उनसे सम्मान कराने की इच्छायें रखता है और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है, उसी का प्रभाव अगले जन्म में कालसर्प योग के रूप में आता है। इसके विपरीत अपने माता-पिता आदि की यथाशक्ति सेवा करते हैं, उन्हें कालसर्प योग अनुकूल हो सुखी बनाता है।

सामान्यतः कालसर्प योग का प्रभाव जीवनपर्यन्त रहता है, परन्तु राहु अथवा केतु की दशाऽन्तर्दशा में इसके प्रभाव, फलों का प्रादुर्भाव होते देखा जा सकता है। एक अन्य मान्यतानुसार कालसर्प योग यदि किसी जातक की कुण्डली में प्रथम छः भावों में बनता हो, तो उसे जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में विशेष संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है। [इस स्थिति में राहु सप्तम में तथा केतु लग्न भावस्थ होगा।] इसी भाँति यदि राहु और केतु के मध्य सभी सातों ग्रह सप्तम भाव से द्वादश भावों के बीच पड़ते हों, तो तत्सम्बन्धित योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य को जीवन का उत्तरार्द्ध भाग विशेष कठिन परिस्थितियों में से गुजारना पड़ता है। ध्यान रहे, इस योग की गणना राहु से लेकर केतु तक करनी चाहिए।

जातक की कुण्डली में प्रथम छः भावों में बनता हो, तो उसे जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में विशेष संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है। [इस स्थिति में राहु सप्तम में तथा केतु लग्न भावस्थ होगा।] इसी भाँन्ति यदि राहु और केतु के मध्य सभी सातों ग्रह सप्तम भाव से द्वादश भावों के बीच पड़ते हों, तो तत्सम्बन्धित योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य को जीवन का उत्तरार्द्ध भाग विशेष कठिन परिस्थितियों में से गुजारना पड़ता है। ध्यान रहे, इस योग की गणना राहु से लेकर केतु तक करनी चाहिए।

कालसर्प का शुभाशुभ फल द्वादश भावों में राश्यानुसार अलग-अलग होता है।

1. अनन्त कालसर्प योग– प्रथम व सातवें भाव से निर्मित कालसर्प योग मनुष्य के व्यक्तित्व, शरीर, सिर, आत्मा एवं पिता की माता (दादी) पर जीवन पर्यन्त प्रभावी रहता है। 42 वर्ष की आयु तक अथवा राहु की महादशा में विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

अशुभ प्रभाव– शारीरिक रोग, कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहता है। जीवन में संघर्ष अधिक करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है। जातक जीवन पर्यन्त उदर विकार से पीड़ित रहता है। वचपन में अथवा बड़े होने तक पेट में कीड़े होते हैं। प्रायः इसको शौच सम्वन्धी कष्ट बना रहता है। यह तब और भी अधिक प्रभावी होता है, जब लग्न एवं राशि एक ही हो। जातक को स्वप्न में सूर्य एवं मृत्यु लोग की आत्माएँ दिखती हैं।

शुभ फल– यदि यह अनन्त कालसर्प योग वृष एवं मिथुन, सिंह राशि पर आता है, तब राजयोगकारक भी होता है। जातक प्रायः विदेश गमन भी करता है। रविक्षेत्रोदये राहौ राजभोगाय सम्पदि।। वैद्यनाथ। गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, बाहरी तौर पर सज्जन परन्तु भीतर से चालाक प्रवृत्ति का होगा।

2.कुलिक कालसर्प दोष– द्वितीय व आठवें भाव से निर्मित कालसर्प दोष में यदि राहु अशुभ हो, तो जातक को कुटुम्ब एवं धन सम्बन्धी उलझनों का सामना रहता है। अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। गुप्त रोग होने की संभावना रहती है। जातक प्रायः अपनी वाणी पर संयम नहीं रख पाता। कभी-कभी मुख सम्बन्धी रोग, गले या श्वास सम्वन्धी परेशानी उत्पन्न हों।

शुभ फल– अचानक धन की प्राप्ति होती है। गड़ा धन, लॉटरी, सट्टा आदि से भी ध न का आगम हो सकता है। परिवार ख्याति प्राप्त एवं संयुक्त होता है। जातक धन की अपेक्षा कीर्ति को अधिक मूल्यवान समझता है।

3. वासुकि कालसर्प योग– तृतीय एवं नवम भाव में निर्मित इस योग से अपने निकटस्थ भाई- बन्धुओं के कारण ही विविध परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विदेशों में अथवा भ्रमणशील (घूमने-फिरने) के कार्यों द्वारा धनार्जन होता है।

शुभ प्रभाव– तृतीयेश उच्च स्थानस्थ होकर भाग्येश, पंचमेश या राज्येश से युति होने पर एवं राहु के तृतीय भाव में वृष या मिथुन या कन्या राशिस्थ होने पर अखण्ड साम्राज्य प्रदान करता है। राजनीति में विशेष सफलता देता है। भाई-वहन होते हैं तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यदि गुरु की दृष्टि भी हो तो पराक्रम में वृद्धि तथा भाई-वन्धुओं का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जातक का सम्पर्क एवं सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ भी रहता है, जिनसे जातक लाभान्वित भी होता है। शुभफल का अनुभव स्त्री राशियों में प्राप्त होता है। अशुभ फल का अनुभव पुरुष राशियों में प्राप्त होगा।

4.शंखपाल कालसर्प योग– चतुर्थ व दशम भावों द्वारा निर्मित कालसर्प योग का प्रभाव जातक की माता, स्थायी सम्पत्ति, पैतृक सम्पत्ति, वाहन-सुख एवं शरीर में पेट पर पड़ता है। चतुर्थेश निर्बल होने एवं राहु नीच राशिस्थ होने से जातक को आराम कम व संघर्ष अधिक रहता है। माता-पिता एवं परिवार के निमित्त परेशानियाँ होती हैं। आय में अनिश्चितता रहती है। जातक को पथरी एवं किडनी आदि उदर विकार होते हैं। जातक घरेलू परिस्थितियों के प्रति असन्तुष्ट रहता है।

शुभ फल– इसके विपरीत उच्च राशिस्थ राहु होने एवं चतुर्थेश के बलिष्ठ होने पर यह योग पूर्ण शुभ तो नहीं, अपितु अल्प शुभफली बन जाता है। जन्म स्थान छोड़ने पर जातक सुखी रहता है तथा माता को कष्ट के बावजूद सुख प्राप्त होता है। १, २, ३, ४ एवं कन्या राशि में शुभ फल प्राप्त होते हैं।

5. पद्म कालसर्प योग– पंचम व एकादश भावों के मध्य कालसर्प योग का प्रभाव शिक्षा, संतान, श्रम का मूल्यांकन, मान-सम्मान, पेट विशेषकर लीवर एवं आँत पर पड़ता है। पंचमेश नीच, वक्री, अस्त या अन्य निर्बल भावों में स्थित हो तथा राहु नीच राशि धनु या शत्रु राशि में हो तथा किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी न हो तो जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। कोई भी विशेष कार्य पूर्ण होने से पूर्व विघ्न या रुकावटें पैदा हों। आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहती है। सन्तान उत्पत्ति में विलम्ब अथवा कन्या सन्तान अधिक हों। उच्च-विद्या में विघ्न-बाधाएं अथवा अधूरी शिक्षा रहती है।

शुभ फल– पंचमेश उच्च राशि एवं बलिष्ठ स्थिति में होने एवं उच्च राशि या शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट होने पर यह योग अनेक गुप्त विद्याओं का ज्ञान कराता है। संतान-उत्पत्ति के बाद क्रमिक उन्नति हो। मंगल-राहु योग हो तो जातक कूटनीति का प्रयोग करता है। भृगुसूत्र के अनुसार पंचम में यदि राहु हो तो मनुष्य को पुत्र सुख नहीं मिलता, सर्प के शाप से पुत्र का नाश होता है। नागदेव की पूजा करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

6. महापद्म कालसर्प योग– षष्ठ स्थान में राहु होने पर योग बनता है। इसका प्रभाव रोग, शत्रु, मामा और मौसी पर पड़ता है। षष्ठेश निर्बल एवं पापग्रस्त या राहु नीचस्थ होने से जातक गुप्त रोग एवं गुप्त षड्यन्त्र का शिकार होता है अथवा मामा/मौसी की अकाल मृत्यु होती है। वृथा खर्च, मानसिक तनाव व गुप्त शत्रु-भय, मातुल (मामाके) पक्ष को अनिष्टकर, दाँतों व नेत्रों सम्बन्धी रोग भय। प्रगति कठिनता से हो पाती है।

शुभ फल– षष्ठेश उच्च राशिस्थ, बलिष्ठ तथा राहु उच्च राशिस्थ होने से शत्रु स्वयं ही (निजी कारणों से) दूर हट जाते हैं। विदेश गमन भी होता है। जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने बुद्धि-चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है।

7. तक्षक कालसर्प योग– राहु के सप्तम भाव में होने पर यह योग बनता है। इसका प्रभाव वैवाहिक जीवन, मित्र, सांझेदारी, दादा पर पड़ता है।

सप्तमेश ६, ८, १२वें अथवा अशुभ भावस्थ या राहु नीच राशिस्थ होने से वैवाहिक विलम्ब, विवाह होने पर वैवाहिक सुख में कमी, व्यवसाय में सांझेदारी के कार्यों में विघ्न-बाधाएँ एवं धोखा, अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही धन, आय के साधन हों। स्त्री/पति की ओर से परेशानी अथवा वैवाहिक जीवन में कलह-क्लेश हो।

शुभ फल– सप्तमेश शुभ हो तो जातक का एक जगह सम्बन्ध छूटने के बाद वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। स्त्री राशि का राहु शुभ फल करता है। विवाह जल्दी होता है।

8. कर्कोटक कालसर्प योग– राहु के अष्टमस्थ होने से यह योग बनता है। अशुभ होने पर क्लिष्ट रोग का भय, मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी व घरेलू उलझनें अधिक हों।

शुभ फल– अष्टमेश शुभ भावस्थ हो, या राहु उच्च राशिस्थ, शुभ दृष्ट हो तो जातक दीर्घजीवी होता है तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में भूमि, मकान, वाहन एवं सुयोग्य सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

9. शंखनाद कालसर्प योग– नवम व तृतीये भाव में निर्मित कालसर्प योग में भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ पैदा होंगी। लाटरी, सट्टे में धन का अपव्यय तथा किसी नजदीकी बन्धु द्वारा विश्वासघात हो। मनमाना आचरण करने से प्रवृत्त।

शुभ प्रभाव– जातक स्वाभिमानी, जादू, यंत्र-मंत्र, तन्त्र, ज्योतिष, लाटरी-शेयर आदि विषयों में रूचि रखने वाला, जातक ऐसी योजनाओं के संचालक होते हैं। जिनमें धन की वृद्धि अचानक होती है।

10. पातक कालसर्प योग– दशम एवं चतुर्थ भावों में निर्मित इस योग से जातक अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् जीवन में उन्नति करता है। आयु के उत्तरार्ध भाग में ही सफलता मिलती है। पिता के सुख में कमी करता है। झूठे आरोप झेलने पड़ते हैं।

शुभ प्रभाव– जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के बल पर भूमि, आवास, स्त्री आदि सुखों को प्राप्त करता है।

11. विषाक्त कालसर्प योग– एकादश व पंचम भाव से सम्बन्धित कालसर्प योग के कारण जातक पिता या संतान पक्ष के कारण चिन्तित, गुप्त आर्थिक, परेशानियाँ, प्रथम कन्या संतान की संभावना, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में कमी, अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के सम्वन्ध में असन्तोष बना रहता है।

शुभ प्रभाव– लाटरी, सट्टा, शेयर द्वारा आकस्मिक धन लाभ, अनेक यात्राओं द्वारा ध न लाभ एवं ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृद्धिकारक होता है।

12. शेषनाग कालसर्प योग– द्वादश भाव में राहु होने पर यह योग बनता है। जातक को शिर, नेत्रादि के कारण कष्ट, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला धन का वृथा खर्च अधिक होता है। कुसंगति के कारण व्यसन आदि का भी शिकार हो सकता है।

शुभ प्रभाव– यदि व्ययेश शुभ भावस्थ हो तो जातक अपने जन्म स्थान से दूर जाकर भाग्योदय प्राप्त करता है। आध्यात्म, धार्मिक, लेखन, ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष रूचि रखेगा।

कालसर्प का मुख राहु होता है। यदि राहु बली हो तथा उस पर शुभ और योगकारक ग्रहों का प्रभाव हो, तो कालसर्प योग जातक को अतीव उन्नति देता है। किसी भी जन्मकुण्डली में उच्चस्तरीय सफलता के लिए केवल किसी एक योग पर निर्भर रहना शास्त्रसम्मत नहीं है। उच्चस्तरीय सफलता के लिए लग्न का बली और शुभ प्रभाव में होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि लग्न बली हो, तो जातक की कुण्डली में विद्यमान् सामान्य शुभ ग्रहयोग भी जातक को अच्छी प्रगति देते हैं। इसके विपरीत लग्न के निर्बल होने पर जातक की कुण्डली में विद्यमान ग्रहयोग उच्चस्तरीय सफलता नहीं दे पाते। कालसर्प योग के शुभफलदायक होने की स्थिति में लग्न की बलवत्ता को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। कालसर्प योग जिन स्थितियों में विशेष शुभ फलदायक सिद्ध होता है, उसके लिए योग की स्थिति एवं कुण्डली में विद्यमान् योग कारक ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध को अवश्य देखना चाहिए।

जिन लोगों की कुण्डलियों में यह योग मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या और मीन राशिस्थ राहु से बनता है, उनके मन-मस्तिष्क और हृदय में गुह्य ज्ञान, अंतर्दृष्टि और प्रेरणाओं का अनूठा संगम होता है। जो उनके जीवन में उत्कर्ष के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे मनुष्यों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी होता है। वे समाज कल्याण हेतु तत्पर, व्यवहार-कुशल और त्याग करने की भावना रखते हैं। उनकी लयबद्ध और यर्थाथवादी सोच होती है। लोगों में अपने नाम के प्रचार से उनके अहं और मन को संतुष्टि मिलती हैं।

(1) उदाहरणार्थ– (१) लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की कुण्डली में कालसर्प योग के वावजूद वे दूरदर्शिता और दृढ़ व स्थिर मानसिकता के व्यक्तित्व से लब्ध एक महान् पुरुष थे। उनके जैसा गृहमंत्री आज तक नहीं हुआ। उनकी कुण्डली में सप्तम भाव में बुध आदित्य योग एवं दशम भाव में रूचक और शश योग हैं। लग्नेश वली है। जिनकी कालसर्प के द्वारा कोई हानि नहीं हुई।

अनेक उच्चस्तरीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डली में कालसर्प योग देखने में आया है। उदाहरणार्थ– सचिन तेंदुलकर, धीरू भाई अम्बानी, सुश्री लता-मंगेशकर, हिटलर, मोरारजी देसाई इत्यादि।

(2) उदाहरण कुण्डली– (२) संलग्न कुण्डली प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० धीरू भाई अम्बानी की है, जिनके जन्मांग में समस्त ग्रह तृतीय के राहु तथा नवम के केतु के बीच हैं। कालसर्प योग का मुख तृतीय भाव में शनि की राशि तथा राहु के नक्षत्र में है। तृतीयेश शनि द्वितीय भाव में स्वगृही है। इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु बली तथा शुभ स्थिति में है एवं उसका सम्बन्ध धनभाव से है, जो कि आर्थिक जगत में शीर्ष सफलतादायक है, इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु धन उगलता रहा। तृतीय भाव में इसकी स्थिति स्वपराक्रम को बढ़ाने वाली तथा जुझारू प्रवृत्ति की द्योतक है। इस कालसर्पयोग का शुभ फल लग्न की बलवत्ता ने वहुत वढ़ा दिया। लग्नेश गुरु भाग्येश सूर्य के नक्षत्र में स्थित होकर दशम भावस्थ होना, लग्न में भाग्येश सूर्य और उसका मित्र चन्द्रमा स्थित है। लग्नेश और भाग्येश का नक्षत्र सम्बन्ध तथा भाग्येश की लग्न में स्थिति लग्न को बली और इन्हें प्रवल भाग्यवान बनाया। इस प्रकार श्री अम्वानी की कुण्डली में उच्च सफलतादायक ग्रह योग विद्यमान थें, जिन्हें कालसर्प योग ने और भी ऊँचाईयों तक पहुँचाया।

(3) उदाहरण कुण्डली–(३) संलग्न जन्मांग प्रसिद्ध अभिनेता अनिल कपूर की है, जिन्होंने फिल्मी जगत में अच्छी पहचान बनाई। इनका जन्म कुम्भ लग्न के मिथुन नवांश में हुआ था। कर्कोटक नामक, अष्टमस्थ राहु तथा द्वितीयस्थ केतु के मध्य सभी ग्रह बैठे हैं। लग्नेश शनि एकादश भाव में तथा द्वितीयेश (वाणी का कारक) गुरु बुध के साथ है। कला का कारक शुक्र भाग्य भाव में स्वगृही है, जिसने कपूर जी को वास्तव में कलाकार बनाया। स्पष्ट है, अष्टम भाव में कन्या राशिस्थ राहु (नवांश में भाग्य स्थान) कोई अशुभ/अरिष्ट प्रभाव प्रदान नहीं कर रहा। यद्यपि अष्टमस्थ राहु उत्तम फल नहीं देता परन्तु शुभ-अशुभ परिणाम राशि, बल तथा अन्य ग्रहों को दृष्टि के अनुसार प्रदान करता है। अतः कर्कोटक नामक कालसर्प योग से भय में न आएँ, यदि अष्टमस्थ राहु शुभ होगा तो निश्चय ही लाभकारी परिणाम देगा।

वास्तव में राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर ही मनुष्य प्रभु की शक्तियों का स्मरण करने लगता है।

वल्लभ भाई पटेल
31 अक्तू., 1875 ई.
6–00 सायं. लगभग
गुजरात

स्व. धीरू भाई अंबानी
28–12–1932
प्रातः 6–31 बजे
जन्मस्थान–गुजरात

अनिल कपूर
24–12–1959
12–00 दोपहर
मुम्बई

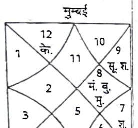

–कालसर्प दोष शान्ति के लिए कुछ उपाय–

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति, (२) सर्प दोष, (3) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में काल सर्पयोग पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने शुभ एवं कल्याणकारी होगें– (१) कालसर्प की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चाँदी का सर्प युगल-नाग स्तोत्र एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र–ॐ नव कुलाय विद्याहे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(२) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें– ऐसे कम-से-कम पाँच शनिवार करें।

(३) प्रत्येक शनिवार कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छींटे देकर रसोई की प्रथम चपातियाँ डालना शुभ है।

(४) कालसर्प योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक चिन्ह् बनवाकर लगवाएँ।

(५) घर में मयूर पंख का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(६) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम (नवनाग-स्तोत्र) का उच्चारण करना चाहिए–

अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्। शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥ एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये। सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥ तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(७) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(८) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मंत्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(९) किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(१०) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, रुद्र सूक्त, शिव-पंचाक्षर स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

(११) (i) प्रथम भाव से निर्मित कालसर्पदोष हो, तो गले में हमेशा चाँदी का चौकोर टुकड़ा पहनें।

(ii) द्वितीय भाव से निर्मित कालसर्पदोष हो, तो घर के वायव्य (उत्तर-पश्चिम) कोण को साफ कर, मिट्टी के बर्तन में पानी भरकर रखें। प्रतिदिन पानी बदलते रहें। पुराने पानी को घर के बाहर चौराहे पर रखें।

(iii) तृतीय भाव से निर्मित कालसर्प योग हो, तो अपने जन्मदिन पर गुड़, गेहूँ और ताँबे का दान करें।

(iv) चतुर्थ भाव से निर्मित कालसर्प का योग हो, तो प्रतिदिन बहते हुए जल में दूध बहाएँ।

(v) पंचम भाव से निर्मित कालसर्प योग हो, तो घर के ईशान कोण में सफेद हाथी की मूर्त्ति रखें।

(vi) षष्ट भाव से कालसर्प बने तो प्रत्येक मास की पंचमी तिथि को एक श्रीफल बहते हुए पानी में डाल दें।

(vii) सप्तम भाव से कालसर्प योग बने, तो मिट्टी के बरतन में दूध भरकर वीरान स्थान पर रख आएँ।

(viii) अष्टम भाव से कालसर्प योग बने, तो प्रतिदिन सुबह काली गाय को गुड़, रोटी, काले तिल और उड़द खिलाएँ।

(ix) नवम भाव से कालसर्प योग बने, तो 18 नारियल सूर्योदय से सूर्यास्त तक 18 शिव मन्दिरों में रखें। यह प्रत्येक वर्ष में एक बार शिवरात्रि को करें।

(x) दशम भाव से कालसर्प योग बने, तो घर से बाहर निकलते समय काली उड़द के दाने, सिर पर से 7 बार घुमाकर जमीन पर बिखेर दें। महत्वपूर्ण कार्य के समय यह प्रयोग से कार्य में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता है।

(xi) एकादश भाव से कालसर्प योग बने, तो हर बुधवार को घर की सफाई करें। सफाई के बाद घर का कूड़ा घर के पास के रास्ते पर फेंक दें। उस दिन शरीर के अन्दर या बाहर एक फटा हुआ कपड़ा अवश्य पहनें।

(xii) द्वादश भाव से कालसर्प योग बने तो, प्रत्येक मास की अमावस्या को काले कपड़े में काला तिल, दूध में भिगोया हुआ जौ, नारियल और कोयला बांध कर बहते हुए पानी में बहाएँ। उपरोक्त उपाये यदि सम्भव हो, तो लगातार 43 दिन तक करें।

(१३) तंत्र प्रयोग– 1 मीटर काले कपड़े में १/२ किलो उड़द, लोहे का टुकड़ा, काले तिल, मूँग और चावल, मधु, दूर्वा, खिचड़ी, गुड़, कर्पूर- इन वस्तुओं को बांधकर हर मास की अमावस्या को शिव मन्दिर में रखना चाहिए तथा यथाशक्ति 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप करना चाहिए।

अपनी अनुकूलता के अनुसार ऊपर बतायें गए कोई भी उपाय नियमित रूप से करने से अवश्य लाभ होगा।

मस्ति क(ललाट) रेखा विचार–

ललाटे लिखितं धात्रा रेखा चिन्हं शुभाऽशुभम्।
यदा ज्ञात्वापुरूषो लोके त्रिकालज्ञो भवेद् ध्रुवम्॥

ललाट में स्वच्छ सरल सीधी पूर्ण स्पष्ट रेखा होने से मनुष्य सुखी और दीर्घायु होता है। छिन्न भिन्न रेखा से दुःखी और अल्पायु होता है। ललाट में खड़ी रेखा,त्रिशूल,स्वास्तिक आदि आकार की रेखाओं के होने से धन-पुत्र-स्त्री,सुख सुविधा से जीवन क्रम चलता है। जिस जातक के ललाट में एक भी रेखा नहीं होवे तो वह जातक धनवान,दीर्घजीवी तथा सुखी होता है। जिसका ललाट संकीर्ण होगा वह कृपण तथा दुर्जन प्रकृति का रहेगा,एवमेव उन्नत ललाट वाला दयालु व उदार मनोवृत्ति का बनेगा। जिस स्त्री का ललाट उन्नत नेत्र नील कमल सदृश तथा नासिका से कर्ण तक भोहें द्वितीया के चन्द्र तुल्य टेढी और चौड़ी तथा परस्पर मिली न हो तो यह लक्षण स्त्री हेतु सुख-सौभाग्य वर्धक है। जिस पुरुष के ललाट पर सीधी-सरल लम्बी३ रेखा हो वह भाग्यवान, विचारक तथा मान प्रतिष्ठा वाला होगा। जिसके टुकड़े-टुकड़े में उपर नीचे छिन्न-भिन्न रेखा चिन्ह वह निर्दयी, क्रोधी घाती,हठी-दुराग्रही-क्रूर स्वभाव का जाने। जिस ललाट पर उपर नीचे सीधी रेखा तथा मध्य भाग में सर्पाकार गति की रेखा हो वह प्रतापी धनी परन्तु मध्यायु वाला होवे। जिसके ललाट पर तीन रेखा सर्पाकार गति की हो उसे जलाघात जल में डूबने का कुयोग। जिसके ललाट पर उपर१ सीधी रेखा फिर२ भाग के सनानररेखा फिर नीचे३छोटी रेखा चिन्ह होने से विचारक मेधावी विद्वान अन्वेषणक-चतुर-शान्त-धीर प्रकृति,अनेक गुणों से युक्त परन्तु धन सम्पदा से न्यूनता। जिसके ललाट पर उपर नीचे सर्पाकार गति की लम्बी रेखा तथा मध्य में सरल सीधी रेखा होवें एवं भाल विशाल होतो सद्‌गुणो से युक्त विद्वान,सुखी, धनी स्त्री पुत्रादि से युक्त प्रतापी तथा दीर्घायु होवे। जिस स्त्री के ललाट पर उपरि की रेखा से बडी दूसरी रेखा, इससे बडी तीसरी रेखा सीधी सरल हो तथा वाम कपोल पर दाल के समान तिल हो तो वह सौभाग्यवती व धन सम्पदाशाली होवे। जिस स्त्री के ललाट पर छिन्न भिन्न रेखाएं हों तथा नासिका के अग्रभाग पर तिल या कालामसा वह दुर्भाग्य सूचक है।

मांगलिक योग एवं परिहार-

विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल गोत्र सनाथता, विद्या,धन,स्वास्थ्य(शरीर) और आयु इन सात गुणों की परीक्षा करने पश्चात् ही मंगल अथवा मांगलिक दोष का निर्णय करना चाहिए। सभी लग्न तथा सभी लग्न कुण्डलीयों में मांगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलीयों में मांगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलीयों में मंगल अथवा मांगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है,परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के साहचर्य से योगकारक हो,उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो,तो मंगल अशुभ की अपेक्षा शुभ प्रभाव कारक होगा। अतएव वर-कन्या की कुण्डलीयों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मांगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वांग रूप से विवेचन करना चाहिए। अर्थात् आठ कूटों का भी विचार करना चाहिए। जो कि निम्नलिखित प्रकार है- वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्। गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः।५ मु.चिन्तामणि वि.प्र. अर्थात् १ वर्ण,२ वश्य,३ तारा,४ योनि,५ ग्रहमैत्र,६गणमैत्र,७ भकूट और८.नाड़ी। ये प्रसिद्ध ८ कूट कहे जाते है। जिनका निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से किया जाता है। इस के पश्चात् कुण्डली मे मंगल एवं मागलिक दोष विशेष रूप से देखा जाता है। मांगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक से माना जाता है। लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुःविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशदः।।५।। मु.संग्रहदर्पणसभी लग्न तथा सभी लग्न कुण्डलीयों में मांगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मांगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलीयों में मंगल अथवा मांगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है,परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के साहचर्य से योगकारक हो,उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो,तो मंगल अशुभ की अपेक्षा शुभ प्रभाव कारक होगा। अतएव वर-कन्या की कुण्डलीयों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मांगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वांग रूप से विवेचन करना चाहिए। अर्थात् आठ कूटों का भी विचार करना चाहिए। जो कि निम्नलिखित प्रकार है-अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में१,४,७,८,तथा१२ वें भाव(स्थान) में मंगल हो तो वह कन्या वर(पति)के लिए हानिकारक तथा इसी तरह लड़का की कुण्डली मे १,४,७,८,तथा १२ वें भाव में मंगल हो तो वह वर(लड़का) पत्नी(कन्या) के लिए हानिकारक होता है। इस का विचार लग्न कुण्डली एवं चन्द्र कुण्ली से किया जाता है। अपवाद- (१) मुहूर्त चिन्तामणि के परिशिष्टानुसार मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मांगलीक दोष वाले वर के साथ करने से त्रिमंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है। (२)यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित(मंगलीक कारक) हो और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि,मंगल,सूर्य,राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हो तो भौम दोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौम दोष नहीं रहता।(शनि भौमेऽथवा कश्चित्......। फलित संग्रह मु.चि. म.प.) (३) यदि वर कन्या की कुण्डलीयों में परस्पर राशि मैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो तो भी भौम दोष अविचारणीय है। (राशिमैत्रं यदा याति.... (मुहूर्त्त दीपक) इसी प्रकार प्रमाणिक और भी मांगलीक निदान है। परन्तु पञ्चांग में सभी नही दिया जा सकता अतः अधिक के लिए ग्रन्थ भी देखें। नाड़ी विचारः-अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। वर-कन्या का जन्म एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की आदि(प्रथम)नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग होता है। दोनो की मध्य नाड़ी हो तो हानि तथा दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दःख होता है (बृहज्ज्योतिषसार के अनुसार)

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार-नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पादजान्।।अर्थात्-नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए,वर्णदोष क्षत्रियों के लिए,गणदोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है।

अनिष्टशान्ति एवं शुभ फल प्रात्यर्थ सप्तवारव्रत विधिः-

यदि किसी जातक की कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु एतत्तद् व्रत रखने से कल्याण होता है।

रविवार के व्रत की विधि - समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्टादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व शौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रतशुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूँ की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घीशक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके ॐ हां हीं हौं सः सूर्याय नमः बीजमंत्र का पाठ पांच माला करें फिर रविवार कथा पढ़े। तत्पश्चात सूर्य को गन्धाक्षत, लालफूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन।

गृहाणार्घ्य मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे।। फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं अन्तिम रविवार हवन के पश्चात ब्राह्मण दम्पति को भोजन कराकर यथाशक्तिलाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि- यह व्रत श्रावण ,चैत्र,वैशाख,कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्लपक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधि पूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातः काल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर ॐनमः शिवाय - आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों,सफेद चन्दन,पंचामृत अक्षत,सुपारी,फल, गंगाजल,बिल्व पत्रादि से शिव- पार्वती का पूजन करें और पूजनोंपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है।उद्यापन में दशांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ,दूध, दही,क्षीर,चाँदी सफेद फलों का दान करना चाहिये। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति,धन,पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है।सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि- सर्वप्रकार के सुखों,रक्तविकार,शत्रुदमन,स्वास्थ्य रक्षा,पुत्र प्राप्ति के लिये मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें।भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। इस व्रत से मंगलग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों,फलों,ताम्र वर्तन और नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।भौम ग्रह की शान्ति के लिए ॐ क्रां,क्रीं,क्रौं सः भौमाय नमः,की ५मालाएं जप करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्रों का दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि - बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन,बुद्धि,विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार को करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः का जप करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन घी,मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी,दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पति गुरुवार के व्रत की विधि -
यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों,विद्या,पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्लपक्ष के प्रथम वीरवार का अनुराधा नक्षत्र हो तो और भी अच्छा है। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र,पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पीले लड्डू का भोग लगायें तथा पादुका,उपानह, छाता,कमण्डलु,पीले रंग के पुष्प,चने की दाल,पीले कपड़े,पीला चन्दन,हल्दी व पीले चावल का दान करें। नमक रहित एक समय भोजन करें तथा केले के वृक्ष का पूजन कर गुरू शान्ति के लिए ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुंरवे नमः मंत्र की ५ माला जाप करें। उद्यापन में दशांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी,दधि,घृत के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि - यह व्रत धन विवाह संतान आदि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप,दीप,श्वेत चन्दन,चावल,श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पुजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई,फल आदि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः की तीन माला का जप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण वटुक को भोजन कराने के पश्चात श्वेत वस्त्र, चांदी,श्वेतफल,तण्डुल एवं द्रव्यादि का दान करे। चावल,चांदी ,फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि - यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोगों,शत्रुभय,आर्थिक संकट,मानसिक संताप का निवारण करता है और धन धान्य तथा व्यापारमें वृद्धि करता है।यह व्रत शुक्लपक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावणमास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पञ्चामृत से स्नान कराकर धूप,गन्ध,नीले पुष्प,फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और ॐ शं शनैश्चराय नमः मंत्र का तीन माला का जप करें,व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक बर्तन में शुद्ध जल काले तील,नीलेपुष्प, लौंगतेल,गंगाजल,दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डालदें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें।१६ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्तोत्र का पाठ जूते,जुराव,नीले रंग का वस्त्र,काले माश,चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्रह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें।

राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें और दान में नारियल भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्रॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः का जप करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु केतु के बीज मंत्र ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः का जप पांच माला करके मंगल व्रत की तरह पूजा करनी चाहिए।

संक्षिप्त वैतरणी दान-पितृ के लिए-

भगवानक स्मरण कय शुद्ध भय तेकुशा, फूल, अक्षत लय ॐ कृष्णगव्यै नमः तीन वेरि गायपर, कुशपर ॐ ब्राह्मणाय नमः तीन वेरि, तकरा बाद गाय कें जल सँ सिक्त कय पढ़ी- **ॐ उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्।** दातारं **त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता।। ॐ यमद्वारे महाघोरे कृष्णा** वैतरणी **नदी। तां सन्तर्तुं ददाम्येतां कष्णां वैतरणीं च गाम्।** ईमन्त्र पढ़ी ओकरा बाद तेकुशातिलजल लय संकल्प करी- ओमद्य **अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः यमद्वारस्थित- वैतरणी नदी- सुखसन्तरणकाम इमां गां रुद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे।** गौदान ग्रहण केनिहार **ओं स्वस्ति** कहथि। फेरि तेकुशातिलजलद्रव्यादि लय दक्षिणा करथि- **ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदान-प्रतिष्ठार्थमितावद् द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे।** ओकरा बाद दान ग्रहण कयनिहार व्यक्ति **ओं स्वस्ति** कहि दक्षिणा ग्रहण करथि। शुद्र कें **ओं** के स्थान पर **नमः** पढावक चाही। गायक अभाव में एतावद् द्रव्य मूल्यक कृष्ण गव्यै नमः पढ़ी। (माता के लेल संकल्प में मात्र **गात्रस्य** स्थान में **गोत्रायाः** आ **पितुः अमुक शर्मण** क स्थान मे **मातुः अमुकी देव्याः** होयत शेष सभ कर्म यथावत होयत।)

दशगात्र(दशदिन) पिण्डदान विधिः-

रात्रौ दाहश्चेत्तर्हि न रात्रौ पिण्डदानं भवति अग्रिम दिवसे एव पिण्डद्वयं देयम्।

क्रमः-१.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः शिरः पूरक प्रथमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। २.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः कर्णाक्षिनासापूरक द्वितीय पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ३.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः गलांसभुजवक्षः पूरक तृतीयपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ४.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः नाभिलिंगगुदपूरक चतुर्थः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ५.ओं अद्य अमुक-गोत्र- पितरअमुकप्रेत एषः जानुजंघापादपुरक पञ्चमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ६.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः सर्वमर्मपूरक षष्ठः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ७.ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ८.ओं अद्य अमुक-गोत्र- पितरअमुकप्रेत एषः नखदन्तलोमादिपूरक अष्टमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ९.ओं अद्य अमुक-गोत्र- पितरअमुकप्रेत एषः वीर्यपूरकः नवमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। १०.ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः पूर्णत्वतृप्तताक्षुद्विपर्यय पूरकः दशमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

संक्षिप्त दाह-संस्कार-विधि--

स्नान कय नव श्वेत वस्त्र धारण कयं पूर्वमुँह वैसि हाथ में तेकुशा लय नव मॉटिक पात्र में जल भरि शव कें दक्षिण मुँह कय- **ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरु क्षेत्रञ्च गंगाञ्च यमुनाञ्च सरिद्वराम्। कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकम् तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा।** मनसँ जल में तिर्थक ध्यान करैत ओहि जल सँ शवकेँ स्नान करा नूतन वस्त्रद्वय, यज्ञोपवीत, पुष्प, चन्दनादिसँ अलंकृत कय चितापर कुश ओछा पुरुष कें अधोमुख(नीचामुँह) स्त्री कें उपर मुँह(चित्त) उत्तर शिरकय सुतावी तकरा बाद अपसव्य कय दक्षिण मुँह भय वाम हाथ में सात बन्धन सँ वान्हल उल्का ग्रहण करी-- ॐ **देवाश्चाग्निमुखाः सर्वे कृतस्नपनं गतायुषमेनं दहन्तु।** मनमे ध्यान करैत- **ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकाञ्च गच्छतु।** ई दूनु मन्त्र पढि तीन वेर शव कें प्रदक्षिणा करैत जरैत उल्का सँ मुँह में मुखाग्निदी, तकरा बाद खढ़ आ काठादि सँ चित्ता जरावी आओर अन्त में एक कबूतरक बरावरि अवशेष वचावी, तकरा बाद एक प्रादेशक बरावरि सात टा काठी लय जरैत चित्ता में पाछाँ मुँह - '**ॐ क्रव्यादय नमस्तुभ्यं**' ई मन्त्र पढि सात्तों काठी चित्तापर फेकि दी। तकरा बाद- '**ॐ अहरहर्न्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशुम्। वैवश्वतो न तृप्यति सुराररिव दुर्मतिः।**' ई मन्त्र पढी यमगाथा गवैत(यमक गुणगान) वच्चा सव कें आगा बृद्ध लोकनि ओकर पाछाँ-पाछाँ पैर सँ पैर नहि सटय(ऐंरी-गोरी) एहि प्रकारें जलाश्यादि जाकय स्नान करथि - **ॐ अद्य अमुक गोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम।** एहिं मन्त्र कें पढि तिलांजलि देवाक चाही। स्त्री लोकनि लेल- **ॐ अद्य अमुकगोत्रे अमुकप्रेते** इ पढवा क चाही। भीजले वस्त्र धारण कयने कर्त्ता सहित सभ गोटे कर्त्ताक दुआरि पर जाय ॐ **लौहवद् दृढकायोस्त** ई मन्त्र सँ लौह स्पर्श करी तकरा बाद ॐ **अश्मेव स्थिरो भूयासम्** ई मन्त्र सँ पाथर स्पर्श तकर बाद ॐ **अग्निर्नः शर्म यच्छतु** अग्नि स्पर्श, तकर बाद जलक स्पर्श कय तीत नीमक पात(मिर्च) आदि खाय अपन व्यवहारक अनुसारें अपना घर जयवाक चाही

आंगनमे अन्तिम संस्कार-

आंगनमे तुलसी लगाइक गोवरसँ ठॉव कए गंगाजलसँ स्थान कें सींचि कुशक आसन पर मरण भेनिहार व्यक्तिकेँ उत्तर शिर कए सुताए वैतरणीदान कराओल जाइत अछि। गाय व गायके अभाव में ओकर मूल्य दान कएल जाइतअछि। दानक विधि स्थानीय पण्डितक अनुसार करी। **वाराहपुराणक एहन वचन सुनैत छी-** कण्ठस्थानगो जीवो भीतो विभ्रान्तमानसः। ज्ञात्वा तु विह्वलं तत्र शीघ्रं निस्सार्यते गृहात्। कुशास्तरणशायी स दिशः सर्वास्तु पश्यति।।

अशौचसंकरविचार(एक अशौच के मध्य मे द्वितीय अशौच विचार):-

ब्राह्मणों को सम्पूर्ण अशौच के बीच में ५ दिन तक,क्षत्रियों को ६दिन तक,वैश्यों को७दिन तक एवं शूद्रों को१५दिन तक यदि सजातीय(परिवार के सात पुस्त तक का किसी और का भी मृत्यु हो जाए) द्वितीयसम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच की शुद्धि के साथ-साथ दोनो की शुद्धि तथा साथ-साथ श्राद्ध होता है। यदि सम्पूर्णाशौच के मध्य ब्राह्मण को ६ से ९ दिन तक, क्षत्रियों को ७से ११दिन तक,वैश्यों को८ से १४दिन तक तथा शूद्रों को१६से२९ दिन तक के बीच में सजातीय(परिवार)द्वितीय सम्पूर्णाशौच (दशदिनात्मक अशौच)प्राप्त हो तो द्वितीयाशौचान्त होने पर दोनों की शुद्धि तथा श्राद्ध साथ-साथ होता है। यदि क्षौरकर्म के दिन५६दण्ड रात्रि के अन्दर सजातीयशौचान्तर प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के तीसरे दिन दोनों का क्षौर तथा चौथे दिन श्राद्ध होता है।

यदि क्षौरकर्म के दिन५६दण्ड के वाद द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के चौथे दिन दोनों का क्षौर तथा पॉचवें दिन श्राद्ध होता है। आद्यश्राद्धसंकल्पानन्तर द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त हो तो आद्य श्राद्ध हो जाता है परञ्च सपिण्डन,द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन होता है। सपिण्डनदिन,संकल्प से पूर्व द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त होने पर द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन सपिण्डन होना चाहिए। सम्पूणाशौच के मध्य में त्रिरात्राशौच तथा मरणाशौच के मध्य जननाशौच की मान्यता नहीं होती। त्रिरात्रिशौच के मध्य द्वितीय त्रिरात्राशौच हो जाय तो द्वितीय त्रिरात्राशौचानुसार दोनों की शुद्धि होती है।

कन्यामरणाशौच-

सभी वर्णों को जन्म से दो वर्ष तक सद्यःशौच। उसके बाद विवाहवधि त्र्यहाशौच। विवाह के बाद पितृगृह अथवा स्वामी के घर में कन्या मृत्यु से माता-पिता को तीन अहोरात्र अशौच एवं स्वामी के घर में विहित स्वस्ववर्णानुसार अशौच एवं श्राद्ध।

संकल्पित व्रत अशौच में भी करना चाहिए-

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमे तथार्चने।
आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।।

जैसाकि विष्णुपुराण का वचन है- न"**न व्रतिनां व्रत**"व्रतिनाम अर्थात् आरम्भित अनुष्ठान में,**न व्रत** अर्थात् अशौच प्रतिरोधक नहीं होता है। व्रत,यज्ञ,विवाह और हवन,अर्चन,जप,आरम्भ कर देने पर सूतक नहीं लगता और यदि आरम्भ नहीं किया गाया हो तो सूतक लगता है। यज्ञारम्भ किसे कहे- **आरम्भो वरणं यज्ञे संकल्पो व्रतजापयोः।**
नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया।।(हारीतेन)

अशौचव्यवस्था-

ब्राह्मण- ब्राह्मणों को जन्म से षाण्मासाभ्यन्तर शरीरान्त होने पर सद्यः शौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण(गाड़)देना चाहिए। सात महीने से लेकर दो वर्ष के अन्दर शरीरान्त होने पर एकाहोरात्र अशौच तथा मृत शरीर को भूमि में निक्षेपण(गाड़)करादे। तीसरे वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त तीन अहोरात्र अशौच तथा अग्निसंस्कार,पिण्डोदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन। उसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सवों को दशाहाशौच(दशदिन तक अशौच) एवं श्राद्ध करना शास्त्रीय विधान है। **क्षत्रिय**- क्षत्रियों को षाण्मासाभ्यन्तर ब्राह्मणवत्। सात मास से लेकर दो वर्ष तक दो रात्रि अशौच एवं भूमिनिक्षेपणमात्रं तीन वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त षड् अहोरात्र(६दिन)अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदकक्रिया उसके बाद अग्निसंस्कार, द्वादशाहाशौच एवं श्राद्ध। **वैश्य**- वैश्यों को जन्म से षाण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्। उसके बाद दो वर्षों तक भूमि निक्षेपण एवं तीन दिन अशौच, उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त नौ दिन तक अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया। उसके बाद सम्पूर्ण पञ्चदशाहाशौच अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध। **शूद्र**- शूद्रों को षाण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्,उसके बाद दो वर्ष तक पाँच दिन अशौच एवं भूमिनिक्षेपण। उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त अविवाहित मृत्यु से ५ दिन तथा विवाहित मृत्यु से द्वादशाहाशौच, अग्निसंस्कार एव पिण्डोदक क्रिया उसके बाद सम्पूर्ण तीस दिन अशौच,अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध करना ।

रवियोग-मृ.चि.

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्वश्वनखसम्मिते।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः।।

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो, उस नक्षत्र से वर्तमान चन्द्र नक्षत्र-४, ६, ९, १०, १३,२० रवि योग होता है। यह रवियोग दोष के समूह को नाश करता है।

द्विपुष्करयोग- २,७,१२ तिथि, शनि, मंगल, रवि वार, धनिष्ठा, चित्रा,मृगशिरा नक्षत्र तीनों का जब योग हो तो द्विपुष्कर नामक योग होता है, यह द्विपुष्कर योग मृत्यु,विनाश और वृद्धि में द्विगुण फल देता है।

त्रिपुष्कर योग-

२,७,१२ तिथि, शनि, मंगल,रवि वार विशाखा, उ.फा. ,पू.भा.,पुन.,कृ.,उ.षा.नक्षत्र तीनों का जब योग हो तो त्रिपुष्कर नामक योग होता है, यह त्रिपुष्कर योग मृत्यु,विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

किसदिन क्या करें?

रविवार में कृत्य-राज्याभिषेक,उत्सव, यात्रा,नौकरी, गोक्रय - विक्रय,अग्नि सम्बन्धी कार्य,मंत्र, औषध-निर्माण, औषधभक्षण, शस्त्रसम्न्धी कार्य,सोना,तांबा,उन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य,युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सभी कार्य रविवार में करना चाहिए। **सोमवार में कृत्य**- जलोत्पन्न वस्तु,रस से उत्पन्न वस्तु,शंख,मुक्ता,चांदी, उख,गुड़,चीनी,आदि भोज्यपदार्थ, वृक्षरोपण,आभूषण, गीत-नृत्य,यज्ञ,दूध- दही- घृत सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, फूल तथा अक्षरारम्भ। **मंगलवार में कृत्य**- सेना-सम्बन्धी,विष-सम्बन्धी,शस्त्र-सम्बन्धी, घात,संग्राम, शठता,दम्भ- पाखण्ड, धातु, सोना तथा मूंगा आदि। **बुधवार में कृत्य**- टेनिंग,व्यापार,अध्ययन, कला,शिल्प,खेल, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी,सोना,कॉसा, सन्धि, व्यायाम और विवाहादि कार्य। **गुरुवार में कृत्य**- धर्म- अनुष्ठानादि कार्य पौष्टिककर्म, विद्या,मांगल्य,सोना,गृह सम्बन्धी कर्म,वस्त्र, यात्रा, रथ आदि कार्य। **शुक्रवार में कृत्य**-स्त्री-सम्बन्धी,शय्या,मणि रत्न,सुगन्ध, वस्त्र,उत्सव,आभूषण, भूमि व्यापार,गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, आदि कार्य **शनिवार में कृत्य**-लोहा,पत्थर,सीसा, रांगा-सम्बन्धी, अस्त्र -शस्त्र,नौकरी,पापकर्म चोरी, मिथ्या, विष सम्बन्धी,आसव,गृह प्रवेश,हाथी को बझाना,दीक्षा(मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करना चाहिए।

आनन्दादियोगचक्रम्

योगनाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फलम्
आनन्दः	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा	शतभिषा	सिद्धिः
कालदण्डः	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	मृत्युः
धूम्रः	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	दुःखम्
धाता	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	शुभः
सौम्यः	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा	शतभिषा	अश्विनी	सुखम्
ध्वांक्षः	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	हानिः
केतुः	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	कृत्तिका	दुःखम्
श्रीवत्सः	पुष्य	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	सम्पत्तिः
वज्रः	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	हानिः
मुद्गरः	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	नाशः
छत्रम्	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	सम्मान
मित्रम्	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	पुष्टिः
मानसम्	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	सुखम्
पद्मः	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	लाभः
लुम्बः	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	हानिः
उत्पातः	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा.	नाशः
मृत्युः	अनुराधा	उत्तराषा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	मृत्युः
काणः	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेशः
सिद्धिः	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	सिद्धिः
शुभः	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	शुभः
अमृतम्	उत्तराषा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	सम्मानं
मुशलम्	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	लाभः
गदः	श्रवण	उत्तराभा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	हानिः
मातंगः	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	पूर्वाषा.	वृद्धिः
राक्षसः	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा.	कष्टम्
चरः	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	सिद्धिः
सुस्थिरः	उत्तराभा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	शुभः
प्रवर्द्धमानः	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	सुखम्

मिथिला पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक

१. अपराजिता पंचांग
२. अन्नपूर्णा पंचांग(मिथिली पंचांग छोटा)
३. वैदेही कैलेण्डर (जनवरी से)
४.मिथिलादेशीय श्रीसत्यनारायणपूजापद्धति
५.मिथिलादेशीय दुर्गापूजनपद्धति
६.श्यामापूजापद्धति
७.नवरात्रपूजन पद्धति
८.लक्ष्मीपूजन-सरस्वतीपूजन पद्धति
९.छन्दोग-वाजसनेयि विवाह पद्धति
१०.छन्दोग-वाजसनेयि उपनयन पद्धति
११.छन्दोग-वाजसनेयि श्राद्धपद्धति
१२.छन्दोग-वाजसनेयि सदाचार पद्धति
१३.सन्ध्या तर्पण छन्दोग आ वाजसनेयि
१४.छन्दोग-वाजसनेयि एकोदिष्ट पद्धति
१५.श्राद्धपद्धति वाजसनेयि आ छन्दोग
१५. मधुश्रावणीकथा
१६. मिथिलाक वार्षिक पावनि तिहार
१७. गीतनाद, व्यवहार गीत, संस्कार गीत,
१८.विद्यापति गीत, विद्यापति भजन।
१६.गृहारम्भ-गृहप्रवेश पूजन पद्धति(यन्त्रस्थ)

अथ एतद् एकाविंशतित्तमे नूतनतिथिपत्रे मैथिलनिवन्ध-सम्मतसमयशुद्धिव्रत-पर्वविशिष्ट-योग- प्रभृति विषयान् संरक्ष्य समयशुद्धौ विहित-मुहूर्त्तानुसारं विवाहोपनयन-देवादिप्रतिष्ठा-द्विरागमनं-मुण्डनकर्णविध -यात्रागृहारम्भः- प्रवेशप्रभृति- दिनानि सन्निवेशितानि। तानि च कामेश्वरसिंहदरभंगा संस्कृतविश्वविद्यालय-अखिलभारतीयमैथिलमहासभ-ज्योतिषशोधकेन्द्रैः आयोजितः समायोजित वैशाखशुक्लपक्ष तृतीयातिथि रविवासरे(२७.०४.२०२५)दिवसीय पण्डित सभयानुमोदितानि। अपि च पञ्चाङ्गेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमाधातुं स्वकीयाः सम्मतीः संस्कार- प्रकारांश्च सहर्षं प्रेषयन्तु सुधीवराः।

अन्ते चात्र कण्टकजन्यदोषाद् बुद्धिभ्रमदोषाद्वा या अशुद्धयस्ताः पूर्वापरसन्दर्भमवलम्ब्य स्वयमेव संशोध्य व्यवहरन्तु गुणैकपक्षपातिनो विद्वांस इति।

निवेदयतिः- पं.श्रीअजय मिश्रः
मो.8298824189

• यज्ञोपवीत धारण मन्त्र—

• वाजसनेयि-ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

• छन्दोग- ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि

• जीर्णयज्ञोपवीतत्याग मन्त्रः-ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया, जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।

• दुर्वाक्षतमन्त्र— ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

१४३४ साल के एकादशी

कृष्ण पक्ष			शुक्लपक्ष		
६	अगस्त	रवि	२३	अगस्त	रवि
७	सितम्बर	सोम	२२	सितम्बर	मंगल
१७	सितम्बर	बुध	३	अक्टू	शुक्र
७	अक्टू	बुध	२२	अक्टू	गुरु
५	नवम्बर	गुरु	२०	नवम्बर	शुक्र
४	दिसम्बर	शुक्र	२०	दिसम्बर	रवि
३	जनवरी	रवि	१८	जनवरी	सोम
२	फरवरी	मंगल	१७	फरवरी	बुध
४	मार्च	गुरु	१८	मार्च	गुरु
२	अप्रैल	शुक्र	१७	अप्रैल	शनि
२	मई	रवि	१६	मई	रवि
१	जून	मंगल	१४	जून	सोम
३०	जून	बुध	१४	जुलाई	बुध

१४३४ साल के त्रयोदशी

कृष्ण पक्ष			शुक्लपक्ष		
१०	अगस्त	सोम	२५	अगस्त	मंगल
८	सितम्बर	मंगल	२४	सितम्बर	गुरु
१६	सितंबर	शुक्र	४	अक्टूबर	शनि
८	अक्टू	गुरु	२३	अक्टू	शुक्र
६	नवम्बर	शुक्र	२२	नवम्बर	रवि
४	दिसम्बर	रवि	२१	दिसम्बर	सोम
५	जनवरी	मंगल	२०	जनवरी	बुध
३	फरवरी	बुध	१८	फरवरी	गुरु
५	मार्च	शुक्र	२०	मार्च	शनि
४	अप्रैल	रवि	१८	अप्रैल	रवि
३	मई	सोम	१७	मई	सोम
२	जून	बुध	१६	जून	बुध
१	जुलाई	गुरु	१५	जुलाई	गुरु

१४३४ साल के चतुर्दशी

कृष्ण पक्ष			शुक्लपक्ष		
११	अगस्त	मंगल	२६	अगस्त	बुध
९	सितम्बर	बुध	२४	सितंबर	गुरु
२०	सितंबर	शनि	५	अक्टूबर	रवि
९	अक्टूबर	शुक्र	२४	अक्टू	शनि
७	नवम्बर	शनि	२३	नवम्बर	सोम
७	दिसम्बर	सोम	२२	दिसम्बर	मंगल
६	जनवरी	बुध	२१	जनवरी	गुरु
४	फरवरी	गुरु	१९	फरवरी	शुक्र
६	मार्च	शनि	२०	मार्च	शनि
५	अप्रैल	सोम	१९	अप्रैल	सोम
४	मई	मंगल	१८	मई	मगल
३	जून	गुरु	१७	जून	गुरु
२	जुलाई	शुक्र	१६	जुलाई	शुक्र

पूर्णिमा

२८	अगस्त	शुक्र
२६	सितम्बर	शनि
७	अक्टूबर	मंगल
२६	अक्टूबर	सोम
२४	नवम्बर	मंगल
२३	दिसम्बर	बुध
२२	जनवरी	शुक्र
२०	फरवरी	शनि
२२	मार्च	सोम
२०	अप्रैल	मंगल
२०	मई	गुरु
१८	जून	शुक्र
१८	जुलाई	रवि

संक्रान्ति

१७	अगस्त	सिंह
१७	सितम्बर	कन्या
१८	अक्टूबर	तुला
१७	नवंबर	वृश्चिक
१६	दिसम्बर	धनु
१५	जनवरी	मकर
१३	फरवरी	कुम्भ
१५	मार्च	मीन
१४	अप्रैल	मेष
१५	मई	वृष
१५	जून	मिथुन
१७	जुलाई	कर्क

१४३४ साल के पंचक (भदवा)

आरम्भ दिन, समय -				⇔ समाप्ति दिन, समय			
३०	जुलाई	गुरु	सं.६।१०	४	अगस्त	मंगल	रा.८।१३
२६	अगस्त	बुध	रा.१।३८	३१	अगस्त	सोम	रा.४।१३
२३	सितंबर	बुध	दि.८।५७	२८	सितम्बर	सोम	दिन १२।१०
२०	अक्टूबर	मंगल	दि.४।२०	२०	अक्टूबर	रवि	रा.८।०६
१६	नवम्बर	सोम	रा.११।३५	२१	नवम्बर	शनि	रा.३।५५
१३	दिसम्बर	रवि	रा.शे६।४०	१६	दिसम्बर	शनि	दि.११।३७
१०	जनवरी	रवि	दि.१।५४	१५	जनवरी	शुक्र	रा.७।२२
६	फरवरी	शनि	रा.८।०४	११	फरवरी	गुरु	रा.३।०५
५	मार्च	शुक्र	रा.४।०७	११	मार्च	गुरु	दि.१०।४६
२	अप्रैल	शुक्र	दि.११।३२	७	अप्रैल	बुध	सं.६।३०
१२	अप्रैल	रवि	दि.११।५३	१७	अप्रैल	शुक्र	दि.१२।००
२६	अप्रैल	गुरु	सं.६।४६	४	मई	मंगल	रा.२।१८
२६	मई	बुध	रा.२।०८	१	जून	मंगल	[illegible]
२३	जून	बुध	[illegible]	[illegible]			[illegible]

मुहूर्त

❖ मुण्डनः- नवम्बर- २६ दिसम्बर-१४ जनवरी-२०,२७ फरवरी-८,११,१८,१६,२२,२५। मार्च-१०,११ मई- १२,१७,२१ जून- ७,१४,२१, २३, २४ जुलाई-५, १२। ❖ उपनयन- फरवरी-छ.६, ११, छ.१६,१७ मार्च- क्ष.वै.१७,१८ अप्रैल-११., मई- १०, जून- ६, १३, १४। जुलाई- छ.६,८।

❖ विवाहः-नवम्बर-२२,२५,२६,३०,दिसम्बर-४,६,६,१०,११,१४ जनवरी-१८,२४,२८,२६,३१। फरवरी-७,१०, ११, १५,२१, २२, २४, २५,२८ मार्च- १,३,४,१०,११ अप्रैल-१६,२१,२३,२५,२८,२६। मई-२,३, ७, ६, १३, १७, २०, २१, २३, २४, २६, २७, ३० ,३१ जून- २,४,६,१०,१३,१४,१८,२३,२४। जुलाई-१,२,७,८,६।
सौराठ-ससौला वैवाहिकसभा १-०७ से ६-०७-२०२७ तक।

❖ द्विरागमनं:- नवम्बर- २२,२५,२६,२६, दिसम्बर- ६,१०,११,१३,१४ फरवरी- १५,१७,१८,१६,२२,२४,२५ मार्च- १०,११,अप्रैल- १८,१६,२१,२३,२५,२६ मई- ६,१०,१२।

❖ देवादिप्रतिष्ठाः- जनवरी- २०,२२ फरवरी- ८,११,१८,१६, मार्च- १०,११, अप्रैल- १८, मई- ६,१२,१७ जून- ६,७,१३,१४, जुलाई-५,६

❖ गृहारम्भः- अक्टूबर-२४,२६,३०, नवम्बर-२०,२१,२६,२८। जनवरी-२२ फरवरी- १६,२२,२५ अप्रैल- २३, मई-१७,२०,२२ जून-१४,२१,२३,२४।

❖ गृहप्रवेशः- अक्टूबर-२४, नवम्बर- १४,१६,२०,२१ दिसम्बर-१४, जनवरी-१८,२०,। फरवरी- १५,१७,१८,१६। मई- १०,१२,१७,। जून-१४, जुलाई- ६।१०

संवत् २०८३-२०८४ के प्रमुख व्रत,पर्व

३ अगस्त-	मधुश्रावणीव्रतारम्भ
३ अगस्त-	मौनापञ्चमी
१३ अगस्त-	दोलोत्सवारंभ
१५ अगस्त-	मधुश्रावणीव्रतसमाप्ति
१७ अगस्त-	नागपञ्चमी
२३ अगस्त	भाद्रीरविव्रतारम्भ
२८ अगस्त	रक्षाबन्धन,संस्कृतदिवस
१ सितम्बर	अगस्त्योदय
४ सितम्बर	कृष्णाष्टमीव्रतं
११ सितम्बर	कुशीअमावस्या,
१३ सितम्बर	भाद्रीरविव्रत समाप्ति
१४ सितम्बर	हरितालिका व्रत(तीज)
१४ सितम्बर	चौठचन्द्र पूजा
१५ सितम्बर	गणेशपूजा
१७ सितम्बर	विश्वकर्मापूजा
२३ सितम्बर	हरिवासरयोगः
२३ सितम्बर	इन्द्रपूजारम्भ
२५ सितम्बर	अनन्त पूजन
२६ सितम्बर	अगस्त्यार्घदानं
२७ सितम्बर	महालयारंभ,पितृपक्षारम्भ
३ अक्टूबर	जितिया व्रत
४ अक्टूबर	मातृनवमी
१० अक्टूबर	महालयासमाप्तिः,पितृपक्षान्त
११ अक्टूबर	शारदीयनवरात्रारंभ
१६ अक्टूबर	विल्वाभिमन्त्रण
१७ अक्टूबर	नवपत्रिकाप्रवेशः
१८ अक्टूबर	सिमरियाकल्पवासारम्भ
१८ अक्टूबर	महाष्टमी,
२० अक्टूबर	महानवमीव्रत
२१ अक्टूबर	विजयादशमी
२५ अक्टूबर	कौमुदी(कोजागरा)
२६ अक्टूबर	करवाचौथ व्रत
६ नवम्बर	धनतेरस
७ नवम्बर	हनुमानजयन्ती
८ नवम्बर	दीपावली,कालीपूजा
६ नवम्बर	कालिदासजयन्ती
६ नवम्बर	गोवर्धनपूजा
११ नवम्बर	भातृद्वितीया, चित्रगुप्तपूजा
१५ नवम्बर	छठपूजा,सांयकालिकार्घ्यदान
१६ नवम्बर	प्रातःकालिकार्घ्यदान,
१८ नवम्बर	अक्षयनवमी
२० नवम्बर	देवोत्थान एकादशी।
२१ नवम्बर	तुलसीविवाह
२२ नवम्बर	विद्यापतिस्मृतिदिवस
२२ नवम्बर	षा.रविव्रतारम्भ
२४ नवम्बर	सामाविसर्जन
१४ दिसम्बर	विवाहपञ्चमी
२० दिसम्बर	गीताजयन्ती
५ जनवरी	दशतारकारम्भ
१५ जनवरी	मकरसंक्रान्तिः
२६ जनवरी	गणतन्त्रदिवस
६ फरवरी	मौनीअमावस्या
७ फरवरी	शिशिरनवरात्रारंभ
११ फरवरी	सरस्वतीपूजा
२० फरवरी	माघीपूर्णिमा
६ मार्च	महाशिवरात्री
२१ मार्च	होलीकादाहः
२२ मार्च	होली
२३ मार्च	सप्ताडोराम्भः
७ अप्रैल	वसंतनवरात्रारम्भ
१२ अप्रैल	चैतीछठ
१४ अप्रैल	मेषसंक्रान्ति,सतुआईन
१५ अप्रैल	जुड़िशीतल
१५ अप्रैल	श्रीरामनवमी
६ मई	षा.रविव्रतविसर्जन
६ मई	सप्तडोराविसर्गः
६ मई	अक्षयतृतीया
१४ मई	मैथिलीदिवस
२० मई	वैशाखीपूर्णिमा
१ जून	अगस्त्यास्त
४ जून	वटसावित्रीव्रत,
१३ जून	गंगादशहरा
५ जुलाई	ग्रीष्मनवरात्रारंभ
५ जुलाई	जगन्नाथरथयात्रा
१४ जुलाई	हरिशयनीएकादशी
१८ जुलाई	गुरुपूर्णिमा